मा० ८०
राष्ट्रधर्म
पाकिस्तान मिटाओ विशेषांक
अगस्त १९७१ मू. १.५०

भाद्रपद

२०२८ वि०

अगस्त १९७१

रु० १.५०

संस्कृति-मूलक विचार मासिक

'पाकिस्तान मिटाओ विशेषाङ्क'

सम्पादक

वचनेश त्रिपाठी

भानुप्रताप शुक्ल

ओंकार भावे

संस्कृति भवन

पत्र मंजूषा—२०७

डा० रघुवीर नगर

लखनऊ—४

कवितायें

मुखपृष्ठ परिचय

नेताजी सुभाष सिंगापुर में भारत की आजादी की प्रथम बार घोषणा करते हुए।

शुल्क दर

वार्षिक—१२ रु०, पंचवर्षीय—५० रु०

विदेश में—वार्षिक—१८ रु०

(समुद्री डाक से)

अपनी बात

विशेषाङ्क का शीर्षक :

'पाकिस्तान मिटाओ विशेषांक' आपके हाथों में है; इस शीर्षक से किसी को चौंकने की जरूरत नहीं। पाकिस्तान मिटाने का अर्थ विभाजन समाप्त हो, इस आह्वान को व्यक्त करना है, न कि पश्चिमी पाकिस्तान की मुस्लिम जनता के विरुद्ध किसी किस्म का जेहाद छेड़ना। आज बंगला देश में जो कुछ हो रहा है और उसमें जिस सीमा तक पाकिस्तानी तानाशाह यहिया खां के द्वारा चरम दुष्टता और नृशंसता के प्रमाण प्रस्तुत किए जा रहे हैं, क्या वह कोई हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा है? अत: 'पाकिस्तान मिटाओ' का अर्थ किसी सम्प्रदाय या जाति के विरुद्ध उत्तेजना फैलाना कदापि नहीं लगाया जाना चाहिए, हां, यह सोचने का समय अवश्य आ गया है कि सम्प्रदाय-विद्वेष और धर्मान्ध कठमुल्लेपन के आधार पर क्या और आगे भी पृथक् देश के नाते पाकिस्तान का अस्तित्व बना रहना चाहिए? खासकर उस स्थिति में, जबकि यहिया खां ने शेख मुजीब को फांसी दिए जाने में कोई कसर नहीं उठा रखी है और भारत को कुचल डालने 'Crush India' का निरन्तर नारा बुलन्द कर रहे हैं। इसे सिर्फ नारेबाजी या कोरी धमकी भी नहीं कहा जा सकता। आज न केवल पूर्वी सीमा, बल्कि भारतीय सीमा से संलग्न पाकिस्तान के पश्चिमी क्षेत्र भी आक्रामक तैयारियों से ध्वान्त हो रहे हैं। गांव के गांव खाली कराये जा रहे हैं; खन्दकें और खाइयां खोदी जा रही हैं। पाकिस्तानी सेना दिन दहाड़े नगाड़े बजाकर सीमा पर बसे गांव वालों को अपने घर-मकान छोड़ देने की 'इत्तिला-ए-आम' (सार्वजनिक सूचना) दे रही है। फिरोजपुर से हुसैनीवाला में बजते नगाड़ों का यह तुमुलनाद कोई भी सुन सकता है और खाइयां व खन्दकों का खोदा जाना चर्म-चक्षुओं से देख सकता है। हमारे विदेश मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह को भी विगत २ अगस्त को संसद में यह घोषणा करनी पड़ी कि अगर पाकिस्तानी तानाशाह यहिया खां ने हम पर हमला किया तो हमारी सशस्त्र सेनायें मुंहतोड़ जवाब देंगी।

टीका-टिप्पणी के दायरे में

आज रूस और फ्रांस सरीखे देशों की सरकारी समाचार समितियां भी इस तथ्य को पुष्टता प्रदान करती हैं कि पूर्वी बंगाल-भारत सीमा पर पाकिस्तान ने चार डिवीजन फौज जमा कर ली है क्योंकि यहिया खां भारत के विरुद्ध युद्ध करना चाहते हैं, जैसा कि यहिया खां ने कुछ विदेशी टेलिविजन कम्पनियों को अपनी भेंट के दौरान स्पष्ट बताया कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध बहुत नजदीक आ गया है। इन अखबारों ने सीमास्थ जिले नागरिकों से खाली कराने और वहां फौजी शिविर स्थापित करने के समाचार भी छापे हैं और यह भी कि उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पाकिस्तान की सर्वाधिक सेनायें इकट्ठी हो गयी हैं। पश्चिमी बंगाल, मेघालय तथा असम के सीमावर्ती क्षेत्रों में आज पाकिस्तानी टैंक और फौजी गाड़ियों की हलचल मची हुई है। इसके साथ ही पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी भी बढ़ती जा रही है।

प्रश्न यह है कि आखिर कितने युद्ध होने हैं? पाकिस्तान का पृथक् अस्तित्व रहते हुए ताशकन्द समझौते किंवा रूस-भारत संधि हमेशा निष्फल सिद्ध होंगे, इस तथ्य को हृदयंगम कर देश के शासक और शास्ता अपनी नीतियों का आधार उस आवश्यकता को बनायें, जिसकी नवीन उपलब्धि किंवा शुभ परिणति हो कृत्रिम विभाजन की समाप्ति अर्थात् अखण्ड भारत की पुन: स्थापना अर्थात् साम्प्रदायिक विद्वेष के आधार पर हिन्दू-मुसलमान के बीच सन् १९४७ में जो दीवार (पाकिस्तान) उठायी गई, उसका भूमिसात होना अर्थात् सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक इकाई के रूप में महान् भारत का अपने सब पूर्व प्रान्तों, अंग-उपांगों सहित संसार के मानचित्र में उदय, जिसकी वंदना विवेकानन्द, बंकिम, रवीन्द्र, रामतीर्थ, अरविन्द, तिलक, प्रभृति महाप्राणों ने की और उसी के सलोने सपने आंखों में बसाये चिरनिद्रा में सो गये। कौन संविधान है जो उन सपनों को साम्प्रदायिक, अवैध और अपराध करार दे सकता है? गांधी जी क्या पाकिस्तान चाहते थे?

—:*:—

गल्तियों के इतिहास में........

८५० साल पहले की बात। उन दिनों तिब्बत का युवराज था रैंचेणशाह। उसका विवाह हुआ कश्मीर की राजकुमारी कूटारानी से। कश्मीर नृपति रामचन्द्र थे कूटारानी के पिता। उन्होंने सोत्साह कन्यादान की रीति संपन्न की और तब रैंचेणशाह ने कहा—'मुझे हिन्दू बना लो।'

कश्मीरी पंडितों ने उत्तर दिया—"हिन्दू होने के बाद तुम्हारी जाति का निश्चय कैसे होगा ? किस जाति में तुम्हें रखा जायेगा ?"

यह गुत्थी हल नहीं हो पायी और तब स्वाभाविक कहीं रैंचेणशाह की स्थिति अपमानास्पद और हास्यास्पद बन गई। पंडितों ने उसे हिन्दू धर्म की दीक्षा नहीं दी। बहाने बनाते रहे।

क्रुद्ध हो रैंचेणशाह ने प्रतिक्रियावश घोषणा कर दी— "कल सवेरे मैं जिस आदमी को सर्वप्रथम देख पाऊंगा— उसी का जाति-भाई बन जाऊंगा।"

भोर होने पर रैंचेणशाह को जो सबसे पहले दिखाई दिया, उस आदमी का नाम था बुलबुलशाह। वह था मुसलमान, इसलिए विवश हो रैंचेणशाह को भी इस्लाम अपना लेना पड़ा, मुल्लाओं ने कलमा पढ़ाकर उसका नया नाम रखा सदरुद्दीन।

फिर क्या था, जब राज-वंश ही मुसलमान बन गया तो लोभ-लालच वश तथा राज-वंश को खुश करने की प्रक्रिया में कश्मीर में लोग धड़ाधड़ मुसलमान बनने लगे। श्रीनगर में जो प्रसिद्ध जामा मस्जिद खड़ी है—इसे रैंचेणशाह उर्फ सदरुद्दीन ने ही बनवाया था। आज कश्मीरी मुसलमानों को ६ आने किलो चावल सरकारी दूकानों से खिलाकर भी भारत के प्रति वफादार बना पाना कठिन हो रहा है। वहां की दीवारें पाकिस्तान-परस्त नारों से रंगी रहती हैं।

'भांगो कोरो जालिमेर तख्ते....'

—नाज़िम महमूद

'जागो उठो, दुर्बार भांगो कोरो चूरमार,
लात मारो जालिमेर तख्ते।'

जागो उठो ! लात मार कर चूर-चूर कर डालो जालिम का तख्त क्योंकि वह अन्यायी सिंहासन है। उसका विनाश शुभ होगा, कल्याणकर होगा। यह पुकार मुक्ति-सैनिक की है, बंगला देश के संघर्षरत मन-प्राणों की यही पुकार है—यही दो टूक आह्वान। इस आह्वान की बंग-बंधुओं ने बहुत कीमत चुकाई है। उस कीमत को कौन आंकेगा ?

आह ! कोतो जे मुखर मुख मूक होये गैलो
पीच ढाला कोतो पोथ रांगा होये गैलो
शोना मरा कोतो फूल झोरे पोड़े गैलो

—हाय, कितने मुखरित मुंह मौन हो गये, सदा के लिए। अब वे कभी नहीं बोलेंगे। उनकी आवाज कभी सुनाई न देगी। उनके रक्त से कोलतार पुते काले रास्ते, हाय रक्तिम हो गये और कितने ही प्राण-प्रसून खिले, अधखिले, कितने ही ताजे फूल टूट गिरे और बिखर गये। उन बलिदानी प्राण-पुष्पों के लिए हमने क्या किया ? कुछ भी तो नहीं। और उधर पद्मा-पार से पुकार अनवरत आये जा रही है—

आयोष ना प्रतिशोध
प्रतिशोध प्रतिशोध
रक्तेर प्रतिशोध रक्ते

—संधि नहीं प्रतिशोध। प्रतिशोध ! प्रतिशोध ! खून का बदला खून ! संग्राम चोलबे चोलबे। युद्ध हमारा चलता रहेगा।

विप्लव ! विप्लव !
महाकाल पाक खाये घुरछे इतिहास जीवनेर
रोक्तेरांगा विप्लव फोलबे

—महाकाल घूर्णायमान है। रक्त-रंजित विप्लव फैलेगा।

किसी ने बंगला देश में इन विप्लव-पंथियों से पूछा—"यह किस-लिए ? यह रक्तदान किस प्रयोजन से ?"

विप्लव-पथी अर्थात् मुक्ति-सैनिक ने उत्तर दिया—

आमार मायेर मुख
आमार मायेर भाषा
आमार मायेर गान
एदेशेर आमादेर प्राणे प्राणे
प्रति बिन्दु-बिन्दु रक्ते मिशेआछे
शिशु कालेर पाठशालाय शेखा वर्णमाला
प्रिय कोवी रवीन्द्रनाथेर लेखा, कोविता गान
एजे आमादेर सारा मोन जूड़ेआछे
एजे आमादेर चेतनाय
आगुनेर पारसमोनी होये आछे
प्रोतिपले पले जीवनेर स्वप्न देखाय
प्रोति क्षणे क्षणे बांचबार आशा जोगाय
आमार प्रिय दुखिनी मायेर भाषा,
वर्णमाला, प्रिय कोबीर गान
जाखुन सुनी भूलते हाबे
आमार रक्त स्रोत थेके मूछते हावे
किन्तु ए आमरा होते दींईना
ए आमारा होते देबोना

—हमारी माता का मुख, हमारी माता की भाषा समाविष्ट है हमारे प्राणों में, रुधिर में। मातृभाषा की जो वर्णमाला शैशवकाल में पाठशाला में बैठकर सीखी और रवीन्द्र ठाकुर की जिन रचनाओं से हमारा संपूर्ण मन संयुक्त है, जो हमारी चेतना है, जो अग्नि की पारस-मणि होकर हमें प्रतिपल जीवन के स्वप्न दिखाती हैं और यह आशा जगाती हैं कि हम शेष रहेंगे, जीवित रहेंगे। लेकिन आज सुनता हूं कि हमारी उसी प्रिय दुखियारी माता की भाषा, वर्णमाला, कवि रविठाकुर के गीत भुला देने होंगे—अपने से काटकर अलग फेंक देने होंगे परन्तु यह हमने होने नहीं दिया, न कभी होने देंगे ......

यह संकल्प केवल हिन्दुओं का नहीं वरन क्रमशः उक्त बोल हैं बंगला देश के कवि नाजिम महमूद, जाकिलउलहक और बेबी मौदूद के। यह संकल्प उन्होंने किया है अपनी मां से, देश-माता से कि हे लक्ष्मी माता! तुम सिर्फ पूर्व गगन की तरफ देखती रहो। सूर्योदय होगा। —लक्ष्मी मोगो! तुमी शुधू पूर्वेर आकाशे चेये थाको।

इन बंग-बंधुओं के ही स्वर में हम भी आज माता के समक्ष शुचि संकल्प क्यों नहीं लेते, क्यों नहीं १५ अगस्त के इस स्वातंत्र्य-पर्व पर

हम यह पवित्र प्रण करते कि बहुत दिन पहले, शायद ४० वर्ष पूर्व एक दिन हमने रावी नदी के किनारे जो प्रतिज्ञा की थी कि 'हम संपूर्ण देश को स्वतंत्र करके रहेंगे—उसको पूर्ण करने के लिए हम आगे बढ़ेंगे।' मुक्त करेंगे भारत की चप्पा-चप्पा भूमि को शत्रुओं के चंगुल से। कश्मीर का पाकिस्तान-अधिकृत भू-भाग, सिंध, विभाजित पंजाब और पूर्वी बंगाल में हम एक भी शत्रु को जीवित नहीं छोड़ेंगे। सर्वत्र फहरायेंगे स्वातंत्र्य-पताका। अंग्रेजों ने अपनी विषभरी कूटनीति से प्रेरित हो विभाजन की जो तौक हमारे गले में डाली थी, उसे क्यों हम आज भी आभूषण समझकर मौन हैं, निष्क्रिय हैं? संसार का वह कौन-सा संविधान है जो गुलामी की उस तौक को शृंगार मानने की सीख देना चाहता है? ब्रिटिश-अमेरिका या चीन की तरफ निरन्तर देख-देख कर रास्ता चलने की आदत कब छूटेगी? आज चीन की मित्रता सभी चाहते हैं, भारत से प्रतिक्रिया वश संधि की जाती है। कुछ परमाणु और उद्जन बम बनाने की योजना यदि किसी देश को 'बड़ा राष्ट्र' घोषित करवा सकती है तो क्या हमें हमेशा मंजीर बजाते रहने की ही शिक्षा लोकतंत्र ने दी है? यहिया खां की फौजें जब ढाका-चटगांव की ओर बढ़ीं, उस दिन हमारी सेनाएं लाहौर-कराची की तरफ क्यों नहीं चढ़ दौड़ीं! सेनाएं सक्षम हैं, समर्थ हैं—उनके पांव में सरकार ने जंजीरें क्यों डाल रखी हैं? भारत क्या सिर्फ शरणार्थियों का देश है और क्या हम इसे एक दिन स्वयं शरणार्थी देश बनाकर रहेंगे? उस दिन संसार का कौन स्थल, कौन पर्वत, कौन अरण्य और कौन राष्ट्र भारत को शरण देगा? क्या भारत अमेरिका, अरब देश, चीन-रूस के शरणागत बनकर जीवित रहना चाहेगा और क्या कोई देश इस स्थिति में कभी नाम-शेष रह पाया है? इसलिए उठो! जागो! शक्ति-संपन्न बनो।

शस्त्र-सन्नद्ध हो। शत्रु-निपात करो।............

'भांगो कोरो चूरमार, लाति मारो जालिमेर तख्ते'

तोड़कर चूर-चूर कर दो अन्यायी सिंहासन। खत्म कर दो यह विदेशी करिश्मा, यह कृत्रिम विभाजन। तोड़ो दीवार। समान आलोक विकीर्ण होने दो। सिंध-सतलज और पद्मा के बीच कोई जंजीर बाकी न रहे, बाधक न बने। हर लहर स्वतंत्र हो। बिन्दु-बिन्दु मुक्त हो। शत्रु-शिर छिन्न हो गिरे लालकिले के द्वार पर। वही होगा समग्र देश-माता का मुक्ति-पर्व।

* चंगेज और औरंगजेब के जुल्म भी मात हो गए।
* हमारा गुप्तचर विभाग सही सूचनायें नहीं दे पाता
* शस्त्र और सेना बिना देशभक्ति का जोश निष्फल।
* बंगला देश नेतृत्वहीन
* हिन्दुओं के समर्थन से ही अवामी लीग विजयी हुई थी।
* हिन्दुओं के निष्कासन का रहस्य
* शरणार्थियों पर तीन करोड़ रुपये का दैनिक खर्च।
* असम के रफातुल्ला से सावधान !
* पाकिस्तान हिन्दुओं के समूल नाश पर उतारू।
* भारत का मुस्लिम पाकिस्तान का विघटन नहीं देख सकता।
* 'दारुल इस्लाम' का अर्थ गैर इस्लामी समाज को इस्लामी बनाने की पाकिस्तानी साजिश।

पिछले २३-२४ वर्षों में, अपने देश में एकात्मता की भावना मन्द पड़ गयी है। इसी कारण अनेक समस्याओं के सम्बन्ध में उपयुक्त दृष्टिकोण से विचार नहीं हो पाता। आज देश के सामने बंगला देश का प्रश्न है। समाचार पत्रों में पूर्वी बंगाल के सम्बन्ध में समाचार आते रहते हैं। देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में रहने वाले इसे केवल बंगाल की समस्या समझते हैं। वास्तव में यह समस्या सम्पूर्ण देश की है। बंगला देश से आने वाले शरणार्थियों का प्रभाव एवं परिणाम सम्पूर्ण देश पर हो सकता है परन्तु फिर भी अनेक लोगों को यही लगता है कि मानो यह केवल बंगाल की ही समस्या है।

२५ मार्च से पूर्वी बंगाल के समाचार प्रतिदिन पढ़ने को मिल रहे हैं। 'स्वतंत्र बंगला देश' की घोषणा से पूर्व बंगाल का यह विद्रोह २६ मार्च से शुरू हुआ।

भाऊ देवरस
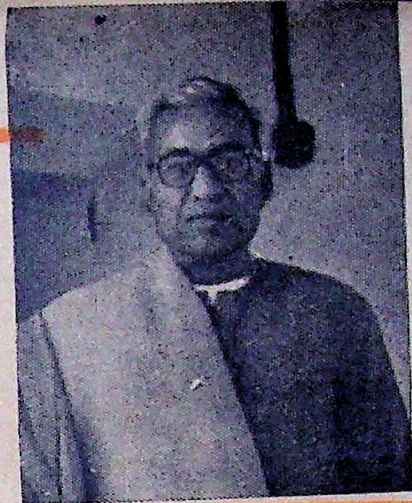
प्रारम्भ में ऐसा लगता था कि यह विद्रोह सफल हो जायेगा और बंगला देश पश्चिम पाकिस्तान से मुक्त हो जायगा। शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में स्वतंत्र बंगला देश की सरकार अवामी लीग के हाथों में आ जायेगी तथा वहां लोकतंत्रवादी, धर्मनिरपेक्ष राज्य स्थापित होगा।

२५ मार्च से लेकर १५ अप्रैल तक पूर्व बंगाल में अराजकता की स्थिति व्याप्त थी। अपने देश के समाचार पत्रों में अतिरंजित समाचार प्रकाशित हुए। इन समाचारों में शेख मुजीबुर्रहमान का समर्थन और पाकिस्तान की असफलताओं का उल्लेख अधिक था। परन्तु सत्य कुछ और ही था। पाकिस्तानी सेना ने २५ मार्च को ढाका में मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार कर कत्ले-आम शुरू कर दिया था। सभी बड़े नगरों में पाकिस्तानी सैनिक घुस गये। उनके क्रूर अत्याचारों, भीषण नरमेध ने नादिरशाह, चंगेज खाँ और औरंगजेब के जुल्मों को भी मात कर दिया। आधुनिक युग में हिटलर या कम्युनिस्ट देशों के अत्याचार भी फीके पड़ गये। १५ अप्रैल तक ये अत्याचार पूर्व बंगाल के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी पर होते रहे परन्तु जैसे ही सेना ने स्थिति पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया, अत्याचारों का मुख्य शिकार वहाँ के हिन्दुओं को बनाया गया। १५ अप्रैल के बाद तानाशाही शासन ने पूर्वी बंगाल से सम्पूर्ण हिन्दुओं का विनाश करना अपना लक्ष्य बना लिया। स्थानीय मुस्लिम समाज ने भी भय, लोभ और स्वार्थवश सैनिक शासन का ही साथ दिया। पाकिस्तान के इन अत्याचारों का वर्णन करना सम्भव नहीं है। भारत आये हुए शरणार्थियों में प्रायः सभी हिन्दू हैं। भारत की शरण ग्रहण करनेवालों में नवयुवकों और युवतियों का अभाव है—बच्चे और वृद्ध ही अधिक हैं इसी से कल्पना की जा सकती है कि

हिन्दू नवयुवकों का वहां कितना भीषण संहार हुआ होगा। नवयुवतियों को वहीं रोक लिया गया है। लगभग १ करोड़ शरणार्थी अपना सब कुछ खोकर भारत आ गये हैं। पाकिस्तानी सेना के साथ-साथ स्थानीय मुस्लिम समाज ने भी हिन्दुओं पर अत्याचार किये हैं, इस कारण वे वापस जाने की बात सोच ही नहीं सकते। उनकी सम्पत्ति, धन-दौलत पर वहाँ के लोग कब्जा कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में आज के शरणार्थी अनेक वर्षों तक इस देश में शरणार्थी के रूप में ही रहने को बाध्य होंगे। यहां के समाचार पत्रों में जो समाचार छपते रहे, उसके पीछे भारत सरकार का भी कुछ दोष रहा है। उसने वास्तविक सत्य को जनता के समक्ष प्रकट नहीं होने दिया। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। कभी-कभी ठीक प्रकार की कल्पना न रहने के कारण भी गलत प्रचार हो जाता है। हमारी सरकार का एक गुप्तचर विभाग है उसकी अक्षमता का वर्णन 'चीन के आक्रमण में हमारी पराजय क्यों?' पुस्तक में हुआ है। हमारा गुप्तचर विभाग भी सही समय पर सूचनायें नहीं दे पाता।

सरकार को ऐसा लगा कि बंगला देश में पश्चिमी पाकिस्तान के खिलाफ विद्रोह शुरू हो गया है। यदि विद्रोह सफल हो गया तो दोनों पाकिस्तान अलग-अलग हो जायेंगे। पूर्वी बंगाल हमारा मित्र बन जायेगा। इसी कारण अवामी लीग और मुजीबुर्रहमान का धुंआधार प्रचार किया गया। ऐसी खबरें तक छपीं कि यह विद्रोह सफल होने जा रहा है—पूर्वी बंगाल मुक्त हो रहा है। इससे जनता में भ्रान्त धारणायें उत्पन्न हो गयीं। इस बात का जोर-शोर से प्रचार किया गया कि पाकिस्तान के दोनों भूभागों के बीच भारी दूरी होने के कारण विद्रोह दबाया न जा सकेगा। दोनों भागों में १२०० मील का अन्तर है। भारतीय क्षेत्र से होकर जाने के मार्ग बन्द होने के कारण समुद्री मार्ग से यह दूरी ३ हजार मील है। परन्तु आजकल की दुनियां में किसी नियमित और शस्त्रास्त्रों से युक्त सेना के विरुद्ध कोई भी समाज केवल अपनी राष्ट्रभक्ति के बल पर विजयी नहीं हो सकता। पूर्वी बंगाल की यही स्थिति थी। अन्ततोगत्वा सेना ने विद्रोह को कुचल डाला। पराधीनता के काल में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सेनाओं ने 'करो या मरो' का नारा दिया था। ८ अगस्त १९४२ की रात्रि में सभी नेता गिरफ्तार हो गये थे। ९ अगस्त से जनता नेतृत्वहीन हो गयी। उसने जहाँ, जो कुछ समझा, किया। कहीं पुल उड़ाये गये, कहीं रेल की पटरी तोड़ी गयी। ब्रिटिश सत्ता ने दस-पन्द्रह दिनों के अन्दर ही यह आन्दोलन कुचल डाला था। अवामी लीग के आन्दोलन का भी यही हाल हुआ है। शेख मुजीब पकड़ लिए गये। अवामी लीग के शेष नेता बंगला देश छोड़कर हिन्दुस्तान

(शेष पृष्ठ १५३ पर)

—प्रो० मुहम्मद अहमद
(अध्यक्ष, राष्ट्रीय अवामी पार्टी)

बंगला देश के मुक्ति संग्राम में जूझ रहे वीरों को पश्चिमी पाकिस्तान के छोटे-छोटे राज्यों की सहानुभूति प्राप्त है और यह सहानुभूति जल्द ही मूर्त रूप लेगी, इसकी पूरी-पूरी आशा है।

ये लोग उपयुक्त समय का इन्तजार कर रहे हैं। मौका मिलते ही वे बंगला देश की मदद पर आ जायेंगे। मेरी पार्टी ने पख्तूनिस्तान में भारी बहुमत प्राप्त किया है। वहां भी बंगला देश जैसा संघर्ष छिड़ सकता है। इधर सिंध और बिलोचिस्तान में भी असंतोष पनप रहा है बेचैनी बढ़ गई है। किसी भी दिन यहां आजादी के संघर्ष का बिगुल बज सकता है।

इन तीनों क्षेत्रों के दिल-दिमाग की बात वे जानते हैं, जो स्वायत्त शासन एवं प्रजातन्त्र के लिए तड़फ रहे हैं। जन० यहिया खाँ की फासिस्ट सरकार जनता से अलग-थलग पड़ गई है। असल बात तो यह है कि पख्तूनिस्तान सिंध एवं बिलोचिस्तान स्वशासन की पुकार में अग्रणी थे और बंगला देश की मांग तो सबसे अन्त में उठी थी। 'जय बंगला देश का नारा' तो 'जीये सिंध' के नारे के बाद में उठाया।

बंगला देश का संघर्ष पृथकतावादी नहीं है। पाकिस्तान कभी भी दमन में सफल नहीं होगा, मुक्ति संघर्ष वाले सफल होंगे। संघर्ष का सबसे बड़ा बल जनता की एकता है। मुख्य न्यायाधीश से लेकर चपरासी तक एक मन एक प्राण हैं। जनता पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध है। पराधीन भारत में अंग्रेजों का भी इतना बहिष्कार नहीं हुआ था जितना कि जन० यहिया खाँ की हुकूमत का है। यही एकता है, जिसने यहिया खाँ के कठपुतली सरकार बनाने के मंसूबों पर पानी फेर दिया है।

सबसे बड़ी बात यह है बंगला देश को तीन दिशाओं से घेरने वाले देश भारत की सहानुभूति उसे प्राप्त है। कुछ कमजोरियाँ भी जो दरगुजर नहीं की जा सकतीं। बंगला देश का संघर्ष मूलतः संवैधानिक था, सैनिक संघर्ष का इरादा था ही नहीं। जनता को सशस्त्र संघर्ष का अभ्यास या प्रशिक्षण भी नहीं मिला है।

इधर समाजवादी देश हमारी मदद नहीं कर रहे हैं और अमरीका व चीन पाकिस्तान को सरे-आम मदद कर रहे हैं। अरब देशों की चुप्पी भी अखरने वाली बात है। शस्त्रास्त्रों की कमी एक कमजोरी है।

मनुष्यत्व की आवाज

✲ केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

कुंठा, भय, संत्रास
तुम हर वक्त इनका नाम लेते हो
हर वक्त चौंकते हो
इनको अपना आराम देते हो
और मैं तुम्हें ढूंढ़ता फिरता हूं
तुम्हें भागते देखकर पुकारता हूं
तुम्हें कांपते देखकर सम्हालता हूं,
सँवारता हूं
चाहता हूं, तुम्हें अपने से अलग न
होने दूं
तुम्हें जगाये रखूं
पल-भर भी न सोने दूं
लेकिन तुम भागकर छिप जाते हो
उस अँधेरी कोठरी में
जहाँ दुर्गन्ध है, गीलापन है
तुम नहीं जानते, वह तुम्हारा मन है
चिल्लाता है
कुंठा, भय, संत्रास
तुमने मुझे पहचाना नहीं
मैं न कोई तत्त्व हूं, न कोई तत्त्वज्ञान
मैं तुम्हारा शुद्ध मनुष्यत्व हूं
जिसे तुम गाना नहीं चाहते वह गीत
जिसे तुम गढ़ना नहीं चाहते वह भविष्य
जिसे तुम छूना नहीं चाहते वह अतीत
इतने शोले, इतने वज्र, इतने तूफान
जिस स्रोत से तुम्हें एक ही जगह मिल सकें
मैं हूं वह वर्तमान
न कोई दर्शन, न कोई दिव्य विधान
तुम्हारा ही पांचजन्य, तुम्हारा ही गाण्डीव
हे सुशोभन ! हे चिरंजीव !
तुम्हारी धमनियों और शिराओं में जो
निरंतर प्रवाहित है
मैं वह रक्त हूं
पूछो सुलगते हुए सूर्य से
कि मैं कितना सशक्त हूं
तुमने जिसे दिया है आजीवन वन-वास
मैं हूं वह विश्वास
और तुम चीखते हो, चिल्लाते हो
कुंठा, भय, संत्रास
जब तुम गर्भ में आये थे
आसमान के सारे तारे उतरे थे
तपस्या की मुख-कांति देखने
साधना के हृत्तल में उमड़ने वाले
समुद्र की शांति देखने

बीज बढ़ता गया
तुम्हारे हर अंग को
कोई कुशल कलाकार गढ़ता गया
अमृत-मंत्र पढ़ता गया
पृथ्वी पुलकित हुई, प्रकाश मिला
प्रकाश झूम उठा, वाणी-विलास मिला
किंतु तुम चौंकते हो
तुम्हारी जीभ लड़खड़ाती है
कुंठा, भय, संत्रास
कुछ लोग ऐसे होते हैं जो
मेरे जिस्म में चीरे लगाकर कोढ़ उगाते हैं
क्या तुम वही हो
कुछ लोग ऐसे होते हैं जो
मेरे अंगों को मरोड़कर मुझे पंगु बनाते हैं
क्या तुम वही हो
कुछ लोग ऐसे होते हैं जो
मुझे दुर्गन्ध में उबालकर अपनी कीर्ति सजाते हैं
क्या तुम वही हो
कुछ लोग ऐसे होते हैं जो
मेरी आँखें निकालकर
कौवों और गीधों को बांटते हैं
क्या तुम वही हो
ओ मेरे अभिमान !
मत कहो कि तुम निर्वेद हो
मत कहो कि खेद हो
मुझे अपने पास रहने दो
ताकि ऐसा न लगे कि तुम सूने हो
मुझे अपने प्राणों में बहने दो
ताकि जब कोई तुम्हें छुए सिहर उठे
ऐसा न सोचे कि तुम श्मशान के नमूने हो

**

'फौजी शासक अपने को नेस्तनाबूद करने पर तुले हैं'

—विदेशमन्त्री स्वर्णसिंह

पाकिस्तान ने यदि बंगला देश में मुक्ति फौज की कार्रवाई से घबरा कर भारत पर आक्रमण करने का कोई बहाना बनाया तो देश अपनी रक्षा के लिए समुचित कार्रवाई करेगा।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल यहिया खां ने भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने की धमकी दी है और कहा है कि इस लड़ाई में पाकिस्तान अकेला नहीं रहेगा। इसका साफ मतलब है कि वह भारत पर हमला करने का कोई न कोई बहाना खोज रहे हैं। हम किसी भी हमले का जोरदार मुकाबला करेंगे।

शेख मुजीबुर्रहमान पर मुकदमा चलाने की जो बात जनरल यहिया खां ने कही है वह एक नाटक होगा, उसे मुकदमा कहना बिल्कुल गलत है। बंगला देश की जनता, अवामी लीग और कोई भी व्यक्ति ऐसे नाटक को स्वीकार नहीं करेगा। बन्द कमरे में मुकदमा कोई भी विदेशी वकील न रखने की पाबन्दी आदि ऐसी चीजें हैं जो अदालती कम और राजनीतिक ज्यादा हैं। इससे साफ जाहिर है कि राष्ट्रपति यहिया खां अपने २८ जून के भाषण के बाद आगे की कार्रवाई पर आमादा हैं।

अगर यहियाखां ने भारत पर हमला किया तो भारतीय फौजें भी कमर कसे हुए तैयार हैं। इस तरह का दुस्साहस करने से पाकिस्तान का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा और उसकी तबाही निश्चित है। पाकिस्तान के फौजी हुक्मरान अपने को नेस्तनाबूद करने पर तुले हुए हैं।

'मैं विभाजन का घोर विरोधी हूं'

हम ऐसे हर प्रयत्न का जो भारत को बांटने और टुकड़े-टुकड़े करने का होगा विरोध करते हैं। किसी देश का बंटवारा करना उसका सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक पतन है।

मैं मातृभूमि को टुकड़ों में काटने वाली पाकिस्तान की योजना का घोर विरोध करता हूं। यह एक झक्की विचार है। भारतवर्ष एक अविभाज्य इकाई है। पाकिस्तान का निर्माण हमारी समस्याओं का हल नहीं दे सकेगा। मैं उन लाखों मुस्लिम नवयुवकों से पूछता हूं, 'क्या तुम अपनी मातृभूमि का बँटवारा पसन्द करते हो?' विभाजित भारत में तुम्हारा क्या अस्तित्व हो सकता है? मेरे मित्रों! हमारी पवित्र भूमि के टुकड़े नहीं होने चाहिये। आजाद हिन्द जिन्दाबाद!

—सुभाषचन्द्र बोस

(बर्मा रेडियो, १२ सितम्बर सन् १९४४)

* स्व० राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

जिस समय हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बधाई दी गई कि उन्होंने हैदराबाद की कार्रवाई में सरकार को सहयोग दिया, तो एक मुसलमान नेता ने मुझसे प्रश्न किया कि 'क्या हिंद के मुसलमान हिंद से अलग हैं जो उन्हें बधाई दी गई ? पाकिस्तानी मुसलमान तो पाकिस्तान चले गए। अब तो हम हिन्दुस्तानी हैं।'

मेरा कहना है कि बधाई इसलिए दी गई कि मुसलमानों में, खासकर इस सूबे में, अलगाव की भावना अब भी है।

पाकिस्तान बनने से पहले यह जहर फैलाया गया था कि मुसलमान अलग हैं, हिन्दू अलग हैं। उस समय भी मैं मुसलमानों से कहता था कि देश के टुकड़े होने में तुम्हारा नुकसान है। पर उस समय वे चंग पर चढ़े हुए थे।

चुनाव के दिनों में वे चिल्लाते थे कि मुल्क के टुकड़े हों। देश बटने पर उन्होंने फिर नारा लगाया कि 'भारत माता कट गई।' 'माता' भी कहते थे और 'कट गई' ऐसा भी कहते थे। जो इस जहर से प्रभावित थे, उनमें से सौ में एक ही तो पाकिस्तान गया है। बाकी तो सब यहीं मौजूद हैं। हमारे सूबे के यही मुसलमान तो निजाम को शह देते थे। कासिम रिजवी इसी सूबे की देन

है। रजाकारों की अच्छी खासी तादाद इसी सूबे की है।

हम मुसलमानों को पास लाने के प्रयत्न में सदा रहे। उनके साथ भोजन किया, भाई-भाई का व्यवहार किया। 'खिलाफत आन्दोलन' मुसलमानों का प्रश्न होते हुए भी गाँधीजी के नेतृत्व में हिन्दुओं ने आन्दोलन में साथ दिया पर बाद में मुस्लिम लीग ने ताकत पकड़ी, नारे लगाये कि मुसलमान अलग हैं। यही नहीं, केवल यही भावना दृढ़ करने के लिए उन्होंने सन् १९४६ में कलकत्ते में दंगा करा दिया।

मुसलमानों का बच्चा-बच्चा कहता था कि हमें अलग मुल्क चाहिए। लखनऊ में मुसलमानों ने कहा कि वे हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते। वही मुस्लिम-लीग को वोट देते थे और वह चुनाव जीतती थी। आज हम वह सब कैसे भूल जायें?

मुहम्मद इस्माइल ने कहा था कि "हिंदू चाहे लंगोटी लगाये रहें (इशारा गांधीजी की ओर था) पर मुसलमान तो नहीं रह सकते।" उन्हें गांधी जी की सभ्यता से अरुचि थी। क्रिप्स ने पहले कहा था—

'Partition is no solution to Hindu Muslim Problem'

—विभाजन हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान नहीं है। पर वही चीज इंग्लैण्ड से चली और हम भी लीगियों के जाल में फँसे। मैंने विभाजन का विरोध किया था पर जितनी मैंने न नहीं सोची थी उतनी मार-काट हुई ऐसा संसार के इतिहास में कभी हुआ था।

विभाजन का मूल कारण अलग चुनाव (Separate Electorate) था सन् १९१६ में, लखनऊ कांग्रेस में हमारे नेताओं ने वह चीज देखी और लीगियों की बात मंजूर कर ली। अंगरेज इस चाल को खूब समझता था। लेडी मिण्ट ने अपनी डायरी में लिखा था कि 'आज वह चीज हुई है, जिससे अंग्रेजी राज्य कायम रहेगा।' फिर यह बात आयी कि मुसलमानों का राष्ट्र अलग है, संस्कृति अलग है।

मैं टूटे हृदय से यह बात कह रहा हूं। मेरी बात काँटे पर तौलिए। क्या आज हम समझें कि मि० जिन्ना के चेले बदल गये? इतनी जल्दी लोग बदल नहीं जाते आज भी ज्यादातर मुसलमान अलगाव (Isolation) चाहते हैं। और अगर वही चीज, वही नफरत मौजूद है तो कौन कह सकता है कि आगे फिर कभी पुनः कल की बात (विभाजन की मांग) सामने नहीं आ जायेगी?

अब बचे-खुचे देश की यदि रक्षा करनी है तो दो तमद्दुन (संस्कृतियां) नहीं चल सकतीं पर मुसलमानों के मन में अभी यह बात भरी है कि एक तमद्दुन इस्लामी है और एक हिन्दुओं की। इस भावना का बदल जाना इतना सरल नहीं है। चीन-जापान में मुसलमान वहां

संस्कृति से घुल-मिल गये हैं, कुरान शरीफ चीनी भाषा में पढ़ते हैं, नाम भी वैसा ही रखते हैं।

यहां रहकर, यहां के मुसलमान गंगा-यमुना नहीं, सर-आमू का सपना देखते हैं; कोकिल और कमल उन्हें नहीं रुचते, उन्हें तो बुलबुल और गुलाब चाहिए। कितने दुःख की बात है कि बहादुरी का वर्णन करते समय उन्हें सोहराब और रुस्तम याद आते हैं, पर अर्जुन और भीम कभी नहीं। रोजे के मौके पर छुहारा उन्हें इसलिए प्यारा है कि उसका ताल्लुक अरब से है।

मैं साफ-साफ कहता हूं कि यदि यहां के मुसलमान यह सोचते हों कि कुरान शरीफ उनको यहां की संस्कृति से अलग रहना ही सिखाती है तो मुझे इस उसूल से खौफ है। मैं चेतावनी देता हूं कि बार-बार यदि अलहदा तमद्दुन (पृथक् संस्कृति) सामने आती है तो जहर फिर फैलेगा। मेरे सामने ७०-८० वर्ष का इतिहास रखा हुआ है। मजहब के नाम पर अलग लिपि नहीं चल सकती। बंगाल का मुसलमान बंगाली लिपि मानता है तो यहां उर्दू के लिए क्यों हठ होता है?

हमारे अन्दर जैसे हूण और शक पच गये, बौद्ध और जैन अलग नहीं दिखायी देते, वैसे ही मुसलमान अलग नहीं दिखायी देने चाहिए। हम अपना दिल बड़ा करें। कोई किसी प्रांत का हो, पर एक मौलिक बात पर हम सबको एक ही रहना चाहिए। **

(लखनऊ, २ अक्तूबर' ४८)

मुक्तक

✲

बुझा सके न अगर आग तो पानी क्या है
बढ़े न वायु वेग से तो रवानी क्या है
देश को देखकर खतरे में खून न खौला
उससे बेहतर है बुढ़ापा, वो जवानी क्या है?

✲

राख हैं लेकिन छिपा अंगार रखते हैं
सिन्धु हैं उर में हमेशा ज्वार रखते हैं
हैं अहिंसक किन्तु रक्षा देश की करने
हैं कलमधारी मगर तलवार रखते हैं।

✲

* गिरिमोहन 'गुरु'

घुप्प अंधेरा, कर्फ्यू की रात का सन्नाटा !

'गंगू की गली' के दोनों ओर के दुमञ्जिले-तिमंजिले मकानों की किसी भी खिड़की या दरवाजे की सांधों से कहीं प्रकाश नहीं छन रहा था। मकानों में मनुष्यों के होने का कोई संकेत नहीं था। बाजार से गली में आने वाले बिजली के तार और कमेटी के लैम्प चार दिन पहले ही बाजार में आग लग जाने से बेकाम हो गये थे। उजड़े हुए मकानों के त्रास से गली का अँधेरा अधिक घना और भारी हो रहा था। गली के बाहर दायें-बायें 'सैद मिट्ठा' बाजार में भी सन्नाटा था। उजड़े हुए बाजारों में शेष रह गये बिजली के लैम्पों का प्रकाश सूनेपन की उदासी को और बढ़ा रहा था।

गुलजार और गुंजान लाहौर नगर देश के बँटवारे के परस्पर त्रास से भयभीत और सुन्न हो गया था। साम्प्रदायिक घृणा से परस्पर संहार और ध्वंस का उन्माद फैल गया था। उस संहार को रोकने के लिए सरकार ने कर्फ्यू लगा दिया था। कर्फ्यू के भय से रात का सन्नाटा और भी बोझिल तथा गाढ़ा हो गया था। नगर में भरे भय और सन्नाटे पर अगस्त मास के बादलों ने ऐसा ढक्कन चढ़ा दिया था कि हवा भी हिल नहीं सकती थी।

गंगू की गली के सब हिन्दू परिवार १३ अगस्त की सुबह तक भाग गये थे; रह गयी थी केवल मूला (मूलादेई) ताई। बाजार की ओर गली के मुहाने पर छोटी दूकानों में बैठने वाले मुसलमान—नियामत दर्जी, रशीद कलईगर, नज्जू पटुआ और लतीफ नेचे वाला अगस्त के आरम्भ से ही भय के मारे वहां नहीं आ रहे थे। केवल नुक्कड़ की दूकान वाला ललारी (रंगरेज) फज्जे और उसका बेटा नसरू ही लाचारी में वहां रह गये थे। दुकान की चार हाथ लम्बी और छः हाथ से चौड़ी कोठरी में ही उनका घर भी था।

फज्जे की नीची और छोटी कोठरी या दूकान की छत की धन्नियों में बहुत सी अलगनें बँधी हुई थीं। अलगनें अब सूनी थीं। अच्छे दिनों में फज्जे और नसरू दिन भर में जो भी पगड़ियाँ, साड़ियाँ या चुन्नियाँ रंगकर, कलफ और

कहानी विभाजन की

अबरक लगाकर तैयार करते, अलगनियों पर लटका देते थे। कोठरी में एक बिना किवाड़ों की अलमारी थी। उसमें रंगों की पुड़िया, डिब्बियाँ और सकोरे रखे हुए थे। एक कोने में बाप-बेटे की सम्पत्ति—अलमोनियम का टोंटीदार लोटा, देगची और एक तश्तरी कटोरी के अतिरिक्त पहनने के दो-चार कपड़े चटाई पर पड़े रहते थे। कपड़ा रंगने की मिट्टी की तीनों नांदें और कलफ पकाने की हांडी वे लोग रात में कोठरी की दहलीज पर लगे बैठक के तख्ते के नीचे रख देते थे। पानी का मटका गली में दीवार के साथ रखा रहता था। फज्जे और नसरू को कोठरी में सोने की आवश्यकता केवल लाहौर के कड़े जाड़े और बरसात की रातों में ही होती थी, वरना फज्जे रात दुकान के पटरे पर काट देता था और नसरू गली में आने-जाने वालों के लिए रास्ता छोड़कर चटाई डालकर लेट जाता था। वहीं से वह कभी-कभी पहर रात तक 'हीर' या 'टप्पे' गाता रहता था।

नसरू और रमेश में 'हीर' और 'टप्पों' की प्रतिद्वन्द्विता खूब जमती थी। रमेश का परिवार फज्जे की दुकान से तीसरे मकान में, ऊपर की मंजिल में रहता था। रमेश मकान की खिड़की में बैठकर, दोनों कानों पर हाथ रखकर पूरे स्वर से गाता और नसरू गली में चटाई पर बैठा ऊँचे स्वर में गाने के

लिए कान पर हाथ रख, रमेश की खिड़की की ओर मुंह उठाकर उसका उत्तर देता। कभी दोनों रमेश के मकान के चबूतरे पर बैठकर साथ-साथ भी गाते।

जुलाई १९४७ के अन्त तक 'सैद-मिट्ठा' में हिन्दुओं का जोर था। बाजार में तीन-चार मुसलमान मारे जा चुके थे। अब मुसलमान उस बाजार से नहीं गुजरते थे। इसलिए गंगू की गली में मुसलमानों की छोटी-छोटी दुकानें बन्द हो गई थीं। गंगू की गली में दूसरे मुसलमानों की दुकानें बन्द हो जाने पर भी फज्जे और नसरू वहीं बने थे। फज्जे अपना भय छिपाये, सबके साईं—अल्लाह का भरोसा किये बैठा था। उसे गली से अपने चालीस वर्ष के सम्पर्क का भी भरोसा था। मुद्दतों से गली के सब बच्चे बच्चियाँ और युवा-युवतियाँ उसे मामा कहते आये थे। बहू-बेटियाँ सिर पर आंचल लिए बिना भी उसे रँगने के लिए चुन्नियां, साड़ियाँ और पगड़ियाँ थमा जाती थीं। रंग मन माफिक न होने या कलफ और अबरक कम होने पर उससे लड़ भी लेती थीं। लड़के कटी पतंग जोड़ने के लिए उसकी कलफ की हाड़ी से उंगलियां भर-भर के कलफ लेकर भाग जाते थे।

फज्जे जोर से चिल्लाता—'नसरू पकड़ ले चोरों को। इनका बेड़ा···और समीप खड़ा गली में खूब ऊंची बंधी रस्सियों पर कपड़े डालने के लिए काम आने वाला दस हाथ लम्बा, पतला बांस उठाने लगता। तब तक बच्चे कुलांचे मार कर अपने घरों की छतों पर पहुंच जाते थे। गली के सभी लोगों, बूढ़ियों और बेटियों तक के नाम उसे मालूम थे। वह कहां जाता? अन्यत्र उसका कौन अपना था?

गंगू की गली में मुसलमानों की दुकानें बन्द हो जाना हिन्दुओं ने अपनी विजय समझी थी और कुछ हिन्दुओं को फज्जे और नसरू का अपनी कोठरी से भाग न जाना चुनौती जान पड़ी थी। अब उन्हें रंगने के लिए कपड़े कोई न देता था। कर्मचन्द ने उभरती रेखों के रोयें मरोड़कर फज्जे को धमका भी दिया था—"क्यों मियाँ, क्या सलाह है?"

फज्जे ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया था—बादशाहो, मालिकों, तुम्हारी जो सलाह हो, हुकुम हो। चालीस बरस से इस गली का नमक खा रहे हैं, कोई दूसरी जगह अपनी है नहीं। तुम धक्का दे दोगे तो निकल जायेंगे। हमें तो जाने को कोई जगह नहीं है! बादशाहो, ऐसी आंधियां तो आती-जाती रहती हैं। सिर गरम करने से क्या फायदा?"

हरचरण पंसारी ने बीच-बचाव कर दिया था—"रहने दो! रहने दो! क्या लेते हैं किसी का? कल गली की बेटियों-बहुओं को धोतियां, चुन्नियां रंगाने की जरूरत होगी तो कौन आयेगा?" परन्तु कर्मचन्द का सात वर्ष का छोटा भाई धर्मचन्द और रमेश का छोटा भाई राजेश अपनी साम्प्रदायिक उत्तेजना वश

नहीं कर सके। उन्होंने लट्टू मार-मार कर फज्जे का गली में रखा मटका तोड़ ही डाला। गली में ऐसी घटना पन्द्रह दिन पूर्व हुई होती तो बालकों पर डांट-फटकार पड़ती। उस समय बालकों से किसी ने कुछ नहीं कहा।

नसरू का खून इतना सर्द नहीं था। मटका तोड़ दिये जाने पर उसका खून उबल उठा। वह काफ़िर हिन्दुओं से अपमान नहीं सहन कर सकता था। शहर के दूसरे मुसलमान जो कुछ कर रहे थे, नसरू भी करना चाहता था। वह भी पाकिस्तान की स्थापना के धर्म-युद्ध में भाग लेने की उमंग हृदय में दबाये हुए था परन्तु डरपोक बाप की जिद्द से मजबूर था। बूढ़े बाप को हिन्दुओं के गढ़ में अकेला छोड़कर कैसे चला जाता, नसरू कुछ दिन पहले से ही बाप से गली छोड़ जाने का आग्रह कर रहा था। कर्मचन्द के धमकाने और मटका तोड़ दिये जाने पर नसरू ने क्रोध में दांत पीसकर बाप से कहा-"इन काफिरों... अब यहां गुजारा नहीं। दूसरी जगह कोठरी नहीं मिलेगी तो किसी मस्जिद या दरगाह में ही पड़े रहेंगे।"

फज्जे ने बेटे को दबे स्वर में डांट दिया-"चुप रह, सूर दिया तुख्म (सुअर के बीज) बड़ा दुर्रे खां बनता है। ऐसी नोक-झोंक हुआ ही करती है। बेवकूफों की बातें.........यह दुकान मेरे बाप ने जमाई थी। तू इसी कोठरी में पदा हुआ था। इसी गली की औरतों ने तेरी मां को संभाला था। इसी कोठरी में वह मरी। इसी गली का नमक खाकर तेरे हाथ-पांव लगे हैं। चुप बैठा, रह, सब ठीक हो जायेगा।"

फज्जे ने हिन्दुओं से पाया अपमान निगलकर उल्टे नसरू को ही डांट दिया तो नौजवान बेटे की आंखों में पानी आ गया। वह आंसुओं का घूंट भरकर बोल उठा-"तुम मुसलमान नहीं हो।"

फज्जे को और भी क्रोध आ गया-"तेरी मां नूं सूर......तू बड़ा मुसलमान है! तू ही बड़ा दीनदार गाजी है! तेरा दादा मुसलमान नहीं था? तू किस मुसलमान का तुख्म है? तू नया मुसल-मान बनेगा? चुप रह।"

अगस्त १९४७ के दूसरे सप्ताह से सैदमिट्ठा बाजार में स्थिति बदल गयी थी। दो बार मुसलमानों की भीड़ का आक्रमण हो चुका था। हिन्दुओं के बहुत से मकान और दुकानें जला दी गयीं थीं दुकानें प्राय: जला दी गयी थीं। दुकानें प्राय: बन्द ही रहती थीं। गंगू की गली में सभी घर हिन्दुओं के थे। लाहौर से हजारों हिन्दू परिवार भाग चुके थे। यह समाचार पाकर भी गंगू की गली के हिन्दुओं ने डटे रहने का निश्चय प्रकट किया-हमें औरंगजेब और नादिर खां नहीं डरा सके, जिन्ना और मुस्लिम लीग की क्या औकात है हम न अपना धर्म छोड़ेंगे और न अपना घर छोड़ेंगे परन्तु सैदमिट्ठा में आग, कत्ल और लूट की अनेक घटनायें हो जाने पर कई

परिवार खिसक गये और फिर सभी जल्दी से जल्दी भाग जाने के लिए उतावले हो गये। रह गई केवल मूलां ताई।

मूलां ताई छब्बीस बरस पहले विधवा हो चुकी थी। भगवान ने उसे तीन कन्यायें दी थीं। मूला के पति पैतृक सम्पति का बँटवारा करके अपने भाइयों से अलग हो चुके थे। मूलां ताई की भी अपने जेठ-देवरों से नहीं बनती थी। उसे सदा ही सम्बन्धियों से ठगे जाने की आशंका बनी रहती थी। उसने गंगू की गली में अपने बड़े मकान में दो किरायेदार रख लिये थे। सोने का जेवर बेच दिया था और गुप-चुप दूसरों का जेवर रेहन रखकर रुपया सूद पर चलाती रहती थी। सबसे छोटी लड़की का विवाह हुए भी चौदह वर्ष हो गये थे। तब से उसने मकान में एक और किरायेदार बसा लिया था। अपने किरायेदारों से उसका सम्बन्ध किराया लेने मात्र का था। किराया मिलने में चार दिन का भी विलम्ब होने से उसका बोल कड़वा हो जाता था। उसे पड़ोसियों से भी कोई मतलब न था। उसका दिन ठाकुर जी की पूजा और जप पाठ में ही बीतता था।

गली के हिन्दू परिवार भागने लगे तो मूलां ताई को अपने मकान और गुप्त सम्पत्ति का लोभ जकड़े रहा। उसका किसी से सौजन्य नहीं था। वह संसार में 'ठाकुरजी' के अतिरिक्त किसी को अपना नहीं समझती थी। उसे सब पर संदेह था। पड़ोसी उसका सिड़ीपन देख कर विस्मय प्रकट करते थे, बुढ़िया रुपैये का क्या करेगी? शायद कोई मन्दिर-धर्मशाला बनवाकर नाम कर जाना चाहती है। उस विकट संकट के समय किसी ने सहानुभूति से बुढ़िया का बोझ अपने कन्धे पर ले लेने का निमंत्रण नहीं दिया। सूनी गली में मूलां अपने उजड़े मकान में ठाकुर जी के भरोसे अकेली रह गयी थी और नीचे गली के नुक्कड़ की कोठरी में रह गया था फ़ज्जे ललारी अपने बेटे नसरू के साथ।

० ० ०

साम्प्रदायिक उपद्रव आरम्भ होने से पहले फज्जे का गंगू की गली के सभी परिवारों से कुछ न कुछ सम्पर्क रहता ही था। मूलां ताई की छोटी लड़की का विवाह हो जाने के बाद से मूलां ताई का फज्जे से वास्ता केवल मास के आरम्भ पिछले मास का किराया मांगने का ही रह गया था। फज्जे दो-तीन बार तकाजे के बिना किराया नहीं चुकाता था। मूलां ताई को उसे किराये के लिए चेतावनी देनी होती तो ठाकुरजी की पिटारी लेकर मकान के चबूतरे पर फज्जे के मकान की ओर मुंह करके बैठ जाती और ठाकुरजी की पूजा के लिए स्नान कराते-कराते किराया समय पर न मिलने के लिए खिन्नता प्रकट कर देती।

फज्जे गली के लोगों को अपना लता पता और सामान लिए भागते देखता तो उसकी आह निकल जाती—"या अल्लाह

कैसी कयामत आ गयी। सब लोग चले जायेंगे तो इस उजाड़ में गुजर कैसे होगी? भूतों के इस डेरे में हम अकेले कैसे रहेंगे?"

नौजवान नसरू को भय से भागते काफिरों को देखकर उत्साह अनुभव हो रहा था। वह दांत पीसकर कहता—जाने दो जहन्नुम में हरामी काफिरों को, पाकिस्तान में काफिरों का क्या काम!"

फज्जे जानेवाले परिवारों को गिनता जा रहा था, कौन लोग चले गये और कौन रह गये। १३ अगस्त को सुबह ही साधूराम और जमनादास के परिवार भी चले गये तो उसने बहुत उदासी से बेटे की ओर देखा—"बस, बूढ़ी मूलां ताई ही रह गयी।"

नसरू ने मुंह बिचकाकर उपेक्षा से कह दिया—"वो डायन कहां जायेगी! अपना सोना-चांदी गाड़े उस पर सांप बनी बैठी है। वह मां...कहां जायेगी।"

उस दिन दोपहर के समय साम्प्रदायिक उत्तेजना से बावले आवारा मुसलमानों की भीड़ ने हीरामण्डी की ओर से सैदमिट्ठा बाजार पर हल्ला बोल दिया। हिन्दू अपनी दूकानों में भारी-भारी ताले लगाकर चले गये थे। भीड़ 'पाकिस्तान जिन्दाबाद!' अल्लाह हो अकबर! सल्तनते-इलाही जिंदाबाद! के नारे लगा रही थी। दुकानों के ताले तोड़कर माल लूट रही थी। लुटेरे बजाजी की दुकानों से रेशम, मखमल के, मलमल थान उठा-उठा कर भागने लगे। कोई पंसारी और परचून की दुकानों से बादाम, किशमिश, छुहारे, आटा, सूजी, चीनी की बोरियां लेकर भाग रहे थे। किसी दूकान के पीतल-कांसे के बर्तन लूटे जा रहे थे। कुछ लोग शर्राफे की दूकानों पर पिल पड़े थे। हल्ला सुनकर फज्जे और नसरू भी गली के मुंह पर आ गये थे। नसरू के मुंह में पानी भर आया, बोला—"अब्बा, मैं भी एक आध थान लट्ठा, मलमल या चीनी की बोरी उठा लाऊं?"

फज्जे ने घृणा से डांट दिया, "चुप रह सूर देआ तुख्मा।"

नसरू ने तर्क किया—"क्यों, सब ले जा रहे हैं। कहते हैं 'माले गनीमत' (धर्मयुद्ध का प्रसाद) है।"

फज्जे ने और क्रोध से डांटा—"सूर के...ताले तोड़कर, सेंध लगाकर चोरी-डाका डालना जिहाद (धर्मयुद्ध) है! यह 'माले गनीमत' है या सूअर का गूं!" फज्जे घृणा से एक ओर थूक कर लौट गया और अपनी दूकान के पटरे पर जा बैठा।

नसरू की धर्मोत्तेजना पिता की फटकार सुनकर भी शांत नहीं हुई। वह आगे बढ़ गया और भीड़ के साथ नारे लगाता हुआ 'लुहारी मण्डी' की ओर चला गया। रास्ते में कत्ल किए हुए हिन्दुओं की तीन लाशें देख कर उसकी उत्तेजना और धर्मोत्साह अधिक बढ़ गया। धर्मयुद्ध में जूझ जाने के लिए बांहें फड़कने लगीं।

• • •

लाहौर के बाजारों में लूट और ध्वंस इतना बढ़ गया था कि चौथे पहर व्यवस्था कायम रखने के लिए सशस्त्र सिपाहियों से भरी फौजी लारियां दौड़ी चली आयीं। बाजारों में राइफलों के फायर धांय-धांय गूंजने लगे। जहां भीड़ दिखायी देती, सिपाही गोली चला देते। फज्जे अपनी दूकान के पटरे पर बैठा बाजार की ओर देख रहा था। गली के सामने एक आदमी पीतल की बड़ी परात लिए भाग रहा था। आदमी चीख कर गिर पड़ा, साथ ही बन्दूक चलने की धांय और परात बाजार में गिरने की झंकार से बाजार गूंज गया। फज्जे का कलेजा धक से रह गया—हाय नसरू!

बाजारों और गलियों में सिपाही तैनात कर दिये गये थे। कर्फ्यू हो गया था। तीन आदमियों को भी एक साथ चलने की आज्ञा नहीं रही थी। ऐलान हो गया—सांझ सात बजे, कमेटी की बिजली जल जाने के बाद जो भी शख्स बाजार में निकलेगा उसे गोली मार दी जायेगी।

कर्फ्यू का ऐलान हुआ तो नसरू गली में लौटा नहीं था। फज्जे का दिल मुंह को आ रहा था, आँखों में आँसू उमड़े आ रहे थे। नौजवान बेटे के अल्हड़पन के प्रति क्रोध से उसके मुंह में बार-बार गालियां आ रही थीं—कमबख्त का दिमाग फिर गया है। इसे क्या हो गया?

बिजली जलने से पहले ही नसरू लौट आया तो फज्जे की जान में जान आयी। उसने लड़के को डांटा—"चल···कोठरी में बैठ। खबरदार बाहर निकला। सिपाही की बन्दूक की गोली से पागल कुत्ते की मौत मर जायेगा तो सब गाजीपन निकल जायेगा।"

नसरू ने बेपरवाही से कहा—"अरे, हो क्या गया? अब तो फौज भी अपनी है, सब मुसलमान भाई हैं। काफिर तो सब गये। लोगों ने पांच-पांच सेर सोना बटोर लिया है बजाजी से घर भर लिया है।"

नसरू का मन अपने सम्प्रदाय की विजय से उमंग रहा था। वह 'लुहारी मण्डी' से एक छुरा भी लेता आया था, बूढ़ा बाप छुरा देखकर डर न जाये, इसलिए छुरे को तहमद में खोंसे था।

फज्जे और नसरू सात बजे कर्फ्यू का बिगुल सुनकर अपनी कोठरी में हो गये थे। फज्जे का मन रोटी सेंकने को न हुआ। नसरू ने भी परवाह न की। कोठरी में बिछी चारपाई पर दोनों पास-पास पड़े थे। गली में अँधेरा घना हो गया था और कोठरी में उससे भी अधिक। वायु बिलकुल निश्चित और सुन्न थी। आकाश में घने परन्तु खुश्क बादल छा गये थे। घने बादलों का ढक्कन धूप में तपे मकानों से उठती गर्मी और उमस को शहर पर दबाये था। पूरा शहर स्तब्ध था। हवा भी सांस रोके थी।

कोठरी में लेटे फज्जे और नसरू के

शरीर से पसीना तेल की तरह निकल रहा था।

फज्जे ने कुर्त्ता-तहमद उतार कर केवल लंगोट पहन लिया था। नसरू के शरीर पर भी कुर्त्ता नहीं था। टांगों से चिप-चिप से बचाने के लिए तहमद कमर पर समेटे था। कर्फ्यू और उमस भरी गर्मी के आतंक से दोनों ही चुप और खिन्न थे। कोठरी में खजूर की उखड़ी एक पंखी थी। फज्जे पंखी से अपने और नसरू के शरीर को हवा कर रहा था। बांह थक जाती तो पंखी को नसरू के सीने पर फेंक देता। नसरू पंखी से अपने और पिता के शरीर पर हवा करने लगता। दोनों चुपचाप एक दूसरे से खिन्न, परिस्थिति से खिन्न, बारी-बारी से पंखी चलाये जा रहे थे। नींद ही उन्हें आराम दे सकती थी। नींद गर्मी के कारण आ नहीं रही थी। नींद न आने के कारण घबराहट बढ़ती जा रही थी। भय भरे सन्नाटे में बाजार के फर्श पर कर्फ्यू के पहरेदार सशस्त्र सिपाहियों के फौजी बूटों की आहट उनके भय और बेबसी को और भी कड़ुआ बनाये दे रही थी।

रात का एक पहर बीत गया था। नींद न फज्जे को आ सकी, न नसरू को। नसरू पसीने से भीगी खजूर की चटाई पर बार-बार पीठ चिपक जाने से चिढ़ गया। उसने पंखी बाप को दे दी और चटाई से उठकर हवा के लिए कोठरी की दहलीज पर उकड़ूं बैठ गया।

नसरू गली में कदमों की धीमी चाप सुनकर चौंका। उसकी आंखें आहट की ओर घूम गयीं। देखा सूनी गली के अंधेरे में मूलां ताई अपनी धोती-चादर में सिमटी हुई, दबे पांव बाजार की ओर जा रही थी। नसरू ने पिता की ओर देखा, दबे स्वर में बोला—"देख, बूढ़ी मूलां छिपकर भाग रही है।"

फज्जे ने पंखी से हवा लेते हुए लेटे-लेटे ही कह दिया—"होगा...अकेली डर गयी होगी। अल्लाह ही बचाने वाला है।"

नसरू ने गली से बाजार में कदम रखती बुढ़िया की ओर ध्यान से देखा। "काफिर गठरी में अपनी रकम दबाये लिए जा रही है........" उसके मुंह से निकला—और उत्तेजना से उसके रोंये खड़े हो गये।

'होगा, उसे अल्ला रखे, तुझे क्या?' फज्जे ने करुणा से कह दिया।

नसरू पिता की बात पूरी होने से पहले ही दहलीज से कूदकर बुढ़िया के पीछे बाजार की ओर भाग गया था।

फज्जे बेटे को प्राण संकट में डालने के लिए बाजार की ओर भागते देख कर घबरा गया और बेबस क्षोभ में—'तेरी मां नूं सूर...'गाली देते हुए बेटे को रोकने के लिए उसके पीछे भागा।

बूढ़ा फज्जे शिथिल कदमों से डगमगाता बाजार तक पहुंचा तो नसरू ने बाजार में चालीस कदम दूर बिजली के खम्भे के समीप मूलां ताई की पसली

जन-जीवन सब अस्त-व्यस्त है,
मन आहत, तन क्षुधा-ग्रस्त है।
भूख-प्यास से प्राण निपीडित,
लगता है, पन्द्रह अगस्त है॥
भला मिला स्वातंत्र्य देश को,
शासक सब वैभव ले भागे।
गद्दीधर के हाथ बिक गये,
मेहनतकश इंसान अभागे।
झोपड़ियों को वोट खा गये,
मानव इतना खुदपरस्त है।
लगता है, पन्द्रह अगस्त है॥
दुर्दिन गये, भले दिन आये,
जय आजादी, बड़ा ठाठ है।
नेता खुश हैं, मंत्री खुश हैं,
स्वतंत्रता की वर्ष-गांठ है।
रोये केवल भाग्य देश का,
सेवक खुश पौरिया मस्त है।
लगता है, पन्द्रह अगस्त है॥
प्रश्न-चिन्ह सा तना वृद्ध-तन,
देख रहा पीछे मुड़-मुड़कर।
क्या कुछ शेष उजड़ने को है?
क्या नव निर्मित हुआ उजड़कर,
नया रक्त कर्तव्य-निष्ठ सा-
देख रहा, भावनापस्त है।
लगता है, पन्द्रह अगस्त है॥

—अशोक त्रिपाठी 'प्रिय'

में छुरा भोंक दिया था और उसकी गठरी छीनकर दौड़ा आ रहा था।

क्रोध से कांपता हुआ फज्जे बेटे को ढकेल कर कोठरी में ले गया।

नसरू ने सफलता के उल्लास से कहा—"काफिर बुढ़िया सब कुछ लिए भागी जा रही थी।" वह जल्दी-जल्दी गठरी खोलने लगा।

फज्जे दम फूल जाने के कारण सिर को दोनों हाथों से पकड़कर बैठ गया था। उसकी सांस तेज चल रही थी। मुंह से बोल नहीं निकल रहा था। न हाथों में शक्ति थी कि बेटे को बुढ़िया का कत्ल करके छीनी हुई गठरी खोलने से रोक सकता और गठरी उठाकर फेंक देता।

नसरू ने गठरी खोल डाली और गठरी में बँधी पिटारी का ढक्कन झटके से उठा लिया—"माँ......काफिर बुढ़िया भागी तो पिटारी में अपने पत्थर के खुदा को लिए जा रही थी।" वह विद्रूप मे हँस पड़ा।

फज्जे की आँख अँधेरे में भी क्रोध से लाल दिख रही थीं। उसने बेटे को सुरक्षित देखकर क्रोध और ग्लानि से लानत दी— "ओ ऐं, तेरी माँ नूँ सूर .....बेड़ा गरक होये तेरा, मासूम बूढ़ी की कत्ल कर दिया। काफिर अपने पत्थर के खुदा को लिए जा रही थी। अपने पत्थर के खुदा से तेरे खुदा का सिर फोड़ देती। तू बड़ा गाजी है, तूने अपने खुदा को बचा लिया।"*

मैं पाकिस्तान को हिन्दुस्तान में ही हमेशा से मानता आया हूं। दरअसल यह बंटवारा एकदम अस्वाभाविक था। अननैचुरल। देर-सवेर इन दोनों हिस्सों को एक होना ही है। गलती हमारे अपने लीडरों ने की। मानता हूं जिन्ना अलग देश की मांग कर रहे थे। उनकी बात समझ में आती हैं, लेकिन दरअसल ज्यादा बड़ा कसूर हमारे नेताओं का है जिन्होंने बार-बार इस बात को दोहराया कि वे इस देश का बँटवारा नहीं होने देंगे और फिर उन्होंने ही इस बंटवारे को मंजूर कर लिया। हमारे नेताओं ने ही हमें लेट-डाउन किया है।

रही शब्द की धारणा। हिन्दू किसी मजहब का नाम नहीं हो सकता। इत्तफाक कहिए या कुछ और, यह लफ्ज भी फारसी से ही आया है। हिंदू नाम एक राष्ट्रीयता का है। इसी के अनुसार इस देश के वासी हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि न होकर मुसलमान हिंदू, ईसाई हिंदू आदि होने चाहिए। बखेड़े की जड़ें हमारी इतिहास की पुस्तकों में हैं।

हद तो यह है कि डा० ताराचंद और डा० बनारसीप्रसाद जैसे विद्वान इतिहासकारों ने भी ब्रिटिश कालके पूर्व के १२०० बरसों के इतिहास को मुस्लिम पीरियड का नाम दिया है। सारा घपला इसीसे शुरू होता है। यानी यहां मुगल भी मुसलमान हैं, अफगान भी, गुलाम भी मुसलमान हैं और सैयद भी। भारतीय इतिहास के और किसी भी काल को मजहब के साथ नहीं जोड़ा गया। यह 'इंडो-मुस्लिम' नामकरण वैसे भी गलत है। इंडिया या भारत यानी एक देश के नाम के साथ होता तो दूसरे किसी देश या जाति का नाम होना चाहिए था। किसी मजहब का कैसे जोड़ दिया गया, मेरी समझ में नहीं आता। दरअसल यह उसी अंग्रेज साजिश का नतीजा है जिसकी नींव गिलक्रिस्ट ने फोर्ट विलियम में निहायत मासूमियत से रख दी थी, हिंदी और उर्दू की अलग-अलग किताबें लिखवाना शुरू करके, हम अंग्रेज के हाथों में खेल गये। अब तक खेल रहे हैं। आज हमारी यूनिवर्सिटियां क्षेत्रीय नागरिक पैदा कर रही हैं। क्षेत्रीय नायक पूजा की बहार आ गयी है।

"मैं पाकिस्तान को हिन्दुस्तान में ही मानता हूं।"

* डा० राही मासूम रजा

गांधी-नेहरू का बिंब टूट कर बिखर गया है। हमारा राष्ट्रीय बिंब कोई है ही नहीं। यह सब गलत किताबों का नतीजा है। हमारे यहां किस-किस तरह की बेवकूफियां हो जाती हैं और उनकी तरफ कोई ध्यान भी नहीं देता, इसका एक उदाहरण आपको देता हूं। च्युइंग कम्पनी ने बच्चों के लिए कोई प्रतियोगिता-सी चालू कर रखी है। मेरा लड़का बीस-बीस रुपये की च्युइंग खरीद लाता है, और इसके लिए उसने एक बार पैसे चुराये भी औरमारभी खायी। इन्होंने कोई नक्शा-सा बनाया है, जिसमें बहुत-से देशों के नाम हैं, रूस, चीन, पाकिस्तान और ऐसे ही कश्मीर! मुझे हैरानी हुई। कश्मीर इनके लिए एक देश है। अब बताइए, अगर बच्चों के दिमाग में यह बात बैठ गयी तो फिर उसे आप जिंदगी भर निकाल पायेंगे क्या?

इतिहास की पढ़ाई अगर दस साल तक रोक दी जाये, तो उससे कोई नुकसान नहीं होगा। पढ़ने से होगा। जरूरी है कि इतिहास की किताबें दुबारा लिखी जायें। अतीत की घटनाओं की पुनः व्याख्या की जानी चाहिए, उनका पुनर्विश्लेषण भी निहायत आवश्यक है। मैं तो कहता हूं कि पूरे भारत में इतिहास की एक ही किताब पढ़ायी जाये।

दरअसल हिंदू शब्द की गलत व्याख्या ही बार-बार हमारे आड़े आ जाती है। मेरी नजर में तो गोलकुंडा की मस्जिदें सबसे ज्यादा हिंदू हैं, जिनके खंभे नीचे से कमल के आकार के हैं और ऊपर दीपक के आकार के, और इन दो चीजों का हिंदू संस्कृति में कितना महत्त्व है, यह सब जानते हैं। ताज्जुब की बात तो यह है कि गोलकुंडा के बादशाह कट्टर मजहबी थे। मेरी नजर में तो इन मस्जिदों और भारत के ताजियों से ज्यादा और कोई चीज हिन्दू है ही नहीं। इतिहास की नयी व्याख्या की जानी चाहिए। तभी शायद हम जान पायेंगे कि शिवाजी और प्रताप, राणा सांगा और शेरशाह, इब्राहीम लोधी और चांद बीबी, इनकी, सही जगह कहां और क्या है। मैं पूछता हूं अगर प्रताप और शिवाजी हमारे राष्ट्रीय नायक हैं तो शेरशाह सूरी और इब्राहीम लोधी भी क्यों नहीं? क्या वे एक ही दुश्मन, मुगलों, के खिलाफ नहीं लड़ रहे थे? इतिहास गवाह है कि शिवाजी के सामने जब एक मुसलमान युवती गिरफ्तार करके लायी गयी तो उन्होने उसे यह कह कर आजाद कर दिया कि काश मेरी मां भी तुम्हारी तरह खूबसूरत होती तो मैं भी खूबसूरत होता! उन्होंने उस युवती को पकड़ कर लाने वालों को सजा भी दी। इतिहास इस बात का भी गवाह है कि शिवाजी की सेना में हजारों की तादाद में मुसलमान भी मौजूद थे। तो क्या यह कहा जा सकता है कि वे मुसलमान हिंदुस्तान को अपना वतन नहीं मानते थे?

सवाल मुनासिब या बेमुनासिब का नहीं है, संप्रेषणीयता का है। और

...हिंदी-उर्दू को अलग-अलग नहीं ...ानता। झगड़ा लिपियों को लेकर है ...ौर वह राजनीति की वजह से है।

हिन्दी में आ जाने के पीछे एक ...टना है : सन' ५०-५१ की बात है। मैं ...ुआली सेनेटोरियम में था। वहां मेरी छोटी बहन का खत मेरे पास आया। पता तो उसपर अब्बा के हाथ का ही लिखा हुआ था अंग्रेजी में, खत खोला तो वह हिंदी में था—प्रिय मासूम भाई। सुरैया हमारी बड़ी लाडली बहन है। हमारे घोर कंजरवेटिव खानदान में वह पहली लड़की है जिसने एम. ए. किया और संगीत भी सीखा। और वह लिख रही थी—प्रिय मासूम भाई। मुझे यही लगा कि अब उर्दू लिपि नहीं टिक पायेगी —देवनागरी ही चलेगी। जिस घर में 'नमस्ते पिताजी' कहने पर एक लड़की को गोद से उठाकर आंगन में फेंक दिया जाता हो, वहां कोई दूसरी लड़की हिंदी में ही पत्र लिखे तो समझ लेना चाहिए कि हिंदी आ गयी। मैंने उर्दू को छोड़ दिया क्योंकि मेरे लिए बहन का महत्व लिपि से कहीं ज्यादा था।

मेरे हिंदी में चले आने पर उर्दू जगत के लोग बोले, मैं हिंदी वालों के हाथों बिक गया हूं। 'मोर्चा' ने कहा राही मासूम रजा हिंदुओं के हाथों बिक गया है। अब वे क्या जानें कि देवनागरी के साथ मेरा क्या रिश्ता है! इस भावनात्मक संबंध को समझते उन्हें बरसों लग जायेंगे। मैं साहित्यकार हूं, संप्रेषण के बिना मेरी अभिव्यक्ति का कोई अर्थ नहीं। फिर मैं उस भाषा को क्यों न अपनाऊं जो जी रही है? ठीक है, उर्दू लिपि ने मुझे चालीस साल तक थामे रखा लेकिन अब वह खत्म हो चुकी है, या हो रही है। वह दस की भाषा है, मैं दस हजार से बात करना चाहता हूं। इस भाषा का साहित्य विकासमान है।

गाजीपुर वाली गंगा मेरी मां है। मैं लिखूंगा तो अपनी मां के बारे में लिखूंगा, जिसकी गोद से मैं पूरी तरह वाकिफ हूं।

मेरी ट्रैजेडी यही है कि मैं कहता हूं मेरी मां गंगा है और कोई इसे मानने को तैयार नहीं···और फरात वाले तो हमें भी हिंदू ही मानते हैं···

उनके लिए तो हिंदुस्तान में रहने वाले यानी हिंदू!

पाकिस्तानी साहित्य भी अलग नहीं हो सकता क्योंकि उनका कल्चर अलग है ही नहीं। इसलिए मुझे ताज्जुब नहीं होता कि पाकिस्तानी कविता में हिंदी के अनेक शब्द आते जा रहे हैं।

—प्रस्तोता : सुदीप

मुक्तक

हम वो कवि हैं जो हर दर्द उठा सकते हैं
कलम के जोर से मुर्दों को जिला सकते हैं
वक्त का देख तकाजा हम वतन के खातिर
कलम को फेंककर तलवार उठा सकते हैं

—गिरिमोहन 'गुरु'

* स्व० सरदार पटेल
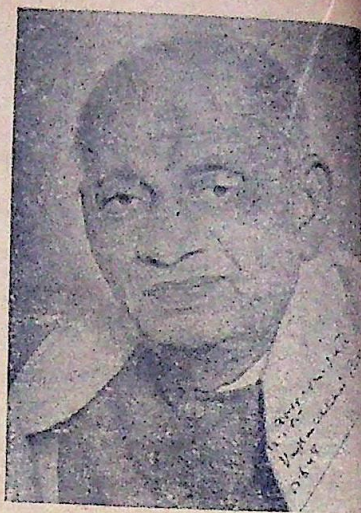
गांधीजी हमसे एक हो जाने को कहते हैं। मगर हिन्दू-मुसलमानों में जितना अन्तर आज है, उतना पहले कभी नहीं था। इसी तरह गांधीजी ने हमसे अपना कपड़ा आप बना लेने को कहा, मगर इस वक्त कपड़े के लिए जितना शोर मच रहा है, उतना पहले कभी नहीं मचा था।

° ° °

साम्प्रदायिक दंगों का एक ही उपाय है। व्यक्ति से जितनी रक्षा हो सकती है, उतनी करे। इसका कुछ तो असर समाज पर होगा ही, वैसे नेता लोग जब तक इसका निपटारा नहीं करेंगे तब तक यह जहर नहीं मिटेगा।

(नड़ियाद, ७–४–१९४७)

विलायत से कैबिनेट-मिशन आया। चार-पांच महीने तक चर्चायें हुईं। मुसलमानों को डर लगा कि यह तो हिन्दुओं का राज्य हो जायेगा। हिन्दुओं को लगा कि हिन्दुस्तान के टुकड़े होने के बजाय तो मर जाना अच्छा है।

कैबिनेट-मिशन ने कहा कि सार्वभौम सत्ता तो चली। तुम अपना सम्भालो। लीग और कांग्रेस के साथ बातचीत हुई। उन्होंने एक कामचलाऊ सरकार बना दी। हम उसमें जाकर बैठे। उस वक्त मुस्लिम लीग बाहर थी। बाद में उसे भीतर लाने की कोशिश हुई। यह सभी चाहते थे कि उसे अपने वाजिब हक मिलें। मगर इसका अर्थ दूसरा राष्ट्र नहीं होता। आखिर ९० फीसदी तो हिन्दुओं में से भ्रष्ट हुए हैं। धर्म के बदल जाने से क्या दूसरी जाति बन जाती है?

वायसराय साहब को लीग ने आश्वासन दिया कि एक होकर काम करेंगे। परन्तु आकर दूसरे ही दिन झगड़ा किया कि हमने कोई आश्वासन नहीं दिया। बाद में वायसराय विलायत गये और जिन्ना को खुश करने के लिए ६ दिसम्बर को बयान प्रकाशित किया।

कलकत्ता, बंगाल और बिहार में दंगे हुए। पंजाब में जो हो रहा है, उसकी जड़ में क्या है? यही भावना है कि जिसके पास सत्ता होगी, उसे सौंपकर जायेंगे।

कांग्रेस, लीग और राजा मिल जायें, तो निपटारा हो जाता है। जो संस्था मजबूत है, उसके साथ मिल जाने की बात समझ लेना विचक्षण बुद्धि का काम है। राजा लोग समझकर कांग्रेस के साथ मिल गये, इसलिए उन्हें धन्यवाद देता हूं।

संभव है कि क्रांति के समय में कुछ अशान्ति भी हो। इसके लिए तैयारी रखनी चाहिए। दंगा करने के लिए नहीं, परन्तु दंगा होने पर उसका मुकाबला करने की तैयारी रखनी चाहिए। मनुष्यों को दूरदर्शी बनकर सावधानी रखनी चाहिए।

[बड़ौदा, १६ अप्रैल ४७]

* लोग कहते हैं कि कांग्रेस ने मुल्क के टुकड़े कर दिये, एक तरह से यह बात सच है।

* ९० फीसदी मुसलमान तो हिन्दुओं में से भ्रष्ट हुए हैं। धर्म के बदल जाने से क्या दूसरी जाति बन जाती है?

* हिन्दुओं को लगा कि हिन्दुस्तान के टुकड़े होने के बजाय तो मर जाना अच्छा है।

* जब से सत्ता हाथ में ली है, तब से कांग्रेस में गन्दगी घुस गयी है।

* हमारे साथ एक हुए बिना मुसलमानों का छुटकारा नहीं।

आज दुनिया हिन्दुस्तान की तरफ देख रही है कि ये सीधी तरह सत्ता लेंगे या लड़ मरेंगे। विदेशों के अखबार वाले और राजदूत आये हैं और हम क्या करते हैं सो देखते हैं। आजकल तो हम एक दूसरे के गले काट रहे हैं। बाल-बच्चों और बूढ़ों तक को नहीं छोड़ते। जानवरों से भी बुरे बन गये हैं। अँग्रेजों को भी शंका होती है, कि हम क्या करेंगे? परन्तु वे कहते हैं कि कुछ भी हो, हम तो जायेंगे। इतना बड़ा मुल्क,ऐसी जमी जमायी हुकूमत छोड़ना किसे अच्छा लगता है? फिर भी वे जा रहे हैं। और हम जो चाहते थे, वह सामने आकर खड़ा है, तब हमें घबराहट हो रही है। हम लड़ाई-झगड़ा करने को तैयार हो गये हैं कि राज्य हिन्दुओं का होगा या मुसलमानों का?

जब से सत्ता हाथ में ली है, तब से कांग्रेस में गन्दगी घुस गयी है। काम किए बिना नेतागिरी लेने की कोशिश हो रही है। जो मिल जाये, उसे जल्दी से बांट लेने की नीयत और और कोशिश होगी—तो वह पचेगा नहीं।

यह क्रान्ति-काल है। हम अस्थिरता के काल से गुजर रहे हैं। जब इतनी बड़ी क्रांति होती है तब दुर्भाग्य से उसमें ऐसे दंगे फसाद होते ही हैं। फिर भी हम समझ जायें और दिमाग ठंडा रखें तो अपनी रक्षा कर सकते हैं।

[सूरत, १६-४-४७]

यह बात सही है कि हम देश की एकता को पूरी तरह कायम रख सके। मुस्लिम लीग ने हिन्दुस्तान से अ होकर अपना अलग राज्य कायम करना तय किया। इससे हमें बड़ी निराशा हुई, और बड़ा दुःख हुआ।

यह दिन उन लोगों की स्मृति जगाता है, जो आजादी के लिए शहीद हुए, जिन्होंने अपने प्राण अर्पण किए। उन्हें याद करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हमारी विजय उनके बलिदान के कारण हुई है। हम उन्हें याद न करें तो बेवफा कहलायेंगे।

जब लोकमान्य का देहान्त हुआ, तब चौपाटी के मैदान में हमने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। उसके बाद लाहौर कांग्रेस में रावी के किनारे कांग्रेस के इस झंडे के नीचे आजादी के लिए प्राण देने की प्रतिज्ञा की और निश्चय किया कि हिन्दू मुसलमान, पारसी, ईसाई सब एक होकर रहेंगे। वह निश्चय हम पूरी तरह नहीं निभा सके, इसलिए आज जितना आनन्द होना चाहिए, उतना नहीं हो रहा है। मगर इतना समझ लेना चाहिए कि अब विदेशी हमारे बीच में किसी तरह की फूट नहीं डाल सकेंगे। यह बहुत बड़ी बात है।

लोग कहते है कि कांग्रेस ने मुल्क के टुकड़े कर दिये। एक तरह से यह बात सच है। हमने सोच-विचार कर यह जिम्मेदारी ली है। किसी के डर या दबाव से नहीं ली। हिन्दुस्तान के टुकड़े करने का मैं सबसे कट्टर विरोधी था। लेकिन जब मैं केन्द्रीय सरकार में आकर

बैठा, तो देखा कि साम्प्रदायिक जहर चपरासी से लेकर ऊंचे अधिकारी तक फैल गया है। ऐसी हालत में साथ रह कर लड़ते रहने और तीसरे से बीच-बचाव कराते रहने से अलग हो जाना ही अच्छा है।

दोनों जातियों में बहुत बैर-भाव है। कलकत्ता, लाहौर और बम्बई में जाकर देखिये तो मुस्लिम मुहल्ले में कोई हिन्दू नहीं जा सकता। रावलपिंडी में जाकर देखिये तो कोई हिन्दू नहीं रह सकता। हमने देख लिया कि जब तक विदेशी सरकार रहेगी, तब तक इस प्रश्न का निपटारा नहीं होगा, अंग्रेज सरकार ने डेढ़ वर्ष बाद सत्ता छोड़ने का निश्चय किया, तब असम, पंजाब, बंगाल, सरहदी प्रान्त चारों तरफ दंगे हुए, खूनखराबी हुई। हमने अंग्रेज सरकार से कहा, 'आप जल्दी चले जाइये।' तब उन्होंने कहा—'तुम आपस में फैसला कर लो, तो हम चले जायें।' इस पर हमने कहा कि 'पाकिस्तान की बात हमें मन्जूर है, परन्तु बंगाल और पंजाब के टुकड़े कर दीजिए।'

हमने मजबूरी से यह बात मानी। नतीजा यह हुआ कि सरकार जो जून १९४८ में सत्ता छोड़ने वाली थी, उसके बजाय उसने १५ अगस्त १९४७ को छोड़ना तय किया। सेना और अधिकारियों आदि का भी बँटवारा कर दिया।

देश में शांति होनी चाहिए। जंगली ढंग से लड़ने, कोई बहन जा रही हो या बच्चा जा रहा हो, उसे छुरी मार देने से किसी जाति की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ी। शान्ति के बिना हमारा किसी तरह उद्धार नहीं होगा। इसमें किसी के संतोष के लिए झुकने की बात नहीं है, अक्ल की बात है फिर भी आपको लड़ना हो, तो लड़िये। मगर फौज से लड़िये। इस तरह गले काटने में तो दुनिया हमारा तमाशा देखती है। अंग्रेज लोगों के दिल में जहर था, वह तो निकल गया है। अब हम कितना ही लड़ें, तो भी एक प्रजा से दो प्रजा नहीं हो सकते। देश के टुकड़े कौन कर सकता है? नदी और पहाड़ के टुकड़े हो सकेंगे? हमारे साथ एक हुए बिना मुसलमानों का छुटकारा नहीं।

सेना में, जितने मुसलमान थे, वे उस तरफ चले गए हैं और हिन्दू इस ओर आ गये हैं। ऐसी सेना में राष्ट्रीयता कहां से आयेगी? हिन्दू चपरासी और क्लर्क सब इधर आ गये हैं और मुसलमान उधर चले गये हैं। मगर जब मुश्किल पड़ेगी, वे लौट आयेंगे। हमारा राज्य साम्प्रदायिक नहीं है। बीते हुए समय को सपने की तरह भूल जाइए। पाकिस्तान को भूल जाइये। हां, एक बात है। उनकी तरफ से झगड़ा करने की कोशिश की जाय तो फिर हमारे बदन में ताकत होनी चाहिए, हममें संगठन होना चाहिए।

इस समय हिन्दुस्तान को एक करने का मौका है। हिन्दुस्तान को एक करने का मौका हजार वर्ष बाद आया है।

(रामलीला मैदान दिल्ली, ११ अगस्त ४७)

भारतीय सीमा के एक सुरक्षित फासले से बंगला देश की स्थिति का अवलोकन प्रथम बार मैंने ठीक अभी किया है। मैंने शरणार्थियों से बातचीत की, ज्यों ही वे इस पार आये, उनके शिविरों में गया, उन्हें राशन के रूप में गीला चावल पाते देखा, जिस पर हमें तरस आ रहा था।

मैंने देखा एक नवजात शिशु, कालरा ग्रस्त मरणोन्मुख औरत और एक लाश गाड़ी, जिस पर तीन लाशें लदी हुई थीं और जो उधर ले जायी जा रही थीं, जिधर सूरज डूब रहा था।

* खुशवन्तसिंह

(सपादक: इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया)
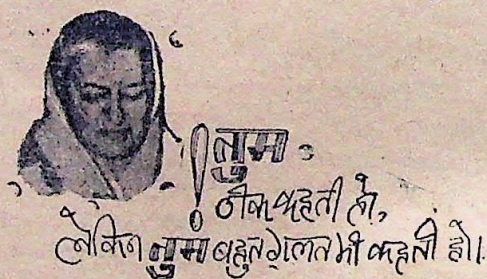
मैंने पश्चिम बंगाल और बंगला देश की सरकारों के मंत्रियों और अधिकारियों से भेंट की और बहुत से विशेषज्ञों की उस विषय में बातें सुनीं, जो हमें अवश्य करनी चाहिए। तथ्यों और मतों का संग्रह करके ही मैं वापस लौटा हूं। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण और जोरदार समस्या है—जिसका सामना आजकल हमारा देश कर रहा है।

मैं यहां उन तथ्यों से निकले कुछ

(१) जनसंघ फिर सिर उठा रहा है—मुझे क्या करना चाहिए ?

(२) इस बार उसने बंगला देश को लेकर प्रदर्शन............

निष्कर्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। जिन्हें आपने पहले नहीं सुना होगा।

प्रधानमन्त्री का कथन उस समय सही है, जब वे कहती हैं कि यह एक नरक बनने जा रहा है। नरक तो हम भारतीयों के लिए बन रहा है लेकिन उन लाखों शरणार्थियों की स्थिति नरक से भी बदतर है जो कैनवास के नीचे हैं या भारतीय आकाश के। हमारे लिए यह नरक इसलिए बनने जा रहा है क्योंकि हम ज्यादा दिनों तक इतनी अधिक शरणार्थी जनता को भोजन-वस्त्र नहीं दे सकते या उनकी दूसरी तरह चिन्ता नहीं कर सकते।

और जैसा कि असम, मेघालय, बिहार, बंगाल और पूरे त्रिपुरा के सीमावर्ती जिलों में प्रशासन की सक्रियता केवल शरणार्थियों को चिन्ता करनी भर रह गयी है। स्कूलों कालेजों, जेलों, अस्पतालों और दफ्तरों में काम नहीं हो सकता, क्योंकि उनके भवन शरणार्थियों से ठसाठस भरे हैं। विकास-योजनायें दूर का सपना बन चुकी हैं। शरणार्थियों के साथ उनका दुर्भाग्य छाया है। अधिकांश शरणार्थी तात्कालिक दृष्टि से तैयार आवासों के नीचे हैं जो मानसूनी बरसात में चूर-चूर हो जायेंगे। सैकड़ों हजारों शरणार्थियों के पास सिर छुपाने

(३) मैं चाहूं तो जनसंघ को ५ मिनट में ठीक कर सकती हूं लेकिन नहीं…

(४) क्यों न मैं उसे बराबर 'सांप्रदायिक' कह-कह कर बदनाम करूँ और अपनी मुस्कराहटों से निःशस्त्र कर दूं! इससे जनता, जो मेरे पक्ष में है, खुश होगी।

के लिए छातों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। बहुत से कैम्प बाढ़-ग्रस्त हो जायेंगे।

जहां तक नरक की बात है, प्रधानमन्त्री का कथन ठीक है, लेकिन जब वह यह कहती हैं कि शरणार्थी वापस चले जायेंगे–उनका कहना गलत है। शायद ५ प्रतिशत शरणार्थी अपने मूल-निवासों को चले जायें। इससे अधिक नहीं। मैं इसे विस्तार से स्पष्ट करता हूं।

बहुसंख्यक शरणार्थी हिन्दू हैं। इन हिन्दुओं में से अधिकांश लोग गरीब हैं, भूमिहीन हैं—जिन्हें वापस जाकर कुछ मिलना नहीं है या उनकी वहां बहुत थोड़ी सम्पत्ति है (यह तीन बीघे या एक एकड़ से भी कम ही होगी) और उन्हें पता है कि उस पर अब पाकिस्तानियों ने अधिकार कर लिया होगा। मुझे बताया गया है कि शुरू-शुरू में पाकिस्तानी सेना ने हिन्दुओं को अपने घर छोड़ने के लिए डराया-धमकाया है। बहुत से ऐसे हैं, जिनके लिए सुरक्षा, दिन में एक बार कुछ भोजन, सिर छुपाने के लिए टेण्ट ही अन्तिम प्रलोभन सिद्ध

हुआ है। पाकिस्तानियों ने पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं को अपनी निवास - भूमि के प्रति अपने अन्दर भक्ति उत्पन्न करने का कोई मौका नहीं दिया। ऐसे असंख्य लोगों को मैंने देखा, जिन्होंने भारत को 'आमार देश' (अपना देश) बताया।

एक भ्रांति, जिसका निवारण आवश्यक है, यह है कि ज्यों ही बंगला देश में शान्ति स्थापित हो जायेगी, स्वतंत्र गणतंत्रीय सरकार के हाथों में सारा शासन आ जायेगा। शरणार्थी वापस लौट जायेंगे। हजारों लोग तो वैसे ही इधर-उधर भारत के भीतर लुप्त हो गये हैं, जिनका कोई ब्यौरा नहीं रखा जा सका। कैम्पों में जो पंजीकृत हैं वे भी तब तक वापस नहीं जायेंगे, जब तक पाकिस्तानी सेना यह नरमेध करती रहेगी। यह सोचना भी ठीक नहीं होगा, कि वे तब वापस चले जायेंगे जब बंगला देश पूरी तरह स्थापित हो आयेगा।

विभिन्न सूत्रों से यह स्पष्ट है कि हिन्दुओं की जमीनें और घर आमतौर से स्थानीय लोगों को, लोकप्रियता पाने के लिए उदारतापूर्वक दिये जा चुके हैं।

यह भी निश्चित है कि बंगला देश के भावी शासक वापस जाने वाले हिन्दुओं को पुनर्वासित नहीं करा पायेंगे। किसी देश की कोई सरकार, और वह भी पूर्वी बंगाल सरीखे सघन बसे देश की भूमि पर जन-संकुलता करने में असमर्थ ही सिद्ध होगी।

मस्जिदों में पाकिस्तान के एजेन्ट

हिन्दुओं के लिए मन्दिरों का कोई महत्त्व नहीं है। हरेक मन्दिर दस-बीस साल बाद खण्डहर बन जाता है। आखिर मन्दिर की हमारे वास्ते वास्तविकता क्या है? लेकिन मुसलमान के वास्ते मस्जिद की सार्थकता है। धार्मिक इतनी नहीं, जितनी अधिक सामाजिक। मस्जिद मुसलमान के साम्प्रदायिक संगठन के लिए सुरक्षित स्थान है। वहां फतवे दिए जाते हैं। वहां हिन्दुओं के खिलाफ विष-वमन किया जाता है। वहां पाकिस्तान के एजेण्ट ठहरते हैं। वहां उत्तेजना-पूर्ण भाषण दिए जाते हैं, और कुछ लोगों का कहना है कि वहां शस्त्रास्त्र-वितरण की भी व्यवस्था है।

—भगवतीचरण वर्मा

श्रीमती गांधी की बात गलत है जब वे यह कहती हैं कि शरणार्थियों को अनिश्चित काल तक भारत में नहीं रहने दिया जायेगा। शरणार्थी वापस जाना नहीं चाहते, वापस जाने पर उन्हें मिलेगा भी क्या? हम उन्हें जबर्दस्ती बाहर निकाल नहीं सकेंगे। बंगला देश, उनका स्वागत नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में उनसे सम्बन्धित हमारा दायित्व स्थायी बन जायेगा। ❋

राजन और उमेश दोनों समवयी है। मित्र हैं। राजन कहता है–

'उमेश ! तुम परिभाषा बड़ी अच्छी देते हो–'

उमेश ने कहा–'मैं जो परिभाषायें देता हूं, वे व्यावहारिक होती हैं, सैद्धान्तिक परिभाषायें तो कोई भी दे देगा।'

'अच्छा, बताओ 'साम्प्रदायिक' का का अर्थ ?'

'साम्प्रदायिक माने हिन्दू।'

'हां, और बताओ।'

'और पूछो।'

'प्रगतिशील की परिभाषा ?'

'जो देश के बहुमत को लतियाये और अल्पमतों के तलवे चाटे, भले ही वे देशद्रोह करते हों। जो हिन्दू-अहिन्दू का संघर्ष होने पर केवल हिन्दू को कोसे, दोष चाहे जिसका हो। अतीत के विरोध के नाम पर जो भारतीय परम्परा से अपने को तोड़कर अमेरिकी, रूसी या चीनी परम्परा से स्वयं को जोड़े।'

'तटस्थ की परिभाषा ?'

'जिसका कोई मित्र नहीं; जो सबके झगड़ों में, दाल-भात में मूसरचन्द-सा जा धमके और बिना बोले जिससे रहा न जाये। एक-एक कर जो सभी को असंतुष्ट करता जाए। अच्छा और लो, एक परिभाषा मैं अपनी ओर से दे रहा हूं, नेहरू जी की–

नेहरू = 'प्रगतिशीलता + तटस्थता + असफल विदेश नीति + अंग्रेजियत + पार्थक्य भाव + हठ और क्रोध + कट्टर देशभक्ति (बिना यह जाने कि देश है क्या)।'

कहानी

* डा० रमानाथ त्रिपाठी

राजन बोला, 'बस एक शब्द की परिभाषा और—'सेठ !'

सेठ = 'काई में लोट-पोट होने वाले मल-भक्षी सुअर की रुचि + भैंसे का भोंडा शरीर + जोंक सा निर्मम शोषक स्वभाव।'

'कहो भाई, आजकल सुनीता के चक्कर में पड़े हो ?'—उमेश कुछ रुककर बोला।

'चक्कर में क्यों पड़ा हूं, ट्यूशन करता हूं। तुम्हीं से पूछकर ट्यूशन शुरू किया था।'

'वह तो खैर ठीक है, इसके परिवार पर जरा निगाह रखो। मुझे ऐसा लगता है कि सुनीता और क्या नाम उसका कुलवन्त, इनके द्वारा राष्ट्र-विरोधी कार्यवाहियां हो रही हैं, या हो सकती हैं। इन्हें प्रेम-प्रेम में तो नहीं फाँस लिया ?'

'प्रेम में फँसाने का कोई गुर बताओ।'

'मेरा जैसा लट्ठ गुर क्या जाने ? हां, ऐसा कर सकते हो कि हिन्दू आस्था और संस्कारों का प्रभाव दूर करने के लिए 'ब्लिट्ज' और 'सरिता' के कुछ अंक पढ़वा दो, साथ ही हिन्दी की कुछ ऊटपटांग पिक्चरें दिखा दो, बस फिर किसी दिन फिल्मी अभिनेता के समान प्रेम प्रकट कर बैठो।'

'क्या उनसे सम्पर्क तोड़ लूं ?'—राजन अचानक बोल उठा।

'न, उनके विषय में महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त करनी हैं। उनके घर आने-जाने वालों की गतिविधियों आदि पर नजर रखो। अरे, एक बात तो मैं भूल ही गया। तुम्हारे युद्ध विषयक चित्र छपे हैं न, उनकी चर्चा कर रहा था सुकान्त। उसके मन में ईर्ष्या है, कहता था कि हम युद्ध का वर्णन साहित्य में कैसे करें, जबकि युद्ध को देखा नहीं, जिया नहीं, भोगा नहीं, महसूस नहीं किया ? मैंने लताड़ा, कि तुम सात समुद्र-पार यूरोप-अमेरिका को जी लेते हो, भोग लेते हो, वहां के संत्रास, कुण्ठा, मृत्यु-बोध, न जाने कौन-कौन से बोध अपने ऊपर ओढ़े फिरते हो और कुछ ही मील की दूरी पर होने वाले युद्ध का अनुभव नहीं कर सके। करो क्या, युद्ध के वर्णन से यदि तुम आधुनिक कहला सकते तो वैसा भी करते। अरे, चौराहों पर यातायात पुलिस का ही कार्य किया होता, रात को जागकर पहरा ही दिया होता, घायल जवानों की शुश्रूषा ही की होती या पंजाब की सीमा पर चले गये होते।'

'लेकिन क्या यह आवश्यक है कि प्रत्येक साहित्यकार युद्ध का वर्णन करे ही ?'

'कदापि नहीं, मैं तो इनकी अनुभूति की मक्कारी की बात कर रहा था। सुकान्त का प्रच्छन्न संकेत यह भी था कि तुमने चित्र तो बनाये, किन्तु तुम्हें युद्ध का अनुभव नहीं है।

'किन्तु मैं तो युद्धस्थल पर जाकर...'

'मुझे मालूम है।'

० ० ०

राजन ने कमरे की खिड़की से देखा कि कारों के पास के मकान से एक दाढ़ीवाला आदमी निकला और खिड़की खोलकर रसीद बुकों का ढेर लेकर फिर उस मकान में घुस गया—अब्दुल रज्जाक। ये रसीद-बुकें क्या हो सकती हैं ? ओह, अरबों के लिए चन्दा इकट्ठा किया जा रहा है। वे लोग जो भारत-पाक युद्ध के समय चुप रहे, जिन्होंने चंदे का एक पैसा नहीं दिया, वे अरब देशों के लिए चन्दा एकत्र कर रहे हैं। अर्थात् वे भारत में रहते हुए भारत के नहीं, भारत की समस्यायें उनकी समस्यायें नहीं, अर्थात् वे भारतीय नहीं अपितु केवल मुसलमान हैं। उन्होंने अरब देश नहीं देखा, अरब लोग नहीं देखे, किन्तु उनके प्रति सहानुभूति है, क्योंकि वे इस्लाम के समर्थक हैं। और हमारे देश के नेता इन्हीं लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए सेकुलरवाद का नारा बुलन्द किए हैं। सेकुलरवाद में भी ईमानदारी नहीं।

मुसलमान किसी भी पार्टी में जायगा, वह न तो देश और न उस पार्टी के प्रति निष्ठावान है क्योंकि वह तो केवल मुसलमान है। स्वतंत्र पार्टी को पांच मुस्लिम विधायक केवल इसलिए छोड़ गये कि उनकी पार्टी ने अरब इजराइल संघर्ष में अरबों का पक्ष नहीं लिया।

इन मुसलमानों ने इस बिना पर क्या किसी भारतीय पार्टी से इस्तीफा दिया कि पाकिस्तान के आक्रमण करने पर उन्होंने उसके खिलाफ क्यों नहीं कहा? इसका अर्थ है कि पाकिस्तान और अरब देश को वे अपना घर मानते हैं। इनकी नीयत साफ नहीं। उर्दू आन्दोलन के पीछे भी नीयत साफ नहीं। अतएव निष्कर्ष यही कि जो उर्दू-आन्दोलन का समर्थन करते, वे कांग्रेसी, रिपब्लिकन, स्वतंत्र, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट आदि भी बेईमान हैं। कम्युनिस्टों की निष्ठा-हीनता तो समझ में आती है, किन्तु इन राष्ट्रीय दलों को क्या हुआ है ? हाय रे वोट !

अब्दुल रज्जाक उर्दू आन्दोलन के लिए रहमान चचा से बातें कर रहा था। चचा ने रसीद-बुक और कुछ रुपये सामने रखकर कहा, मैं इतना ही चन्दा कर सका हूं।'

कुछ यहां-वहां की बातें होती रहीं। चचा बोले, 'अब तो हिन्दुस्तान के कुछ नेता तालीम में मजहब की जरूरत भी महसूस कर रहे हैं। आपका क्या खयाल है, तालीम में मजहब रहे या न रहे ?'

'रहे या न रहे, मुसलमान पर कोई असर नहीं पड़ता।'

'क्यों ?'

'क्योंकि अगर मजहब की नसीहत नहीं दी जाती, तो हिन्दू बच्चे ही बिना मजहब के हो जायेंगे, हमारे बच्चों की नकेल तो मस्जिद में है। हिन्दू की नकेल

कहां है ? और अगर मजहब की नसीहत दी भी गयी तो यह छत्तीस टांग वाले उस कनखजूरे की तरह होगी, जिसका असर हिन्दू बच्चों पर भले ही पड़े, किन्तु मुसलमान बच्चे पर नहीं होगा। 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' कौन गाता है? बताइये!

'उर्दू की तहरीक (आन्दोलन) की वजह से हमारी बदनामी होगी। सभी पार्टियां हमारे ऊपर टूट पड़ेंगी, हम नंगे हो जायेंगे। कहा जायेगा, पाकिस्तान उर्दू की मांग पर ही बना। अब ये पाकिस्तानी एजेन्ट और भी छोटे - छोटे पाकिस्तान बनवायेंगे।'

'आप क्या फरमा रहे हैं ? अपने वजूद को जितना अलग रखा जायेगा, उतना ही ये पार्टियां तलुवे सहलायेंगी। आप बेवकूफ जनसंघियों की खिलाफत से डर गये? हिन्दी जानते हैं ? यह खबर पढ़िये—

'१ अगस्त, लखनऊ, कम्युनिस्ट संसद सदस्य उर्दू-आन्दोलन के पक्ष में प्रधानमंत्री को तार दे रहे हैं।' और देखिये। '१ अगस्त, कानपुर, जनसंघ ने उर्दू-आंदोलन को राजनीतिक स्टंट और संसोपा के स्थानीय नेता ने उर्दू के प्रति जनसंघ के रवये को लज्जास्पद, निन्दनीय और जन-बिरोधी बताते हुए प्रजा-समाजवादी, कम्युनिस्ट स्वतंत्र, रिपब्लिकन, तथा अपने दल के सदस्यों से अपील की है कि वे जनसंघ की प्रतिक्रियावादी कार्यवाहियों एवं उर्दू-विरोधी नीति का विरोध करें।' रहमान साहब, आप जानते हैं, उर्दू का झगड़ा किसने शुरू किया ? इसी अखबार का एडीटोरियल पढ़िये—

''इस विवाद का सूत्रपात स्वयं प्रधानमंत्री ने किया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश और बिहार के मुख्य मंत्रियों को पत्र लिखे हैं कि वे व्यक्तिगत दिलचस्पी लेकर उर्दू वालों के लिए विशेष व्यवस्था करें।' 'देखिये तारीफ यह है कि उत्तर प्रदेश में प्राइमरी स्कूल से लेकर कालेज तक उर्दू तालीम का बन्दोबस्त है। अर्जी भी उर्दू में ली जाती है। वोटर लिस्टें उर्दू में भी छपीं, लेकिन इसके बावजूद हम आन्दोलन कर रहे हैं कि ताकतें मुतहृदा (संयुक्त शक्ति) के बल पर ज्यादा-से-ज्यादा सहूलियतें पाते रहे।'

'उर्दू आन्दोलन के अलावा भी क्या किया जा सकता है ?'

'हम एक आन्दोलन यह भी करेंगे कि कोर्स की किताबों से राम और गंगा शब्द हटा दिया जाय। यह सेकुलर स्टेट है।'

'लेकिन पाकिस्तान में तो……?'

'अरे म्याँ, पाकिस्तान एक पाक मजहबी स्टेट है। कोई चूं-चूं का मुरब्बा तो है नहीं। तुम देखो जैसे ही यह मांग होगी, कम्युनिस्ट और हाथापाई पार्टी हमारा साथ देगी।'

'यह हाथापाई पार्टी क्या है ?'

'सोशलिस्ट पार्टी'। यह पार्टी कैसे जोर-शोर से आन्दोलन चलाती है, देखा नहीं, पुलिसवालों से धींगामुस्ती ! पार्लियामेंट में दण्ड-बैठक। सबको चाहिए वोट और गद्दी। गद्दी की कुंजी आठ करोड़ मुसलमानों के हाथों में है, क्योंकि वे एक हैं। आप समझते हैं कि ये हाथापाई पार्टीवाले बड़े ईमानदार हैं। अरे, ये धमाचौकड़ा इसलिए मचाते हैं कि लोग इन्हें देखें कि ये भी कुछ हैं। और ईमानदार होते, तो गद्दी के लोभ में बड़े-बड़े गेंडासिंह, बकरासिंह न बन जाते।'

'लेकिन ये हजरत तो पी०. एस० पी० में थे ?'

'वह भी तो इसी पार्टी की बहन है।'

'हूं।'

'हूं क्या, समझ लीजिए, हिन्दू मुर्दा कौम है। यह मर रही है। इसकी जड़ें इसी के नेता खोद रहे हैं, जो कुछ बच रहेगा, उसे सिनेमा और पश्चिमी फैशन उखाड़ फेंकेंगे। बहते दरिया में हाथ धो लो प्यारे !'

'लेकिन रज्जाक साहब, क्या बात है। हम लोगों को इतना जोश नहीं दिखाना चाहिए, मजलिस-ए-मशवरात या ऐसी दूसरी मुस्लिम पार्टियों को गैरकानूनी किया जा सकता है।'

'अरे, अल्लाह का नाम लीजिए ! इस हिजड़ी सरकार में इतनी जुर्रत कहां ! अगर गैरकानूनी करार देना ही होगा, तो ये पार्टियां क्या करेंगी, जानते हैं ? पहले ये किसी हिन्दू बकरे के गले पर छुरी चलायेंगी, तब हमारी ओर नजर करेंगी। यानी किसी मुस्लिम जमात पर रोक लगानी होगी, तो सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ या ऐसी ही किसी पार्टी को गैरकानूनी किया जायगा ताकि मुसलमान और दूसरे देश देखें कि एक हिन्दू पार्टी पर पहले रोक लगायी गयी। देखा नहीं, आपने अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से परेशान हुए तो उसका इलाज खुद न कर पाये, पकड़ लाये एक मुसलमान को ही। और उसी के जरिये चाहा कि अलीगढ़ से मुस्लिम लफ्ज हटाया जाये। सबसे पहले बनारस की युनिवर्सिटी से हिन्दू - लफ्ज हटाने की कोशिश की गयी। बस आ गया तूफान। सोच लो प्यारे, किसी पार्टी पर रोक नहीं लगी।'

सिगरेट का कश लेने के बाद रज्जाक फिर बोला—

'कैसी मुर्दा कौम की यह सरकार है। इसे और देखिये—सरकार कहती है कि वह फिरकापरस्त नहीं, सेकुलर है। शिलांग में सरकार एक स्कूल चलाती है। नाम है—पाइग माउंट। इसकी प्रिन्सिपल ईसाई लेडी ही हो सकती है। कौन-सा सेक्यु-लर ? सरकार—अपने ही स्कूलों में सेकुलर नहीं हो पाती। और देखिये शिलांग में वहां

की जिला-परिषद ने फौजियों के मांगने पर जमीन नहीं दी और उसी जिला परिषद ने ईसाइयों के मांगने पर स्कूल खोलने के लिए जमीन दे दी। इस स्कूल में जो लड़के पढ़ेंगे, वे ईसाई बनेंगे या वे पहले से ईसाई हैं ही। ये पाकिस्तान और चीन से हथियार पायेंगे। अमेरिका और ब्रिटेन भी इनकी मदद करेंगे। एक दिन सारा आसाम टुकड़े-टुकड़े होगा इसकी फिजा बारूद से गंधाएगी, धरती खून से चिपचिपायेगी, जंगलों में हिन्दुस्तानी सिपाहियों की कराहें गूंजेंगी। उनकी लाशें सड़ेंगी और किसी पहाड़ी पर लहरायेगा चीनी झण्डा, किसी पर पाकिस्तानी और किसी पर अंग्रेजी, अमेरिकी। इसीलिए कहता हूं, होशियारी से आगे बढ़िये। अब इस हिन्दुस्तान को बचानेवाली कोई कुव्वत नहीं है। ये हिन्दू ही एक-दूसरे को खा जायेंगे ?'

लगता था चचा कुरेद-कुरेद कर रज्जाक के पेट की अधिक से अधिक बातें उगलवाकर छिपे श्रोताओं को सुनाना चाह रहे थे। उन्होंने पूछा--

'रज्जाक साहब, सुना है कि अपने लोग ऐसी भी कोशिश कर रहे है कि हरेक स्टेट में कुछ ऐसे जिले बना दिये जायें, जिनमें सिर्फ मुसलमान ही रहें।'

'जी हां, यह सच है। इसकी शुरुआत केरल से होगी, वहां की केरल सरकार, खासतौर पर कम्युनिस्ट हमारा साथ देंगे। केरल के बाद हैदराबाद, असम, यू०पी० बिहार, बंगाल, और मध्यप्रदेश में कोशिश की जाएगी। वोटों के लालच में कांग्रेसी वगैरह भी हमारी मदद कर सकते हैं।'

'सुना है कौमी एकता की बात उठने वाली है।'

'इससे भी अकलियत (अल्पमत) को फायदा है।'

'कैसे ?'

'ऐसे कि मान लो, होली के दिन किसी मौलवी के ऊपर बच्चों ने रंग फेंक दिया। दंगे की पहले से तैयारी थी ही। दंगा हो गया। चींटी-कबूतर चुगानेवाला हिन्दू क्या खाकर दंगा करेगा ? जब पिटा, तो खून गरमाया, तब तक पुलिस आ गयी। घेर लिये गये बच्चू लोग। इधर हिन्दू कम्युनिस्ट, हिन्दू कांग्रेसी, हिन्दू समाजवादी और हिन्दू रिपब्लिकन जोर-जोर से चिल्लाने लगे, ये दंगे हिन्दू सम्प्रदायवादियों ने कराये--संघियों ने। कौमी एकता मानेंगे हिन्दू अखबार, किसी को असलियत का पता नहीं चलेगा। जब किस्म-किस्म की पार्टियों के हिन्दू नेता ही हिन्दुओं को दोषी बतायेंगे तो रूस की छब्बीस जुबानों में छपेगा कि भारत सरकार मुसलमानों को हिफाजत नहीं दे पा रही है, उनका 'सवंश विनाश' किया जा रहा है। रूस का रेडियो भी जहर उगलेगा। अमेरिका, अरब सभी बोलेंगे। अब पाकिस्तानियों के लिए रास्ता साफ है, वे धुंआधार प्रोपेगेण्डा करेंगे कि हिन्दुस्तान में

मुसलमान मारा जा रहा है। जबकि वह यहां गुलछर्रे उड़ा रहा है। पाकिस्तान इन्हीं दंगों की आड़ लेकर बंगाल के बचे-खुचे हिन्दुओं को कुचल देगा। इधर हिन्दू जमातों का बुरा हाल होगा, उनकी सारी ताकत इसी में चुक जायेगी कि उन्होंने दंगा नहीं कराया। वे अपने अखबारों में दंगे की असलियत छापेंगे तो कौमी एकता के नाम पर उन्हीं के खिलाफ कार्रवाई होगी।

रज्जाक चला गया था। वातावरण कुछ भारी हो गया था। चुप्पी तोड़ने के लिए राजन ने कहा–

'यदि मुस्लिम राष्ट्रभक्त नहीं है तो उसका दोष नहीं। दोष किसी का है तो सरकार का है। क्या उसने मुसलमानों को राष्ट्रभक्ति के संस्कार देने की चेष्टा की है?' उसे तो मुसलमानों के वोट चाहिए थे। अतः वह संतुष्टीकरण की नीति अपनाये रही।

उत्तर दिया उमेश ने–'यदि कांग्रेस सरकार मुसलमानों को राष्ट्रीयता के संस्कार देती तो वामपन्थी पार्टियां, विशेषतः कम्युनिस्ट उन्हें भड़काकर अपने पक्ष में कर लेते। कांग्रेस यह जानती थी, इसलिए उसने कचड़े में न पड़कर उनके वोट हथियाकर अपनी गद्दी को सुरक्षित रखा।

'नहीं, यदि सरकार ध्येयनिष्ठ रहती……' 'तो रोना किस बात का था? यही तो अनेक समस्याओं की जड़ है। उमेश ने वार्तालाप का उपसंहार करते हुए कहा।

एक चेतावनी

गुस्ताखी माफ, आप लोग मुसलमानों से इतने अलग रहे हैं कि आपको उनके मानस की ख़बर नहीं। यही वजह है कि पाकिस्तान बन गया। और मुझे यकीन है कि अगर आपने नागरी के साथ उर्दू को भी राष्ट्रीय बना दिया, तो आप हिंदुस्तान के भीतर एक दूसरा पाकिस्तान खड़ा कर देंगे

—रेहाना तैयब जी

---

* मन्मथनाथ गुप्त

अखबार पढ़ने वाले सभी लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि बंगला देश में क्या हो रहा है। स्वातंत्र्य-युद्ध का पहला अध्याय समाप्त हो गया, दूसरा शुरू है जैसाकि बंगला देश के मजदूर नेता तरुण शाहजहां तथा संसद सदस्य अब्दुल मनान ने मुझसे कहा। अब गुरिल्ला युद्ध होगा, मारो और भागो। अब तक जो कुछ हुआ, वह तो बिल्कुल वैसा ही है जैसे भरी सभा में द्रौपदी का चीरहरण हो रहा हो, उसके साथ बलात्कार हो रहा हो, और बड़ी मूछों वाले रथी, महारथी बैठकर सिर नीचा किये हुए, आंखों को मूंदे हुए तमाशा देख रहे हों; द्रौपदी की पुकार सुनी-अनसुनी कर रहे हों। कोई कृष्ण ऐसा नहीं दिखाई देता, जो इसको रोके।

अब तक इस संबंध में जो कुछ किया गया है वह भारत ने ही किया है। भारत ने न केवल नैतिक सहारा दिया, बल्कि वहां से जो लाखों की तादाद में शरणार्थी या निष्क्रमणार्थी आये, उनको जहां तक बन पड़ा है, आश्रय दिया है। इतने में ही भारत का करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है और हिसाब के अनुसार भारत की २५० करोड़ की बचत अगले छह महीनों में लगेगी। कहना न होगा कि यह बहुत भारी दाम है। कुछ भारत का अजीब भाग्य यह रहा है कि पड़ोसी देशों में जब भी कुछ होता है, लाखों की तादाद में लोग आ जाते हैं और हम पर उनका बोझ पड़ जाता है। जब चीन ने तिब्बत पर हमला किया और तिब्बतियों के साथ लगभग वही व्यवहार किया जो आज पाकिस्तान बंगला देश के लोगों के साथ कर रहा है, तब भी हम पर लाख-दो-लाख निष्क्रमणार्थी लद गये। उनका बोझ हम पर अभी तक बना हुआ है।

आश्चर्य यह है, कि आज संसार की राजनीति में आदर्शवाद का नामोनिशान नहीं रह गया। सब लोग अपने-अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं। जो जिस काम में लगा हुआ है, वह उसीको सिद्धान्तों का जामा पहनाकर भव्य और सुन्दर रूप में पेश करने की चेष्टा करता है। सबसे आश्चर्य की बात यह है और जिसका मुझे बहुत दुःख हुआ है, वह यह है कि जो देश अपने को क्रांति और समाजाद के ठेकेदार मानते हैं, और अन्दरूनी रूप से समाजवादी हैं वे भी बंगला देश के मामले में उदासीन ज्ञात हो रहे हैं। बस इतनी ही सहायता देने को तैयार हैं मानो बगला देश में कोई भूचाल आ गया हो। यह बहुत ही निराशाजनक है।

भारत के लिए मामला बहुत काँटे का हो गया है। पाकिस्तान का प्रचार विभाग हमेशा से हमारे प्रचार विभाग से अधिक सुसंगठित रहा है और वह यह प्रचार कर रहा है कि बंगला देश में जो कुछ हो रहा है, वह भारत ने ही कराया है। यह नहीं कि संसार के राष्ट्र असलियत से परिचित नहीं हैं। सच्ची बात तो यह है कि वे अपने गुप्तचरों के जरिये प्रतिदिन की खबरें अच्छी तरह जानते हैं। किस प्रकार चुन-चुन कर बुद्धिजीवियों, अध्यापकों, छात्रों को गोलियाँ मारी गयीं, किस प्रकार स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया, किस प्रकार लूट-मार जारी है और खेती-बारी का नाश किया जा रहा है, १० लाख से अधिक आदमी मारे गये और रोज उनकी संख्या बढ़ती चली जा रही है, ये खबरें सब राष्ट्रों के नेताओं को मालूम हैं, पर वे आंखों पर पट्टी बांधे और कानों में रुई भरे हुए हैं। नतीजा यह हो रहा हैं एक तरफ तो बंगला देश के साथ घोर अन्याय हो रहा है और दूसरी तरफ भारत पर करोड़ों की जिम्मेदारी डाली जा रही है। यदि भारत बंगला देश को मान्यता देकर लड़ाई में कूद पड़ता है, जैसे कि आदर्शवादी दृष्टि से और क्रांतिकारी दृष्टिकोण से भारत को करना चाहिए तो इसका नतीजा यह होता है कि कानों में रूई डाले हुए और आंखों पर पट्टी बांधे हुए संसार के ये राष्ट्र एकाएक जागरूक हो जायेंगे और जो लोग चुपचाप थे, वे कहेंगे कि यह तो भारत-पाकिस्तान का पुराना झगड़ा है, और जो पाकिस्तान के साथ हैं वे पूरी तरह भारत के विरुद्ध हो जायेंगे।

बात यों है कि अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का कोई मित्र नहीं है और यदि सच्ची बात देखी जाय तो कोई किसी का मित्र नहीं। जितनी मित्रतायें हैं, सब स्वार्थ की मित्रतायें हैं और इनमें कोई सिद्धान्त या आदर्शवाद की गुंजायश नहीं है। ब्रिटेन दक्षिण अफ्रीका को शस्त्र भेज रहा है। इसका अर्थ है मुट्ठी भर गोरे जिस प्रकार लाखों काले लोगों पर नादिरशाही चला रहे हैं, उसे सुविधा देने और उसे चिरस्थायी बनाने में सहा-

यता करना। वियतनाम में जो कुछ हो रहा है, उसे भी सब जानते हैं। पश्चिम एशिया के अरब क्षेत्र में इजरायल और अरब लोगों में जो युद्ध और तनाव चल रहा है, वह भी स्वार्थ के कारण है। रूस ने इसमें अरबों का पक्ष लिया है और अमेरिका ने इजरायल का पक्ष। अरबों का पक्ष लेना भारत को पसन्द रहा है क्योंकि भारत अरबों के साथ दोस्ती रखना चाहता है, पर रूस से यह कहा जा सकता है कि बंगला देश का लक्ष्य या उसका पक्ष अरबों से कहीं साफ-सुथरा और न्याय पर आधारित है। यह साढ़े सात करोड़ का भविष्य तराजू पर है।

आखिर बंगला देश वाले क्या मांग रहे थे ? वे यही तो चाहते थे कि उनको प्रान्तीय स्वाधीनता दी जाये। यह कोई नई बात नहीं है। लाहौर में मार्च १९४० में मुस्लिम लीग का जो अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ था, उसमें यह साफ कर दिया गया था, कि मुस्लिमप्रधान प्रान्तों को स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में संगठित किया जायेगा और पाकिस्तान इन राष्ट्रों का समूह होगा। प्रत्येक राष्ट्र स्वयं शासित और पूर्ण सत्ताधारी होगा।

उस समय धार्मिक जोश बहुत जोर पर था, फिर भी बंगला देश, बिलोचिस्तान, सिंध, पख्तूनिस्तान आदि के नेताओं ने स्पष्ट रूप से सुझाव दिया था कि पाकिस्तान एक होकर नहीं चल सकता। गत चौथाई शताब्दी के तजुर्बे से यह और भी जाहिर हो गया।

संयुक्त पाकिस्तान के निवासियों में ५४ प्रतिशत लोग बंगला बोलते थे, केवल ७ फीसदी लोग अपनी मातृभाषा के रूप में उर्दू को मानते थे। पंजाबी भाषियों की संख्या २५ फीसदी है। फिर भी कुछ ऐसी राजनीतिक धांधली और जादूगरी चलाई गयी कि उर्दू को राष्ट्रभाषा का पद दिया गया और यह चेष्टा की गयी, कि पूर्वी बंगाल में बंगला की जगह उर्दू स्थापित की जाये। इसके लिए स्वयं जिन्ना मियां ने ढाका का दौरा किया, पर उस समय यानी १९४८ में धार्मिक पागलपन जोरों पर होने पर भी पूर्वी बंगाल के बुद्धिजीवियों ने उर्दू को राष्ट्रभाषा मानने से इनकार किया। नतीजा यह है कि आन्दोलन चला और १९५२ की २१ फरवरी को बहुत से मुसलमान युवक बंगला भाषा के लिए जुलूस निकालते हुए पाकिस्तानी गोलियों के शिकार होकर बंगला देश के प्रथम शहीद होने की मर्यादा प्राप्त कर गये। सच तो यह है कि इसी दिन से बंगला देश और पश्चिम पाकिस्तान का युद्ध शुरू हुआ। आज जो युद्ध उभर कर सामने आ गया है उसका आरम्भ १९५२ में हुआ था। स्वतंत्रता का युद्ध इस तरह नहीं चलता जिस तरह साधारण युद्ध चला करता है। उसमें कई उतार-चढ़ाव आते हैं, कभी धारा तेज होकर दनदनाती हुई चलती है, कभी जमीन के नीचे लुप्त और गुप्त होकर चलती है। कहीं रवीन्द्र

संगीत का झगड़ा रहा, कहीं पश्चिमी बंगाल से पुस्तकें आ पायें या न आ पायें इसका झगड़ा रहा। सर्वोपरि आर्थिक शोषण की बात सामने आने लगी। कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं—केन्द्रीय सरकारी नौकरी में पश्चिमी लोगों को ८५ फीसदी नौकरियां मिली हुई थीं जबकि पूर्व बंगाल के लोगों को १५ फीसदी नौकरियाँ प्राप्त थीं, पश्चिम पाकिस्तान में प्रति व्यक्ति विकास व्यय ५२१ रुपया था तो पूर्व बंगाल का प्रति व्यक्ति विकास व्यय २२४ रुपया था, पश्चिम पाकिस्तान में तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्रति व्यक्ति राजस्व व्यय ३०९ रुपया था, तो पूर्व बंगाल में ७० रुपया था। पूर्व बंगाल के लिए सैनिक व्यय ७८ करोड़ रुपया था तो पश्चिम पाकिस्तान के लिए २०० करोड़ रुपया था।

धार्मिक जोश के आधार पर और विदेशियों के भड़काने पर जो पाकिस्तान बना था, वह भीतर ही भीतर खोखला होता चला गया और पख्तूनिस्तान, बिलोचिस्तान और पूर्व बंगाल में बहुत जोरों से आन्दोलन चल पड़ा। १९५४ में जब पाकिस्तान में पहला सीमित चुनाव हुआ तो उसमें पूर्व बंगाल में संयुक्त मोर्चे को लगभग ९८ फीसदी वोट मिले। इससे पश्चिम पाकिस्तान में सैनिक और पूंजीवादियों का गुट घबरा गया। १९५४ की ३० मई को फजलुल हक सरकार को निकाल बाहर किया गया। तबसे बराबर लोकतंत्र से पाकिस्तानियों को दूर रखने की चेष्टा की जाती रही। इस संबंध में एक बहुत ही प्रासंगिक बात यह है कि जब भारत संयुक्त था तब अंग्रेजों की तरफ से मुसलमानों को भड़काया जाता था कि तुम लोग लोकतंत्र का विरोध करो, क्योंकि लोकतंत्र का अर्थ हिन्दू राज है। यह बात मुसलमानों की जहनियत में इस तरह भर दी गयी कि वे लोकतंत्र के नाम से बिदकते थे। कुछ उसी का मानो सिलसिला जारी रखते हुए इस्कन्दर मिर्जा ने नियंत्रित लोकतंत्र चलाया। अय्यूब ने आधारभूत लोकतंत्र चलाया। यह सब महज धोखा था और इसका उद्देश्य था कि लोगों को इस्लाम और भारत विरोध के नाम पर एक गुट के अधीन रखा जाये और उनको लूटा जाये।

अभी हाल में पाकिस्तान में जो चुनाव हुआ, इसमें सारी चालाकियों और बेईमानियों के बावजूद शेख मुजीबुर्रहमान के दल को ३१३ में से १६३ आसन मिल गये। अपने आपको राष्ट्रपति घोषित करनेवाले यहिया खाँ का यह ख्याल था कि भुट्टो को बहुमत मिल जायेगा और सुख-चैन की नींद जारी रहेगी; लूट-मार चलती रहेगी। यह गुट पूर्व बंगाल के साथ ऐसा व्यवहार रखता था, जैसे उपनिवेशों के साथ रखा जाता है यानी कच्चा माल उत्पादन करवाना और उनका शोषण करना। इस संबंध में एक बात की ओर बहुत कम ध्यान गया। वह यह कि पाकिस्तानी शासकों

की ओर से यह चेष्टा की गयी कि पूर्व के लोग अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकें। पहले पूर्व बंगाल के लोग पश्चिम पाकिस्तान की तुलना में अधिक उच्च-शिक्षित थे। वहाँ गत २० साल की चालाकियों और बेइमानी से उन्हें पिछड़े बनाने की पूरी चेष्टा हुई। नियोजित ढंग से बंगला देश की साक्षरता घटाई गई। यहिया इस दृष्टि से भी हिटलर से आगे निकल गया।

प्रश्न यह है कि क्या सारा संसार और उसके राष्ट्र उसी तरह तमाशा देखते रहेंगे और बांसुरी बजाते रहेंगे? पूर्व बंगाल या बंगला देश का रोम जलता रहेगा? भारत के लिए बड़ा विकट समय है क्योंकि अपने को समाजवादी कहने वाला चीन खुलकर पाकिस्तान की सहायता कर रहा है। अवश्य एक बात यह है कि दूसरे बड़े देश, जो पाकिस्तान को आर्थिक तथा सैनिक सहारा देते हुए प्रतीत होते हैं, वे भी अन्त तक पाकिस्तान के लिए अच्छे साबित नहीं होंगे क्योंकि उनका उद्देश्य तो स्पष्ट ही है। वे चाहते हैं कि पाकिस्तान को मदद देकर उसे लूट सकें क्योंकि मदद का अर्थ केवल पुराने अस्त्र-शस्त्र डम्प करना है। सारे राष्ट्र मदद के नाम पर यही कर रहे हैं।

यदि समय रहते संसार का विवेक जागृत नहीं हुआ और जनमत तैयार नहीं हुआ तो बंगला देश की लड़ाई बहुत लम्बी हो जायेगी; लाखों लोगों का और भी खून होगा। मुझसे बंगला देश के संसद सदस्य अब्दुल मनान और श्रमिक नेता शाहजहां ने कहा—यदि संसार का विवेक नहीं जागेगा तो एक करोड़ मार डालेंगे और एक करोड़ भारत भाग आएंगे। हम तो इस बात के लिए कटिबद्ध हैं कि हमारा हर आदमी भले मारा जाए, पर हम घुटने नहीं टेकेंगे।

आश्चर्य की बात यह है कि भारत में भी बहुत तरह की बातें सुनाई पड़ रही हैं, यदि मुझसे पूछा जाये, तो मैं मान्यता को उतना महत्व नहीं देता, जितना कि अस्त्र-शस्त्र देकर मदद देने को देता हूं। जब यह तरीका सारे संसार में चालू है कि ऊपर कुछ और रूप रखा जाता है और भीतर से कुछ और रूप रहता है। मान्यता देते ही कोई जादू नहीं होगा, जब तक कि मान्यता देने के साथ ही भारत से सैनिक सहायता न पहुंचे और यह मैं पहले ही बता चुका हूं कि सैनिक सहायता का क्या अर्थ होगा। बंगला देश को टैंक और हवाई जहाज चाहिए, न कि मात्र मान्यता का कागज।

निश्चित है कि बंगला देश का संग्राम विजयी होगा। जब हम लोगों ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लड़कर स्वतंत्रता प्राप्त की, सच्ची बात यह है कि लड़कर प्राप्त नहीं की बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय कारणों से प्राप्त की। बंगला देश भी ऐसा ही कर सकता है। लड़ाई जारी रहेगी और अन्त तक उसकी विजय भी होगी इस संबंध में रूस का उदाहरण लिया जा

सकता है जहाँ १९०५ की क्रांति असफल हुई पर १२ साल बाद वह सफल हुई।

अजीब बात यह है कि भारत के कुछ लोगों में बंगला देश के प्रति सही दृष्टिकोण पैदा नहीं हो रहा है। कई मुसलमान यह समझते हैं कि हम पाकिस्तान को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए बंगला देश की तरफदारी कर रहे हैं।

यदि मुजीबुर्रहमान और उनके दल को पाकिस्तान का शासक दल मान लिया जाये; बंगला और पंजाबी राष्ट्रभाषा हो जायें और जनसंख्या के अनुसार सैनिक सेवा आदि में लोगों को भाग लेने दिया जाये तथा नूरेम्बर्ग मुकदमे की तरह एक मुकदमे में यहिया खां आदि, मै अधिक नहीं मांगता, पांच सौ सैनिक नेताओं को फांसी दे दी जाये, बाकी कुछ हज़ार पाकिस्तानी सैनिकों से चक्की पिसाई जाय, पूर्व बंगाल की क्षतिपूर्ति पश्चिम पाकिस्तान करे, तो पाकिस्तान के बने रहने में कोई हर्ज नहीं है। पर अब शायद बहुत देर हो गयी। यदि पाकिस्तान टूटा है, उसके लिए दोषी हैं अय्यूब और यहिया न कि मुजीब। मुजीब ने हद दर्जे का धैर्य दिखाया।

हर एक ऐतिहासिक घटना कुछ समस्याओं का समाधान करती है, पर साथ ही वह कुछ अन्य समस्याओं को उत्पन्न करती है। बंगला देश के इस युद्ध से कुछ इसी प्रकार के समाधान सामने आये हैं और कुछ समस्याएं उत्पन्न हुईं। यहाँ पर बंगला देश के युद्ध के सम्बन्ध में कोई ब्योरा देने की जरूरत नहीं है। जब एक राष्ट्र स्वतंत्र होने पर तुल जाता है तो उसके लिए सामयिक हार कोई अर्थ नहीं रखती। हमने १८५७ से लेकर १९४७ तक लगभग ९० वर्ष की लड़ाई की, कभी जनता जीती, कभी पीछे हटी, कभी दब गयी, कभी उभर कर सीना तानकर चलने लगी, सैकड़ों शहीद हो गये, हजारों अंडमान चले गये। जन आन्दोलन हुए, अफसरों की हत्याएं की गयीं। अन्त तक ऐसी स्थिति हो गयी कि ब्रिटिश सरकार ने अपने लाभ के लिए दुम दबाकर भागना ही उचित समझा, क्योंकि आजाद हिन्द फौज के मुकदमे के कारण ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी कि अब ब्रिटिश सरकार भारतीय फौज के भरोसे यहाँ नहीं रह सकती थी। वह चाहती तो केवल गोरी फौज के सहारे पांच-दस साल और चल सकती थी, पर उस हालत में पहल उसके हाथ में नहीं रहती, न वह देश का विभाजन कर सकती और न भारतमें लगाई हुई उसकी पूंजी सुरक्षित ही रहती, ब्रिटिश सरकार ने यहां से भाग कर जाने का जो कदम उठाया, वह अपने हक में अच्छा ही उठाया। उससे जाहिर है आज भारत और पाकिस्तान में अधिक ब्रिटिश पूँजी खट रही है।

पराजय की ईंटों पर ही अन्तिम विजय का सौध खड़ा होता है। रूसी क्रांति में भी हम देखते हैं कि १९०५ की क्रांति असफल हो गयी थी, पर १९१७

में लेनिन के नेतृत्व में वह सफल हुई। प्रश्न केवल इतना ही है, कि संग्राम करने वालों का दिल न टूटे।

हमें इस संग्राम के सम्बन्ध में कुछ विशेष नहीं कहना, सिवाय इसके कि उसकी अन्तिम विजय निश्चित है। अब वह अन्तिम विजय राष्ट्रीय कारणों से न होकर अन्ताराष्ट्रीय कारणों से हो सकती है, जैसे कि हमें जब स्वतंत्रता मिली थी, तब हुआ था। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति जिस तरह गिर रही है, जिस तरह उसके रुपये का अवमूल्यन एक महीने की लड़ाईके अन्दर निश्चित हो गया,जिस तरह अपना कर्जा चुकाने में असमर्थ है--वह सब हम देख रहे है और पता नहीं कि कयामत किधर से आये? मैं रहस्यवादी नहीं हूं पर इतना मानता हूं कि संग्रामकारी जनता की विजय अन्त तक अवश्य होती है। शहादतें व्यर्थ नहीं जा सकतीं।

यहिया खां की नादिरशाही ने या आधुनिक शब्दावली में कह लीजिए, फासिस्टी नीति ने एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक उद्देश्य सिद्ध किया है जिसकी तरफ लोगों का ध्यान कम गया है। कभी-कभी बड़े-बड़े गधे और जालिम भी ऐसा ऐतिहासिक उद्देश्य सिद्ध कर जाते हैं,जिसे बहुत बड़े-बड़े विद्वान और सिद्धान्तवादी नहीं कर पाते। आप जिन्ना को दो राष्ट्र सिद्धान्त का पिता मानें या गत शताब्दी के अन्तिम दशकों में अलीगढ़ विश्वविद्यालय में बैठे हुए अध्यापक बेक को दो राष्ट्र सिद्धान्त का पिता मानें, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। वह एक अन्य विषय है जिस पर मैंने अन्यत्र लिखा है। वह एक दिन की उपज नहीं है, न एक आदमी की कारस्तानी है, इसमें बहुत सी गन्दी नालियां आकर मिलीं, विदेशी शासकों ने आग को हवा लगाई, और इस प्रकार से दो राष्ट्र सिद्धान्त उत्पन्न हुआ, जिसका मूर्त रूप पाकिस्तान है। राष्ट्र की सारी प्रचलित परिभाषाओं को समाप्त करके दो राष्ट्र सिद्धान्त का बुलडोजर धड़धड़ाता हुआ इतिहास की पगडंडी पर उसे तोड़ता हुआ आगे निकल गया। लाखों लोग बेघरबार हुए, फिर भी भारत में चार करोड़ मुस्लिम रह गये। अब वे सात करोड़ हैं।

दो राष्ट्र सिद्धान्त एक ऐसा सिद्धांत है जो बहुत ही मूर्खतापूर्ण, अवैज्ञानिक और मनमाना था पर क्रान्तिकारी सिर पीट कर रह गये, राष्ट्रवादी रो-धो कर बैठ गये पर उस सिद्धान्त को तोड़ने का कोई रास्ता नहीं निकला। मार्क्स,एंगिल्स लेनिन की सारी किताबें बेकार हो गयीं, साम्यवादी सिद्धान्त निष्फल रहे,यहां तक कि अशफाकुल्ला ऐसे लोगों का रक्त भी इस सिद्धांत में कोई नरमी पैदा नहीं कर सका। यदि कोई गैरमुसलमान इस सिद्धान्त का विरोध करता, तो उससे यह कहकर छुट्टी हो सकती थी कि वह छिपे तौर पर प्रतिक्रियावादी है और मन में साम्प्रदायिक भावना रखता है। अब्दुलकलाम आजाद, अंसारी, अजमल खां कोई इस सिद्धान्त को खत्म नहीं

कर सके और जैसे कि हमने कहा, अशफाकुल्ला भी अपने तीन हिन्दू साथियों के साथ फांसी पर चढ़कर इस सिद्धान्त को किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचा सके, जब मार्क्स और लेनिन व्यर्थ पड़ गये तो और फिर किसकी क्या चलती ?

शायद कभी इस सिद्धान्त का किसी प्रकार खात्मा नहीं हो पाता। पर यहिया खां को आप चंगेज खां कहें या नादिरशाह कह लीजिए, हिटलर कह लीजिए, जो कुछ भी कह लीजिए। पर उसने अपनी मूर्खता, बर्बरता तथा निष्ठुरता के द्वारा दो राष्ट्रसिद्धांत को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। क्या यह बहुत बड़ी बात नहीं है कि जहां मार्क्स, एंगिल्स, लेनिन, अशफाकुल्ला असफल रहे, गान्धी मरकर भी एक पाकिस्तानी से यह नहीं कहलवा सके कि पाकिस्तान बनना गलत हुआ, वहां यहिया खां ने एक महीने के अन्दर इतिहास की वह सारी गन्दगी पूर्व बंगालियों के खून से धोकर रख दी !

यहियाखां ने जो पहली गोली ढाका में चलवायी वह मुजीबुर्रहमान के किसी अनुयायी को नहीं लगी बल्कि लगी जिन्ना के सीने पर। जिन्ना मर कर भी नहीं मरे थे, पर अब वह कयामत के रोज भी नहीं उठेंगे। उनका दो राष्ट्र सिद्धान्त इस बुरी तरह खतम कर दिया गया जो किसी और के वश का नहीं था। एक-एक लाश गिरती गयी और उसके साथ दो राष्ट्र सिद्धांत की धज्जियाँ उड़ती चली गयीं। ब्रिटिश सरकार ने अपने लगभग दो सौ वर्ष के राज्य में इस महादेश में केवल एक जलियांवाला बाग कांड किया था, अवश्य जनता की स्मरण शक्ति बड़ी कम है। १९४२ में हवाई जहाज से गांव-गांव पर गोले बरसाये गये, गांव के गांव जला दिये गये थे, स्त्रियों पर बलात्कार किया गया था जिसका कुछ ब्योरा नमूने के तौर पर "क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास" में संग्रहीत है। पर यहिया खां ने हर शहर में और बहुत से गांवों में जलियां वाला कांड किया और जितना ही उसने जुल्म किया, दो राष्ट्र सिद्धान्त की लाश उतनी ही नीचे पहुंच गयी। यहां तक कि उसे कीड़े खा गये और उसकी हड्डियाँ भी चूर-चूर हो गयीं। अब कोई बेशरम और आंखों का अन्धा, गाँठ का पूरा और इतिहास का शत्रु ही यह कह सकता है कि सारे मुसलमान एक जाति के और सारे हिन्दू दूसरी जाति के हैं। यह बहुत अच्छा हुआ कि पूर्व बंगाल में मुसलमानों के साथ हिन्दुओं का खून भी बहा है। यदि हिन्दुओं का खून संख्या की दृष्टि से कुछ ज्यादा बहा, तो उससे घबड़ाने की कोई बात नहीं क्योंकि इससे यहिया खां की बर्बरता का ही परिचय मिलता है न कि और किसी बात का। जो मुसलमानों को लाखों की संख्या में मार रहा है, वह दूसरों के साथ रियायत क्या करे ?

हम इस विषय पर जितना सोचते

हैं उतना ही हमें आश्चर्य होता है कि जिस दो राष्ट्र सिद्धान्त की काट कभी होगी, ऐसा हम नहीं समझते थे—वह हमेशा के लिए दफना दिया गया। इस प्रकार बंगला देश के युद्ध ने इस महादेश की एक बहुत बड़ी समस्या को बात की बात में हल कर दिया। जो लाखों तर्कों से नहीं होता, वह गोलियों से खुद ब खुद सिद्ध हो गया। आप लाख समझाते कि धर्म यहां तक कि भाषा एक होने पर भी स्वयं मुहम्मद साहब के देश अरब के जाने कितने टुकड़े हैं, पर किसी के कानों पर जूं नहीं रेंगती। पर यहिया खां ने जो कुछ कर दिखाया, उसका कोई जवाब नहीं।

दूसरी बात जो बंगला देश के युद्ध से बहुत बढ़कर सामने आयी वह यह आयी कि संयुक्त राष्ट्र संघ करीब-करीब एक व्यर्थ संगठन है; यह बड़े राष्ट्रों की कठपुतली है और इससे किसी को किसी प्रकार की कोई आशा नहीं हो सकती। जिस प्रकार प्रथम महायुद्ध के बाद उत्पन्न लीग आफ नेशन्स की उत्पत्ति हुई, और फासिस्टवाद के सिर उठाने के साथ उसका खात्मा हो गया था, इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्रसंघ का भी बंगला देश के संग्राम से अन्त हो गया। इस पर कोई आंसू नहीं बहायेगा और न कोई दिया जलायेगा।

तीसरी बात है चीन के सम्बन्ध में। आखिर चीन ने इस सम्बन्ध में क्या रवैया अख्तियार किया है? क्या चीन के साम्यवादी इतने अन्धे हैं कि उनके अपने घर के ऐन पड़ोस में क्या हो रहा है इसका पता नहीं लगता और केवल चीन ही क्यों, जो देश साम्यवाद का दावा करते हैं, वे अगर किसी न किसी बहाने से इस संग्राम से अलग रहे भी या इसके प्रति उदासीन रहे तो हम पूछना चाहेंगे कि उनमें और कथित पूंजीवादी राष्ट्रों में क्या फर्क है जो निरा स्वार्थ देखकर अपनी नीति तय करते है?

भारत के कुछ उर्दू पत्रों ने इस बात को सामने नहीं रखा, कि पाकिस्तान के असली नेता मुजीबुर्रहमान हैं न कि यहिया खां जिसने अपने को खामखां राष्ट्रपति का का खिताब दे रखा है। सारे पाकिस्तान के चुने हुए नेता मुजीबुर्रहमान हैं। संयुक्त पाकिस्तान की सबसे बड़ी भाषा बंगला है; जिसे ५४ प्रतिशत लोग बोलते हैं और उसके बाद पंजाबी का नम्बर है इसलिए पाकिस्तान की दो राष्ट्रभाषायें होनी चाहिए थीं—एक बंगला और दूसरी पंजाबी। उर्दू मातृभाषा वाले तो केवल ७॥ प्रतिशत लोग हैं। उसको राष्ट्रभाषा बनने का कोई अर्थ नहीं होता। भारत के इन उर्दू अखबारों से यह पूछना चाहिए कि क्या वे ऐसा पाकिस्तान चाहते हैं जिसमें चुने हुए नेता पाकिस्तान पर शासन करें, एक प्रान्त के द्वारा दूसरे प्रान्त का शोषण न हो, या वे यहिया ऐसे

हों जहाँ आसीन विषधर कुण्डली मारे,
प्रश्न है यह; क्या वहाँ तक जा सकोगे तुम ?
आज मग में फूल कांटे या कि पत्थर,
हैं नहीं देते दिखायी कहीं कुछ भी;
एक बस बारूद ही बारूद फैली,
छा चुकी है धुन्ध चारों ओर जिसकी;
गगन पर पाँखी नहीं, 'मिग' हैं विचरते,
एक खामोशी डरी-सी बुझी-पीली—
कदम बारूदी सड़क पर रख रही है,
रोशनी बन जल उठी लो, उधर तीली !
अणुबमों के पहन कर कुण्डल पधारे जो,
प्रश्न है; वह शान्ति क्या अपना सकोगे तुम ?
कागजों पर सुलझती हैं समस्याएँ,
विवशता फुटपाथ पर रोती-कलपती;
चाँद पर हमने जमाली है नजर अब,
भले यह धरती रहे योंही सुलगती !
सभ्यता वाली, बड़ी, अभिनव कला की,
हताहत क्यों हो गयी रस-मग्नता है ?
क्यों नये के नाम का तीखा प्रदर्शन ?
शील में भी आ गयी क्यों नग्नता है ?
आदमी को, आदमीयत से गिरादे जो;
प्रश्न है; उस संस्कृति का क्या करोगे तुम ?

❋ प्रेमशंकर 'आलोक'

आधुनिक युग में सबसे बड़े जालिम और दुष्ट को पाकिस्तान का नेता देखना चाहते हैं? यदि सचमुच संयुक्त राष्ट्रसंघ कोई जिन्दा संस्था होती तो यहिया खां को हथकड़ियों में लाया जाता और नूरेम्बर्ग मुकदमे की तरह एक मुकदमा चलाया जाता जिसमें यहियां खा को और उसके साथियों को अन्तारांष्ट्रीय अदालत फांसी की सजा देती। मैं तो यहां तक कहूँगा कि जो उर्दू अखबार इस समय बंगला देश का पक्ष न लेकर गोल मोल भाषा में याहिवा की तरफ दारी कर रहे हैं, वे न तो लोकतंत्रवादी हैं, न देशभक्त हैं। मैं तो यहां तक कहूंगा कि वे किसी भी अर्थ में मुसलमान भी नही हैं। और उनको पागलखाने या जेलखाने में होना चाहिए। यदि हमारे यहां कोई गुप्त पुलिस है तो उसे इस मौके पर ऐसे सब लोगों की लिस्ट तैयार कर लेनी चाहिए जो न मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व वाले पाकिस्तान के नागरिक होने योग्य हैं, न भारत के नागरिक होने योग्य हैं। मैंने यह बात बहुत ही दुख के साथ और अपनी सारी क्रांतिकारी जिम्मेदारी के साथ लिखी। मुझे आशा है कि यदि हम कुदाल को कुदाल नहीं कहना चाहते, उससे काम नहीं बनेगा। हमें खुलकर ऐसे गुमराह लोगों का विरोध करना पड़ेगा और उन्हें वहीं भेजना पड़ेगा यानी जेलखाने या पागलखाने जहां के वे लायक हैं।

❋

✲ अशफाक अहमद

कहानी पाकिस्तान की

सर्दी की एक अंधेरी रात की बात है, मैं अपने गर्म बिस्तर पर सर ढके गहरी नींद सो रहा था कि किसी ने जोर से झंझोड़ कर जगा दिया।

—कौन है ? मैंने चीख कर पूछा और उत्तर में एक बड़ा-सा हाथ मेरे सर से टकराया और अंधेरे से आवाज आयी—थानेवालों ने रानो को गिरफ्तार कर लिया।

—क्या ? मैंने कांपते हाथ को परे ढकेलना चाहा, क्या है ? और अंधेरे का भूत बोला—थाने वालों ने रानो को पकड़ लिया—इसका फारसी में अनुवाद करो।

—दाऊ जी के बच्चे, मैंने रूखे होकर कहा, 'आधी-आधी रात तंग करते हैं··· दूर हो जाओ···मैं आपके घर नहीं रहता···मैं नहीं पढ़ता···दाऊजी के बच्चे··· कुत्ते···और मैं रोने लगा।

दाऊजी ने पुचकार कर कहा––अगर पढ़ेगा नहीं, तो पास कैसे होगा ? पास नहीं होगा, तो बड़ा आदमी न बन सकेगा ? फिर लोग तेरे दाऊजी को कैसे जानेंगे ?

—भगवान करे सब मर जायें, आप भी, आपको जानने वाले भी···और मैं भी··· मैं···भी अपनी जवान मौत मैं पर ऐसा रोया कि दो क्षण के लिए धिग्घी बंध गयी।

दाऊजी बड़े प्यार से मेरे सर पर हाथ फेरे जाते थे और कह रहे थे––बस, अब चुप कर, शाबाश···मेरा अच्छा बेटा, इस समय यह अनुवाद कर दे, फिर नहीं जगाऊंगा।

आंसुओं का तार टूटता जा रहा था। मैंने जलकर कहा—आज हरामजादे रानो को पकड़कर ले गये कल किसी और को पकड़ लेंगे, आपका अनुवाद तो···

दाऊजी चुप खड़े थे, एक लड़के ने उनकी पगड़ी उतार कर कहा—'काटो चोटी, काटो' रानू; ने कटिया काटने वाली दरांती से दाऊजी की चोटी काट दी, वही लड़का फिर बोला—'बुला दें' और रानू ने कहा—'जाने दो, बुड्ढा है' फिर बोल—'मेरी साथ बकरियां चराया करेगा' और उसने दाऊजी की ठोढ़ी ऊपर उठाते हुए कहा—'कलमा पढ़ पंडित' धीरे से बोले—'कौन सा ?' रानू ने उनके नंगे सर पर ऐसा थप्पड़ मारा कि वह गिरते-गिरते बचे और बोला, 'साले कलमा भी कोई पांच-सात हैं,' ?

—नहीं···नहीं···उन्होंने बात काट कर कहा, मेरा तेरा वादा रहा। आज के बाद रात को जगा कर कुछ न पूछूंगा। शाबाश, अब बता—थाने वालों ने रानो को गिरफ्तार कर लिया।

मैंने रूठ कर कहा––मुझे नहीं आता।

—तुरंत 'नहीं' कह देता है। उन्होंने सर से हाथ उठा कर कहा, प्रयत्न तो कर।

—नहीं करता, मैंने जल कर उत्तर दिया।

इस पर वह जरा हंसे और बोले––कारकुनाने गजमाखाना रानुरा तौफीक करदंद।

—कारकुनाने गजमाखाना—थाने वालों––भूलना नहीं, नया शब्द है, नयी विधि है। दस बार कहो।

मुझे पता था कि यह बला टलने वाली नहीं। मजबूरन गजमाखाना का पहाड़ा शुरू कर दिया।

जब दस बार कह चुका, तो दाऊजी ने बड़े लजीले ढंग से कहा—अब सारा वाक्य पांच बार कहो। जब पांच बार की मुसीबत भी समाप्त हुई, तो उन्होंने आराम से बिस्तर में लिटाते हुए और रजाई उढ़ाते हुए कहा—भूलना नहीं, सुबह उठते ही पूछूंगा।

* *

शाम को जब मैं मुल्लाजी से सिपारे (कुरान के भाग) का पाठ लेकर लौटता तो खरासियों (गधेवालों) की गली से होकर अपने घर जाया करता। इस गली में तरह-तरह के लोग बसते थे। मगर मैं केवल माशकी से परिचित था। माशकी के घर के साथ बकरियों का एक बाड़ा था जिसके तीन तरफ कच्चे मकानों की दीवारें और सामने की ओर आड़ी-तिरछी लकड़ियों और कांटेदार झाड़ियों का ऊंचा-नीचा जंगल था। इसके बाद गली में जरा-जरा मोड़ आता, गली और जरा तंग हो जाती।

इसमें अकेले चलते हुए मुझे सदा यूं लगता जैसे मैं बंदूक की नली में चला जा रहा हूं और ज्यों ही मैं उसके दहाने से बाहर निकलूंगा जोर से 'ठांय' होगी और मैं मर जाऊंगा। मगर शाम के समय कोई-न-कोई राही इस गली में जरूर मिल जाता और मेरी जान बच जाती। इन जाने-आने वालों में कभी-कभी एक सफेद मूंछों वाला लंबा-सा आदमी भी होता, जिसकी शक्ल बारहा माह वाले मलकी (जोतदार) से मिलती थी। सर पर मलमल की बड़ी-सी पगड़ी, जरा-सी झुकी हुई कमर पर खाकी रंग का ढीला और लंबा कोट, खद्दर का तंग पाजामा और पांव में बूट, अधिकतर इनके साथ मेरी ही आयु का एक लड़का भी होता, जिसने बिल्कुल इसी तरह के कपड़े पहने होते और वह आदमी अपने कोट की जेबों में हाथ डाले धीरे-धीरे इससे बातें किया करता। जब वह मेरे बराबर आते, तो लड़का मेरी तरफ देखता और मैं उसकी तरफ और फिर एक क्षण को बिना झिझके गर्दन को मोड़कर हम अपनी राह चले जाते।

एक दिन मैं और मेरा भाई 'ठट्टियों के जोहड़' से मछलियां पकड़ने का निष्फल प्रयत्न करने के बाद वापस आ रहे थे तो नहर के पुल पर यही आदमी अपनी पगड़ी गोद में डाले बैठा था और उसकी सफेद चुटिया मैली मुर्गी के पर की भांति उसके सर से चिपटी हुई थी। उसके पास से गुजरते हुए मेरे भाई ने माथे पर हाथ रख कर जोर से कहा—दाऊजी सलाम। और दाऊजी ने सर हिला कर कहा—जीते रहो।

यह जान कर कि मेरा भाई उससे परिचित है मैं अत्यन्त खुश हुआ। और थोड़ी देर बाद अपनी पतली आवाज में चिल्लाया—दाऊजी सलाम।

—जीते रहो, जीते रहो, उन्होंने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कहा और मेरे भाई ने पटाख से एक थप्पड़ दिया—शेखी खोर, कुत्ते! वह चीखा—मैंने सलाम कर दिया, तो तेरी क्या जरूरत थी। हर बात में अपनी टांग फंसाता है कमीना।

इस्लामिया प्राइमरी स्कूल से चौथा पास करके मैं एम० बी० हाई स्कूल की पांचवीं कक्षा में दाखिल हुआ तो दाऊजी का लड़का मेरे क्लास का साथी निकला। उसकी सहायता से मैं जान गया कि दाऊजी खत्री थे और कसबे के मुंसफी में अरजी लिखने का काम करते थे। लड़के का नाम उमीचंद था। वह अपनी कक्षा में तेज था। उसकी पगड़ी कक्षा में सबसे बड़ी थी और मुंह बिल्ली की तरह छोटा। कुछ लड़के उसको 'म्याऊं' कहते मगर मैं दाऊजी के कारण उसके असली नाम से पुकारता था, इस कारण वह मित्र हो गया था और हमने एक-दूसरे को निशानियां देकर पक्के मित्र बनने का वादा कर लिया।

गर्मियों की छुट्टियों के शुरू होने में एक हफ्ता रहा होगा जब मैं उमीचन्द के साथ पहली बार उसके घर गया। जब हम ड्योढ़ी में दाखिल हुए तो उमीचन्द ने चिल्ला कर बेबे नमस्ते कहा और मुझे सहन के बीचोंबीच छोड़ कर स्वयं बैठक में घुस गया। बरामदे में बोरियां बिछाये बेबे मशीन चला रही थी और उसके पास एक लड़की बड़ी-सी कैंची से कपड़े काट रही थी, बेबे ने मुंह-ही-मुंह में उत्तर दिया और वैसे ही मशीन चलाती रही। लड़की ने निगाह ऊपर उठाकर मेरी ओर देखा और गर्दन मोड़कर कहा—बेबे शायद डाक्टर साहब का लड़का है। मशीन रुक गयी, हां, हां, बेबे ने मुस्करा कर कहा और हाथ के इशारे से मुझे अपनी तरफ बुलाया।

—क्या नाम है तुम्हारा? बेबे ने प्रेम पूर्वक पूछा।

मैंने निगाहें नीचे झुकाये धीरे से अपना नाम बताया।

—आफताब से बहुत शक्ल मिलती है, लड़की ने कैंची रखते हुए कहा, है ना बेबे? क्यों नहीं, भाई जो हुआ आफताब का।

अंदर से आवाज आयी—आफताब क्या बेटा?

—आफताब का भाई है दाऊजी, लड़की ने रुकते हुए कहा, उमीचन्द के साथ आया है।

अन्दर से दाऊजी आये। उन्होंने घुटनों तक अपना पाजामा चढ़ा रखा था और कुर्ता उतरा हुआ था मगर सर पर पगड़ी ज्यों-की-त्यों बंधी हुई थी। पानी की एक हलकी-सी बाल्टी उठाये वह बरामदे में आ गये और मेरी ओर ध्यानपूर्वक देखते

हुए बोले—हां, बहुत शक्ल मिलती है। मगर मेरा आफ़ताब बहुत दुबला है और यह गोल-मटोल-सा है। फिर बाल्टी फर्श पर रखकर मेरे सर पर हाथ फेरा और पास ही काठ का एक स्टूल घसीटकर बैठ गये। जमीन से पांव ऊपर उठा कर हलके-से उन्हें झाड़ा और फिर बाल्टी में डाल दिया। उन्होंने बाल्टी से पानी भर-भर कर टांगों पर डालते हुए पूछा—कौन सा सिपारा पढ़ रहे हो?

—चौथा, मैंने दृढ़तापूर्वक कहा।

—क्या नाम है तीसरे सिपारे का? उन्होंने पूछा।

—जी पता नहीं। मेरी आवाज फिर डूब गयी।

—तिलकर रसूल। उन्होंने पानी से हाथ निकाल कर कहा।

उमीचंद अभी तक बैठक के अंदर ही था और मैं झेंप की गहराइयों में डूबता जा रहा था। दाऊजी ने निगाहें मेरी तरफ फेर कर कहा—'सूरत फातिहा' (कुरान का प्रारंभिक अध्याय) सुनाओ।

—मुझे नहीं आता—मैंने लज्जित होकर कहा।

उन्होंने चकित होकर मेरी ओर देखा और कहा—'अलहमदो लिल्लाह' (सूरत फातिहा का प्रारंभिक वाक्य) भी नहीं जानते?

—'अलहमदो लिल्लाह' तो जानता हूं जी, मैंने जल्दी से कहा और नजरें झुका लीं।

वह जरा मुसकराये और अपने से कहने लगे—एक ही बात है, एक ही बात है। फिर उन्होंने सर के इशारे से कहा—सुनाओ।

जब मैं सुनाने लगा तो उन्होंने अपना पाजामा घुटनों से नीचे कर लिया और पगड़ी का पल्लू चौड़ा करके कंधों पर डाल लिया और जब मैंने 'वल्द दुआलीन' (सूरत फातिहा का अंतिम वाक्य) कहा तो मेरे साथ उन्होंने भी 'आमीन' कहा। मुझे खयाल हुआ कि वह उठकर इसी समय मुझे इनाम देंगे, क्योंकि पहली बार मैंने अपने ताया को अलहमदो सुनायी थी, तो उन्होंने भी ऐसे ही आमीन किया था और साथ ही एक रुपया इनाम भी दिया था। पर दाऊजी उसी तरह रहे बल्कि और भी पत्थर हो गये। इतने में उमीचंद किताब पढ़ कर ले आया और जब मैं चलने लगा, तो मैंने स्वभाव के विरुद्ध धीरे से कहा—दाऊजी सलाम और उन्होंने वैसे ही डूबे-डूबे उत्तर दिया—जीते रहो।

बेबे ने मशीन रोक कर कहा—कभी-कभी उमीचंद के साथ खेलने आ जाया कर।

—हाँ, हां, आ जाया कर, दाऊजी बोले। आफताब भी आ जाया करता था। फिर उन्होंने बाल्टी पर झुक कर कहा, हमारा आफताब तो हमसे बहुत दूर हो गया

और फारसी का शेर पढ़ने लगे। यह दाऊजी से मेरी पहली भेंट थी। और इस भेंट से मैं यह परिणाम निकाल कर चला कि दाऊजी बड़े कंजूस हैं। बहुत अधिक चुप-से हैं और कुछ बहरे-से।

उसी दिन शाम को अपनी अम्मां को बताया कि मैं दाऊजी के घर गया और वह आफताब भाई को बहुत याद कर रहे थे। अम्मां ने झुंझला कर कहा--तू मुझसे पूछ तो लेता। यह ठीक है कि आफताब उनसे पढ़ता रहा है, और उनकी बहुत इज्जत करता है, मगर तेरे अब्बाजी उनसे बोलते नहीं। किसी बात पर झगड़ा हो गया था सो अभी तक नाराजगी चली आ रही है। अगर उन्हें पता चला कि तू उनके घर गया था तो वह नाराज होंगे। फिर अम्मां ने नर्म हो कर कहा--अपने अब्बा से इसका जिक्र न करना।

* *

घर में दाऊजी को अपनी बेटी से बड़ा प्यार था। हम सब उसे बीबी कह कर पुकारते थे। अकेले दाऊजी कुररत (ठंडक) कह कर पुकारते थे, कभी-कभी बैठे-बैठे हांक लगाकर कहते--कुररत बिटिया, यह तेरी कैंची कब छूटेगी और वह इसके उत्तर में मुसकरा कर चुप हो जाती। बेवे को इस नाम से चिढ़ थी वह चीख कर झट उत्तर देतीं--तुमने इसका नाम कुररत रख कर इसके भाग्य में कुर्ते सीना लिखा दिया है। मुसकरा कर कहते, 'अनपढ़' अगर सूरत अच्छी न हो तो सलीका ही हो, आदमी बात तो मुंह से अच्छी निकाले। और दाऊजी को उनके मुंह में जो आता कहती जातीं। पहले कोसने, फिर बददुआएं, फिर अंत में गालियों पर उतर आतीं।

बीबी रोकती, तो दाऊजी कहते--हवाएं चलने को होती हैं। तुम इन्हें रोको मत। फिर वह अपनी पुस्तकें समेटते और अपना प्रिय हसीर उठा कर चुपके से सीढ़ियां चढ़ जाते।

नवीं कक्षा के शुरू में मेरी एक बुरी आदत पड़ गयी और इस आदत ने अजीब गुल खिलाये। हकीम अली अहमद मरहूम (स्वर्गीय) हमारे कस्बे के एक ही हकीम थे। इलाज से तो उन्हें खास वास्ता नहीं था परन्तु बातें बड़ी मजेदार सुनाते थे और औलियाओं (अवतारों) के किस्से, जिन्न-भूतों की कहानियां, हजरत सुलेमान (एक अवतार) और मलका सबा (अरब की रानी और सुलेमान की प्रेमिका) की घरेलू जिंदगी की दास्तानें उनके निशाने पर लगने वाले टोटके थे। उनके तंग अंधेरे मतब (दवाखाना) में माजून के चंद डिब्बे और शरबत की चंद बोतलें और दो-तीन शीशियों के अतिरिक्त कुछ न था। दवाओं के अलावा वह अपनी तिलिस्माती तक-रीर और हजरत सुलेमाना के मुख्य तावीजों से रोगी का इलाज करते थे।

मैं अपने अस्पताल से खाली शीशियां और बोतलें चुराकर लाता और उसके

बदले में वह मुझे दास्तान अमीर हमजा (कहानियों की एक किताब) की जिल्दें पढ़ने को दिया करते। ये पुस्तकें इतनी मनोरंजक थीं कि मैं रात-रात भर अपने बिस्तर में दुबक कर पढ़ता और सुबह देर तक सोया रहता।

रात तिलिस्मे होशरुबा (तिलिस्मी कहानियों की किताब) के महलों में गुजरती और दिन क्लास में बैंच पर खड़े होकर। तिमाही में फेल होते-होते बचा। छमाही में बीमार पड़ गया और सालाना में वैद्यजी की सहायता से मास्टरों से मिल कर पास हो गया। दसवीं में संदलीनामा (फारसी की एक किताब) फसाना आजाद (उर्दू की हास्य कथा) अलिफ लैला, साथ-साथ चलते थे। फसाना आजाद और संदलीनामा घर पर रखते थे। परंतु अलिफ लैला स्कूल के डैस्क में बंद रहती थी। अंतिम बैंच पर भूगोल की किताब के नीचे मैं सिंधबाद जहाजी के साथ-साथ चलता और इस तरह दुनिया की सैर करता।

* *

२२ मई का किस्सा है कि विश्वविद्यालय से परिणाम की किताब एम. बी. हाई स्कूल पहुंची। उमीचंद न केवल स्कूल में वरन जिले भर में प्रथम आया था। ७ लड़के फेल हुए थे और २२ पास। वैद्यजी का जादू विश्वविद्यालय पर नहीं चल सका और पंजाब के कठोर विश्वविद्यालय ने मेरा नाम भी उन ७ लड़कों में सम्मिलित कर दिया। उसी शाम पिताजी ने मेरी पिटाई की और घर से बाहर निकाल दिया। मैं अस्पताल की रेहेंट की गद्दी पर आ बैठा और रात भर यह सोचता रहा, अब क्या करना चाहिए और कहां जाना चाहिए ?

अगले दिन मेरे फेल होनेवाले साथियों में से खुशिया, कोडू, और दिलसिव, याबीब, मस्जिद के पिछवाड़े टाल के पेड़ के पास बैठे मिल गये। वह लाहौर जाकर व्यापार करने का प्रोग्राम बना रहे थे।

दिलसिव, याग्रीब ने मुझे बताया कि लाहौर में बहुत व्यापार है क्योंकि उसके मामाजी अक्सर अपने मित्र फतेहचंद के ठेकों का जिक्र करते थे, जिसने साल में ही दो कारें खरीद ली थीं।

मैंने उनके व्यापार के विषय में पूछा तो याबीब ने कहा कि लाहौर में हर प्रकार के व्यापार मिल जाते हैं। बस, एक दफ्तर होना चाहिए और उसके सामने बड़ा-सा साइनबोर्ड देखकर लोग खुद व्यापार दे जाते हैं।

अतः यह निश्चित हुआ कि अगले दिन दो बजे वाली गाड़ी से हम रवाना हो जायेंगे, घर पर पहुंच कर मैं यात्रा की तैयारी करने लगा। बूट पालिश कर रहा था कि नौकर ने आकर कहा—चलो जी, डाक्टर साहब बुलाते हैं। मैं डरते-डरते बरामदे की सीढ़ियां चढ़ा फिर धीरे-से जाली वाला दरवाजा खोलकर अब्बाजी के कमरे में

दाखिल हुआ तो वहां उनके अतिरिक्त दाऊजी भी बैठे थे। मैंने डरते-डरते दाऊजी को सलाम किया, उसके उत्तर में बहुत धीरे से जीते रहो की दुआ सुनी।

—इनको पहचानते हो ? अब्बाजी ने कठोरता से कहा।

—बेशक, मैंने एक सभ्य की तरह कहा।

—बेशक के बच्चे। हरामजादे। मैं तेरी यह सब···

—ना, ना, डाक्टर साहब, दाऊजी ने हाथ ऊपर उठा कर कहा, यह बड़ा अच्छा लड़का है, इसको तो···

और डाक्टर साहब ने बात काट कर कठोरता से कहा—आप नहीं जानते मुंशी जी, इस कमीने ने मेरी इज्जत खाक में मिला दी।

—आप चिंता न करें। यह हमारे आफताब से भी बुद्धिमान है। एक दिन···

अबकी बार डाक्टर साहब को गुस्सा आ गया। मेज पर हाथ मार कर बोले—कैसी बात करते हो मुंशीजी, यह आफताब के जूते की बराबरी नहीं कर सकता।

—कर लेगा, कर लेगा डाक्टर साहब! दाऊजी ने सर हिलाते हुए, कहा आप निश्चिन्त रहें फिर वह अपनी कुर्सी से उठे और मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए बोले—मैं सैर को चलता हूं, तुम मेरे साथ आओ, बातें करेंगे। अब्बाजी उसी तरह कुर्सी पर बैठे रजिस्टर उलटते रहे और गुस्से में बड़बड़ाते रहे।

दाऊजी मुझे इधर-उधर घुमाते और पेड़ों के नाम फारसी में बताते हुए नहर के उसी पुल पर ले गये, जहां मेरी उनसे पहली भेंट हुई थी।

अपनी खास जगह पर बैठकर उन्होंने अपनी पगड़ी उतारकर गोद में रख ली। सर पर हाथ फेरा और मुझे सामने बैठने का इशारा किया। फिर उन्होंने आंखें बंद कर लीं और कहा—आज से मैं तुम्हें पढ़ाऊंगा और क्लास में प्रथम श्रेणी जरूर दिला दूंगा। मेरे हर उद्देश्य में भगवान की सहायता होती है और उसने मुझे अपनी कृपा से निराश कभी नहीं किया।

—मुझसे पढ़ाई न होगी। मैंने हठ करके बात काटी।

—पढ़ाई न होगी तो और क्या होगा, गोलू! उन्होंने मुसकरा कर कहा।

मैंने कहा—मैं व्यापार करूंगा। रुपये कमाऊंगा और अपनी कार लेकर आऊंगा। फिर देखना······

अबकी बार दाऊजी ने मेरी बात काटी और प्रेमपूर्वक कहा—भगवान एक छोड़ दस कारें तुझे दे। पर एक अनपढ़ की कार में मैं न बठूंगा न डाक्टर साहब।

मैंने जल कर कहा—मुझे किसी की परवाह नहीं। डा० साहब अपने यहां राजी रहें, मैं अपने यहां खुश।

उन्होंने मेरी बात न सुनी और कहने लगे—अगर अपने उस्ताद के सामने मेरे

मुंह से ऐसी बात निकल जाती ?...तो...तो उन्होंने तुरन्त पगड़ी उठाकर सर पर रख ली और कहने लगे–मैं हुजूर के दरबार का तुच्छ कुत्ता। मैं हजरत मौलाना की खाक से बुरा व्यक्ति हो कर आका से यह कहता, नालत या धिक्कार का तौक न पहनता। फिर उन्होंने दोनों हाथ सीने पर रख लिये और सर गोद में झुकाकर बोले–मैं जात का गड़रिया। मेरा पिता मुडासी का ग्वाला। मैं अविद्या का पुत्र। मेरा वंश अब जेहेल (हजरत मुहम्मद साहब के शत्रु चाचा) के वंश से सम्बन्धित और आका की एक नजर, हजरत का इशारा, हुजूर ने चंतू को मुंशी चन्तराम बना दिया। लोग कहते हैं मुंशीजी। मैं कहता हूं, रहमत उल्ला एलैह (भगवान के कृपापात्र) के तुच्छ गुलाम पर कृपा हो...लोग समझते हैं...दाऊजी कभी हाथ जोड़ते कभी सर झुकाते, कभी उंगलियां चूमकर आंखों को लगाते और बीच-बीच में फारसी के शेर पढ़ते जाते।

दाऊजी ने मेरा जीवन बरबाद कर दिया। मेरा जीना हराम कर दिया। सारा दिन स्कूल की बकवास में गुजरता और रात—गर्मियों की छोटी - सी रात–प्रश्नों के उत्तर में।

कोठे पर उनकी खाट मेरे बिस्तर के साथ लगी है और दाऊजी पूछ रहे हैं— बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले, इसका अनुवाद करो ?

मैंने आज्ञाकारी होकर कहा—जी यह लम्बा वाक्य है। सुबह लिखकर बता दूंगा। कोई दूसरा पूछिए। उन्होंने आकाश की ओर निगाहें उठाकर बहुत अच्छा कहा।

* *

उमीचन्द कालेज चला गया तो उसकी बैठक मुझे मिल गयी और दाऊजी के मन में उसके प्रेम पर भी अधिकार कर लिया। अब दाऊजी मुझे बहुत अच्छे लगने लगे थे। उनकी जो बातें मुझे उस समय बुरी लगती थीं, वह अब भी बुरी लगती हैं बल्कि अब पहले से अधिक ही। शायद इसलिए कि मैं मनोविज्ञान का एक विद्यार्थी हूं और दाऊजी 'मुल्लाई मकतब' (पुराने स्कूल) के पढ़े-पले हुए थे। सबसे बुरी आदत उनकी उठते-बैठते प्रश्न पूछने की थी और दूसरी खेलने-कूदने से मना करने की। वह तो बस यह चाहते थे कि आदमी पढ़ता रहे...पढ़ता रहे और जब उसे टी० बी० का रोग हो जाये और मृत्यु का दिन करीब आये, तो किताबों के ढेर पर जान दे दे।

बेबे को इन दाऊजी से बिना कारण ही बैर था। दाऊजी उनसे बहुत डरते थे। वह दिन भर मोहल्ले वालियों के कपड़े सिया करतीं और दाऊजी को कोसने दिये जातीं। उनकी इस जुबानदराजी (कोसने) पर मुझे बहुत गुस्सा आता था मगर

पानी में रह कर मगरमच्छ से बैर न हो सकता था। कभी-कभी वह बुरी-बुरी गालियों पर उतर आतीं तो दाऊजी मेरे पास बैठक में आ जाते और कानों पर हाथ रखकर कुर्सी पर बैठ जाते। थोड़ी देर बाद कहता—पीछे बुराई करना बड़ा बुरा है। परन्तु मेरा भगवान मुझे क्षमा करे। तेरी बेबे भटियारिन है।

और वास्तव में बेबे भटियारिन-सी थीं। उनका रंग सख्त काला था और दांत बहुत सफेद, माथा मेहराबदार और आंखें चुनिया-सी। चलतीं तो ऐसी बिल्ली की सी चाल से जैसे (खुदा मुझे माफ करे) कुटनी कनसुइयां लेती फिरती है। बेचारी बीबी को ऐसी बातें कहतीं कि वह दिनों दिन रो-रोकर थक जाती।

यूं तो बीबी बेचारी बड़ी अच्छी लगती थी परन्तु मेरी भी न बनती थी। मैं कोठे पर सवाल निकाल रहा हूं। दाऊजी नीचे बैठे हैं और बीबी ऊपर बरसाती से ईंधन लेने आयी, तो जरा रुककर मुझे देखा, फिर मुंडेर से झांक कर बोली—दाऊजी, पढ़ नहीं रहा है, तिनकों की चारपाइयां बना रहा है।

मैं चिड़चिड़े बच्चे की तरह मुंह चिढ़ाकर कहता—तुझे क्या? नहीं पढ़ता तो तू क्यों बड़-बड़ करती है...आयी बड़ी थानेदारनी।

और दाऊजी नीचे से हांक लगाकर कहते—ना ना गोलू-मोलू, बहिनों से नहीं झगड़ते और मैं जोर से चिल्लाता—पढ़ रहा हूं जी, झूठ बोलती हैं। दाऊजी धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आ जाते और कापियों के नीचे आधी छुपी हुई चारपाई देखकर कहते—कुररत बिटिया तू इसे चिढ़ाया न कर। बड़ी मुश्किल से काबू किया है। अगर एक बार फिर बिगड़ गया, तो मुश्किल से ठीक होगा।

*　　*

उन दिनों नित्य मैं १० बजे सुबह दाऊजी के यहां से चल देता। घर जाकर नाश्ता करता और फिर स्कूल पहुंच जाता। आधी छुट्टी पर मेरा खाना स्कूल भेज दिया जाता। शाम को घर आने पर अपनी लालटेन तेल से भरता और दाऊजी के यहां आ जाता फिर रात का खाना भी दाऊजी के घर ही भिजवा दिया जाता।

जिन दिनों मुंसिफी बन्द होती, दाऊजी स्कूल के मैदान में आकर बैठ जाते और मेरी प्रतीक्षा करते। वहां से घर तक प्रश्नों की बौछार रहती। स्कूल में जो कुछ पढ़ाया गया होता उसे विस्तारपूर्वक पूछते। फिर मुझे मेरे घर छोड़कर स्वयं सैर को चले जाते।

एक दिन अचानक मैं दाऊजी को लेने मुंसिफी पहुंच गया। उस समय कचहरी बन्द हो गयी थी और दाऊजी नानबाई के छप्पर तले एक बेंच पर बैठ गुड़ की चाय पी रहे थे। मैंने धीरे से जाकर कहा—चलिए, मैं आपको लेने आया हूं, उन्होंने मुझे देखे बगैर चाय के बड़े-बड़े घूंट भरे, एक आना जेब से निकाल कर नानबाई के

हवाले किया और चुपचाप मेरे साथ चल दिये। मैंने शरारत से नाचकर कहा—घर चलिए, बेबे से कहूंगा कि आप चोरी-चोरी चाय पीते हैं।

दाऊजी शर्मिंदगी छिपाते हुए बोले—इसकी चाय बहुत अच्छी होती है और गुड़ की चाय से थकान भी दूर हो जाती है। फिर यह एक आने में गिलास भर के देती है तुम अपनी बेबे से न कहना, वह झगड़ा शुरू कर देगी। ज्यादती पर उतर आयेगी, फिर उन्होंने डर कर मायूस होकर कहा—उसकी प्रकृति ही ऐसी है। उस दिन मुझे दाऊजी पर बड़ी दया आयी। मेरा मन उनके लिए बहुत कुछ करने को चाहने लगा। परन्तु इस समय मैंने बेबे से न कहने का वादा करके ही उनके लिए बहुत कुछ किया।

जब इस किस्से का जिक्र मैंने अम्मां से किया तो वह कभी मेरे हाथ और कभी नौकर के द्वारा दाऊजी के यहां दूध, फल और चीनी इत्यादि भेजने लगी। मगर इस भेजने से दाऊजी को कभी भी कुछ नसीब न हुआ। हां बेबे की निगाहों में मेरी कद्र बढ़ गयी और उन्होंने किसी सीमा तक मुझसे रियायती व्यवहार करना शुरू कर दिया।

मुझे याद है एक सुबह मैं दूध से भरा तामलोट लाया तो बेबे वहां नहीं थीं। वह अपनी सखियों के साथ बाबा सावन के तालाब में स्नान करने गयी थीं और घर में केवल दाऊजी और बीबी थे। दूध देखकर दाऊजी ने कहा—चलो आज तीनों चाय पियेंगे। मैं दूकान से गुड़ लेकर आता हूं तुम पानी चूल्हे पर रखो। बीबी ने जल्दी-जल्दी चूल्हा सुलगाया, मैं पतीली में पानी डाल कर लाया और फिर हम दोनों ही चौके पर बैठ कर बातें करने लगे। दाऊजी गुड़ लेकर आ गये तो उन्होंने कहा, तुम दोनों अपने-अपने काम पर बैठो, चाय मैं बनाता हूं, बीबी मशीन चलाने लगी और मैं पढ़ने का काम करने लगा। दाऊजी चूल्हा भी झोंके जाते और स्वभाव के अनुसार मुझे भी ऊंचे-ऊंचे बताते जाते—गैलेलियो ने कहा—जमीन सूर्य के चारों ओर घूमती है। यह न लिख देना कि सूर्य के चारों ओर घूमती थी। पानी उबल रहा था। दाऊजी खुश हो रहे थे। इसी खुशी में झूम - झूम कर वह अपना ताजा बनाया हुआ गीत गा रहे थे।

इतने में दरवाजा खुला और बेबे अन्दर आयीं। दाऊजी ने दरवाजा खुलने की आवाज पर पीछे मुड़कर देखा और उनका रंग फक हो गया। चमकती हुई पतीली से गर्म-गर्म भाप उठ रही थी। इसके अन्दर चाय के छोटे-छोटे छलावे एक दूसरे के पीछे शोर मचाते फिरते थे। उसी समय खेल रचाने वाला बुड्ढा पकड़ा गया। बेबे ने आगे बढ़ कर चूल्हे की तरफ देखा और दाऊजी ने चौके से उठते हुए क्षमा से भरे शब्दों में कहा—चाय है।

बेबे ने एक दोहत्थड़ दाऊजी की कमर में मारा और कहा–बुड्ढे, तुझे लाज नहीं आती। तुम पर झाड़ू फिरे, तुम्हें बम समेटे, यह तेरे चाय पीने के दिन हैं। मैं विधवा घर में न थी तो तुझको किसी का डर नहीं था। तुझे मौत नहीं आती··· ऊं हूं, तुझे क्यों आयेगी ? कपड़े से पतीली पकड़ कर चूल्हे से ऊठायी और जमीन पर दे मारी। गर्म-गर्म चाय के छपके दाऊजी की पिंडलियों और पांव पर गिरे और वह–ओ तेरा भला हो जाय, ओ तेरा भला हो, कहते वहां से एक बच्चे की तरह भागे और बैठक में घुस गये।

दाऊजी अपनी खास कुर्सी पर बैठे थे और पांव सहला रहे थे। पता नहीं उन्हें इस दशा में देखकर मुझे क्यों गुदगुदी हुई कि मैं अलमारी के अन्दर मुंह करके हंसने लगा। उन्होंने हाथ के इशारे से मुझे पास बुलाया और बोले–खुदा का शुक्र करो कि मुसीबत में गिरफ्तार हुआ। मैंने आश्चर्य से उनकी तरफ देखा, तो वह बोले––– आकाए नामदार का एक तुच्छ गुलाम गर्म पानी की चन्द छींटे पड़ने पर रोये तो धिक्कार है इसके जीवन पर। खुदा इब्राहीम (एक अवतार) मुझे साहस दे। अयूब (कुरान में वर्णित एक अवतार का नाम) मुझे सन्तोष प्रदान करे।

मैंने कहा–आकाए नामदार कौन ? तो दाऊजी को यह सुनकर दुःख हुआ। उन्होंने प्यार से कहा–जाने पिदर (पिता के प्यारे), यूं न पूछा कर, वे मेरे उस्ताद मेरे हजरत की आत्मा को मुझसे परेशान न कर, वह मेरे आका भी थे। मेरे बाप भी और उस्ताद भी। वह तेरे दादा उस्ताद हैं। और उन्होंने हाथ सीने पर रख लिये।

मैं चारपाई के कोने से फिसलकर बिस्तर में पहुंच गया और चारों ओर रजाई लपेट कर दाऊजी की ओर देखने लगा, जो सर झुका कर कभी अपने पैर की तरफ देखते थे और कभी पिंडलियां सहलाते थे। थोड़े-थोड़े समय के बाद थोड़ा हंसते थे मैं क्या था और क्या हो गया···हजरत मौलाना की पहली आवाज क्या थी ? मेरी तरफ सर उठाकर कहा—चौपालजादे हमारे पास आओ। मैं लाठी टेकता हुआ उनके पास जा खड़ा हुआ। छत्ता पहाड़ और दूसरे गांव के लड़के गोल घेरा बनाये उनके सामने बैठे पाठ याद कर रहे थे। एक दरबार-सा लगा था और किसी को आंख ऊपर उठाने का साहस नहीं था···मैं हुजूर के पास गया। फरमाया, भाई हम तुमको हर रोज यहाँ बकरियां चराते देखते हैं। उन्हें चरता छोड़कर हमारे पास आ जाया करो और कुछ पढ़-लिख लिया करो···फिर हुजूर ने मेरी बिनती सुने बगैर पूछा–क्या नाम है तुम्हारा ? मैंने गंवारुओं की तरह कहा···चंतू···हजरत मुस्कराये··· थोड़ा-सा हंसे भी···फरमाने लगे—पूरा नाम क्या है ? फिर स्वयं ही बोले–चंतराम होगा। मैंने सर हिला दिया। हुजूर के विद्यार्थी किताब से नजर चुराकर मेरी ओर

देख रहे थे। मेरे गले में खद्दर का कुर्त्ता था। पाजामे के बजाय केवल लंगोटा बंधा हुआ था

मैंने बात काट कर पूछा—आप बकरियां चराते थे ?

दाऊजी—हां-हां गर्व से बोले, मैं गड़रिया था और मेरे पिता की बारह बकरियां थीं।

दाऊजी अपने आपसे बातें करने लगे—उनकी बातें ही ऐसी थीं, उनकी निगाहें ही ऐसी थीं, जिस ओर नजर करते थे बन्दे को मौला (भगवान) कर देते थे। खाक को पाक बना देते थे। उसी समय लाठी डालकर जमीन पर बैठ गया। फरमाया—अपने भाइयों के साथ बोरिए पर बैठो। मैंने कहा—जी, १८ वर्ष धरती पर बैठे गुजर गये, अब क्या फरक पड़ता है। फिर वह मुस्करा दिये। अपने लकड़ी के सन्दूक से शब्दों के प्रारम्भ का एक कायदा निकाला और बोले—अलिफ-बे-ते सुबहान अल्हा, क्या आवाज थी !

मैंने काफी देर सोचने के बाद बाअदब बामुलाहिजा का वाक्य तैयार करके पूछा—हजरत मौलाना का क्या इसमें ग्रामी (शुभना था ? तो पहले उन्होंने मेरा वाक्य ठीक किया और बोले—हजरत इसमाइल चिश्ती 'रहमत उल्लाह एलैह' (भगवान उनका भला करे) फरमाते थे कि उनके पिता सदैव उन्हें जाने जाना (प्रिय) कहकर पुकारते थे।

मैं मनोरंजक कहानी सुनने का अभी और इच्छुक था कि दाऊजी अचानक रुक गये और फिर उन्होंने मेज से व्याकरण की पुस्तक उठायी और बोले, बाहर जाकर देख के आ। पानी डालने के बहाने बाहर गया तो बेबे को मशीन चलाते और बीबी को चौका साफ करते हुए पाया।

* *

दाऊजी के जीवन में बेबे वाला पहलू बड़ा ही कमजोर था। जब वह देखते कि घर का वातावरण साफ है और बेबे के चेहरे पर कोई बात नहीं है तो वह पुकार कर कहते—सब एक-एक शेर सुनाओ। पहले मुझसे तकाजा होता और मैं छूटते ही कहता—

लाजिम था के देखो मेरा रास्ता कोई दिन और,
तनहा गये क्यों अब रहो तनहा कोई दिन और,

बेबे भी मेरी तरह इस शेर से शुरू करती—

शुनिदम के शाहपूर दम नरद कशीद
चूं खुशरो बर इस माश कलम दर कशीद।

(मैंने सुना है शाहपुर साँस भी न ले सका जब खुशरो बादशाह ने इसके नाम पर कलम चलाकर मौत की आज्ञा दी)

इस पर दाऊजी एक बार फिर आर्डर-आर्डर कहते बीबी कैंची रखकर कहती—

शोरे शुदवाज खुवाबे अदम चश्म कुशुदेम,
दी देम के बाकीस्त शबे फितना गुनुदेम।

(दुनिया के शोर से मैं स्वर्ग के स्वप्न से जागकर दुनिया में आया लेकिन यहां उथल-पुथल देखकर फिर आंखें बन्द कर लीं और मौत की पनाह ली।)

दाऊजी शाबाश तो जरूर कह देते लेकिन साथ ही यह भी कह देते—बेटा, यह शेर तो कई बार सुना चुकी हो।

फिर वह बेबे की ओर देख कर कहते—कहो भाई, आज तुम्हारी बेबे भी एक शेर सुनायेंगी। मगर बेबे एक ही रूखा-सा उत्तर देतीं—मुझे नहीं आते शेर-कबित्त। इस पर दाऊजी कहते—घोड़ियां ही सुना दे। अपने बेटों के ब्याह की घोड़ियां ही गा दे। इस पर बेबे के होंठ मुस्कराने को करते परन्तु वह मुस्करा न सकतीं और दाऊजी औरतों की तरह घोड़िया गाने लगते। इनके बीच कभी उमीचन्द का और कभी मेरा नाम टांक देते। फिर कहते—मैं अपने इस गोलू-मोलू की शादी पर सुर्ख पगड़ी बांधूंगा। बारात में डा० साहब के साथ चलूंगा और निकाहनामा शहादत के दस्तखत करूंगा। मैं परम्पराओं के अनुसार शरमा कर निगाहें नीचे कर लेता तो वह कहते—पता नहीं इस देश के किसी शहर में मेरी छोटी-सी बहू पांचवीं या छठीं कक्षा में पढ़ रही होगी। मैं तो उसको फारसी पढ़ाऊंगा। पहले उसको सुलेख की शिक्षा दूंगा, फिर घसीट लेख सिखाऊंगा। औरतों को घसीट लिखना नहीं आता। मैं बहू को सिखा दूंगा।

मेरी और उमीचन्द की तो बात ही थी परन्तु १२ जनवरी को बीबी की बारात सचमुच आ गयी। जीजा रामप्रताप के विषय में दाऊजी बहुत बता चुके थे कि वह अच्छा लड़का है और सबसे ज्यादा खुशी दाऊजी को इस बात की थी कि इनके समधी फारसी के उस्ताद थे और कबीरपन्थी धर्म से सम्बन्ध रखते थे।

बारह तारीख की शाम को जब बीबी विदा होने लगी, तो घर भर में शोर मच गया। बेबे फूट-फूट कर रो रही हैं। उमीचन्द आंसू बहा रहे हैं और मुहल्ले की औरतें फुस-फुस कर रो रही हैं। मैं दीवार के साथ खड़ा हूं। दाऊजी मेरे कन्धे पर हाथ रखे खड़े हैं और बार-बार कह रहे हैं—आज जमीन कुछ मेरे पांव नहीं पकड़ती मैं तो सदा स्थिर नहीं रह सकता।

बारात वाले इक्का और तांगों पर सवार थे। बीबी रथ में जा रही थी। उसके पीछे उमीचन्द और मैं। दाऊजी हमारे बीच पैदल चल रहे थे। अगर बीबी

की चीख जोर से निकल जाती, तो दाऊजी आगे बढ़ कर रथ का पर्दा उठा कर कहते—लाहौल पढ़ो बिटिया। और स्वयं आंखों पर रखा उनकी पगड़ी का पल्ला भीग गया था।

रानो हमारे मोहल्ले का बड़ा ही गन्दा व्यक्ति था। बुराई करना और मन में मुटाव रखना उसका स्वभाव था। एक बाड़ा था। उसमें २०—२५ बकरियां और दो गायें थीं, जिनका दूध सुबह-शाम रानो गली के बगली मैदान में बेचा करता था। सारे मुहल्ले वाले उसी से दूध लेते थे। उसकी शरारतों से डरते भी थे। हमारे घर से आगे गुजरते हुए वह शौकिया लाठी जमीन पर बजाकर दाऊजी को 'पंडित जयराम जी' कहकर सलाम करता। दाऊजी ने उसे कई बार समझाया कि वह पंडित नहीं हैं। मामूली आदमी हैं क्योंकि उनके विचार से पंडित पढ़े-लिखे और विद्वान को कहते थे। परन्तु राना नहीं मानता था। वह अपना मुंह चबाकर कहता—ले भाई, जिसके सर बोदी होती है या चुटिया होती है वह पंडित होता है। वह सबसे ज्यादा मजाक दाऊजी की चोटी का उड़ाता।

सच में दाऊजी के सर पर चोटी अच्छी नहीं लगती थी——मैंने हजरत मौलाना के सामने भी पगड़ी उतारने का साहस नहीं किया था परन्तु वह जानते थे कि यह पगड़ी मुझे अपने जीवन की तरह प्रिय है क्योंकि यह मेरी मां की निशानी थी, वह कहते, अपनी गोद में रख कर दही से धोती थी। मुझे याद है, जब मैं दयालचन्द हाई स्कूल से एक साल की छुट्टियों में गांव आया, तो हुजूर ने पूछा—शहर जाकर चोटी तो नहीं कटवा दी? तो मैंने ना में उत्तर दिया, इस पर वह बहुत खुश हुए और फरमाया—तुम जैसा बेटा बहुत कम मांओं को मिलता है और हम-सा भाग्यशाली उस्ताद भी कम होगा जिसे तुम जैसा विद्यार्थी पढ़ाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

मैंने उनके पांव छूते हुए कहा——हुजूर, आप मुझे लज्जित करते हैं। यह सब आपके कदमों का फल है।

इस पर कहने लगे—चन्तराम, हमारे पांव न छुवा करो, भला ऐसे छूने से क्या लाभ, जिसका हमें अनुभव न हो।

मेरी आंखों में आंसू आ गये। मैंने कहा—अगर कोई मुझे बता दे तो समुद्र फाड़ कर आपके लिए दवाई निकाल लाऊं, अपने जीवन की गर्मी हुजूर की टांगों के लिए न्योछावर कर दूं। परन्तु मेरा बस नहीं चलता…

वह खामोश हो गये और निगाहें ऊपर उठाकर बोले—खुदा की यही मर्जी है तो सही तुम सलामत रहो, तुम्हारे कन्धो पर मैंने सारा गांव देख लिया है।

दाऊजी गुजरी बातों की गहराई में कहने लगे—मैं सुबह सवेरे हवेली की ड्योढ़ी पर जाकर आवाज देता—गुलाम आ गया। औरतें एक ओर हो जातीं तो हुजूर मुझे आवाज देते और मैं अपने भाग्य की सराहना करता हाथ जोड़े-जोड़े उनकी ओर बढ़ता। पांव छूता और आज्ञा की प्रतीक्षा करता, वह दुआ देते, मेरे माता-पिता के विषय में पूछते। गांव का हाल पूछते और फिर कहते—लो भाई, चन्तराम, गुनाहों की गठरी को उठा लो, मैं फूल की पंखुड़ी की तरह उन्हें उठाता और कमर पर लाद कर हवेली के बाहर आता। कभी फरमाते—हमें बाग का चक्कर दो, कभी हुक्म होता—सीधे रहँट के पास ले चलो। कभी-कभी बड़ी विनय से कहते, चंतराम थक न जाओ तो हमें मस्जिद तक ले जाओ। मैंने कई बार कहा, हुजूर नित्य मस्जिद ले जाया करूंगा। मगर नहीं माने, यही कहते रहे कि कभी जी चाहता है और जब जी चाहता है तो तुमसे कह देता हूं।

जिस दिन मैंने सिकन्दरनामा जुबानी याद करके सुनाया, इतना खुश हुए जैसे सारी दुनिया के सुख मिल गये हों। सारी दुनिया की दुआओं से मुझे मालामाल किया। प्यार भरा हाथ फेरा और जेब से एक रुपया निकाल मुझे इनाम दिया। मैंने इसे हिजर असवत समझ कर बोसा दिया। आंखों से लगाया और सिकन्दर का अफसर समझ कर पगड़ी में रख लिया। वह दोनों हाथ उठाकर दुआएं दे रहे थे और फरमा रहे थे—जो काम हमसे न हो सका, तूने कर दिया। तू नेक है। खुदा ने तुझे यह आदत नसीब की, चन्तराम तेरा बकरियां चराने का पेशा है तू···तू शाहे बथा का पैरोह (मुहम्मद साहब के रास्ते पर चलने वाला) है। इस कारण भगवान् जो महान विभूति है, वहीं तुझे बरकत देगा।

* *

मेरी परीक्षा करीब थी और दाऊजी कठोर होते जा रहे थे। उन्होंने मेरे हर खाली समय पर कोई-न-कोई काम फैला दिया था। एक निबन्ध से छूटता था, दूसरे की पुस्तकें निकाल कर सर पर सवार हो जाते थे। पानी पीने उठता, तो छाया की तरह पीछे-पीछे जाते और कुछ नहीं तो तवारीख के सन् ही पूछते। शाम को स्कूल पहुंचने का स्वभाव बना लिया था। एक दिन स्कूल के बड़े दरवाजे से निकलने की बजाय बोर्डिंग हाउस की राह निकल गया, तो उन्होंने क्लास के दरवाजे पर जाकर बैठना शुरू कर दिया। मैं चिड़चिड़ा और जिद्दी होने के अलावा बदजुबान भी हो गया था। 'दाऊजी के बच्चे' मेरा तकिया कलाम बन गया था। और कभी-कभी जब उनके प्रश्नों की कठोरता बढ़ जाती, तो मैं उन्हें कुत्ता तक कहने में नहीं चूकता था। नाराज हो जाते तो बस इसी तरह कहते—देख ले डोमनी, तू कैसी बातें कर रहा है। तेरी बीबी ब्याह कर लाऊंगा, तो पहले उसे यही बताऊंगा कि जाने-पिदर, यह तेरे बुड्ढे को कुत्ता कहता था।

फरवरी के दूसरे हफ्ते की बात है। परीक्षा में केवल डेढ़ महीना रह गया था और मुझ पर आने वाले खतरनाक समय का डर भूत बनकर सवार हो गया था। मैंने स्वयं अपनी पढ़ाई पहले से तेज कर दी थी और बहुत गम्भीर हो गया था परंतु रेखागणित के फारमूले मेरी समझ में नहीं आते थे। दाऊजी की कोशिश से भी कुछ बात न बनी। अन्त में उन्होंने कहा–कुल ५२ साध्य हैं, याद कर, इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। मैं उनको रटने में लग गया, परन्तु जो साध्य याद करता, सुबह भूल जाता। मैं थककर साहस छोड़-सा बैठा।

दाऊजी ने मेरा सर चूमकर कहा–ले भाई तम्बूरे, मैं तो यूं न समझता था, तू तो बहुत ही कम साहस का आदमी निकला। फिर उन्होंने मुझे कम्बल में लपेट लिया और बैठक में ले गये। बिस्तर में बैठाकर उन्होंने मेरे चारों ओर रजाई लपेटी और स्वयं पांव कुर्सी पर करके बैठ गये।

उन्होंने कहा–रेखागणित चीज ही ऐसी है। तू इसके हाथों यूं परेशान है। मैं और तरहसे तंग हुआ था। हजरत मौलाना के पास बीजगणित और रेखागणित की जितनी अधिक पुस्तकें थीं, उन्हें मैं अच्छी तरह पढ़कर अपनी कापियों पर उतार चुका था। कोई बात ऐसी न थी जिसमें उलझन होती,मैंने यह जाना कि मैं हिसाब में विशेषज्ञ हो गया हूं,परन्तु एक रात मैं अपनी खाट पर पड़ा समानान्तर रेखाओं के फार्मूले पर गौर कर रहा था कि बात उलझ गयी। मैंने दीया जलाकर शक्ल बनायी और उस पर गौर करने लगा। बीजगणित की रूह से माना हुआ उत्तर ठीक आता था परन्तु गणित से ठीक परिणाम नहीं निकलता था। मैं सारी रात कागज स्याह करता रहा परन्तु तेरी तरह से सोया नहीं। सुबह-सुबह मैं हजरत की खिदमत में उपस्थित हुआ, तो उन्होंने अपने हाथ से कागज पर शक्ल खींच कर समझाना शुरू किया लेकिन जहां मुझे उलझन हुई थी, वहां हजरत मौलाना की बुद्धिमत्ता को भी कोफ्त हुई। कहने लगे–चन्तराम, अब हम तुम्हें नहीं पढ़ा सकते। जब उस्ताद और विद्यार्थी का ज्ञान समान हो जाय, तो विद्यार्थी को किसी दूसरे विशेषज्ञ की ओर जाना चाहिए।

मैंने साहस से कह दिया–हुजूर, कोई दूसरा अगर यह वाक्य कहता तो उसे मैं नास्तिक के बराबर समझता परन्तु आपका हर शब्द और हर पाई भगवान की आज्ञा से कम नहीं होता। इस कारण चुप हूं। भला आकाए गजनवी के सामने अयाज (एक गुलाम) की क्या मजाल परन्तु हुजूर मुझे दुःख बहुत हुआ।

वह कहने लगे–भावुक आदमी, बात तो सुन ली होती।

मैंने सर झुका कर कहा–कहिए...

उन्होंने कहा–दिल्ली में वैद्य नासिक अली सीसतानी गणित के विशेषज्ञ हैं। अगर तुमको इसका ऐसा ही शौक है तो उनके पास चले जाओ और अभ्यास करो।

हम उनके नाम पत्र लिख देंगें। मैंने इच्छा प्रकट की तो कहा—अपनी माता से पूछ लेना अगर वह राजी हों तो मेरे पास आना।

माता से पूछना और इजाजत लेना तथा अपनी इच्छानुसार उत्तर पाना कठिन काम था। थोड़े दिन बहुत वेचैन गुजरे। मैं दिन-रात इस कठिनाई को हल करने का प्रयत्न करता परन्तु ठीक उत्तर न मिल पाया। इस न हल होने वाले किस्से से तबीयत में अधिक बिखराव उत्पन्न हुआ। दिल्ली जाना चाहता था लेकिन हुजूर से मां की इजाजत के बिना इजाजत नहीं मिल सकती थी। मां इस बुढ़ापे में कैसे राजी हो सकती थी ?

*　　*

एक रात जब सारा गांव सो रहा था और मैं तेरी तरह परेशान था तो मैंने अपनी मां की पिटारी से उसकी कुल पूंजी से दो रुपये चुरा लिये और गांव छोड़कर निकल गया। खुदा मुझे क्षमा करे और अपने दोनों बुजुर्गों की आत्मा को मुझ पर राजी रखे। वास्तव में मैंने बड़ा पाप किया है और प्रलय तक मेरा सर इन दोनों मेहरबानों के सामने शर्म से झुका रहेगा। गांव से निकल कर मैं हुजूर की हवेली के पीछे उनके मसनद के पास पहुंचा जहां बैठकर आप पढ़ाते थे। घुटनों के बल मैंने जमीन को चूमा और मन में कहा—अभागा हूँ, जो बिना आज्ञा के जा रहा हूँ लेकिन आपकी दुआओं से सारा जीवन भरपूर रहेगा। मेरा अपराध क्षमा नहीं किया तो आपके कदमों में जान दे दूंगा। इतना कह कर और कन्धे पर लाठी रख कर मैं वहां से चल दिया⋯सुन रहा है–दाऊजी ने मेरी ओर गौर से देखकर पूछा।

—हां, रजाई के बीच सेई बने मैंने धीरे से कहा, दाऊजी ने फिर कहना शुरू किया—भगवान ने मेरी कमाल की सहायता की। उन दिनों जाखुल, जनैत, सिरसा, हिसार वाली रेल की पटरी बन रही थी। यही सीधा रास्ता दिल्ली को जाता था और यहीं मजदूरी मिलती थी। एक दिन मैं मजदूरी करता और दो दिन चलता। इस प्रकार बेदेखी सहायता के सहारे १६ दिन में दिल्ली पहुँच गया।

मंजिल तो हाथ लग गयी लेकिन वह वस्तु न मिल सकी, जिससे पूछता, हकीम नासिक अली सीसतानी का घर कहाँ है, नहीं में उत्तर मिलता, दो दिन खोज जारी रही, परन्तु पता न पा सका। भाग्य तगड़ा, और स्वास्थ्य अच्छा था। अंग्रेजों के लिए कोठियां बन रही थीं, वहां काम पर जाने लगा। शामको खाली होकर वैद्यजी का पता मालूम करता और रात के समय एक धर्मशाला में खेस फेंक कर गहरी नींद में सो जाता।

एक कहावत प्रसिद्ध है, जो ढूंढ़ता है सो पाता है। अन्त में एक दिन मुझे हकीम साहब की जगह मालूम हो गयी। वह पत्थर फोड़ो के मुहल्ले की एक अंधेरी गली

में रहते थे। शाम के समय मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। एक छोटी-सी कोठरी में उपस्थित हुआ। वह बैठे थे और कुछ मित्रों से ऊंची-ऊंची बातचीत हो रही थी। मैं जूते उतार कर चौखड़ा के अन्दर खड़ा हो गया।

एक साहब ने पूछा—कौन है?

मैंने सलाम करके कहा, हकीम साहब से मिलना है।

हकीम साहब मित्रों की मण्डली में सर झुकाये बैठे थे और उनकी पीठ मेरी तरफ थी। इसी तरह बैठे-बैठे बोले—नाम?

मैंने हाथ जोड़कर कहा—पंजाब से आया हूं और...

मैं बात पूरी भी न करने पाया था कि जोर से बोले—चन्तराम हो। मैं कुछ उत्तर न दे सका। फरमाने लगे—मुझे इस्माइल का पत्र मिला है। लिखता है—शायद चन्तराम तुम्हारे पास आये। हमें बताए बगैर घर से भाग गया है, उसकी सहायता करना। मैं इसी प्रकार चुप रहा, तो गम्भीर आवाज में बोले—मियां अन्दर आ जाओ। क्या चुप का रोजा रखा है? मैं जरा आगे बढ़ा तो भी मेरी तरफ न देखा, वैसे ही नयी दुल्हन की तरह बैठे रहे।

फिर थोड़ी हुक्म देने वाली मुद्रा में कहा—बेटा, बैठ आओ।

मैं वहीं बैठ गया तो अपने मित्रों से कहा—भाई जरा ठहरो, मुझे इससे दो-दो हाथ कर लेने दो। हुक्म हुआ, बताओ हिनसे का या गिनती का कौन-सा मसला या प्रयोग तुम्हारी समझ में नहीं आया?

मैंने डरते-डरते बताया, तो उन्होंने उसी कंधे की तरफ हाथ बढ़ाये और धीरे-धीरे यूं अपनी ओर खींच लिया कि उनकी कमर नंगी हो गयी, फिर बोले—बनाओ अपनी अंगुली से मेरी कमर पर समानान्तर रेखा। मुझ पर खामोशी छायी हुई थी—न आगे बढ़ने का साहस, न पीछे हटने की शक्ति। एक क्षण के बाद बोले—मियां जल्दी करो, अन्धा हूं कागज—कलम कुछ नहीं समझता। मैं डरते-डरते आगे बढ़ा और उनकी चौड़ी-चकली कमर पर कांपती हुई उंगली से समानान्तिर रेखा बनाने लगा। जब वह नामालूम-सी शक्ल बन गयी, तो बोले—कि अब नुक्ता (निशान) 'स' है क्या? फिर स्वयं ही बोले—धीरे-धीरे आदी हो जाओगे। बायें कंधे से कोई ६अंगुल नीचे नुक्ता या निशान 'स' है वहां से लकीर खींचो।

हे ईश्वर, क्या आवाज थी, क्या विधि थी और कितना तेज था। वह बोल रहे थे और मैं मौन बैठा था। यूं लग रहा कि अभी इनके वाक्य के साथ नूर की लकीर समानान्तिर रेखा बन कर उनकी कमर पर उभर आयेगी। फिर दाऊजी दिल्ली के दिनों में डूब गये। उनकी आंखें खुली थीं। मेरी तरफ देख रहे थे।

मैंने बेचैन होकर पूछा—फिर क्या हुआ दाऊ जी?

उन्होंने कुर्सी से उठते हुए कहा--रात बहुत गुजर चुकी है, अब तू सो जा। फिर बताऊँगा। मैं जिद्दी बच्चे की तरह उनके पीछे पड़ गया तो उन्होंने कहा--पहले वादा कर कि आगे निराश नहीं होगा और इन छोटी-छोटी साध्यों को बताशे समझेगा।

मैंने उत्तर दिया--हलवा समझूंगा, आप चिंता न करें।

उन्होंने खड़े-खड़े कंबल लपेटते हुए कहा--बस, सारांश यह है कि मैं एक वर्ष हकीम साहब की जी-हुजूरी में रहा और उस विद्या के समुद्र से कुछ बूंदें प्राप्त कर के मैंने अपनी अंधी आंखों को धोया। वापस आने पर अपने आका की सेवा में पहुंचा और उनके कदमों पर सर रख दिया। फरमाने लगे--चंतराम, अगर हममें शक्ति हो तो इन पांवों को खींच लें।

मैं रो दिया, तो प्रेमपूर्वक हाथ फेरते हुए कहने लगे--हम तुमसे नाराज नहीं हैं। परंतु एक साल की दूरी बहुत तगड़ी है। आगे से जाना, तो हमें भी साथ लेते जाना। यह कहते हुए दाऊ जी की आंखों में आंसू आ गये और वह मुझे इसी तरह गुमसुम छोड़ कर बैठक से बाहर निकल गये।

* *

हमारे कस्बे में हाई स्कूल जरूर था लेकिन मैट्रिक की परीक्षा का केंद्र न था। परीक्षा देने के लिए हमें जिले जाना होता था। इस कारण वह सुबह आ गयी, जब हमारी क्लास परीक्षा देने के लिए जा रही थी और गाड़ी के चारों ओर माता-पिता जैसे लोगों की भीड़ जमा थी और इस झुंड से दाऊ जी कैसे पीछे हो सकते थे! सब लड़कों के घर वाले उन्हें अच्छी दुआएं, अनेकों शुभकामनाएं दे रहे थे और दाऊ जी सारे साल की पढ़ाई का भार जमा करके जल्दी-जल्दी प्रश्न पूछ रहे थे और मेरे साथ-साथ स्वयं उतार-चढ़ाव पर पहुंच जाते। वहां से पलटते तो उसके बाद एक और बादशाह आया जो अपनी वेश-भूषा से हिंदू लगता था। वह नशे में चूर था। एक और...जहांगीर, मैंने जवाब दिया और वह औरत नूरजहां—हम दोनों एक साथ बोले, गुण, उपमा, और क्रिया में अंतर? मैंने दोनों की तारीफें वर्णन कीं। बोले--उदाहरण? मैंने उदाहरण दिये। सब लड़के लारी में बैठ गये और मैं उनसे जान छुड़ाकर जल्दी से दाखिल हुआ तो घूम कर खिड़की के पास आ गये और पूछने लगे—'ब्रेक इन' और 'ब्रेक इन टु' को वाक्यों में प्रयोग करो। उनका प्रयोग भी हो गया और मोटर स्टार्ट हो कर चली तो उसके साथ उनके कदम उठे।

पहले दिन इम्तिहान का पर्चा बहुत अच्छा हुआ। दूसरे दिन भूगोल का इससे बढ़ कर, तीसरे दिन रविवार था और उसके बाद हिसाब की बारी आयी थी। रविवार की सुबह दाऊजी का एक लंबा पत्र मिला, जिसमें बीजगणित के फार्मूले

और हिसाब के कायदे के अतिरिक्त कोई और बात न थी। हिसाब का पर्चा करने के बाद बरामदे में मैंने लड़कों से जवाब मिलाये तो १०० में ८० का पर्चा ठीक था। हां, मैं खुशी से पागल हो गया। जमीन पर पैर नहीं पड़ता था और मेरे मुंह से खुशी के नारे निकल रहे थे।

ज्यों ही मैंने बरामदे से पांव नीचे रखा, दाऊजी खेस कंधे पर डाले एक लड़के का पर्चा देख रहे थे। मैं चीख मारकर लिपट गया और ८० नंबर के नारे लगाने शुरू कर दिये।

उन्होंने पर्चा मेरे हाथ से छीनकर कड़वाहट से पूछा—कौन सवाल गलत हो गया ?

मैंने झुक कर कहा—चारदीवारी वाला।

झुंझला का बोले—तूने खिड़कियां और दरवाजे घटाये नहीं होंगे।

मैंने उनकी कमर में हाथ डाल कर पेड़ की तरह झूलते हुए कहा—हां जी, जी हां...गोली मारो खिड़कियों को...

दाऊजी डूबी हुई आवाज में बोले—तूने मुझे बरबाद कर दिया तंबूरे। साल के ३६५ दिन मैं पुकार-पुकार कर कहता रहा—जमीनों का प्रश्न आंखें खोल कर करना मगर तूने मेरी बात न मानी, तूने मेरी बात न मान कर २० नंबर खराब किये, पूरे २० नंबर। और दाऊजी का चेहरा देख कर मेरी ८० फीसदी सफलता २० फीसदी असफलता में यूं दब गयी, जैसे उसका वजूद ही न था।

रास्ते भर वह अपने आप से कहते रहे—अगर परीक्षक अच्छे दिल का हुआ, तो वह नंबर जरूर देगा। तेरा बाकी हल तो ठीक है। इस पर्चे के बाद दाऊजी परीक्षा के अंतिम दिन तक मेरे साथ रहे। यह रात के १२ बजे तक मुझे उस सराय में पढ़ाते, जहां हमारी क्लास ठहरी हुई थी और उसके बाद वकील उनके अपने मित्र के यहां चले जाते। सुबह आठ बजे आ जाते और फिर इम्तिहान वाले कमरे तक मेरे साथ चलते।

परीक्षा समाप्त होते ही दाऊजी को ऐसे छोड़ दिया, जैसे मेरा परिचय ही न हो। सारे दिन दोस्तों के साथ घूमता और शाम को उपन्यास पढ़ता। इस बीच अगर समय मिलता, तो दाऊ जी को सलाम करने चला जाता। वह इस बात पर दृढ़ थे कि हर रोज एक दिन उनके साथ गुजारा करूं ताकि वह मुझे कालेज की पढ़ाई के लिए भी तैयार कर दें, लेकिन मैं उनके फंदे में आने वाला नहीं था। मुझे कालेज में सौ बार फेल होना स्वीकार था, लेकिन दाऊजी से पढ़ना स्वीकार नहीं था। पढ़ने को छोड़िए, उनसे बातें करना भी कठिन था। मैंने कुछ पूछा, उन्होंने कहा—इसका फारसी में अनुवाद करो। मैंने कुछ उत्तर दिया, फर-

माया---इसका विश्लेषण करो। हवलदार की गाय अंदर घुस आयी। मैं उसे लकड़ी से बाहर निकाल रहा हूं और दाऊजी पूछ रहे हैं---'काऊ' संज्ञा है या क्रिया ? अब हर अक्ल का अंधा और पांचवीं कक्षा का पढ़ा जानता है कि गाय संज्ञा हैं मगर दाऊजी फरमा रहे हैं संज्ञा भी है और क्रिया भी। 'टू काऊ' का अर्थ है डराना-धमकाना।

जिस दिन रिजल्ट निकला, मैं और अब्बाजी लड्डुओं की एक छोटी-सी टोकरी लेकर उनके घर गये। दाऊजी सर झुकाये अपने हसीर पर बैठे थे। अब्बाजी को देखकर उठ खड़े हुए। अंदर से कुर्सी ले आये और अपने बोरिये के पास डाल कर बोले---डाक्टर साहब, आपके सामने लज्जित हूं परंतु इसे भी भाग्य के लिखे की खूबी समझिए। मेरा विचार था कि इसकी फर्स्ट डिवीजन आ जायेगी लेकिन न आ सकी। बुनियादी कमजोरी थी।

एक ही तो नंबर कम है, मैंने चहक कर बात काटी और वह मेरी तरफ देख-कर बोले---तू नहीं जानता इस एक नंबर से मेरा दिल दो टुकड़े हो गया। खैर, खुदा की मर्जी। फिर अब्बाजी और वह बातें करने लगे और मैं बेबे के साथ बातों में लग गया।

अब वह मुझसे सवाल इत्यादि न पूछते थे। कोट-पतलून और टाई देख कर बड़े प्रसन्न होते। चारपाई पर बैठने न देते थे। कहा करते---अगर मुझे उठाने नहीं देता तो स्वयं कुर्सी ले ले और मैं कुर्सी खींच कर उनके पास डट जाता। कालेज लाइब्रेरी से जो किताबें साथ लाता उन्हें देखने की इच्छा जरूर करते और मेरे वादों के बावजूद अगले दिन स्वयं हमारे घर किताबें देख जाते।

उमीचंद कुछ कारणवश कालेज छोड़कर बैंक में नौकर हो गया था। और दिल्ली चला गया था। बेबे की सिलाई का काम बराबर जारी था। दाऊजी भी मुंसिफी जाते पर कुछ न लाते थे। बीबी के पत्र आते थे और वह अपने घर में बहुत खुश थी। कालिज की एक साल की जिंदगी मुझे दाऊजी से बहुत दूर खींच लायी। वह लड़कियां, जो दो साल पहले मेरे साथ आपू-टापू खेला करती थीं, चाचा की लड़कियां बन गयी थीं।

घर के मामूली आने-जाने के सामने ऐबटाबाद की लंबी यात्रा शांत और सुहानी थी। इसी समय में मैंने पहली बार एक खूबसूरत गुलाबी पैड और ऐसे ही लिफाफों का पैकेट खरीदा और उस पर न अब्बाजी को पत्र लिखे जा सकते थे और न ही दाऊजी को। दशहरे की छुट्टियों में दाऊ जी से भेंट न हुई न बड़े दिन की छुट्टियों में। ऐसे ही ईस्टर गुजर गया और यूं ही दिन गुजर गये।

* *

देश को आजादी मिली। कुछ झगड़े हुए, फिर लड़ाइयां शुरू हो गयीं। हर तरफ फसाद की खबरें आने लगीं और अम्मा ने हम सबको घर बुला लिया। हमारे लिए यह जगह बड़ी सुरक्षित थी। फनिए, साहूकार भाग रहे थे, लेकिन दूसरे लोग चुप थे। थोड़े ही दिनों बाद महाजरिन (शरणार्थियों) के आने का सिलसिला आरंभ हो गया और वही लोग यह खबर लाये कि आजादी मिल गयी। एक दिन हमारे कस्बों में भी कुछ घरों को आग लगी और दो बातों पर खूब लड़ाई हुई। थाने वालों और मिलिटरी के सिपाहियों ने कर्फ्यू लगा दिया जब कर्फ्यू खत्म हुआ तो सब हिंदू, सिख, कस्बा छोड़कर चल दिये।

दोपहर को अम्मा ने दाऊजी की खबर लेने को भेजा, तो इस जानी-पहचानी गली में अजीब नयी-नयी शक्लें नजर आयीं। हमारे घर अर्थात् दाउजी की ड्योढ़ी में एक बैल बंधा था और उसके पीछे टाट का पर्दा लटक रहा था। मैंने घर आ कर बताया—दाऊजी और बेबे अपना घर छोड़ कर चले गये। वह कहते हुए मेरा गला रुंध गया। उस दिन ऐसा लगा, जैसे दाऊजी सदा के लिए चले गये हैं। और अब लौट कर नहीं आयेंगे।

कोई तीसरे दिन सूर्य के डूबने के बाद मस्जिद में नये शरणार्थियों के नाम नोट करके और कम्बल भिजवाने का वादा करके उस गली से गुजरा, तो खुले मैदान में सौ-दो सौ व्यक्तियों की भीड़ देखी। शरणार्थी लड़के लाठियां पकड़े नारे लगा रहे थे और गालियां दे रहे थे। मैंने देखने वालों को हटाकर बीच में घुसने का प्रयत्न किया किन्तु खूंखार आंखें देखकर डर गया।

एक लड़का किसी बूढ़े से कह रहा था—साथ के गांव में गया हुआ था, जब लौटा तो अपने घर में घुसता चला गया।

—कौन से घर में ? बूढ़े ने पूछा।

—रोहत के शरणार्थियों के घर में, लड़के ने कहा। फिर बूढ़े ने पूछा। फिर उन्होंने पकड़ लिया। देखा, तो हिन्दू निकला। इतने में भीड़ से किसी ने चिल्ला कर कहा—ओ रानू, जल्दी आ, जल्दी आ, तेरी यात्रा—पंडित। रानू बकरियों का झुंड बाड़े की ओर लिये जा रहा था। उन्हें रोककर एक लाठी वाले लड़के को उनके आगे खड़ा कर... वह भीड़ में घुस गया और मेरे दिल को धक्का-सा लगा, जैसे उन्होंने दाऊ... पकड़ लिया है।

मैंने बिना ... करीब के लोगों से कहा—यह बड़ा अच्छा आदमी है, बड़ा नेक आदमी है...इसे कुछ मत कहो...यह तो...यह तो...

खून से नहायी चन्द आंखों ने मेरी ओर देखा और एक नौजवान गड़ासी तोल

कर बोला–दाऊ, तुझे भी...आ गया बड़ा हिमायती बन कर...तेरे साथ कुछ नहीं... और लोगों ने गालियाँ बककर कहा—जुलाहा होगा शायद !

मैं दौड़कर भीड़ की दूसरी ओर घुस गया। रानू की लीडरी में उसके दोस्त दाऊजी को घेरे खड़े थे। और रानू दाऊजी की ठोढ़ी पकड़ कर पूछ रहा था–अब बोल बेटा, अब बोलो और दाऊजी चुप खड़े थे। एक लड़के ने उनकी पगड़ी उतार कर कहा–'काटो चोटी, काटो।' रानू ने कटिया काटने वाली दरांती से दाऊजी की चोटी काट दी। वही लड़का फिर बोला–'बुला दें' और रानू ने कहा—'जाने दो, बुड्ढा है' फिर बोला–मेरे साथ बकरियाँ चराया करेगा' और उसने दाऊजी की ठोढ़ी ऊपर उठाते हुए कहा–'कलमा पढ़ पंडित' और दाऊजी धीरे-से बोले–'कौन सा ?' रानू ने उनके नंगे सर पर ऐसा थप्पड़ मारा कि वह गिरते-गिरते बचे और बोला, 'साले कलमा भी कोई पांच-सात हैं ?'

जब वह कलमा पढ़ चुके तो रानू ने अपनी लाठी उनके हाथ में थमा दी और कहा–चल बे, बकरियाँ तेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी। और नंगे सर दाऊजी बकरियों के पीछे यूं चले, जैसे लम्बे-लम्बे बालों वाला जिन्न चल रहा हो।

(अनुवाद : कुंवरपाल सिंह)

(अनुवाद में मदद करने के लिए डा० कैसर जहाँ और कु. नईमा खान का अनुवादक आभारी है)

देश-विभाजन : सत्तालोलुप नेताओं की धोखेबाजी की देन

कहा जाता है कि भारत को आजादी महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन से ही मिली और विश्व इतिहास में अहिंसा द्वारा यह अद्वितीय विजय है। इससे ज्यादा सफेद झूठ दूसरा नहीं है। ब्रिटिश सरकार जब-जब भी परेशानियों में पड़ी, उसने सभी जगह एक ही रास्ता अपनाया। आयरलैंड से जब अंग्रेजों को भागना पड़ा तो उन्होंने "एलस्टर" में वहां की क्रांतिकारी परिषद के अध्यक्ष से समझौता कर राष्ट्र को दो टुकड़ों में बांट दिया। यही उसने इजरायल और जोर्डन को दो टुकड़ों में बांट कर किया। स्वयं हमारे देश में भी उसने यही नीति अपनाई। क्रांतिकारियों से समझौता करने की उन्हें कोई जरूरत नहीं थी। कांग्रेस के सत्ता लोलुप लोगों ने धोखा दिया और उनसे समझौता कर देश का विभाजन कर दिया। गांधी जी स्वयं इस निर्णय के विरुद्ध थे, किन्तु कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा निर्णय किये जाने के कारण उनके सामने इसको मानने के अलावा कोई चारा ही नहीं रहा। उन्होंने दूसरे नाम पर २१ दिन का अनशन करके प्रायश्चित्त कर लिया और चुप हो रहे। वास्तव में यह आजादी अहिंसा द्वारा प्राप्त आजादी नहीं थी। इसकी जड़ें तो क्रांतिकारियों के रक्त से ही सींची गई थी।

—श्री रामदुलारे त्रिवेदी (काकोरी केस)

पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठियों को इस उद्देश्य से भेजा था कि वे वहां अराजकता उत्पन्न कर देंगे और कश्मीर की जनता मुसलमान होने के कारण उनकी सहायता करेगी। वे उस गड़बड़ी में श्रीनगर पर अधिकार करके एक कठपुतली सरकार बना लेंगे और रेडियो से सारे संसार में घोषणा कर देंगे कि कश्मीरियों ने अपनी स्वतंत्र सरकार बना ली है। उस कठपुतली सरकार को पाकिस्तान तुरन्त मान्यता दे देगा और भारत से उसकी रक्षा करने के लिए अपनी सेनाएँ कश्मीर में भेजकर उस पर अपना सैनिक अधिकार कर लेगा। किन्तु कश्मीर की जनता पाकिस्तान के पंजाबी और पठान मुसलमानों के अत्याचारों को जानती है। उसने उन घुसपैठियों का साथ न देकर उल्टे उन्हें पकड़वाना शुरू किया। भारतीय सेना ने उनको पकड़ना और खदेड़ना आरम्भ किया। भागते हुए घुसपैठियों की सहायता करने और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए पाकिस्तानी सेना ने उनकी तरह तरह से सहायता की। किन्तु भारतीय सेना ने उनकी कमर तोड़ दी, और कश्मीर में उनका खतरा न रह गया। भविष्य में वे फिर कश्मीर में न घुसें, इसलिए भारतीय सेना ने इन घुसपैठियों के उन केन्द्रों को जहाँ से वे आते थे, ले लेना उचित समझा। इसी उद्देश्य से कारगिल, टीठवाल और हाजीपीर दर्रे पर उसने अधिकार कर लिया। घुसपैठियों के उपद्रवों के द्वारा कश्मीर में अराजकता फैलाकर और श्रीनगर में कठपुतली सरकार बनाने की पाकिस्तान की योजना बुरी तरह से असफल रही।

मेजर सीताराम जौहरी
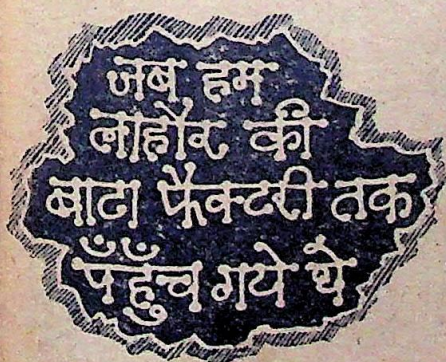
किन्तु पाकिस्तान की ललचायी आँखें कश्मीर पर लगी हुई थीं। अब उसने घुसपैठियों का बहाना छोड़कर अपनी सेना की सीधी कार्रवाई करने का निश्चय किया। इसके लिए उसने छम्ब के क्षेत्र को चुना। यह चिनाव नदी के पश्चिम में होने के कारण, वहां भारतीय सेना मुश्किल से पहुंच सकती है और वहाँ अपने भारी टैंक या तोपखाने नहीं ले जा सकती। वह उसके सैनिक अड्डों से बहुत दूर है, तथा जम्मू से वहाँ जाने का रास्ता दुर्गम है। अखनूर के दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ियाँ समाप्त हो जाती हैं और मैदान आरम्भ हो जाता है। इस मैदान में छम्ब से कुछ आगे मनव्वर और बुरेजाल तक मैदान में हमारा अधिकार है। इसके दक्षिण और पश्चिम में पाकिस्तान और पाक-अधिकृत कश्मीर है। पाकिस्तान की बड़ी-बड़ी फौजी छावनियों से वह निकट है और सड़कें भी अच्छी हैं। पाकिस्तान का व्यूह कौशल यह था कि यहाँ भारतीय सेना कमजोर है। उस पर एक साथ भारी हमला करके एक झटके में अखनूर ले लिया जाय, और वहां से जम्मू (जो केवल १९ मील है) पर आक्रमण कर दिया जाय। जब यह सेना जम्मू के पास पहुंचे तो दक्षिण में सियालकोट से एक दूसरी बड़ी पाक सेना भी जम्मू पर आक्रमण करके उसे ले ले। जम्मू के घिरने के बाद श्रीनगर से भारत का सम्बन्ध टूट जायेगा, वहां जो भारतीय सेना पड़ी है, वह भारत से रसद और कुमुक न पाने तथा घिर जाने के कारण अपने आप आत्मसमर्पण कर देगी। इस प्रकार आठ-दस दिन में ही कश्मीर पाकिस्तान को मिल जायगा। भारत जब तक सँभलेगा और तैयारी करेगा तब तक खेल समाप्त हो जायेगा। एक बार कश्मीर पर अधिकार कर लेने के बाद राष्ट्रसंघ, चीन, पश्चिमी देश सब चुप हो जायेंगे और 'वास्तविकता' की दुहाई देकर भारत को अवश्यम्भावी के आगे सिर झुकाने को लाचार कर देंगे।

यह कहना बिलकुल ठीक न होगा कि पाकिस्तान ने छम्ब पर अचानक आक्रमण कर दिया और किसी को उसकी पूर्व सूचना न थी। १२-१३ अगस्त की रात में पाकिस्तान ने छम्ब पर गोलाबारी की। १४ अगस्त को भी इस क्षेत्र में कड़ी गोलाबारी की। १५-१६ अगस्त को पाकिस्तान ने अपनी मझोली तोपें खोल दीं और सौ-सौ पाउण्ड (सवा मन) के गोलों की झड़ी लगा दी। यह गोलाबारी बड़ी भीषण थी। इसी गोलाबारी में छम्ब क्षेत्र में ब्रिगेडियर मास्टर तोप के गोले से वीरगति को प्राप्त हुए। राष्ट्रसंघ के पर्यवेक्षक युद्ध-विराम रेखा के दोनों ओर आते-जाते रहते हैं। उन्होंने सियालकोट से छम्ब की ओर जाते हुए टैंकों और तोपखाने तथा सैनिक ट्रकों आदि को देखा था। उन्होंने जनरल चौधरी को सतर्क कर दिया था कि पाकिस्तानी अपनी सेनायें

छम्ब के पास जमा कर रहे हैं। इन पर्य-वेक्षकों ने इसकी सूचना राष्ट्रसंघ तथा अपने देश को भी अवश्य दी होगी जिससे न केवल भारत को बल्कि राष्ट्रसंघ और पश्चिमी राष्ट्रों को भी पाकिस्तानी इरादे मालूम हो गये थे। किन्तु खेद है कि न तो राष्ट्रसंघ ने और न शक्तिशाली पश्चिम राष्ट्रों ही ने इस आसन्न आक्र-मण को रोकने का कोई प्रयत्न किया।

छम्ब क्षेत्र में भौगोलिक और सैनिक व्यूहकौशल की स्थिति पाकिस्तान के अनुकूल थी। वहाँ वह बराबर नये-नये टैंक, भारी तोपखाना और सेना आसानी से भेज सकता था। हमारे लिए वहां की स्थिति प्रतिकूल थी। इसलिए यह आव-श्यक हो गया कि ऐसी कार्रवाई की जाय कि पाकिस्तान को हम पर आक्रमण करने के बजाय अपनी रक्षा करने की चिन्ता उत्पन्न हो जाय और वह आत्म रक्षा करने में अपनी इतनी शक्ति लगा दे कि छम्ब के क्षेत्र में उसकी आक्रामक सेना को इतनी कुमुक न मिल सके कि वह वहाँ हमारे लिए सिरदर्द हो जाय और जम्मू नगर तथा कश्मीर की महत्व-पूर्ण सड़कों के लिए खतरा पैदा कर सके। हमारे जनरलों ने छम्ब की ओर से पाकिस्तानी आक्रमण को रोकने के लिए उसकी सेनाओं को अपने नगरों और अपनी भूमि के बचाव में लगा दिया। हमारा उद्देश्य उसके नगरों या भूमि को लेना नहीं था। हमारा तो बड़ा सीमित उद्देश्य था कि वह अपनी रक्षामें इतना व्यस्त कर दिया जाय कि वह छम्बमें आगे बढ़ने के योग्य न रह जाय। हमारे जनरलों का व्यूहकौशल सफल हुआ। पाकिस्तानी सेना लाहौर, सियालकोट आदि के बचाव में लग गयी और उसने इस भय से कि कहीं भारत-इच्छोगिल नहर को पारकर पाकिस्तान में और भीतर न घुस जाय, उस नहर पर अपना मोर्चा बना लिया और उसकी रक्षा में अपनी सारी शक्ति लगा दी। हमें रोकने में उसके कई सौ टैंक नष्ट हो गये। उसकी वायुसेना की भारी क्षति हुई और हम लाहौर और सियालकोट के नगरों को अपनी तोपों की मार में ले आये। "नमाज छुड़ाने गये थे, रोजा गले पड़ा।" ऐसी अवस्था में पाकिस्तान की छम्ब में होकर कश्मीर में घुसकर उसे लेने की योजना ठप हो गयी। पाकिस्तान में हमारे घुसने का यही उद्देश्य था।

छम्ब क्षेत्र में परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तानी सेना ज्योड़ियाँ से आगे नहीं बढ़ सकी। ज्योड़ियाँ से कुछ आगे ही मैदान समाप्त हो जाता है और पहाड़ियाँ आरम्भ हो जाती हैं। हमारी सेना इन ऊंची पहाड़ियों पर डटी थी। पाकिस्तानी ज्योड़ियाँ से आगे न बढ़ सके क्योंकि लाहौर और सियालकोट की सुरक्षा में पाकिस्तानी सेना को अपनी भारी शक्ति लगा देनी पड़ी। छम्ब का मोर्चा ज्योड़ियाँ में स्थिर हो गया, और वह तब तक वैसा ही बना रहा जब तक कि युद्ध-विराम नहीं हो गया। तब उसकी शर्तों के अनु-

सार पाकिस्तानी सेना को छम्ब क्षेत्र छोड़कर अपनी सीमा में लौट जाना पड़ा ।

इन पृष्ठों में हम पंजाब, राजस्थान आदि में पाकिस्तान और भारत के बीच विभिन्न मोर्चों पर जो युद्ध हुए उनका विवरण देंगे ।

आक्रमण—१ सितम्बर के ४ बजे सुबह छम्ब क्षेत्र में एकाएक पाकिस्तानी तोपों के गोलों की वर्षा होने लगी । यह प्रतिदिन की गोलाबारी से तेज थी । पाकिस्तान ने धोखा देने के लिए यही कारंवाई झांगर के क्षेत्र में की, यहां २५ पाउण्डर और ८१ एम-एम के गोले बरसाये । परन्तु भारतीय सैनिक कमाण्डर पाकिस्तान के धोखे में नहीं आये । फलस्वरूप भारतीय ब्रिगेड ने भली-भांति समझ लिया कि पाकिस्तान छम्ब पर पौ फटते ही आक्रमण करेगा । ब्रिगेड डट गया । भारतीय तोपखाने ने उन पाकिस्तानी ठिकानों पर जहां से आक्रमण हो सकता था, गोले बरसाना आरम्भ कर दिये । यह गोलाबारी लगातार एक घण्टे तक होती रही । लगभग ५·३० बजे पाकिस्तान ने बुरेजाल (छम्ब से पांच छः मील दक्षिण-पश्चिम में) पर पश्चिम से पहला आक्रमण किया । यह आक्रमण ताहू [जो पाकिस्तान में है] गाँव से किया था । आक्रमण निष्फल रहा । उसने फिर दूसरा आक्रमण मेलू (पाकिस्तान) गांव से किया । मेलू बुरेजाल के दक्षिण में है । यह आक्रमण भी विफल रहा । तत्पश्चात् ताहू-मेलू से आक्रमण किया परन्तु वह भी निष्फल रहा । ये तीनों आक्रमण भारतीय मोर्चे की शक्ति की टोह लेने के लिए किये गये थे । अब पाकिस्तान ने चौथा आक्रमण किया । यह असली आक्रमण था । इस आक्रमण का लक्ष्य भारतीय सेना को पीछे धकेलकर अखनूर पर अपना पूरा कब्जा कर लेने का था ।

पाकिस्तान ने इस आक्रमण में एक पूरा पैदली ब्रिगेड झोंक दिया था । उसकी सहायता के लिए ९० टैंक थे जिसमें लगभग ७० भारी पेटन टैंक थे । इनके अतिरिक्त भारी तोपों और मार्टरों की भी बहुत बड़ी संख्या थी । इधर भारत का एक साधारण पैदली ब्रिगेड इस आक्रमण को रोकने के लिए लम्बे-चौड़े छम्ब क्षेत्र में फैला हुआ था । दूर-दूर तक फैले होने के कारण उसकी शक्ति बिखर गयी थी । इसकी सहायता के लिए हल्की तोपों का एक फील्ड रेजिमेंट (जिसमें १८ फील्ड तोपें थीं) और एक स्क्वाडरन हल्के अर्थात् केवल १४ टन के टैंकों का था जिसमें लगभग १६ टैंक होंगे । । इस भारतीय ब्रिगेड ने डटकर पाकिस्तानियों का मुकाबला किया । यहां भारत के इस ब्रिगेड ने पहली बार यह दिखा दिया कि पाकिस्तानी पेटन टैंक साधारण तोपों से नष्ट किये जा सकते हैं । आरम्भ ही में छम्ब क्षेत्र में उसने चार टैंक नष्ट किये जिनमें तीन पेटन टैंक थे । दिन भर घमासान युद्ध

होता रहा, परन्तु पेटन टैंकों का इतना दबाव पड़ा कि भारतीय ब्रिगेड के अगले भाग को पीछे हटना ही पड़ा। उसने हट कर पीरजमाल (२॥ मील देवा के दक्षिण) में मोर्चा लगा लिया और पाकिस्तानी गोलाबारी का जवाब देता रहा। संक्षेप में, इस ब्रिगेड के पैर नहीं उखड़े और वह पाकिस्तान के बढ़ते हुए फौलादी दुर्गों को रोके रहा। भारतीय हल्के टैंकों ने अपनी दक्षता का प्रमाण तो दिया किन्तु संख्या और शक्ति में वे पेटनों से कमजोर थे। जनरल चौधरी को ४-३० बजे संन्ध्या तक स्थिति देखकर यह विश्वास हो गया कि बिना लड़ाकू विमानों के प्रयोग के पाकिस्तानी आक्रमण नहीं रोका जा सकता। उन्होंने सुरक्षा मंत्री श्री चव्हाण से कहा कि भारतीय सेना को छम्ब में लड़ाकू विमानों की सहायता देना आवश्यक है। सुरक्षा मंत्री ने जनरल चौधरी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। फलस्वरूप संन्ध्या को पाँच बजकर बीस मिनट पर दिल्ली से वायु-सेना को आदेश दिया गया कि पाकिस्तान के छम्ब में बढ़ते टैंकों को नष्ट करके संग्राम-क्षेत्र में भारतीय सेना की सहायता की जाये। तुरन्त ही वायु सेना अध्यक्ष ने पश्चिमी सीमा पर स्थित एक हवाई अड्डे को आदेश दिया। उस समय उस अड्डे में एक उत्सव मनाया जा रहा था। आदेश मिलते ही भारतीय सेना के विमान तैयार हो गये। आदेश पालन करने में इतनी शीघ्रता की गयी कि इन विमानों की पहली टुकड़ी ने छम्ब की पाकिस्तानी आक्रामक सेना पर ठीक छ: बजे शाम को पहले बम फेंके। सूर्यास्त तक भारतीय विमान सेना के चार-चार विमानों की सात टकड़ियों ने पाकिस्तानी सेना पर आक्रमण किये। उन्होंने पाकिस्तान के १३ पेटन टैंक नष्ट कर दिये और लगभग उनकी ४० सैनिक गाड़ियों को जला दिया। इस आक्रमण में भारत के भी ४ विमानों को हानि हुई—दो जल गये और दो क्षति-ग्रस्त हो गये। किन्तु पाकिस्तान के आक्रमण की धार कुंठित हो गयी। उसका वेग कम हो गया और वह केवल ५ मील भारतीय भूमि में घुस सकी। भारतीय ब्रिगेड के पैर अपने मोर्चे पर जम गये। दूसरे दिन पाकिस्तानी केवल मनव्वर की टवी नदी पार कर पाये। तीसरा दिन आया। उस दिन तक पाकिस्तान अन्ताराष्ट्रीय सीमा से १० मील भारत में घुस चुका था। टवी नदी पार करने के बाद पाकिस्तान को अखनूर पहुंचने में कोई बड़ी रुकावट नहीं थी क्योंकि भूमि और स्थिति उसके अनुकूल थी। टवी पार करने के बाद पाकिस्तान को पूरी आशा थी कि उसकी सेना ३ सितम्बर की शाम तक अखनूर पहुंच जायगी। अखनूर विजय का समाचार सारे संसार में तुरन्त पहुंचा देने के लिए पाकिस्तानी सेना के स्थानीय कमाण्डर [पश्चिमी देशों के सम्वाददाताओं] को

एक टैंक में बैठाकर संग्राम क्षेत्र में साथ ले लिया। उस दिन पाकिस्तानी वायुसेना के बमवर्षकों ने ज्योड़ियाँ पर बमबारी की। इस बमबारी से ५० असैनिक हताहत हुए और एक मस्जिद नष्ट हो गयी। तीन सितम्बर को भारतीय सेना ज्योड़ियाँ पहुंच चुकी थी। ज्योड़ियाँ के पास ही उत्तर में कुछ ऊँची जमीन है। उस पर भारतीय सैनिकों ने मोर्चा लगा लिया। उधर पाकिस्तान के हवाई बेड़े के भी दिन पूरे हो चुके थे। पाकिस्तानी हवाई सेबरजेटों और स्टार फाइटरों से लड़ने के लिए भारत के 'नेट' विमान आये। पाकिस्तान का पहला सेबर जेट भारतीय विमान के निशाने का आखेट बना। इस वीर कार्य का गौरव स्क्वाडरनलीडर कीलर को प्राप्त हुआ। इस घटना के बाद भारतीय वायु विभाग का सर ऊंचा ही रहा। युद्धविराम तक भारतीय हवाबाजों ने पाकिस्तान का न मालूम कितना नुकसान किया और उसके ७२ विमान मार गिराये।

चार-पाँच अगस्त को मोर्चा ज्योड़ियां क्षेत्र में रहा। ५ दिन में पाकिस्तानी सेना केवल १५ मील बढ़ी। वह अखनूर से केवल ६ मील रह गयी। ऐसा पता चलता है कि पाकिस्तानी आक्रमण का दूसरा चरण आरम्भ होने वाला था। यह स्पष्ट हो गया कि वह युद्ध क्षेत्र का विस्तार करना चाहता है क्योंकि पाकिस्तानी हवाई बेड़े ने ४ सितम्बर की सुबह को जम्मू क्षेत्र में बिशनाह और सरोर नामक गाँवों और रणवीरसिंहपुरा के निकट राकेट छोड़े। राकेट निशाना चूक गया। पाकिस्तान ने अगले दिन दोपहर के समय अमृतसर के हवाई अड्डे पर राकेट छोड़े। पाकिस्तान के विमान तो बिमाननाशक तोपों से भगा दिये परन्तु भारत सरकार इन आक्रमणों से सतर्क हो गई। वह पाकिस्तान के भावी आसन्न आक्रमणों का सामना करने और उसकी योजना को विफल करने का उपाय सोचने लगी।

पाकिस्तान ने युद्धविराम रेखा और अन्ताराष्ट्रीय सीमा को १ सितम्बर को पार किया। परन्तु भारत पर पाकिस्तान के इस आक्रमण का पश्चिमी देशों में ही नहीं वरन् पूर्वी देशों पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ब्रिटिश या रूस के प्रधानमंत्रियों ने एक शब्द भी पाकिस्तान के विरुद्ध नहीं कहा। अमरीका के जानसन साहब भी चुप्पी साध गये। मार्शल टीटो और राष्ट्रपति नासिर ने भी यही उचित समझा कि वह अपनी कोई राय न दें। चीन से चीन के विदेशी मन्त्री मार्शल चेन ई, ४ सितम्बर को कराची पहुंचे और उन्होंने जनाब भुट्टो से बातचीत की। अवश्य ही यह बातचीत भारत के विषय में होगी।

यू० थाण्ट ने २ सितम्बर को युद्ध बिराम के लिए तार भेजे—एक भारत को दूसरा पाकिस्तान को। भारत युद्ध विराम के लिए मान गया; उसने युद्ध विराम लागू करने के लिए

कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया। ४ सितम्बर को अन्ताराष्ट्रीय सुरक्षा समिति ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसके अनुसार युद्ध-विराम के उपरान्त भारतीय और पाकिस्तानी सेनाएं युद्ध-विराम रेखा के पीछे हट जाएँ और उन्हीं ठिकानों पर चली जायँ जहाँ वे ५ अगस्त १९६५ के पूर्व थीं। इस प्रस्ताव के बनानेवालों में रूस भी था। पाकिस्तान तो युद्ध-विराम के प्रस्ताव को माना ही नहीं परन्तु भारत को आश्चर्य हुआ कि रूस इस बात को कैसे मान गया कि भारतीय सेना हाजीपीर, टीठवाल और कारगिल की ली हुई चौकियों को छोड़ दे और वहाँ पाकिस्तान फिर से अपनी चौकियाँ स्थापित कर ले। पाकिस्तान हस्तगत कश्मीर कानूनन भारत का है। इन स्थानों से पीछे हटने का अर्थ हो गया कि भारत ने दूसरे देश की भूमि पर कब्जा कर लिया। कुछ वर्ष हुए रूस इस बात को घोषित कर चुका था कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। परन्तु बाद में रूस ने कहा कि भारतीय सेना जीती हुई भूमि से ही पीछे वापस हो! रूस की इस नीति में परिवर्तन क्यों हुआ ?

जो सबसे बड़ी बात हुई वह यह कि जनरल निम्मो की रिपोर्ट के बावजूद सुरक्षा परिषद ने पाकिस्तान को आक्रमणकारी घोषित नहीं किया। यह भारत के प्रति अन्याय था।

यह भी समाचार मिला कि पाकिस्तान सरकार सीमा के पाकिस्तानी क्षेत्रों के गाँव जनता से खाली कराने लगी है। इससे स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान भारी आक्रमण की योजना बना रहा है।

भारतीय सैनिक अफसरों को मालूम था कि पाकिस्तान केवल अन्तिम दशा (as a last resort) में ही छम्ब का मोर्चा खोलेगा। यदि ऐसा किया तो वह 'युद्ध घोषित' करने के बराबर माना जायेगा। ऐसी स्थिति में भारतीय सेना वही करेगी जो वह उचित समझेगी। इस समय भारत के सामने सबसे मुख्य बात यह थी कि पाकिस्तान का छम्ब से दबाव हटाया जाय और जम्मू को जो खतरा पैदा हो गया है उसे रोका जाय, तथा उसे भारत के अन्य क्षेत्रों पर आक्रमण न करने दिया जाय। पाकिस्तान विशनाह, सरोर और अमृतसर के हवाई अड्डों पर राकेटों के आक्रमण से स्पष्ट कर चुका था कि वह संग्राम क्षेत्र का विस्तार अवश्य करेगा। इससे सारा भारत राष्ट्र खतरे में पड़ जायेगा। ऐसी स्थिति में जनरलों ने प्रधान मंत्री स्व० शास्त्री जी को युद्ध की स्थिति समझायी होगी और अपनी जवाबी कार्रवाई की रूपरेखा उन्हें बतलायी होगी। जो भी हो, शास्त्रीजी ने जनरलों को उचित कार्रवाई करने की आज्ञा दे दी।

अब भारतीय सेना को दूसरा मोर्चा खोलना पड़ा ताकि वह पाकिस्तानी कुमुक जो छम्ब पहुंच रही है वह नये मोर्चे को भेजी जाये और साथ-साथ पाकिस्तान एक और नया आक्रमण न खोल दे।

२ सितम्बर तक कुछ डिविजनों को पंजाब-राजस्थान सीमान्त क्षेत्रों में शीघ्र से शीघ्र पहुंचने का आदेश मिल गया। एक डिवीजन का तो देहरादून में संगठन ही पूरा नहीं हुआ था। उसका तोपखाना कहीं था और डिवीजन कहीं था। आज्ञा मिलते ही यह डिवीजन लाहौर क्षेत्र में जा पहुंचा। एक दूसरा डिवीजन था जिसमें उस समय ९ के बजाय केवल ४ ही बटालियन थे वह खेमकरण कसूर क्षेत्र में चार ही बटालियन लेकर जा पहुंचा।

उस समय (सम्भव है आज भी भारत के पास केवल एक बख्तरबन्द डिवीजन और एक स्वतंत्र बख्तरबन्द ब्रिग्रेड हो) एक डिवीजन में लगभग ३,००० गाड़ियाँ होती हैं। जब यह गाड़ियाँ सड़क पर होती हैं तो दो गाड़ियों के बीच कम से कम १०० गज का फासला रखना अति आवश्यक है। इसके अनुसार ये गाड़ियाँ कम से कम १७० मील सड़क की लम्बाई घेर लेंगी। सेना में गाड़ियों की सुरक्षा के लिए कानवायों की औसतन गति १२ मील होती है। फलस्वरूप कानवाय में पहली और आखिरी गाड़ी में १६०मील अर्थात् १५ घन्टे का अन्तर होता है। दूसरे शब्दों में, कानवाय की आखिरी गाड़ी के चलने के १५ घंटे बाद चलेगी। जब कानवाय रुकेगा तो पहली गाड़ी को १५ घण्टे पहले मंजिल पर पहुंचना पड़ेगा। फिर दूसरी बात यह है कि बख्तरबन्द डिवीजन की गाड़ियाँ या टैंक सुरक्षा की दृष्टि से दिन में नहीं चलाये जाते। इसके कानवाय केवल रात्रि को ही चलते हैं। रात के आठ बजे से सुबह छ: बजे तक केवल १० घण्टे होते हैं। उनमें से कानवाय वास्तव में ५ घण्टे चलेगा—यानी एक रात में केवल ६०-७० मील। मान लिया जाये कि डिवीजन कई यूनिटों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर बटा हुआ है, तब भी एक रात में भारी गाड़ियों को १०० मील चलना काफी होता है। फिर हमें याद रहे कि हमारे पुल इतने चौड़े नहीं हैं कि उन पर से गाड़ियों की दो पंक्ति सुगमता से निकल सकें। यदि एक टैंक या गाड़ी किसी पुल पर खराब हो गयी तो सारा कानवाय रुक जायेगा। ऐसी स्थितियों में यह अनुमान किया जा सकता है कि बख्तरबन्द डिवीजन को २-४ दिनों में एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना कितना कठिन काम है। इन कठिनाइयों में सड़कों की खराबी का तो कोई सवाल ही नहीं। फिर जनता यह भी चाहती है कि उस समय भी असैनिक यातायात चलता ही रहे। इन कठिनाइयों के होते हुए भी भारतीय सेना अपने-अपने निर्धारित ठिकानों पर पहुंच गयी कोई यूनिट देर में पहुंचा, कोई ठीक समय पर; किसी यूनिट में एक सामग्री का अभाव था, तो दूसरे में किसी अन्य वस्तु का। बहरहाल भारतीय सेना युद्ध के लिए तैयार थी या नहीं; वह पाकिस्तान

की चुनौती को स्वीकार करने के लिए उत्सुक थी।

पाकिस्तान ने भारत पर १९४७ में आक्रमण किया था। उसके घुसपैठियों ने बारामूला में जो अत्याचार किये वे किसे ज्ञात न थे ? उनको मालूम था कि यदि पाकिस्तान सफल रहा तो उनके बच्चों और स्त्रियों की क्या दुर्दशा होगी। सारे देश में पाकिस्तान के विरुद्ध आवाजें लगने लगीं। भारतीय जनता १७ साल से क्रोध को पी रही थी। १९६२ में उसके आत्मसम्मान को ठेस लग चुकी थी और कच्छ की घटना ने तो आग में घी का काम किया था। अब वह नहीं सहन कर सकती थी कि पाकिस्तान को इस बार भी अपनी मनमानी करने दी जाय, भारतीय नेता और जनरल देश की भावना से पूरी तरह परिचित थे।

६ सितम्बर की सुबह ६-३० बजे भारतीय सेना ने लाहौर क्षेत्र में अन्ताराष्ट्रीय सीमा चार ठिकानों पर पार कर ली और वह लाहौर को बढ़ने लगी। इसकी पहली टुकड़ी अमृतसर-लाहौर ग्राण्डट्रंक सड़क की धुरी के साथ-साथ आगे बढ़ने लगी। इसकी अगली टोलियाँ तो ६ सितम्बर की शाम तक बाटा फैक्टरी पर पहुंच गयी थी। इस दल के साथ न टैंक ही थे और न तोपखाना ही था। तोपखाना इतना पीछे रह गया था कि यह आगे की टोली तोपों की मार से बाहर पहुंच चुकी थी यानी उसे तोपखाने की सहायता नहीं मिल सकती थी। दूसरे यह टोली इतनी शीघ्रता से आगे बढ़ी कि सेना को इतना समय नही मिला कि वह यातायात व्यवस्था और कुमुक पहुंचाने का ठीक ढंगसे संगठन कर सके। यह टोली छापामारों की भाँति भी काम न कर सकती थी क्योंकि स्थानीय पाकिस्तानी जनता से उसे कोई सहायता न मिल सकती थी। इस टोली के जवानों के पास केवल व्यक्तिगत हथियार थे। उनकी सुरक्षा राइफल, स्टेनगन और हलकी मशीनगन के ऊपर निर्भर थी। जब पाकिस्तान का जवाबी हमला भारी टैंकों की सहायता से आगे बढ़ा तब ये व्यक्तिगत हथियार क्या करते ? इस आक्रमण में पाकिस्तान की भारी-भारी तोपोंके गोलों की भीषण वर्षा ने भारतीय सैनिकों को काफी हानि पहुंचायी थी। जब उस पर पाकिस्तानी टैंकों का आक्रमण हुआ तो जैसे यह भारतीय सैनिक टुकड़ी आगे बढ़ी थी वैसे ही इसे पीछे हटना पड़ा।

इस युद्ध की कार्रवाई में कुछ जगह जवान घायल हुए या मारे गये। पीछे से कुमुक भेजी गयी परन्तु वह देर में पहुंची। उस समय तक पीछे हटने वाला दल इच्छोगिल नहर को पार कर उसके पूर्वी किनारे पर पहुंच चुका था। पाकिस्तान ने अवसर पाकर पुल को तोड़ दिया। अब भारतीय सेना को इच्छोगिल नहर पार करना कठिन हो गया। अन्त में उसने रैना गाँव में मोर्चा लिया। तत्पश्चात् पाकिस्तानी और भारतीय

सेना में युद्ध होता रहा। कभी भारतीय सैनिक दल अन्ताराष्ट्रीय सीमा तक पीछे चला आता और कभी पाकिस्तानी यूनिटों को इच्छोगिल नहर तक धकेल दिया जाता। यहाँ हमें केवल भारतीय सेना के अन्ताराष्ट्रीय सीमा पार करने से सम्बन्ध है।

दूसरा भारतीय सैनिक दल खालरा बर्की धुरी से बढ़ा। इस दल का उस दिन का लक्ष्य हुडियारा पुल पर कब्जा करने का था। इस पुल की लम्बाई १४० फुट थी और पाकिस्तानी सेना इसकी रक्षा कर रही थी। भारतीय दल ने हुडियारा और नूरपुर गांवों पर कब्जा जमा लिया, परन्तु वह अपने लक्ष्य पुल तक ठीक समय पर नहीं पहुंच सका। जब तक यह दल उस पुल पर पहुंचा पाकिस्तानी इस पुल को नष्ट कर चुके थे। यहाँ पर भारतीय सेना को एक दिन रुकना पड़ गया। जब सैनिक इंजीनियरों ने पुल बना दिया तब अगले दिन भारतीय यूनिट आगे बढ़े। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से हुडियार पुल कुछ ही मील था फिर भी भारतीय सेना ठीक समय पर अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकी। जब भारतीय सेना का बढ़ना आरम्भ हो गया उसके उपरान्त उसको पुल से बर्की तक कोई रुकावट नहीं मिली। १० सितम्बर को बर्की पर सिखों ने पूरा अधिकार कर लिया।

तीसरा दल खेमकरण से कसूर की ओर रवाना हुआ। इस दल ने भारत-पाकिस्तान सीमा पार कर ली और पाकिस्तान के कुछ सीमान्त ठिकानों पर कब्जा भी कर लिया। परन्तु टैंकों और तोपखानों की पर्याप्त सहायता न होने के कारण यह दल अपने लक्ष्य को न ले सका। पाकिस्तान का नम्बर १ बख्तरबन्द डिवीजन जो रायविण्ड में था वह तुरन्त कसूर की ओर आया। भारतीय दल को टैंकों के कारण पीछे हटना पड़ा। यह दल पीछे हटते-हटते खेमकरण वापस आ गया। इतने समय में भारतीय पैदली डिवीजन ने सुरक्षात्मक कार्रवाई पूरी कर ली। भारतीय दल निर्धारित योजना के अनुसार पीछे हटा और उसने निर्धारित स्थान पर मोर्चा पकड़ लिया। सेना के नियमित पीछे हटने के व्यूहकौशल को पाकिस्तान ने भारतीय सैनिकों की भगदड़ समझने की भूल की। उसने इस काल्पनिक स्थिति से लाभ उठाने का निश्चय कर लिया जिसका उसे अच्छा फल भुगतना पड़ा।

लाहौर के उत्तर-पूर्व में भारत के एक ब्रिगेड ने डेरा बाबा नानक पर रावी नदी को पार कर लिया। इस ब्रिगेड के साथ भी पर्याप्त तोपखाने की सहायता नहीं थी और टैंक तो थे ही नहीं। सात सितम्बर को पाकिस्तान के हवाई बेड़े और तोपों की गोला-बारी ने डेरा बाबा नानक का पुल तोड़ दिया। हमारे हवाई विमानों ने भी पाकिस्तान के कई टैंक नष्ट कर दिये। जो बचे वे पाकिस्तान के नम्बर ६ बख्तरबन्द डिवीजन में जा मिले। फलस्वरूप इस क्षेत्र में आधुनिक युद्ध का अवसर चला गया। यदि उधर पाकिस्तान के गरोवाल को अब भारी आक्रमण का भय नहीं रहा तो इधर भारत भी निश्चिन्त हो गया कि पाकिस्तानी टैंक गुरदासपुर पठानकोट की ओर आकर भारत की पठानकोट-जम्मू की सड़क पर कब्जा नहीं कर सकते।

✲

धनंजय कीर

१४ जनवरी १९४६ को अहमदाबाद में सरदार पटेल ने कहा था—"पाकिस्तान की मांग स्वीकार करना अंग्रेज सरकार के हाथ में नहीं है। यदि पाकिस्तान की मांग स्वीकृत हो जाती है तो हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष होगा। एक गृह-युद्ध मच जायेगा। कांग्रेस मुस्लिम लीग का द्वार अब अधिक दिनों तक नहीं खटखटा सकती। कांग्रेस ने लीगके साथ सामञ्जस्य बिठाने का प्रयास अनेक बार किया, लेकिन हर वार उसे ठोकर मारी गई।" कांग्रेस जैसे संगठन में लोहपुरुष के नाम से ख्यात एक प्रमुख नेता जब इस प्रकार का उद्बोधन दे रहा था, ठीक उसी समय ब्रिटिश-विरोधी भावनायें आकाश छूनें लगीं। इनका प्रतिरोध असंभव था। एक ज्वालामुखी का विस्फोट अनिवार्य था। आजाद हिन्द फौज ने इसे उभाड़ा था; बम्बई, कलकत्ता और कराची में नेवी-विद्रोह (रायल इण्डियन नेवल रैटिंगस्) और भारतीय वायु-सेना ने क्रान्ति की पताका फहरा दी थी। इस प्रकार से सरकार के मेरुदण्ड को तोड़ने की प्रक्रिया जारी थी। यहां तक कि सेना भी स्वतन्त्रता का आनन्द अनुभव करने लगी थी।

इंग्लैण्ड में ब्रिटिश मजदूर दल जब सत्ता में आ गया तो उसने पार्लियामेण्ट के दस सदस्यों का एक शिष्ट मण्डल भारत भेजा। मण्डल चार सप्ताह तक यहां के विभिन्न दलों के नेताओं से बातचीत और सर्वेक्षण करता रहा। १० फरवरी को यह इंग्लैण्ड वापस लौट गया। १९ फरवरी को भारत राज्य सचिव लार्ड पेथिक लारेन्स ने अपनी सरकार की ओर से घोषणा की एक शिष्ट मण्डल भेजने की, जिसमें इंग्लैण्ड के मंत्रि-मण्डल के तीन सदस्य रहने वाले थे—स्टेफर्ड क्रिप्स, ए० वी० एलैक्जेण्डर और तीसरे वे स्वयं थे। यह डेलीगेशन विभिन्न राजनीतिक मसलों पर भारतीय दलों के नेताओं से चर्चा करने वाला था। १५ मार्च को

ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री मि० एटली ने भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता पाने का अधिकार है—इसकी घोषणा की। यह स्वाधीनता ब्रिटिश कुनबे (कामन वेल्थ) के साथ हो सकती थी, उसके बिना भी। भारत के अल्पसंख्यकों की समस्या पर एटली ने कहा—"हम बहुसंख्यकों की रुचि पर लादने के लिए अल्पसंख्यकों को अस्वीकार करने का अधिकार नहीं दे सकते।" यह ब्रिटिश कैबिनेट मिशन २४ मार्च को दिल्ली पहुंचा। इन राजप्रतिनिधियों के निवास-स्थान पर अनेक बहसें और चर्चायें हुईं।

५ अप्रैल को पंडित नेहरू तड़पे—"कांग्रेस किन्हीं परिस्थितियों में भी मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग स्वीकार नहीं कर सकती, कुछ भी हो, चाहे ब्रिटिश सरकार इसे मान ही क्यों न ले।" लेकिन इतिहास इससे भिन्न बात कहता है। सम्पूर्ण राष्ट्र इसकी साक्षी है कि इसके कुछ ही दिनों बाद, इस जोरदार भाषण के बावजूद नेहरू ने कितनी बेशर्मी से पाकिस्तान की मांग मान ली!!

राजनीतिक दृश्य का दूसरा पटाक्षेप यह हुआ कि जिन्ना मियां ने मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व किया, मौलाना आजाद ने हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व किया। भोपाल के नवाब ने भारत के राजाओं का, यानी सारे भारत का प्रतिनिधित्व मुस्लिम नेताओं ने ही किया। जिन्ना मियां फिर भारत-विरोधी रुख

एक और योजना

सुना है—
इस्लामी जम्हूरियत की राजधानी में
ब्लड बैंक बन रहा है।
जहाँ
बंगला देश के नौजवानों का खून
जमा किया जायेगा।
जिसे
कायदे आजम के
मकबरे पर चढ़ाया जायेगा।
और फिर
पाकिस्तानी तानाशाह
उसे
सत्ता की शराब के साथ पीकर
कुफ्र को मिटाने के लिए
एक हजार वर्षों तक लड़ सकेंगे।

—शत्रुघ्न

अख्तियार कर रहे थे, यहां तक कि अपने को भारतीय कहने से भी उन्होंने इन्कार कर दिया।

जिन्ना के पिट्ठू पीछे नहीं रहे। दिल्ली में जो लीग के विधि निर्माताओं की मीटिंग हुई, उसके पहले गांधीजी के शाहिद साहिब एच० एस० सुहरावर्दी ने ९ अप्रैल को हिटलरी लहजे में फरमाया कि "पाकिस्तान की मांग मुसलमानों की अन्तिम मांग नहीं है, अंग्रेज यदि यह मान लेते हैं कि भारत का भाग्य कांग्रेस जनता के हाथ में हैं तो

मुस्लिम लीग केन्द्रीय सरकार को एक दिन भी काम न करने देगी।" मुस्लिम लीग के दूसरे नेता फिरोज खाँ नून ने अंग्रेज सरकार को चेतावनी दी—"मुसलमान देश में वह खूनखराबा और विनाश की लीला करेंगे, जिसे देखकर चंगेज खाँ का करतब भी मात खा जाय।"

१२ मई १९४६ को शिमला में ब्रिटिश मंत्रियों, वायसराय, कांग्रेस और लीग के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ, लेकिन यह किसी निर्णय पर न पहुंच सका। तदुपरान्त मिशन एक नया प्रस्ताव लेकर आया, जो '१६ मई का सरकारी दस्तावेज' (स्टेट पेपर) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें भारत-विभाजन सम्बन्धी जिन्ना की मांग को फिर अस्वीकार किया गया था। जून १९४६ में कैबिनेट मिशन लार्ड वावेल पर मध्यकालीन सरकार बनाने का भार डालकर वापस लन्दन चला गया। १० जुलाई को पंडित नेहरू ने बम्बई में एक पत्रकार-सम्मेलन में कहा—"प्रान्तों को स्वाधीन समझकर वर्गीकरण अन्तिम रूप से नहीं किया जा सकता, जैसा कि कांग्रेस ने पहले ही कहा था।" पंडितजी के इस विचित्र वक्तव्य ने जिन्ना को अपनी मांगें प्रस्तुत करने का एक मौका और दे दिया और २७ जुलाई १९४६ को लीग-कौन्सिल ने अपनी बम्बई की मीटिंग में 'डायरेक्ट-ऐक्शन' का प्रस्ताव पारित कर दिया, और कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव को, जो पहले लीग ने मान लिया था, अस्वीकार कर दिया। मियां जिन्ना ने हिंसा-अहिंसा पर विचार करने से इन्कार कर दिया। लीग के सेक्रेटरी ने अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिये हर तरीका अपनाने की घोषणा कर दी। २९ जुलाई १९४६ के 'टाइम्स आफ इण्डिया' (बम्बई) से पता चलता है कि सिन्ध के मंत्री ने हर ऐसे आदमी की हत्या करने का आदेश दिया, जो लीग की मांग का विरोध करे। २४ अगस्त को वायसराय ने एक १६सदस्यीय अल्पकालीन सरकारके गठन की घोषणा कर दी, जिसमें ६ सदस्य कांग्रेस की ओर से नामांकित होने वाले थे, ५ लीग की ओर से और ५ अल्पसंख्यकों की ओर से।

अपनी छः सीटों में से एक हरिजन-वर्ग को और एक मुसलमानों को देते हुए कांग्रेस ने २ सितम्बर १९४६ को कार्यभार सम्भाला। और यह तब हुआ, जब मुस्लिम लीग इस अल्पकालीन सरकार के साथ सहयोग करने के लिये तत्पर नहीं थी।

जिन्ना को अधिकृत रूप से यह विश्वास था कि गांधीजी के नेतृत्व के अन्तर्गत कांग्रेस सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में मुसलमानों का सहयोग लिये बिना सर-

---

* ए नोटेड जर्नलिस्ट, होम्स एण्ड फेयर्स (पटाभि सीतारमैया की प्रस्तावना सहित), पृष्ठ २१-२२।

कार नहीं चला सकती। दो मुसलमानों की नियुक्ति अस्थायी रूप से की गई। कांग्रेस गठित अल्पकालीन सरकार नहीं चल सकती—यह साबित करने के लिये मुस्लिम लीग ने १६ अगस्त को डायरेक्ट ऐक्शन शुरू कर दिया।

बंगाल के पूर्वी जिलों में, खासकर नोआखाली में जो भयंकर मार-काट, हत्या, छुरेबाजी, बलात्कार के शिकार हिन्दू बनाये गये, वह डायरेक्ट ऐक्शन का प्रथम चरण था। आचार्य कृपलानी ने, जो कांग्रेस के मेरठ अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गये थे, बंगाल के उन क्षेत्रों की यात्रा की, जो डायरेक्टर ऐक्शन से प्रभावित हुए थे। उन्होंने वहां जो सामूहिक हत्याकाण्ड, चीख-पुकार देखी-सुनी —उससे उन्होंने यह व्यक्त किया कि यह सब मुसलमानों द्वारा पूर्व नियोजित था। कलकत्ते के 'स्टेट्समैन' में एक सैनिक अधिकारी ने लिखा था—'युद्ध से भी भयंकर दृश्य उत्पन्न हो गया।" (War was nof like this). अन्य कांग्रेस नेताओं ने भी, जो उस समय सत्ता में थे, इसे 'मुस्लिमों की कट्टरता का घृणित रूप' प्रमाणित किया। ब्रिटिश सरकार की मशीनरी ने हिन्दुओं को निःशस्त्र कर दिया था, उनके हथियार छीन लिये थे, और गांधीवाद ने उन्हें मानसिक रूप से कुछ कर पाने में अक्षम बना दिया था। जो कमी थी, वह कर्फ्यू ने पूरी कर दी। पाकिस्तान के लिए लड़नेवाले मुस्लिमलीगी, जो सरकार में सम्मिलित थे, बड़े उत्तेजक भाषण देते थे; इस लड़ाई ने बल पकड़ा। पण्डित नेहरू और गृहमन्त्री सरदार पटेल की नाक के नीचे मियां गजनफर अली खां ने जो इस सरकार में स्वास्थ्य मंत्री थे, लाहौर में तकरीर पेश करते हुए कहा—"जब मुहम्मद बिन कासिम और मुहम्मद गजनवी ने, जिनके पास कुछ हजार फौज ही थी, हिन्दुस्तान पर धावा बोल दिया और लाखों हिन्दुओं को गुलाम बनाने में सफल हो गये तो यह खुदा का शुक्र ही समझना चाहिए कि इस समय यहां के लाखों मुसलमान करोड़ों हिन्दुओं को मजा चखा देंगे।" (दि फ्री प्रेस जर्नल, बम्बई) एक दूसरे मौके पर उन्होंने हिन्दुओं को इस्लाम कबूलकर मार-काट से बचने के लिए कहा। और यह साम्प्रदायिक आपाधापी अन्तरिम-सरकार में चलने के लिए भी खुली छूट पा गई। बंगाल में जो भयावह दुःखद काण्ड हो रहा था, उसकी प्रतिध्वनि बनारस में मृत्यु-शैय्या पर पड़े पण्डित मदनमोहन मालवीय के ओठों पर भी थी। बंगाल के उन हिन्दुओं की चीखें, जिनकी घर-सम्पत्ति जली थी, छीन ली गयी थी, औरतों का अपहरण कर लिया गया था, बच्चों की निर्मम हत्या कर दी गई थी, हर प्रान्त में पहुंच रही थीं।

कुरुक्षेत्र की एक सभा में डॉ० मुंजे ने हिन्दुओं को चेतावनी दी कि उन्हें गृह-युद्ध का सामना करना पड़ रहा है।

लार्ड वेवेल, कमाण्डर-इन-चीफ और

पण्डित नेहरू बिहार के दंगों का दृश्य देखने जहाज से गये।

सरदार पटेल ने तेजी से इसपर कार्यवाही की, नेहरू ने बिहार के हिन्दुओं को गोलियों और हवाई बमबाजी से धमकाया। कई मौकों पर पुलिस ने खुलकर गोलियाँ चलाईं। गांधीजी इससे एक कदम और आगे बढ़े। उन्होंने बिहार के हिन्दुओं को अनशन की धमकी दी। नेहरू ने कहा कि यदि "बिहार के हिन्दू मुसलमानों, को मारना चाहते हैं तो पहले वे मुझे मार दें।" कांग्रेस-नेताओं की यह हिन्दू-विरोधी नीति कांग्रेसी पत्रों को भी नहीं पसन्द आयी। 'यशोदा' ने अपने साप्ताहिक अंक (जिल्द ६, सं० ४, गांधी सम्वत् ७८) के सम्पादकीय में लिखा—"यदि नेहरू को मरना है, तो उन्हें नोआखाली में मरना चाहिए, और यदि गांधीजी को अनशन करना है, तो उन्हें नोआखाली में अनशन करना चाहिए। नोआखाली में जो दुःखद काण्ड घटित हुआ, उसके साथ न्याय होना चाहिए।'

इसी अखबार ने यह समाचार और टिप्पणी छापी कि नोआखाली में इतना अधिक रक्तपात हुआ कि वहां जब तक खूब खून-खराबा नहीं हो जाता था, तब तक कोई उसके नजदीक नहीं जाता था। वायसराय और दूसरे बड़े अधिकारियों ने शव-परीक्षा के बाद होनेवाली स्थिति को इतनी सुस्पष्टता के साथ रखा कि उससे किसी को धोखा नहीं हो सकता था। साप्ताहिक ने अपने अन्तिम लेख में लिखा—"गांधीजी का रोल इसमें ऐसा था, जिस पर अधिकार नहीं किया जा सका। जब तक बिहार में दंगे हुए, तब तक वे सक्रिय रहे। उन्होंने केवल बिहार के लोगों से दण्डस्वरूप प्रायश्चित्त और अच्छे व्यवहार की आवाज लगाई।" साप्ताहिक ने उपसंहार किया—"पूर्वी बंगाल के मामले में गांधीजी ने जो दोषपूर्ण अपराधी निष्क्रियता दिखाई, उसके बारे में कोई सफाई नहीं दी जा सकती।

५ अगस्त १९४६ से बम्बई में भी हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने जोर पकड़ा। नोआखाली जिला हिन्दू सभा के अध्यक्ष राजेन्द्रराय चौधरी हिन्दुओं को बचाने में वीरतापूर्वक शहीद हो गए।

मुस्लिम लीगियों के अन्तरिम सरकार में शामिल होते ही संघर्ष ने बल पकड़ा। मुस्लिम लीगियों ने सरकार में सम्मिलित होने के बाद संविधान-सभा में भाग लेने से इन्कार कर दिया।

सरदार पटेल ने कांग्रेस के मेरठ-अधिवेशन में साफ-साफ कह दिया कि 'या तो लीग संविधान-सभा में भाग ले या सरकार से बाहर हो जाए।' कोई रास्ता जब नहीं दिखा, तो ब्रिटिश सरकार ने जिन्ना और नेहरू को लन्दन आमंत्रित किया एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए, जिसमें कुछ कानूनी प्रश्नों पर विचार करना था। जिन्ना मियां और पण्डित नेहरू लन्दन गये। जिन्ना ने वहां समय व्यर्थ बिता दिया और

कोलाहल मचानेवाले पण्डित नेहरू असफल हो गये। इससे सरदार पटेल बौखला उठे और उन्होंने कांग्रेस को धमकी दी कि उसे ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को नहीं मानना चाहिए। परन्तु अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अपने १५ जनवरी १९४७ के अधिवेशन में उसे स्वीकार कर लिया। सरदार पटेल उसमें अनुपस्थित थे। अब ब्रिटिश सरकार ने जो निर्णय दिया उसने संवैधानिक सभा के कानूनी अस्तित्व को धमकी दी। इसका मतलब था कि संविधान तब तक वैध नहीं हो सकता, जब तक मुस्लिम लीग उसे स्वीकार न कर ले।

फरवरी १९४७ में ब्रिटिश सरकार ने इस बारे में घोषणा की कि वह उत्तरदायित्व पूर्ण भारतीयों के हाथ में सत्ता किसी ऐसी तिथि को सौंप देगी, जो जून १९४८ के बाद में न पड़े। लार्ड-वेवेल की युद्धकालीन नियुक्ति का काल समाप्त होने की ओर नये वायसराय के रूप में विस्काउण्ट माउण्टबेटन की नियुक्ति की घोषणा भी इसी के साथ की गई। अखण्ड हिन्दुस्तान चाहनेवाली शक्तियों ने फिर अपनी चेष्टायें प्रारम्भ कर दी थीं।

मुस्लिम गृहयुद्ध ने, जिसकी घोषणा हो गई थी, हिन्दुस्तानी भाईचारा, राष्ट्रभाव, और मातृत्वके प्रति कृतघ्नता व्यक्त कर दी। कांग्रेस की बड़ी शक्तियां स्थिति पर नियन्त्रण कर पाने में असमर्थ थीं। गृहमन्त्री सरदार पटेल ने अपनी सैनिकोचित स्पष्टता के साथ इस दु:खद स्थिति का वर्णन कर दिया, जब उन्होंने कहा कि "राजकीय सेवा में जो भी मुसलमान कर्मचारी है, वह पाकिस्तानी है।"सहायता न कर पाने के भाव में उनका परामर्श था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना रक्षक होना चाहिए।

इसी समय पश्चिमी बंगाल के एक पृथक् प्रान्त की मांग पर बंगाल में बड़ा वाद-विवाद हो रहा था। बंगाल विभाजन की मांग, जो चालीस साल पहले रद्द कर दी गई थी' पुनः दोहराई जा रही थी।

ब्रिटिश सरकार की घोषणा के अनुसार मार्च १९४४ के अन्त में लार्ड वेवेल भारत से चले गये। उनके स्थान पर नये वायसराय आये।

कांग्रेस के नेता अब तेजी से आत्मसमर्पण करने की सोच रहे थे। उत्तर प्रदेश राजनीतिक सम्मेलन में बोलते हुए पंडित नेहरू ने २६ अप्रैल १९४७ को घोषित किया—"मुस्लिम लीग यदि पाकिस्तान लेना चाहती है, तो ले सकती है।" सरदार पटेल ने १४अप्रैल १९४७ को बम्बई में कहा—यदि भारत का विभाजन होना ही चाहिए तो यह हमारे साथ शान्तिपूर्ण ढंग से वार्तालाप से ही हो सकता है।" डा० राजेन्द्रप्रसाद ने प्रतिरक्षा-सैनिकों के विभाजन के प्रति चिन्ता व्यक्त की। कांग्रेस के नेता ऐसे बोल रहे थे, ऐसा व्यवहार कर रहे थे,

हिन्दुस्थान की एकता और अविभाज्यता जैसे उनके लिए अतीत की वस्तु हो।

ब्रिटिश मंत्रिमण्डल में अपने प्रस्ताव की स्वीकृति लेकर वायसराय शीघ्र ही वापस लौटे। और ३ जून १९४३ को ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री ने लन्दन से और वायसराय ने दिल्ली से अपनी नयी योजना की घोषणा की। यह योजना '३ जून की घोषणा' के नाम से प्रसिद्ध है। नयी योजना ने १५ अगस्त १९४७ से एक या दो राज्यों के गठन की ओर ध्यान आकर्षित किया, पृथक् संवैधानिक सभाओं का प्राविधान रखा, पंजाब और बंगाल प्रान्तों का विभाजन, बलूचिस्तान के प्रश्न को निर्वाचित सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करना और उत्तरी-पश्चिमी सीमा-प्रान्त तथा असाम के सिलहट जिले को यह निश्चित करना था कि वे किस राज्य में सम्मिलित हों।

कांग्रेसी नेता इस समय भारत की एकता के विखण्डन पर अन्तिम सहमति देने के लिये पूरी तौर से प्रस्तुत थे। दिल्ली में प्रार्थना के बाद गांधी जी ने एक लिखित संदेश में, ९ जून १९४७ को यह घोषित किया कि वे उस नयी ब्रिटिश योजना के विरोधी नहीं थे, जो कांग्रेस के नेता स्वीकार कर रहे थे। किसी को भी इस समाचार पर आश्चर्य नहीं हुआ। यह उपसंहार था। और अखिल भारतीय कांग्रेस-समिति ने अपने १४ जून १९४७ को दिल्ली-अधिवेशन में पंडित नेहरू द्वारा समर्थित एक प्रस्ताव के माध्यम से '३ जून वाली योजना' को स्वीकार कर लिया। पंडित नेहरू राष्ट्र के प्रतीक माने जाते थे, जिन्होंने इतनी दृढ़ता से भारत की एकता की रक्षा-घोषणा की थी। इस प्रस्ताव का राष्ट्रवादी मुसलमान मौलाना मौलाना आजाद ने समर्थन किया था, जिन्हें भारत के बाहर एक साम्प्रदायिक राज्य के समर्थन में दैवी सन्तोष मिला था। मौलाना आजाद ने योजना का वर्णन ऐसे किया, मानो भारत की समस्या हल करने का एकमात्र वही रास्ता हो, जैसा कि बाद में कांग्रेस ने कबूल किया। लेकिन कांग्रेस को यह प्रस्ताव कबूल करने के लिए किसने कहा था ? इतिहास इस बात की साक्षी है कि कांग्रेस-मार्का ये सभी राष्ट्रवादी नेता पाकिस्तान मानने में एक-से ही थे।

अ० भा० कांग्रेस समिति में जो समाजवादी थे, इस विषय में तटस्थ थे। राष्ट्र के जीवन में जो एक बहुत गहरा घाव होने जा रहा था, उसके विषय में इन लोगों का कोई मत ही नहीं था। पूरी कांग्रेस कमेटी में इस काले निर्णय का विरोध केवल एक व्यक्ति कर रहा रहा था, और वे थे बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन। उन्होंने कहा कि इस विषय में कांग्रेस की कार्य समिति असफल हो गई है, तथापि उसके पीछे जो लाखों लोगों की शक्ति है, वे लाखों लोग उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर सकते थे। टण्डनजी ने मुस्लिम लीग व अंग्रेजों के सामने इस

समर्पण को बड़ा अधम बताया। सरदार-पटेल ने विभाजन का जब समर्थन किया, तो वह दृश्य परिवर्तन ऐसा था, मानों तलवार से गिरते-गिरते आत्मसमर्पण तक आ गया हो।

गांधीजी ने कांग्रेस कार्यसमिति को एक अन्तिमेत्थम् (अल्टीमेटम) दिया। उन्होंने धमकी दी कि या तो प्रस्ताव को मानो या पुराने कांग्रेसी नेताओं को अपना स्थान दो। उन्होंने उन्हें परामर्श दिया योजना स्वीकार करने का और उसमें जोड़ दिया कि अपने नेताओं की ओर से इसे उठाना उनका कर्तव्य था। कांग्रेसी नेताओं के लिए लाखों लोगों के भाग्य और राष्ट्र की नियति की अपेक्षा अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा अधिक महत्त्व-पूर्ण थी। कांग्रेस के नेतृत्व की यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात थी।

गांधीजी ने अ० भा० कांग्रेस कार्य-समिति पर अपना जोर डाला, और उसने पाकिस्तान बनने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। और देखिये, क्या यह वही बात थी, जिसका गांधीजी ने उपदेश दिया था। क्या राष्ट्र से उन्होने दस वर्ष पहले यह नहीं कहा था कि "यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि कांग्रेस अंग्रेजों की सहायता जिन्दा आदमियों की चीर-फाड़ में कदापि नहीं करेगी। यदि कांग्रेस मेरे साथ रही तो मैं मुसल-मानों को शक्ति-प्रयोग की विपत्ति में कभी नहीं डालूंगा। मैं उनके द्वारा शासित हो सकता हूं, लेकिन वह शासन भारतीय सदैव ही रहेगा।"

विस्थापित भी लौटेंगे

भारत—बंगला देश की सीमा पर राष्ट्रसंघ के पर्यवेक्षकों को रखना हमें स्वीकार नहीं कि राष्ट्रसंघ के पर्यवेक्षकों को पश्चिमी पाकिस्तान के समुद्री व हवाई अड्डों में रखा जाय ताकि वह देख सके कि पाकिस्तान बंगला देश में और सेना तो नहीं भेज रहा है।

पाकिस्तान राष्ट्रसंघ की ओट में बंगला देश के सैनिकों को परास्त करना चाह रहा है। वह राष्ट्रसंघ के भारत–बंगला देश सीमा पर पर्यवेक्षक इसलिए रखना चाहता है कि विस्थापित अपने अपने घरों को लौट सके। विस्थापित उसी हालत में घर लौट सकते हैं जब पाकिस्तानी सैनिक पश्चिमी पाकिस्तान लौट जावेंगे।*

विभाजन का प्रस्ताव पारित हो गया। गांधीजी के अनुसार पाकिस्तान एक असत्य था और? गांधीजी के मत से पाकिस्तान ईश्वर द्वारा निषिद्ध था, लेकिन उन्होंने उसकी अवहेलना की। लोगों के मूलाधिकार और लोकतंत्र की पुकार की "दैवी अधिनायकवाद" की बलिवेदी पर भेंट चढ़ गई। अगले दिन इस घटना का वर्णन करते हुए बम्बई के 'फ्री प्रेस जर्नल' ने, जो कांग्रेस का एक प्रमुख प्रवक्ता था, छापा—"राष्ट्र के नेताओं का देश के साथ विश्वासघात!" पाकिस्तान की स्वीकृति के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस ने उपसंहार-काल में देश की छाती में छुरा भोंककर एक नयी भेंट दी!

अनुवाद : ओमप्रकाश पाण्डेय

पाकिस्तान के आकाओं के

'मै अंग्रेजों का जासूस था'

लेखक—धर्मेन्द्र गौड़

पृष्ठ संख्या—१७५

मूल्य—६.५० पैसे

इस पुस्तक के लेखक श्री धर्मेन्द्र गौड़ ! अब पत्रकार हैं, लेखक हैं, चोटी के पत्रों में आप लिखते रहते हैं और जो कुछ लिखते हैं, वह बड़े मजे का है, राष्ट्रीय महत्व का है। उसमें इतिहास भी है और देश का दुर्भाग्य भी मुखरित है जो विदेशी के द्वार पर एड़ियां रगड़ने को विवश करता है। अभी एक लेख के लिए बात चली, लेकिन 'राष्ट्र-धर्म' से पहले 'नवनीत' और 'धर्मयुग' बाजी मारले गये, बल्कि शायद 'धर्मयुग' भी रास्ते में रह गया। 'नवनीत' मीर रहा। यह धर्मेन्द्र जी के लेखों की सफलता और यशस्विता ही कही जायेगी। उनकी पुस्तक की आलो-

चना शुरू करने से पहले एक पुरानी बात मुझे वार-बार कुछ स्मितियां दे जाती हैं।

बहुत दिन हो गये, धर्मेन्द्र जी से एक दफ्तर में अचानक मुलाकात हुई थी। वे तब गुप्तचर विभाग में सक्रियथे, लेकिन यह बात मुझे क्या पता, उन्होंने देर तक घुल-घुलकर बातें की, अनेक प्रश्न पूछे, जो समझ आया, बकता गया। कालान्तर से जब 'राष्ट्रधर्म' में बतौर भूतपूर्व गुप्तचर अधिकारी उनका पहला

लेख आया, तो मैं चौंका कि अरे ! ये वे ही धर्मेन्द्र जी हैं ! बड़े खिलाड़ी निकले ! किसी सफल गुप्तचर अधिकारी की

खूनी रहस्यों पर नयी रोशनी

प्राप्ति स्थान—लिपि प्रकाशन
ई ५/२० कृष्णनगर
दिल्ली—५१

सफलता की शायद यही पहचान है।

प्रस्तुत पुस्तक में द्वितीय विश्वयुद्ध से सम्बन्धित अंग्रेजों की गोपनीय कार्य-वाहियां, अंग्रेजों के प्रशिक्षित गुप्तचरों, जिन्ना और लीग की इन गुप्तचरों से सांठ-गांठ, भारत-विभाजन काल में ब्रिटिश एजेण्टों की काली करतूतें आदि ऐसी अनेक सूचनायें हैं, जो अन्यत्र प्राप्त नहीं। और तब मैं सोचता हूं, कि भाई धर्मेन्द्र जी एक अच्छे लेखक भी हो सके—यह शुभंयु। खास कर जबकि वे मुझे लिख चुके हैं 'अब तो मरते दम तक लिखना ही है जनहित तथा राष्ट्र-हित में विस्फोटक सत्य कथायें। पुस्तक के पूर्वार्द्ध में जापानी सेना के साथ ब्रिटिश आंखमिचौनी के रोचक और रोमांचक संस्मरण हैं, कहीं बौद्ध एजेन्ट 'डिया' का कम्पायमान पीला चेहरा कुतूहल जगाता है तो कहीं चर्चिल जापानी धमकी के कारण अपने गलत अनुमान के गर्त में गोते खा रहे हैं तो कहीं ब्रिटिश सैनिक सरंजाम का जाल फैला दिखायी देता है जिसमें एक बार उलझ कर बेचारे जापानी फिर उभर नहीं पाये।

चीनियों की छुरेबाजी की बात चालीस-पचास साल पहले भी लोग जानते थे, किन्तु अंग्रेजों ने डेनियल-सरीखे कमाण्डरों को विधिवत छुरेबाजी का प्रशिक्षण दिलवाया था ताकि उनका इस्तेमाल जापानियों और भारतीयों के विरुद्ध हो सके—यह बात पहले-पहल श्री धर्मेन्द्र की ही कलम से प्रकाश में आयी है।

चौरंगी, आगरा रोड, नार्थलाज, लार्ड सिन्हा रोड, टालीगंज आदि बंगाल के अड्डे और बम्बई के मलाबार हिल, पूना, खडगवासला, देहू रोड, खिड़की, लोनावला, नासिक, मनमाड, माउण्ट रोड, श्रीलंका कैण्डी माउन्ट लवीनिया, अंगुलाना, कोलम्बो पोर्ट, होरोना, बालापितिया तथा टिनकोमाली

आदि अड्डे इस तरह द्वितीय महायुद्ध में ब्रिटिश की हारती हुई बाजी को विजय में बदलने के साधन बने।

यह सब रहस्य इस पुस्तक में प्राप्य है।

ब्रिटिश सरकार किस तरह विषैले पदार्थों, जाली मुहरों, विषैले सांपों आदि का अमानवीय प्रयोग करती रहती थी—इसकी ज्वलंत साक्षियां पाठकों को इस पुस्तक में मिलेंगी, और उससे उन्हें अंग्रेजों की परले दर्जे की नीति का और दुष्टता का परिचय मिल सकेगा।

यह पुस्तक प्रमाण देती है कि ब्रिटिश सरकार हजार-हजार रुपये मासिक वेतन पर मेजर भास्करन सरीखे फिफ्थ कालम के ऐसे गुप्तचर भी रखती थी, जिन्हें चोरी करने का प्रशिक्षण दिया गया था। गुप्तचर विभाग की सफलता किसी देश की कितनी बड़ी शक्ति हुआ करती है यह तथ्य इस पुस्तक में सर्वत्र मुखरित है। अपने इसी गुप्तचर विभाग के बूते ब्रिटिश सरकार ने सन् ४३ के दिनों में भारत में किस तरह इण्डियन करेन्सी नोटों से भरे हुए रेलवे वैगन उतार-उतार कर मुद्रास्फीति फैलायी, किस तरह अपने कर्मचारियों के उस सस्ते जमाने में आठ आने के बजाय तांगे के किराये के पंचानवे रुपये क्लेम किये जाने पर झल्लाकर कहते थे—"तुम्हें खर्च करना ही नहीं आता। तांगे के पूरे सौ लिखो और कुली के पन्द्रह रुपये।'

जबकि कुली के उन दिनों दो आने काफी समझे जाते थे। क्लेम करने वाले ने दो रुपये लिखे थे। यही नहीं, किस तरह अंग्रेजों ने अपने एजेण्टों से भारत में दंगे करवाये, किस तरह लीग को अपना हथियार बनाया, किस तरह अंग्रेजों ने कासिम रिजवी जैसे रजाकार तैयार किए, किस तरह अंग्रेजों ने यहां फोर्स वन थ्री सिक्स बारह हथियार बंटवाये, और सन् ४७ की भारी खून-खराबी कराकर आजादी को वीभत्स बना दिया—यह सब प्रमाण लेखक ने अतीव रोचकता, संवेदनशीलता तथा राष्ट्रीय भावना के साथ इस पुस्तक में संजोए हैं, नमूने के तौर पर यहां उसके कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं।

'सन् १९४५ की जनवरी का महीना था। मुझे बम्बई से मेरठ बुलाकर दो अति गोपनीय तथा व्यक्तिगत (टॉप सीक्रेट एण्ड पर्सनल) लिफाफे दिये गये एक था इम्पीरियल (इंटेलिजेंस) ब्यूरो के क्वेटा स्थित प्रतिनिधि तथा बलूचिस्तान में 'ब्रिटिश इंटेलिजेन्स सिस्टम' के डायरेक्टर मि० वुड के नाम और दूसरा था इस्कन्दर मिर्जा के लिए, जो बाद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति हुए। उस समय सम्भवत: वे कमिश्नर थे। जिस समय का मैं उल्लेख कर रहा हूं, ये दोनों पेशावर में ही मौजूद थे। मैंने स्वयं अपने दोनों हाथों से, जैसा कि आदेश था, ये पत्र अलग-अलग सुरक्षित रूप में दोनों के हवाले किए तथा उनसे प्राप्ति की रसीदें भी ले लीं। किन्तु

दोनों में से किसी ने भी मुझे पत्रों का उत्तर नहीं दिया। सिवाय इसके कि इस्माइल उर्फ जहूर उपनामधारी शौकत नामक व्यक्ति को मेरठ तक ले जाने के लिए वुड ने मेरे हवाले किया।

० ० ०

"मुझे पता चला कि यह शौकत ही था, जिसने कलकत्ता, कोमिल्ला, बारीसाल, चटगांव, खुलना, राजशाही आदि स्थानों पर सैकड़ों एजेण्ट बंगाल में साम्प्रदायिक दंगे कराने के लिए नियुक्त किये थे। ये एजेण्ट हर घड़ी अपने काम के लिए कमर कसे तैयार रहते थे। केवल आदेश पाने भर की प्रतीक्षा थी।

० ० ०

"फोर्स वन-थ्री-सिक्स ने अपने एजेण्टों को भारी मात्रा में हथियार और युद्ध-सामग्री को बंगाल तथा पंजाब के उन स्थानों में दफना देने का स्पष्ट आदेश दे दिया जहां अधिकांशतः उनके मुस्लिम साथी रहते थे। कर्नल क्न्सि तथा भारतीय पुलिस अधिकारी ए०एल० पी० जोन्स, आई० पी० के ही जिम्मे यह खुफिया काम सौंपा गया कि वे हथियारों को बंगाल और पंजाब के कब्रिस्तानों में गड़वा दें और धरती के गर्भ से इन्हें तभी निकाला जाय, जब इनके निकालने का शुभ अवसर आ जाए। तात्पर्य यह कि भारत भूमि पर भीषण अशान्ति का सूत्रपात करने के लिए किसी विशेष सम्प्रदाय को ये समर्पित किये जायें और बंगाल तथा पंजाब में साम्प्रदायिक दंगे और मार-काट का नग्न नृत्य कराया जाए। इस सम्बंध में कर्नल क्न्सि ने एक गुप्त संस्था कोमिल्ला पूर्वी बंगाल में खोली, जिसमें केवल मुस्लिम विद्यार्थी ही थे। वे उन्हें आसानी से मिलने वाली चीजों से बम आदि बनाने की शिक्षा देने लगे।

० ० ०

"१६ अगस्त १९४६ को मुस्लिम लीग ने 'डायरेक्ट ऐक्सन डे' की घोषणा की, और उधर 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' के एजेण्ट समस्त बंगाल की धरती को रक्त-रंजित करने के लिए कलकत्ता, नोआखाली, बारीसाल, चटगांव, ढाका, खुलना, नारायणगंज, कोमिल्ला, मदारीपुर, राजशाही आदि स्थानों में फैल गये। इन्होंने कसाइयों की भांति खोज-खोजकर दूसरे सम्प्रदाय के लोगों का संहार किया। जो घर, मकान, झोपड़े, अट्टालिकायें, सामान आदि सामने पड़ते, उन्हें निःसंकोच आग के हवाले करते गये। धन-सम्पत्ति की लूट-पाट तो चरम सीमा पर पहुंच गई। न जाने कितनी बच्चियां और युवतियां भगाई गयीं और विवश करके उनका कौमार्य, उनका धर्म, उनकी मर्यादा को बेरहमी के साथ लूटा गया। इस भीषण ताण्डव की विभीषिका को अभिव्यक्त करने के लिए शब्द किसी भी लेखनी में नहीं मिल सकते। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि भारत ने अपने इतिहास के क्रूरतम पृष्ठों पर भी ऐसी निर्मम

अमानुषी बर्बरता की रेखायें नहीं देखी होंगी, लगता था कि क्रूरता के लिए विश्वविख्यात रोम के आक्रान्ता भी इनसे कहीं अधिक सभ्य रहे होंगे।

० ० ०

"स्टुअर्ट उन दिनों हैदराबाद में थे।। वहाँ वे सर वाल्कर मोंकटन से साँठ-गाँठ करके रजाकारों के नेता कासिम रिजवी द्वारा षड्यंत्रों की व्यूह-रचना कर रहे थे। बाद में रेलगाड़ियाँ भर-भर कर शस्त्रास्त्र और युद्ध-सामग्रियां खिड़की (पूना के निकट) मनमाड तथा जबलपुर से हैदराबाद भिजवाई गयीं, रजाकारों द्वारा 'रेजिस्टेन्स मूवमेंट' को दृढ़ता के साथ कायम रखने के लिए। आरडा ने मुझे उस पी० क्यू० पी० (पोस्ट क्विट प्लान) के बारे में बहुत सी बातें बताईं जो उन दिनों अति विकराल रूप में कार्यान्वित हो रही थीं। इस योजना के बारे में सुनकर उसकी भयानकता से आतंकित मेरा सम्पूर्ण शरीर रोमांचित हो उठा।

० ० ०

"बंगाल में साम्प्रदायिकता का प्रचण्ड अग्निकाण्ड नोआखाली तथा त्रिपुरा को निर्ममता से निगल रहा था, जबकि इधर गढ़मुक्तेश्वर, भरतपुर और बिहार के जमींदारों को भी फोर्स वन-थ्री-सिक्स द्वारा हथियार बांट दिये गये थे। आरडा के शब्द मेरे कान के परदों पर हथौड़े चलाये जा रहे थे, "हम लोग का छोकरा जास्ती तेजी पकड़ा है। खाली पीली फोकट में नई बैठना माँगता। उन लोग को जैसा ट्रेनिंग दिएला, वैसा जरूर करेगा। उन लोग को कोई डिफीट देना नई सकता। अक्खा असलाह है उन लोग के पास।"

"कुछ दिनों बाद आरडा मेरे निवास-स्थान पर हाँफते हुए आये और मुझसे बोले—"जबलपुर-स्थित फोर्स वन-थ्री-सिक्स के दो मुख्य अधिकारियों टी० बी० हाकिन्स तथा जे० पी० मिल्स, को वहां की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके पास बहुत से हथियार बरामद हुए। आरडा ने यह भी बताया कि फैनर उस समय रावलपिण्डी में है, जहाँ वह साम्प्रदायिक दंगे कराने के लिए वैगन भर-भरकर युद्ध सामग्री बाँट रहा है। उसी समय मेरी तीन वर्ष की बच्ची कल्पना पर आरडा साहब की नजर पड़ी तो वे एक दम चौंककर बोले "अरे बाबा, इस बेबी वास्ते तुमकू बोलता हूं मुंबई छोड़ने कू दो दिन में मुंबई छोड़कर अपना मुलुक भागो। तुमारी खोली के नीचू तीन दिन में गजब होंयगा। और कोई कोना बोलना हां!" आरडा साहब एक सांस में सब कुछ कहकर चले गये।

"कुछ दिनों बाद आरडा मुझे पोर्ट में फिर मिले तो बताया कि स्टुअर्ट ने नवाबजादा लियाकत अली खाँ को, जो उस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री थे, भारत पर चढ़ाई करने के लिए आमंत्रित किया, किन्तु उन्होंने वह आमन्त्रण स्वी-

कार नहीं किया। फैनर उस समय भी लाहौर तथा रावलपिण्डी के चक्कर लगा रहे थे और लन्दन जाने की तैयारी कर रहे थे।

आरडा स्वयं भी मुझे चिन्तित नजर आये। वह भी लन्दन जाने के लिए गम्भीरता से सोच-विचार कर रहे थे। मैंने जब उन्हें आश्वासन दिया कि आजाद भारत में चिन्तित होने की क्या बात, तो उन्होंने उत्तर दिया, "नो बाबा आई मस्ट क्विट एट दि अर्लिएस्ट। नो बड़ी इज सेफ इन फ्री इंडिया। लाट आफ ब्लडशेड इज गोइंग आन टु मेक दि फंक्शनिंग आफ दि इंडियन गवर्नमेंट क्वाइट इम्पासिबिल। दैट बिग गन (स्टुअर्ट) वुड नाट स्पेयर देम।" ना बाबा, मुझे जल्द-से-जल्द भारत छोड़ देना है। आजाद भारत में कोई भी सुरक्षित नहीं। चारों ओर खून खराबी हो रही है। भारत की सरकार को निकम्मा साबित करने के लिए स्टूअर्ट उन्हें छोड़ने वाला नहीं।

० ० ०

"थोड़ा और समय बीत जाने के बाद मुझे ज्ञात हुआ कि बर्मा के गोरिल्ला लीडर मेजर-जनरल आंग सान की, जिन्होंने जापानियों का साथ न देकर फोर्स वन-थ्री-सिक्स के झांसे में आकर अंग्रेजों का साथ देना इस शर्त पर स्वीकार किया था कि लड़ाई के बाद बर्मा पूर्ण स्वतंत्र होगा। आजाद बर्मा के उप-राष्ट्रपति बनने के बाद, मय उनकी

> 'भारत को स्वतंत्रता प्राप्त तो हुई है किन्तु विदरित और भग्न।'
> –श्री अरविंद घोष

मंत्रि-परिषद के पांच मंत्रियों के १९४७ में हत्या कर दी गई। यह घटना भी अपना महत्व रखती ही है। साथ ही, स्टूअर्ट की भारत पर हमला करने की बात उस समय न मानने पर पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाबजादा लियाकत अली खां की एक अफगान ने १६ अक्तूबर, १९५० को गोली मारकर हत्या कर दी, जब वे एक सभा में भाषण करने वाले थे। यह घटना भी कम महत्वपूर्ण नहीं शायद इन दोनों घटनाओं की इससे अधिक जानकारी जनता के सामने कभी आने भी न पाये।

मुझे आज भी विश्वास है, कि 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' तथा 'फोर्स वन-थ्री-थ्री' अब भी 'एम० सिक्सटीन' के रूप में आवश्यकता पड़ने पर पुनः विकसित होने के लिए जीवित है तथा उनका मुख्य कार्यालय लन्दन में है। कराची, लाहौर, ढाका, सिंगापुर, हांगकांग तथा सिकन्दरिया वे स्थान हैं, जहां गुप्तचर आपस में विचार-विमर्श के लिए मिलते हैं, ऐसा मेरा अनुमान है।

छपाई-सफाई सुन्दर है। पुस्तक के कलेवर को देखते हुए मूल्य अधिक प्रतीत नहीं होता।**

ऐ सिन्धु माता!
तेरा कोई पुत्र अवश्य तुझे स्व-तंत्र करेगा

* स्वातंत्र्यवीर सावरकर

सुभाष बाबू की आजाद हिंद फौज के सशस्त्र सैनिकों द्वारा अंग्रेजों पर चढ़ाई करने के समय ही हिन्दुस्तान में भी 'अहिंसक' कहलाने वाले कांग्रेसियों ने नि:शस्त्र प्रतिकार शुरू किया। उनकी घोषणा थी—'QuitIndia but keep your army here!!' परन्तु जनता को इसका कायरतापूर्ण उत्तरार्द्ध 'keep your army here' ठीक से सुनाई न पड़ा। सौभाग्य से जनता को घोषणा का पूर्वार्ध 'quit India' (भारत छोड़ो) ही समझ में आया। कांग्रेस के इस 'भारत छोड़ो आन्दोलन' ने देश में धूम मचा दी। सैकड़ों कांग्रेसी देशभक्त बन्दीगृह में गये। वे भी अपने कार्यों और कष्टों के लिए यथाप्रमाण धन्यवाद के पात्र हैं ही। परन्तु यहां मैं उस मोटी बात का उल्लेख करूँगा, जिसको खुद कांग्रेसी

और अहिंसक लेखकों ने अपने लेखों में कटाक्ष से टाला है। वह यह है—सैकड़ों कांग्रेसियों को यह बात अनुभव से समझ में आ गयी थी कि जेलों में जाकर आत्म-क्लेश भोगने मात्र से ही अंग्रेजी अत्याचारों का प्रतिकार नहीं किया जा सकता। अन्त में अहिंसक कांग्रेस ही कुछ काल तक सशस्त्र क्रान्तिकारियों का मठ बन गयी।

इस प्रकार एक ओर हिन्दुस्तान में इन सशस्त्र क्रांतिकारियों के विप्लव और बाहर से हिन्दुस्तान को मुक्त करने के लिए चढ़ आयी क्रांतिकारियों की बड़ी-बड़ी सेनाओं की कैंची में चकराती ब्रिटिश सत्ता फँसी थी। उसी समय अमेरिका द्वारा प्रथम बार एटम बम गिराने के कारण जापान ने आत्म-समर्पण कर दिया। उधर यूरोप में हिटलर मुसोलिनी की भी स्पष्ट पराजय हुई। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के गुट की इस महायुद्ध में भी विजय हुई।

परन्तु यह विजय ब्रिटेन के लिए प्राणघातक ही थी। यद्यपि ब्रिटेन देश बच गया था तथापि दो महायुद्धों की मार से उसकी साम्राज्य-शक्ति और उन्मत्तता चकनाचूर हो गयी। हिन्दुस्तान के दृष्टिकोण से कहें, तो भी उस महायुद्ध के अन्त में, ब्रिटेन की स्थिति ऐसी हो गयी थी—

(१) हिन्दुस्तान की जल, स्थल और वायुसेना के सभी भारतीय सैनिक ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध उठ खड़े हो गए थे या विद्रोह करने की मन:स्थिति में थे।

(२) १८५७ के विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटेन ने सहस्रों की संख्या में अंग्रेज-सेना भारत भेजी थी—तब वह विद्रोह शान्त हो गया था, परन्तु द्वितीय महायुद्ध में, जर्मनी-जापान के धूल में मिल जाने पर भी, इंग्लैण्ड को पानी में देखनेवाले शक्तिशाली बोल्शेविक रूस का उदय हो चुका था। मित्र कहलाने वाले अमेरिका के हाथ में एटम बम देखकर उस मित्र से भी इंग्लैण्ड को भय सताने लगा था। इस दुःस्थिति में स्वदेश-सुरक्षा हेतु सम्पूर्ण अंग्रेज सेना को अपने घर में ही लाकर रखना ब्रिटेन के लिए अनिवार्य हो गया था। ब्रिटेन के लिए यह संभव नहीं रहा कि वह हिन्दुस्तान के समान विस्तीर्ण (अब कट्टर विद्रोही बने) देश पर सत्ता बनाये रखने के लिए अपनी पुरानी या नयी सजातीय सेना यहां भेज सके।

(३) इस दोहरे पाट में फंसने के कारण पहले की भांति भारतीय सेना के बल पर, हिन्दुस्तान पर राज्य करना अंग्रेजों के लिए असंभव हो गया।

इस दशा में स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हिन्दुस्तान की शरण में जाने के अतिरिक्त ब्रिटेन के लिए कोई अन्य विकल्प ही शेष न था।

निरुपाय होकर ब्रिटेन ने हिन्दुस्तान को कुछ शर्तों पर स्वतंत्रता देने की और यहां से बोरिया-बिस्तर बांधने की तैयारी

की। हिन्दुस्तान से संधि करने के लिए ब्रिटेन तैयार हो गया।*

परन्तु दुर्भाग्य से इस पेचीदे अवसर पर आपने हिन्दुस्तान के कच्चे प्रतिनिधियों को भेजा। जिस राजनीतिक दल को मेरे सदृश सशस्त्र क्रांतिकारी नेता और हिन्दू संगठक अपना कण्ठ सुखाकर यह चेतावनी देते हुए कि 'Quit india' का परिणाम 'Split india' (भारत तोड़ो) होगा, अपना प्रतिनिधि न चुनने के लिए कह रहे थे, उसी को आपने चुना। परिणाम यह हुआ कि उनकी राजनीतिक दुर्बलता का पूरा-पूरा लाभ उठाकर ब्रिटेन ने देश-विभाजन की शर्त पर सत्तान्तरण की संधि की।

परन्तु अब जो कुछ होना था, वह हो गया। वह अपूर्ण है, कल अपने शौर्य से उसे पूर्ण कर लेंगे। यह साध्य सफलता इतनी असीमित है कि पिछले एक सहस्र वर्षों में भी इसकी टक्कर का उदाहरण न मिलेगा। ब्रिटेन-सरीखे शत्रु के हाथों से हमने कम-से-कम ३/४ हिन्दुस्तान तो स्वतंत्र कर ही लिया। जैसे यह महाराज्य हम सबका है, वैसे ही इसे जीतने के लिए १८५७ से १९४७ तक हुए स्वातंत्र्य-संग्राम और विजय का श्रेय भी हमें समान रूप से है। मुझसे पक्षपात न होने पाये, इसलिए मैं इस बात को पुनः दुहरा रहा हूं। इस स्वातंत्र्य-समर में बिल्कुल अग्रिम मोर्चे पर लड़नेवाले सशस्त्र क्रान्तिकारी गुट के शौर्य और कार्यक्रम का इतिहास सर्वसामान्य जनता को ज्ञात नहीं।

अंग्रेजों को पराजित कर अपने द्वारा स्थापित स्वतंत्र हिन्दुस्तान का 'महाराज्य' नाम से उल्लेख मैं केवल देशाभिमानवश ही नहीं कर पा रहा हूं। हमारे इस स्वतंत्र महाराज्य की चारों सीमाओं में इतना भू-क्षेत्र है कि उसमें इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, स्विटजरलैण्ड आदि आधे से अधिक यूरोपीय देश भी समा जायेंगे। सम्प्रति वह

---

* इस बात का तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली ने 'इण्डिपेण्डेन्स आफ इण्डिया एक्ट' पर संसद् में होनेवाली बहस के समय दुःखी चर्चिल के एक प्रश्न के उत्तर में स्पष्ट किया था. "Britain is transfering power due to the fact that (1) the Indian Mercenary Army is no longer loyal to Britain, and (2) Brittain can not afford to have a large British army to hola aown India.

इन वाक्यों से स्पष्ट होता है कि सैनिक दुर्बलता के कारण ही ब्रिटेन को भारत छोड़ना पड़ा। अहिंसा के कारण हृदय-परिवर्तन की गंध भी नहीं आती। यह दुर्बलता क्रांतिकारियों द्वारा खेली गयी १९०६ से ४७ तक की राजनीति का परिणाम थी।

अधिकतर एक जीव, एकराट् और एकछत्र हुआ है। गोदावरी से कृष्णा तक के मध्य में सीमित भूभाग को भी जब शिवाजी महाराज ने मुगलों के हाथों से मुक्त किया, तो समर्थ रामदास सरीखे निस्संग साधु भी आनन्दावेग में डूब उठे। फिर यह तो सेतु रामेश्वर से हरिद्वार तक और पूर्वी सागर से पश्चिमी सागर तक विस्तीर्ण महादेश, हमारी पितृ और पुण्यभूमि एकच्छत्र हो गयी है।

हमारे प्राचीन केल, चोल, पाण्ड्य राज्यों की राजधानियां, चन्द्रगुप्त का पाटलिपुत्र, विक्रम की उज्जयिनी, शालिवाहन का प्रतिष्ठान, यादवों की देवगिरि, हरिहर और बुक्क के विजयनगर आदि राज्यकेन्द्रों को केन्द्रित कर, एकराट् बनाकर हमने आज अपने पाण्डवों की प्राचीन राजधानी इन्द्रप्रस्थ में ही हिन्दूप्रस्थ की पुनः स्थापना की है। और इस महाराज्य पर सुदर्शन चक्रांकित ध्वज फहरा रहा है।

धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में हमें रोज जिनका नाम स्मरण करना पड़ता है, हमारे वे सभी पुण्यक्षेत्र अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी, द्वारका से जगन्नाथपुरी तक, मदुरा की मीनाक्षी से कामरूप की कामाक्षी तक हमारे पुण्यक्षेत्र आज स्वतंत्र, मुक्त, शुद्ध हो चुके हैं। हमें जिस मंत्र को रोज स्नान के समय कहना पड़ता है, वह यह है—

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु॥'

इस मंत्र में उल्लिखित गंगा, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, कावेरी आदि सरितायें और हमारे पुण्यतीर्थ भारतीय महागणराज्य में सम्प्रति विमुक्त और विशुद्ध होकर समा गयी हैं।

इन पुण्य सरिताओं में सिन्धु क्यों नहीं दिखती? कहाँ है सिन्धु? हाय! हाय! इन पुण्य सरिताओं में पुण्यतम सरिता सिंधु अभी तक इस महान् हिंदूराष्ट्र से बाहर है। हमसे अभी दूर है सिन्धु!

क्या कहते हैं, अब सिंधु को भूल जायें? उसके नाम को मंत्र से निकाल कर भविष्य में अधूरा मंत्र ही कहते जायें? नहीं तो, ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे हमसे नाराज होंगे, हमसे ईर्ष्या करने लगेंगे? इसलिए सिन्धु से सम्बन्ध तोड़ दें?

नहीं! नहीं!! हम सिंधु को भूल नहीं सकते।

जब तक एक भी हिन्दू जिन्दा है, तब तक सिंधु को भूलना संभव नहीं।

जिसके तट पर हमारे प्राचीन वेदर्षियों ने वैदिक ऋचाओं का प्रथम सामगायन किया; जिसकी पुण्य सलिला को अपने सन्ध्या वन्दन के अर्घ्य दिए और जिसे अत्यादर से वैदिक देवताओं की श्रेणी में स्थान देकर उसके लिए सुन्दर-से सुन्दर सूक्तों की रचना की, उसे, तुझे 'हे अम्बितमे, नदीतमे, देवितमे' सिन्धु! हम लोग कभी भी न भूलेंगे। तेरे प्राङ्गणों में जब हमारे प्राचीनतम राजर्षि और महर्षि यज्ञों के प्रदीप्त हुताशन में

हवि-समर्पण करते थे, तब दूर-दूर तक गगन में प्रसरित होती हुई उसकी सुरभि से लालायित होकर इन्द्र, वरुण, मरुतादि देव अपना-अपना हविष्य स्वीकार करने के लिए तेरे तट पर आते और सोमरस के अनुरूप ही तेरे सलिल को पीकर प्रसन्न होते! उसे, तुझे हे सुरसरिते सिन्धु! हम लोग कभी भी न भूलेंगे। कभी भी न बुझनेवाली तेरी प्यास लगी है—अब सारे देश की यह तृष्णा बन जाये—यही प्रबल इच्छा है। पहले एक बार जब तू हम लोगों से ऐसे ही बिलग की गई थी, तब भी 'उस मुगल बादशाह की मैं दाढ़ी ही नोच डालता हूं' की गर्जना करते हुए बाजीराव दिल्ली पर आ धमका था और इसीलिए उन्होंने शतद्रु पार की; वितस्ता पार की और अटक पर उड़ाया अपना विजयध्वज। अतः हे सुरसरिते सिन्धु! तुझे अन्य कोई भी भूल जाये, तो भी हमारा कोई अकेला हिन्दू उठकर फिर से स्वतंत्र किये बिना नहीं रहेगा।

हिन्दू स्वराज्य, स्वधर्म की सद्भावना धर्मगुरु तेजबहादुर गुरुगोविन्दसिंह जी ने बड़े वेग से उत्पन्न की। उनके महान् बलिदान का सुफल महाराज रणजीतसिंह के नेतृत्व में सिख हिन्दूराज्य की स्थापना था। उनके पराक्रमी सेनापति हरिसिंह नलवा का सीमा पार करने का अभियान हमारे इतिहास का एक गौरवपूर्ण एवं स्वर्णिम पृष्ठ है। हे सिंधु माता! विश्वास रखो, यदि यह संस्कृति-सरिता कभी भी समाप्त नहीं हुई, तो उस पावन प्रतीक तुम्हारी जल-सरिता का अमृत-पान तुम्हारा कोई पुत्र, भावी नलवा, बाजी माधव बनकर अवश्य करेगा। **

पुराने क्रान्तिकारी की चेतावनी

बहुतांश राजनीतिक पार्टियां अपनी स्वार्थ-पूर्ति में लगी हैं; उन्हें देश की चिन्ता नहीं है। अब भी देश की रक्षा के लिए नवीन प्रशिक्षण पद्धति के अनुसार नवयुवकों को प्रशिक्षित किया जाये—तो उचित होगा। समय बड़ा नाजुक आने वाला है। देश के कर्णधार मस्ती में दिन काट रहे हैं। जब सिर पर बीतेगी तब कहीं चेतना आयेगी।

इस देशका हर दृष्टिकोण से नैतिक पतन हो रहा है अंग्रेज चले तो गये लेकिन इस देश की जनता को पतन के गर्त में डालते गये। हमारी भावनाओं में देश के प्रति कोई जाग्रति नहीं; त्याग बलिदान की भावना नहीं। दूसरी ओर संसार में इजराइल का एक उदाहरण हमारे सामने है जो देश की हर दृष्टिकोण से रक्षा करता हुआ प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है जबकि हमारे मनोबल का दिवाला पिटता दिखाई देता है।

—भवानीसिंह रावत
(नाथोपुर, दुगड्डा गढ़वाल)
२८।७।७१

को झुकाये। उर्दू के सवाल पर यह तथ्य बिल्कुल साफ हो जाता है। उर्दू दरबारों, सामन्तों, भांड़ों और रण्डियों के द्वारा समादृत जबान रही है। वह जनभाषा कभी नहीं रही। उसने जनभाषा के मुहावरों तथा कवि-प्रसिद्धियों का सदैव निरादर किया। आज इसी के कुप्रभाव के कारण उत्तर

—कुबेरनाथ राय

अल्पमत को यह अधिकार नहीं

व्यक्ति स्वातंत्र्य का एक विकसित रूप है 'अल्पमत स्वातंत्र्य।' जिस तरह व्यक्ति को कोई अधिकार नहीं कि वह व्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम समूह विरोधी कार्य करे या समूह की प्रगति में रोड़ा अटकाये 'उसी प्रकार' 'अल्पमत स्वातंत्र्य' की भी एक सीमा है। अल्पमत को कोई नैतिक अधिकार नहीं कि वह बहुमत की प्रगति में रोड़ा अटकाये, बहुमत के मौलिक अधिकारों का हनन करे एवं 'वीटो' का प्रयोग करे। अपने हिंदुस्तान की सड़ी दुर्गन्धपूर्ण राजनीति में अल्पमत को अधिकार दिया गया है कि वह बहुमत के मौलिक अधिकारों और प्रगति के प्रति अपने 'वीटो' का प्रयोग करे और तरह-तरह के दबाव द्वारा बहुमत का रसबोध जड़ीभूत, मृत और सामन्ती प्रदेश का रसबोध जड़ीभूत, मृत हो गया है। इस सामन्ती रसबोध से मुक्ति पाने के लिए इस भाषा का या तो कायाकल्प कर दिया जाय अथवा इस भाषा को ही बहिष्कृत कर दिया जाय— इसके सिवा और कोई उपाय नहीं। पर विचित्र सी बात यह है कि जो कम्यूनिस्ट और प्रगतिशील होने का दम भरते हैं जो सामन्ती मानस और सामन्ती रसबोध के खिलाफ खड्ग-हस्त हैं वे ही व्यक्तिगत, व्यावसायिक और राजनीतिक स्वार्थों के कारण इसको पालने और भेदनीति की शैली में पालने के हिमायती हैं। कांग्रेस जैसी सिद्धान्तहीन पदलोलुप पार्टी यदि ऐसा करती है तो यह समझ में आता है कि क्यों करती है पर कामरेड 'क' या 'ख' सामन्ती रसबोध और भेदमूलक संस्कारवाली भाषा की हिमायत करते हैं

तो मेरे जैसे आदमी की समझ के बाहर यह रहस्य हो जाता है। ये सभी देश और सच्चाई के दुश्मन हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि 'व्यक्ति' और 'अल्पमत' को अबाध स्वातंत्र्य देना बुनियादी नैतिकता के उतना ही खिलाफ है जितना उनके स्वातंत्र्य की चरम अस्वीकृति। व्यक्ति को अधिकार है कि वह गल्ले की दुकान करे, पर गल्ला दबाकर रखने अथवा आटे में बुरादा मिलाने को उसे 'स्वातन्त्र्य' नहीं दिया जा सकता। उत्तर प्रदेश के काश्मीरी या मुसलमान यदि उर्दू पढ़ना चाहें तो सरकार इसके लिए व्यवस्था करे—सरकार इस साहित्य के उन्नयन के लिए अनुदान दे पर अल्पमत को बिलकुल अधिकार नहीं कि वह ९९% बहुमत पर अपनी भाषा थोपे, उसे द्वितीय राजभाषा बनाकर। प्रचार किया जाता है कि उर्दू के जानने वाले यू० पी० में १३ प्रतिशत हैं। पर तथ्य तो यह है कि ये १% से भी कम हैं। गाँवों की "निरक्षर" मुसलमान जनता जनगणना के अवसर पर लीगी प्रचार के कारण अपनी मातृभाषा तो उर्दू लिखवाती है और बोलती है भोजपुरी, अवधी, कन्नौजी। यह तो देश को धोखा देना हुआ। भोजपुरी, अवधी, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी को हम हिन्दी का अंग मानते हैं, इन्हें पूर्वी हिन्दी कहा ही जाता है। किसी भी उर्दू लेखक ने भोजपुरी को उर्दू कहकर स्वीकार नहीं किया। अतः भोजपुरी बोलने वाला मुसलमान हिन्दी बोलता है; उर्दू नहीं। पर चूंकि उर्दू वालों में "आक्रामक आत्मविश्वास" है अतः वे जीतते हैं और हम हारते हैं; क्योंकि हिन्दी से अधिक फिक्र हमें भोजपुरी आन्दोलन की है। दुर्भाग्य जब आने वाला होता है, तो इसी तरह दिमाग खराब हो जाता है। जन गणना के अवसर पर बिहार में हिन्दू बिहारियों ने अपनी भाषा लिखवाया——भोजपुरी, मैथिली या मगही। पर मुसलमान ने चाहे वह पटने का हो या दरभंगा का, अपनी निरक्षरता के बावजूद 'उर्दू' को अपनी भाषा घोषित किया।

अमेरिका, चीन और पाकिस्तान की नजरों में भारत।

मरघट का आँगन हरा भरा

मन शंकाओं से घिरा-घिरा,
एकाकी-सा लग रहा निरा,
सारा अजीब है, अचरज है……

नस-नस में लगता जहर घुला,
आंसू से भी मन नहीं धुला,
स्वाभाविक है सब कहा-सुना,
परि[illegible]त चर्या, सब गिना-चुना,
दर्पण धूमिल है, बिम्ब नहीं,
दिग्भ्रमित सभी, अवलम्ब नहीं,
सारा अजीब है, अचरज है……

केवल अभाव रह गया सखा,
आ[illegible] कुहरों से दबा-ढका,
[illegible] अपनी देह चले,
[illegible] लगती पांव तले,
[illegible] पीया, लिया, दिया,
[illegible] है बस इसलिए किया,
सरा अजीब है, अचरज है……

मरघट का आंगन हरा-भरा,
श्वांसों का शावक डरा-डरा,
वैसे हर होठ दहकता है,
तन शीतल हृदय दहकता है,
हर प्रश्न अनुत्तर घूम रहा,
हर सपना सब [illegible] घूम रहा,
सारा अजीब है, अचरज है……

मधुर शास्त्री

युद्ध सिर पर है, भारत पर युद्ध लादा जा रहा है। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी संकटके इस समय में राष्ट्रनेता की तरह काम करें। पाकिस्तान भारत पर युद्ध थोप देगा। पूर्वी बंगाल में तो उसकी हालत खुद खराब है वहां से वह युद्ध नहीं छेड़ेगा, मगर पश्चिमी सीमा पर गुजरात व राजस्थान पर हमला करेगा। जनता देशकी रक्षाके लिए तैयार रहे। दो माह के अन्दर ही पाकिस्तान पश्चिमी सीमा पर हमला कर देगा।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल यहिया खां ने युद्ध की धमकी दी है। ऐसे में श्रीमती गांधी को चाहिए कि सिर्फ किसी एक पार्टी की नेता बन कर न रहें सारे देश की राष्ट्रीय नेता बनें। अब प्रधानमन्त्री को राज्य सरकारों को गिराने का खेल बन्द करना चाहिये और देशभक्त पार्टियों पर भी हमले बन्द कर देना चाहिए।

पाकिस्तान अनेक साजिशें कर सकता है। तोड़-फोड़ की हरकतें कर सकता है, पाकिस्तान अगर भारतीय उच्चायोग या उप उच्चायोग के कूटनीतिज्ञों एवं कर्मचारियों की वापसी से इनकार करे, तो हमें पाकिस्तान से तत्काल ही कूटनीतिक सम्बन्ध खत्म कर देना चाहिये। १९६५ के युद्ध की सीख से हमें लाभ लेना होगा।

पश्चिमी पाकिस्तानी पासपोर्ट लेकर सीमावर्ती राज्यों में घूम रहे हैं। इनमें से जितने भी संदिग्ध हों, उन सबको गिरफ्तार कर लेना चाहिए ताकि इनकी जासूसी हरकतें बन्द हों। सीमा पर बसी जनता को युद्ध की सम्भावना से अवगत कराकर सावधान कर देना चाहिये, ताकि वह अचानक ही युद्ध की विभीषिका में न फंसे।

जमाते-इस्लामी पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए और इसके तत्वावधान में निकलने वाले सभी अखबारों के डिक्लेरेशन रद्द कर देने चाहिए।

पूर्वी बंगाल पाकिस्तान के हाथ से हमेशा के लिए निकल जायेगा।

जहाँ तक अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को शस्त्रास्त्र देने की बात है—स्वतन्त्र देश तो किसी को भी कुछ भी बेचेंगे। किसी अन्य को दोष देने के बजाय भारत को अणुशक्ति और आणविक शस्त्रास्त्र बनाकर खुद ही एक महाशक्ति बनना चाहिये।

प्रधानमन्त्री घर और बाहर कहीं भी सुदृढ़ नीति का पालन नहीं कर रही हैं। पाकिस्तान को भारत पर अचानक हमला करने का अवसर दे रही हैं और वह उपयुक्त समय व स्थान पर हमले की ताक में है।

मुझे लगता है कि पाकिस्तान के अन्त की शुरुआत हो चुकी है। पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह भारत पर आक्रमण करेंगे। यह उनका अंतिम दांव होगा। देश का नेतृत्व यदि कुशल हाथों में रहा तो युद्ध में भारत की विजय होगी और पाकिस्तान के सैनिक तानाशाहों का हश्र हिटलर जैसा होगा। संघर्ष अचानक होगा, बहुत आक्रमण होगा, परन्तु सन् ४७ में की गई भूल का सुधार निकलेगा और ऋषि अरविन्द की भारत की अखंडता की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होगी।

भारत से युद्ध इसी हानि की पूर्ति के लिए लड़ा जायेगा। युद्ध के दौरान पाकिस्तान भारत में स्थित पंचमांगियों पर बड़ा भरोसा रखेगा, यह सुनिश्चित है कि वे पंचमांगी भी भारी एवं व्यापक तोड़-फोड़ मचायेंगे।

बंगला देश को मान्यता देने में जितनी देर करेंगे, उतना ही प्रतिवादियों को अवसर मिलेगा कि पूर्वी बंगाल को चीन की गोद में बिठा दें। सरकार का इस सामान्य तथ्य की तरफ ध्यान न देना देशके लिए बहुत महंगा पड़ेगा।

✲

अन्तिम इच्छा

'यदि कोई मुझे यह वचन दे सके मेरी अस्थियाँ सिन्धु नदी के पवित्र प्रवाह में विसर्जित होंगी अर्थात् वह सिन्ध प्रदेश को स्वतंत्र करा सकेगा, तो मैं अभी और जीवित रह सकता हूं।'

—वीर सावरकर

✲ अटलबिहारी वाजपेयी

भारत के पास इसके सिवाए कोई चारा नहीं कि वह बंगला देश के स्वतन्त्रता-आंदोलन के लिए हर सम्भव सहायता दे। यदि इससे भारत-पाकिस्तान युद्ध होने की नौबत आती है तो वह इसके लिए तैयार रहे। पाकिस्तान लाखों शरणार्थियों को भारत में धकेल कर और भारत की अर्थ व्यवस्था तथा राजनीतिक स्थिरता को खतरे में डालकर पहले ही युद्ध घोषित कर चुका है।

विभाजन के कलंक को धोने का समय आ गया है और हमें कोई ऐसा कार्य न करना चाहिए जिससे पाकिस्तान के बिखरते हुए अस्तित्व की क्रिया में बाधा पड़े। यदि भारत ने समय पर कोई पग न उठाया तो न केवल बंगला देश नष्ट हो जाएगा अपितु इसका भारत की सुरक्षा और प्रगति पर भी कुप्रभाव पड़ेगा।

यदि समय पर न चेते

सरकार वर्तमान ढुल-मुल नीति को छोड़कर एक वज्र संकल्प करे और ऐसा पग उठाए जो अंगद का पग सिद्ध हो। अब भी समय है, सरकार चेते और पाकिस्तान की चुनौती को एक महान् अवसर का रूप दे। इतिहास की दिशा को बदलने का वक्त बार-बार नहीं आता। समय पर कदम उठाने में विफल रहने का परिणाम न केवल बंगला देश के विनाश में होगा, अपितु उससे भारत की सुरक्षा, शांति तथा प्रगति खतरे में पड़ जाएगी।

भारतीय जनता के धैर्य का बांध टूट रहा है। देश को ऊंची-ऊंची घोषणायें नहीं, ठोस तथा प्रभावी कार्रवाई चाहिए। पूर्व बंगाल को स्वाधीन देखने के लिए भारतीय जनता किसी भी बलिदान तथा कष्ट सहने के लिए तैयार है।

यदि युद्ध होता है—

भारत के सम्मुख इसके सिवा कोई विकल्प नहीं है कि वह पूर्व बंगाल की

अब इस कलंक को धो डालें

* पाकिस्तान ८० लाख शरणार्थियों को भारत में ढकेल कर और हमारी अर्थ-व्यवस्था को खतरे में डालकर पहले ही युद्ध घोषित कर चुका है।
* समय पर कदम न उठाने से भारत की सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी।
* हम पूर्व बंगाल को मरने नहीं दे सकते।
* विदेश-नीति का पुनर्निर्धारण आवश्यक
* अस्सी लाख हिंदू कहां गए ?
* मुजीब पर मुकदमा
* प० बंगाल, बिहार, असम सीमा-क्षेत्रों को मुस्लिम-बहुल बनाने की साजिश।
* पाकिस्तान के अस्तित्व के लिए हमारा आग्रह क्यों ?

स्वाधीनता के संग्राम को सफलता की सीढ़ी तक पहुंचाने के लिए हर संभव सहायता दे। इसका परिणाम यदि पाकिस्तान के साथ युद्ध में होता है तो भारत को उसका सामना करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। भारत को पाकिस्तान के आक्रमण का मुंहतोड़ उत्तर देना होगा। यदि विश्व के बड़े देश साथ देते हैं तो उनके सहयोग से, यदि वे मूकदर्शक रहना पसन्द करते हों तो उनके बिना, और यदि वे विरोध करते हैं तो उनकी अवज्ञा करके भारत को अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। हम पूर्व बंगाल को मरने नहीं दे सकते। पूर्व बंगाल की बहादुर जनता ने अपने महान् नेता शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र तथा साम्प्रदायिक सद्भाव की जो ज्योति जलाई है हम उसे बुझने नहीं दे सकते।

बंगला देश के प्रश्न पर भारत को अन्य देशों का समर्थन प्राप्त करने में जो गहरी निराशा हाथ लगी है, उससे समूची विदेश नीति का पुनर्निर्धारण करने की आवश्यकता एक बार फिर स्पष्ट हो गयी है।

है। जिन देशों की हमने गाढ़े समय में सहायता की थी, वे भी आज हमसे मुंह मोड़ रहे हैं। बंगला देश के प्रश्न पर अरब देशों का रवैया इसका एक उदाहरण है। हमें अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में रूमानियत को छोड़कर, कठोर यथार्थवाद के आधार पर नीतियों का निर्धारण करना चाहिए।

आश्चर्य की बात है कि पश्चिमी पाकिस्तान के रक्त-पिपासु शासकों को विश्व की अदालत में खड़ा करके जवाबतलब करना तो दूर रहा, कोई देश उनकी स्पष्ट शब्दों में निन्दा करने के लिए भी तैयार नहीं है।

इन्दिरागांधी उवाच

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने कहा है कि विस्थापितों को छः मास के भीतर लौटना होगा। यदि पाकिस्तान के शासक पूर्व बंगाल में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में सत्ता नहीं सौंपते तो भारत सरकार क्या करेगी? विदेशमन्त्री सरदार स्वर्णसिह कहते हैं कि यदि अन्य देशों ने पाकिस्तान पर दबाव नहीं डाला तो भारत अपने बलबूते पर कार्यवाही करने के लिए विवश होगा। यह कार्यवाही क्या होगी? यह कार्यवाही कब की जायेगी?

गहरी साजिश

पाकिस्तान के निर्माण के पूर्व और पश्चात् किया गया नरमेध, जिसमें लाखों लोग मौत के घाट उतार दिए गए और करोड़ों दर-दर की ठोकरें खाने के लिए उजाड़ दिए गए, पश्चिम पाकिस्तान को गैरमुस्लिमविहीन बनाने के बाद पूर्व बंगाल से योजनाबद्ध रीति से हिन्दुओं को निष्कासित करने के निरन्तर प्रयत्न, जिसके फलस्वरूप अब तक पूर्व बंगाल के एक करोड़ ८० लाख हिन्दू या तो भारत धकेल दिए गए या मार दिए गए अथवा बलात् मुसलमान बना लिए गए—असम, पश्चिम बंगाल, बिहार के सीमावर्ती क्षेत्र में पाकिस्तानी मुसलमानों की घुसपैठ जिसका उद्देश्य इन क्षेत्रों को मुस्लिम बहुल बनाकर अन्ततोगत्वा पाकिस्तान का भाग बनाना रहा है। नागा प्रदेश तथा मिजो क्षेत्र में देशद्रोह पर आमादा तत्वों को पाकिस्तान द्वारा शस्त्र तथा सैनिक प्रशिक्षण का दिया जाना ऐसे तथ्य हैं, जिनके प्रकाश में नई दिल्ली सहज ही यह निष्कर्ष निकाल सकती थी कि इस्लामाबाद के शासक पूर्व बंगाल की जन-क्रांति से निपटने के लिए ऐसे उपाय अधिक पसन्द करेंगे जिससे एक ही तीर से दो निशाने मारे जा सकें। एक स्वतन्त्रता तथा समता की मांग करने वालों का सफाया करना, दूसरे लाखों लोगों को भारत धकेलकर भारत की अर्थरचना, राजनीतिक स्थिरता तथा शांति और व्यवस्था को स्थायी खतरा पैदा करना।

जिसका जन्म ही घृणा से हुआ

भारत सरकार को इस प्रश्न का दो

टूक उत्तर देना है कि वह पूर्व बंगाल को स्वाधीन देखना चाहती है अथवा पाकिस्तान के अंग के रूप में उसकी समस्या का समाधान चाहती है। नई दिल्ली द्वारा बारम्बार 'राजनीतिक हल' की रट लगाना इस सन्देह की पुष्टि करता है कि भारत सरकार पूर्व बंगाल को स्वाधीन देखना नहीं चाहती और उसके तथा उन राष्ट्रों के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है जो पाकिस्तान को टूटने से बचाने पर तुले हुए हैं। ब्रिटेन, अमरीका, चीन और रूस की पाकिस्तानी नीति समझ में आ सकती है। वे नहीं चाहते कि पाकिस्तान विघटित हो अथवा उसकी शक्ति घटे, क्योंकि वे भारत को नियन्त्रण में रखने के लिए पाकिस्तान को प्रयुक्त करते रहना चाहते हैं किन्तु प्रश्न यह है कि भारत ऐसे राज्य (पाकिस्तान) की अस्तित्व रक्षा के लिए क्यों आग्रहशील हो जिसका जन्म ही भारत के विरुद्ध घृणा और द्वेष में हुआ है।

यदि जल्द ही हम बंगला देश को मान्यता प्रदान नहीं करते तो यह वहां यहिया-राज को ही मान्यता प्रदान करना न होगा बल्कि पाकिस्तान को मनचाहे मोर्चे से भारत पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान करना भी होगा।

अब धैर्य का बांध टूट चुका है और हम अपने देश पर पाकिस्तान को मनचाहे मोर्चे से आक्रमण करने का अवसर नहीं देना चाहते।

भारत के मुसलमानों को संतुष्ट रखकर अगले चुनाव में उनके मत प्राप्त करने के लाभ के कारण ही इस राष्ट्रीय प्रश्न को उलझाया जा रहा है। वास्तव में हमारे देश की लाठी कमजोर नहीं है वरन् वह जिन हाथों में है, वे कांप रहे हैं।

अन्ताराष्ट्रिय स्थिति ऐसी है कि यदि हम बंगला देश को मान्यता प्रदान कर देते हैं तो चीन या कोई भी देश बीच में न आयेगा क्योंकि जब तक माओ–निक्सन वार्ता नहीं होती, चीन कोई नया बखेड़ा नहीं पैदा करेगा और यदि वह या और कोई देश बीच में आ भी जाता है तब भी हमें हिचकना न चाहिए।

भारत के मुसलमान और बहुत से उर्दू अखबार यहिया के अत्याचारों के प्रति खामोश ही नहीं पाकिस्तान का समर्थन भी कर रहे हैं। मैंने स्वयं प्रधानमंत्री को ऐसे कुछ समाचार पत्र प्रस्तुत किये। खेद का विषय तो यह है कि प्रधानमंत्री और उनकी कांग्रेस उन्हें साम्प्रदायिक बताने का साहस न कर जनसंघ के विरुद्ध ही यह आरोप लगा रही है।

जनसंघ का सत्याग्रह सरकार को दुर्बल बनाने के लिए नहीं, बंगला देश के विषय में उसके हाथ और मजबूत करने की दृष्टि से किया गया है जिसमें शामिल होने के लिए अन्य राष्ट्रीय नेताओं सर्वश्री सादिक अली, जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, गोरे, कर्पूरी

(शेष पृष्ठ १२३ पर)

✱ कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

बटवारे का
एक विस्मृत अध्याय!

देहरादून में एक पुलिस कप्तान थे राबर्ट। उनका एक खानसामा था हिन्दू और दूसरा मुसलमान। दोनों खूब आपस में लड़ते थे। दोनों एक दूसरे के बाल पकड़ लेते और खूब जूझते। राबर्ट अपने बरामदे में खड़े होकर दोनों को देखते रहते, खुश होते रहते और जब वे दोनों भागने लगते, तो कूदकर उनके पास पहुंचते, उन्हें थपथपाते, कहते—"तुम तुम एक, तो हम लन्दन!" मतलब साफ था कि हिन्दू मुसलमान मिल जायें तो अंग्रेज भारत से भाग जायेगा।

इस शताब्दी के आरम्भ में हिन्दू और सिख सामाजिक और धार्मिक रूप से एक ही थे। अंग्रेजों ने कई-कई हजार रुपये 'पुरस्कार' देकर ऐसे लेख लिखाये, जो इन दोनों को अलग-अलग सिद्ध करें। फिर ऐसे नेता पैदा किये, जो इस अलहदगी को बढ़ावा दें।

यों हिन्दू और सिखों के बीच दीवार खींच अंग्रेज कूटनीति ने पृथक निर्वाचन के द्वारा हिन्दू मुसलमानों के बीच दीवार खींची, पर १९२० में भावनात्मक परिस्थितियों ने कुछ ऐसी करवट ली कि सारा भारतीय समाज एक होकर अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ा हो गया। अंग्रेजों ने मस्जिदों के सामने बाजा बजाने के प्रश्न को जटिल समस्या बना कर देश में साम्प्रदायिक दंगों की बाढ़ उठाई और इस एकता की खील-खील कर दी।

अंग्रेजों ने चैन की साँस ली और सोचा कि अब कभी भारत में स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं उठेगा, पर जैसे १८५७ के स्वातंत्र्य विप्लव और १८८५ के जागरण काल के बीच की 'शान्ति' में १८७२ का गुरु रामसिंह का नामधारी विद्रोह अपना अद्भुत धड़ाका करता है, वैसे ही १९२० के बाद की 'शान्ति' में १९२५ का काकोरी काण्ड अपना धड़ाका करता है। इसमें रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों के एक दल ने दिन दहाड़े ट्रेन रोककर सरकारी खजाना लूट लिया था।

अंग्रेज इससे हड़बड़ा गये और उन्होंने हिन्दू समाज की क्रान्तिकारी शक्ति को तोड़ने के लिए एक नया प्रयोग किया। काकोरी केस युक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) में हुआ था, इसलिए युक्तप्रान्त में ही यह प्रयोग किया गया। एक

रिटायर्ड सरकारी अफसर ने गेरुआ कफनी पहन कर स्वामी अछूतानन्द का रूप धारण किया। स्वामी जी बहुत शानदार प्रवक्ता थे और खूब जोशीले भाषण देते थे।

गवर्नर के संकेत पर जिलों के अंग्रेज पुलिस कप्तानों ने ये व्यवस्था की कि जहां स्वामी अछूतानन्द आते पुलिस कप्तान के आदेश पर थानेदार लोग और उनके सहयोगी जमींदार १०–२० गांवों के हरिजनों को एक जल्से में इकट्ठा कर देते। स्वामी जी अपने उपदेश में बहुत कुछ कहते, पर खास बात वे यह कहते कि भारत के आदिवासी हिन्दू—असली वाशिन्दे–हम अछूत लोग हैं और ये सवर्ण हिन्दू विदेशी हैं। विदेशों से चढ़ाई करके ये लोग आये और आदि-वासियों को ताकत से जीतकर इन्होंने अछूत बना दिया। इस पृष्ठभूमि में वे हरिजनों को खूब भड़काते, बहकाते और उनके हृदयों में जहर की बेल बोते।

हरेक जल्से में हजारों हरिजन होते थे और होते क्या थे पुलिस वाले भेड़ों की तरह हकाकर उन्हें जल्सों में इकट्ठा कर देते थे। धीरे-धीरे हरिजनों में यह जहर फैलने लगा। इस आन्दोलन का नाम रखा गया 'आदि हिन्दू आन्दोलन'। मतलब यह था कि हरिजन असली हिन्दू हैं और सवर्ण हिन्दू आततायी हैं, जिन्होंने जबर्दस्ती असली हिन्दुओं को दबा रखा है। अपील साफ थी कि असली हिन्दुओं को नकली हिन्दुओं से अलग होना चाहिए।

इस आन्दोलन की मामूली खबरें आर्यसमाजी साप्ताहिकों में छपीं। यह १९२६-२७ की बात है। मैं तब २०वर्ष का युवक था और सार्वजनिक एवं साहित्यिक जीवन में अपना स्थान खोज रहा था। मैंने इटावा से प्रकाशित मासिक 'ब्राह्मण सर्वस्व' में आदि हिन्दू आन्दोलन की घातकता पर एक गरम लेख लिखा। देश के नेताओं में लाला लाजपतराय का ध्यान इस घातक कूटनीति पर गया। उन्होंने देहरादून के चौधरी बिहारीलाल को इस आन्दोलन पर आक्रमण करने का काम सौंपा। चौधरी बिहारीलाल १९२०में सर्वे विभाग की अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर लोकप्रिय हो चुके थे।

बहुत मधुर, हंसमुख और तेजस्वी पुरुष थे बिहारीलाल। अपने आत्म-विश्वास के सहारे वे मैदान में उतरे और उन्होंने स्वामी अछूतानन्द को ललकारा जहां स्वामी अछूतानन्द का जलसा होता उस क्षेत्र के गांव-गांव में बिहारीलाल जाते और अछूतानन्द की कलई खोलते। बाद में वे और भी आक्रमणात्मक हो उठे कि जहाँ स्वामी अछूतानन्द का जलसा होता, वे भी पहुंच जाते और अछूतानन्द के बाद भाषण देते। कोई उन्हें रोकता तो कहते–"स्वामी जी तो रंगे हुए अछूत हैं, पर मैं तो खुलेआम चमार हूं। मुझे अछूतों से बात करने का हक नहीं, तो और किसे होगा?"

स्वामी अछूतानन्द की हिम्मत टूट गयी और बेचारा अपना सूट पहन रक भाग गया। एक दिन उसकी गेरुआ कफनी एक पेड़ पर टंगी हुई मिली। चौधरी बिहारीलाल १९३७ के मन्त्रि मंडल में पार्लियामेन्ट्री सेक्रेटरी बनाये गये थे। कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गयी पर इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू हरिजन बटवारे के एक जहरीले प्रयत्न की जड़ काटने का श्रेय उन्हें ही है। **

(पृष्ठ २१ का शेष)

ठाकुर और चौधरी चरणसिंह को भी आमंत्रित किया गया। चौधरी चरण सिंह ने मुलाकात भी की और उन्होंने सूचना दी कि मैं जब जम्मू में था तो २५ मिनट तक पाकिस्तान के दो वायुयान कश्मीर क्षेत्र में हमारे हवाई अड्डे तक पर मंडराते रहे किन्तु उन्हें गिराया न जा सका। जबकि पाकिस्तानी हमारे देश से हमारा विमान उड़ा ले गये।

अतएव यदि बंगला देश को अविलम्ब मान्यता न प्रदान की गयी तो पाकिस्तान पूर्वी बंगाल पर अपना पूरा आधिपत्य जमा कर भारत पर आक्रमण करेगा और वह स्थिति हमारे कम उसके अनुकूल अधिक होगी।

हम सत्याग्रह द्वारा भारत सरकार के हाथ मजबूत करना चाहते थे जिससे उसे अमेरिका और रूस से यह कहने का अवसर मिले कि जनता आन्दोलित हो चुकी है। अब मान्यता नहीं रुक सकती।

मुझे भय है कि शीघ्र ही पूर्व बंगाल के विस्थापितों का तीसरा बड़ा रेला भारत आयेगा, जिनकी संख्या १ करोड़ से ऊपर जा सकती है। कुल मिलाकर भारत को २-२॥ करोड़ लोगों का भार उठानेके लिये तैयार रहना चाहिए, आज बगला देश में अकाल की स्थिति है। शासन ठप है। फसल चौपट हो चुकी है। अन्न वितरण का कोई प्रबन्ध नहीं है। पाकिस्तानी सेना लोगों को भूख से मरने से बचाना भी नहीं चाहती, त्रिपुरा में उसकी जनसंख्या से अधिक शरणार्थी आ चुके हैं जहां की स्थिति विस्फोटक हो गयी है।

सच्चाई यह है कि यदि २५ मार्च को ही नई दिल्ली अपना विचार बना लेती और मुक्ति सेना को उन्मुक्त सहायता देने का निर्णय कर लेती तो न तो इतना रक्तपात होता और न भारत को शरणार्थी समस्या का सामना करना पड़ता।

जनरल यहिया खां ने "राजनीतिक हल" की सभी आशाओं पर पानी फेर दिया है। उन्होंने अवामी लीग के साथ समझौते के सभी द्वार बन्द कर दिये हैं। उलटे फौजी शासन शेख मुजीबुर्रहमान पर देशद्रोह के लिए मुकदमा चलाने की तैयारी कर रहा है। अवामी लीग के बहुमत को अल्पमत में बदला जा रहा है। अवामी लीग के गैर-कानूनी होने के कारण उसके प्रतिनिधि उप-चुनाव भी नहीं लड़ सकेंगे।

यह खेद का विषय है कि विश्व की सरकारें यहिया खां को सीधी राह पर लाने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं। उल्टे अमेरिका तथा चीन इस्लामाबाद को हथियार देकर न केवल बांगला देश मे रक्तपात को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि पाकिस्तान को भारत पर खुला हमला करने के लिए उकसा रहे हैं।

मैं मुक्तिवाहिनी का अभिनन्दन करता हूं जो भारी कठिनाइयों के बावजूद पाक फौज के छक्के छुड़ा रही है। किन्तु एक बात हमें स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि गुरिल्ला युद्ध पाकिस्तान को परेशान कर सकता है, किन्तु बांगलादेश को मुक्त नहीं कर सकता, उसके लिये मुक्तिवाहिनी को विमानों, टैंकों तथा अन्य भारी शस्त्रों की आवश्यकता होगी, ये शस्त्र चोरी-छिपे नहीं दिये जा सकते। अत: आवश्यक है कि भारत सरकार

बांगला देश को अविलम्ब मान्यता दे और उसे भरपूर सैनिक साज-सामान मुहैया करे।

४ मार्च तक सरकार के लिए पर्याप्त होना चाहिये। पहले ही काफी देर हो चुकी है और अधिक देर करना घातक होगा। ज्यों-ज्यों वक्त बीतता जा रहा है, मुक्ति संग्राम का नेतृत्व उग्रपंथियों और पेकिंग- परस्तों के हाथ में जा रहा है। बांगलादेश को दूसरा वियतनाम बनने की इजाजत देने का अर्थ होगा, समूचे पूर्वी भारत से हाथ धो बैठना।

१ अगस्त से लोकसभा के समक्ष ५०० व्यक्ति नित्य सत्याग्रह करते रहे और १२ अगस्त को लगभग २ लाख लोगों ने सामूहिक सत्याग्रह किया। नई कांग्रेस द्वारा ९ अगस्त को दिल्ली में प्रदर्शन का आयोजन जनसंघ के प्रस्तावित सत्याग्रह के औचित्य को ही सिद्ध करना है।

मेरी मांग है कि भारत सरकार बांगलादेश को तुरन्त मान्यता दे और सब प्रकार की कूटनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक सहायता प्रदान करे। बांगलादेश में हो रहे नरसंहार के प्रश्न को मानवीय अधिकार आयोग में उठाया जाय।

अपने ८०लाख नागरिकों को भारत में प्रवेश कराकर पाकिस्तान ने इस क्षेत्र की शान्ति को जो खतरा पैदा किया है उसकी ओर सुरक्षा परिषद का ध्यान दिलाया जाय और अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को शस्त्र दिये जाने के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए भारत को अमेरिका से मिलने वाली आर्थिक सहायता तथा विस्थापितों के लिए धन, दवा आदि लेने से इनकार कर देना चाहिये।

हूं कि वह देश में साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने के पाकिस्तानी जासूसों के प्रयत्नों के प्रति सावधान रहे। कैसी भी उत्तेजना हो, साम्प्रदायिक शान्ति तथा सद्भावना कायम रहनी चाहिये।

बांगला देश के संबंध में भारत सरकार की नीति पूर्णतः असफल रही है। वह अपने राजनैतिक स्वार्थ एव बड़े राष्ट्रों के दबाव के कारण मान्यता देने से कतरा रही है। इस ज्वलन्त राष्ट्रीय प्रश्न को प्रधानमन्त्री भी राजनीतिक स्वार्थ में देख रही हैं।

यदि मान्यता न मिली तो बंगला देश चीन की गोद में चला जायेगा।

बांगला देश की आजादी को विश्व की कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। प्रश्न बस इतना ही है कि वह भारत का होकर रहेगा या चीन का होकर। विश्व के तमाम देश संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा सुरक्षा परिषद् बांगला देश की सहायता करें या न करें, भारत की ५० करोड़ जनता को उसकी सहायता करनी ही होगी।

आज नहीं तो कल पाकिस्तान से युद्ध होना अनिवार्य है। बांगला देश को सहायता न प्रदान करने पर भी पाकिस्तान गुजरात, कश्मीर अथवा राजस्थान की सीमाओं की ओर से आक्रमण करके कश्मीर के प्रश्न को पुनः उठायेगा। हमें पाकिस्तान को पहल करने का अवसर प्रदान नहीं करना चाहिए।

जब तक बांगला देश को आजाद नहीं कराया जाता है, शरणार्थियों की समस्या हल नहीं की जा सकती। परन्तु भारत सरकार दुनिया की ओर देख रही है और दुनिया भारत सरकार की ओर देख रही है तथा बांगला देश की निरीह जनता दुनिया और भारत दोनों की ओर

भारत विभाजन के वे रक्त रंजित दिन

—प्रो० धर्मवीर

जब १५ अगस्त को पाकिस्तान बनने की घोषणा हुई तब मुसलमान अपने आपको पश्चिमी पंजाब के शासक समझने लगे। चिनयोट (जिला झंग) के मुसलमानों ने १९ अगस्त को यह निश्चय किया–हिन्दुओं को नगर से निकाल देना चाहिए। अब उन्हें पाकिस्तान में रहने का कोई हक नहीं।"

हिन्दुओं का विचार था कि मुसलमान आक्रमण नहीं करेंगे, परन्तु यह निराधार निकला। उन्होंने सैकड़ों वर्ष के सम्बन्ध और विश्वास को ठुकरा दिया। उसी दिन गुप्त रूप से इस निश्चय पर आचरण आरम्भ कर दिया। हिन्दू पहले मुसलमानों के मुहल्लों में काम-काज करने जाया करते थे। इस

दिन भी वे गये। पर उनमें से कितने ही उनकी मतान्धता एवम् साम्प्रदायिकता के शिकार हो गये। जो भी हिन्दू मुसलमानों के हाथ लगे वे सब मार दिये गये। किसी को छुरे से मारा गया, किसी को घायल करके पहाड़ी से नीचे फेंका गया, किसी को मार कर कुएं में डाल दिया गया। हिन्दुओं ने दुकानें बन्द कर दीं। मुस्लिम नेताओं और नगरपालिका के

मुस्लिम सदस्यों ने हिन्दुओं को विश्वास दिलाने का यत्न किया कि "खतरे की कोई बात नहीं; यह कुछ बदमाशों की शरारत थी जो दबा दी गई है।"

परन्तु चिनियोट के हिन्दुओं पर भी अपने पूर्वजों के बचनों का प्रभाव था। इस कारण वे सावधान हो गये। पश्चिमी पंजाब के अन्य नगरों तथा कस्बों के समान चिनयोट में भी ईश्वरीय कार्य बहुत अच्छा था। गिनती के कुछ आदमियों को छोड़कर हर एक रा० स्व० संघ के कार्य से प्रभावित था। इस कारण नगर के लोग संघ के स्वयंसेवकों को अपना मार्गदर्शक तथा स्फूर्ति केन्द्र समझते। स्वयंसेवकों ने निश्चय किया कि डट कर मुकाबला करेंगे। नगर के हिन्दुओं को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब मुसलमान जिहाद का सहारा लेकर जुल्म नहीं ढा सकेंगे चाहे उनकी आजादी हिन्दुओं से दुगुनी हो।

परन्तु जिला झंग के मुस्लिम डिप्टी कमिश्नर की योजना के अनुसार २१ अगस्त को चिनयोट में मुस्लिम बलोच मिलिटरी आ गई। २२ को बलोचियों ने मुसलमानों के ऊंचे मकानों पर मोर्चा बन्दी कर ली। कुछ सैनिकों ने नगर के निकट पहाड़ी पर मोर्चा बना लिया। इस प्रकार उन्होंने समस्त नगर घेर लिया। मुस्लिम पुलिस ने प्रोपेगंडा मचा दिया कि शहर में मार्शल ला लगा दिया गया है। सब को सूचित किया गया कि जो भी हिन्दू अपने घर से बाहर मुंह निकालेगा उसे गोली से उड़ा दिया जायेगा।

नगर मुस्लिम सेना के हवाले कर दिया गया। मुस्लिम सैनिकों ने हिन्दुओं पर गोलियां चलाना आरम्भ किया। गोलियों की बौछार के कारण सभी हिन्दू सायं तक अपने मुहल्लों से निकल कर एक स्थान पर एकत्र हो गये। अब भी गोलियों की खतरनाक आवाज कानों में पड़ रही थी। मालूम होता था कि तैमूर और चंगेज खां की रूहों को हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों से सन्तोष नहीं हुआ और अब वे चिनयोट को ही अपने अत्याचारों का केन्द्र बनाना चाहती हैं।

रात हो गई। मुसलमान ढोल पीट कर चारों ओर देहात से आकर जमा होने लगे। मुस्लिम नारों की आवाजें कानों में पड़ रही थीं। हिन्दुओं की अवस्था उस सेना के समान थी जो लड़-लड़ कर किले में घिर गई हो। पर मुसलमान हिन्दुओं के निकट आने का साहस न करते। वे संघ से बहुत डरते थे। मुस्लिम सेना भी पास न आई ताकि उनके अत्याचारों का भेद न खुल जाए।

अब हिन्दुओं ने सोचा कि जब तक आतताइयों का डटकर मुकाबला न किया जायगा बचना कठिन होगा। इस निर्णय के पश्चात हर युवक अपनी बहनों तथा माताओं की लाज बचाने के लिए तैयार हो गया। राणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी वीर बैरागी और गुरुगोविन्द की स्मृति ताजा हो गई। सभी का खून उबलने

लगा। हर एक स्वधर्म पर प्राण देने के लिए तैयार हो गया। सब को निश्चित मोर्चों पर खड़ा कर दिया गया।

एकत्र हुए मुसलमानों ने कई बार हमले किए लेकिन उनकी एक न चली। रात भर हिन्दुओं ने मुकाबला किया।

अब बारूद खत्म होने लगी। इस कारण यह चाल चली गई। रा० स्व० संघ के लड़ने वाले स्वयंसेवकों तथा अन्य युवकों को छोड़कर शेष सभी हिन्दुओं को मुहल्ले के एक ओर से निकल जाने को कहा गया। इधर लड़ाई होती रही उधर सारा नगर अंधेरे में ही, सुबह होने से पूर्व, खाली हो गया।

इस प्रकार चिनयोट के हिन्दू युवकों ने अपनी माँ बहनों की लाज बचाकर पुराने इतिहास को पुनर्जीवित कर दिया।

"निश्चिंत रहो……"

गत नौ सौ वर्ष के इतिहास से हिन्दुओं ने न कुछ सीखा है और न कुछ भुलाया है। एक विद्वान् ने कहा है कि मुसलमान चाहे कांग्रेस में हो, चाहे किसी और संस्था में उसके सभी काम इस्लाम के लिए हैं। (अपवाद को छोड़ देना चाहिए क्योंकि वह तो सिद्धान्त को ही सिद्ध करता है।)

मुसलमान दुनिया के दो भाग करते हैं—दारुल इस्लाम और दारुल हरब। दार का अर्थ है घर। दारुल इस्लाम का मतलब है 'इस्लाम का घर' और दारुल हरब का 'शत्रु (हरब) का घर'। 'शत्रु के घर' को 'इस्लाम का घर' बनाने के लिए हर तरीका उचित समझा जाता है। हर बुरे काम, डाके और युद्ध को पुण्य (सबाब) समझा जाता है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की हाकी की टीमों में मैच होता है। अब भारत का हर मुसलमान पनवाड़ी पाकिस्तानी टीम की जीत क्यों चाहता है? वह जीत जाती है तो रात को दुकान-मकान पर दीवाली क्यों करता है?

१९२१ में डेरा इस्माइल खाँ के हिन्दुओं की दुकानों को मुसलमानों ने जला दिया। उस समय सीमा प्रान्त का मंत्री सर अब्दुल कयूम था। उससे किसी ने पूछा—"यदि यू० पी० या सी० पी० के हिन्दू वहाँ के मुसलमानों के साथ यही व्यवहार करें तो?" कयूम ने जवाब दिया निश्चिन्त रहो, हिन्दुओं में यह बात पाई ही नहीं जाती।

नेकी का बदला!

डेरा बाबा नानक के मुसलमानों का अनुमान था कि डेरा बाबा नानक पाकिस्तान में आयेगा। हिन्दू सहमे और डरे हुए थे। १५ अगस्त १९४७ के बाद जब डेरा बाबा नानक हिन्दुस्तान में आ गया तब हिन्दुओं ने सभी मुसलमानों को सामान, रुपया और गहनों-सहित ट्रकों में आराम से सवार कर दिया। वे सुरक्षित रूप से भारतीय सीमा के पार पाकिस्तान पहुंचा दिये गये।

डेरा का एक मुस्लिम लोहार बहुत शरीफ था। हिन्दुओं के साथ उसका मेल-मिलाप बहुत ज्यादा था।

परन्तु उसके घर से सोलह सौ छुरे और बल्लम निकले। इनके अतिरिक्त एक सूची मिली कि पहले किस हिन्दू को कत्ल करना है और फिर लूटना है। हर हिन्दू के नाम के आगे नम्बर दिया ताकि उसी हिसाब से उनका वध किया जाय। इसे पढ़कर हिन्दू चकित रह गये कि हमने मुसलमानों के साथ यह सद्भावना का व्यवहार किया है और वे हमारे साथ यह सलूक करना चाहते थे।

उन मुसलमानों ने डेरा बाबा नानक से चलकर नारोवाल में पड़ाव किया जो पाकिस्तान में जा चुका था। वहाँ उन्होंने शोर मचाया कि हमको हिन्दुओं ने लूटा है और वे हमारी लड़कियाँ ले गये हैं। बस, फ़िर क्या था? सियालकोट (पाकिस्तान) से हिन्दू रिफ्यूजियों से भरी हुई रेलगाड़ी आ रही थी। मुसलमानों ने उस गाड़ी के सभी हिन्दू काट डाले।

नेकी का बदला मुसलमानों ने हिंदुओं को यह दिया? पास के देहात के सिख-जाटों ने डेरा बाबानानक के हिन्दुओं को ताने दिये—"इसी कारण मुसलमानों की रक्षा की थी तुम लोगों ने?"

(यह घटना वेदी नरेन्द्रसिंह ने सुनाई है।)

हम अपने आप को धन्य मानते हैं

लाला नाम का कस्बा रेलवे स्टेशन किला सोभासिंह से दो मील पर स्थित है। जिला इसका सियालकोट है।

वहाँ तुलसीरामजी साहूकारी करते थे। तहसील पसरूर के तहसीलदार सैयद नूरदीन का उनसे लेन-देन था। १९४७ में जब गड़गड़ हुई तब तुलसीरामजी को बचाने के लिए या किसी दूसरे विचार से सैयद ने तुलसी रामजी को ये शब्द लिख भेजे—"कुछ दिन के लिए आप मुसलमान हो जायें। हम आपको गौ का माँस नहीं खिलायेंगे। आप को केवल हुक्का ही हमारे साथ पीना होगा। ऐसी हालत में आप और आपका घराना बच जायेगा।"

तुलसीरामजी ने उसे जवाब दिया—"मुझे भगवान ने हिन्दू के घर में जन्म दिया है। यदि यह जीवन हजारों वर्ष का होता तब भी मैं इस पवित्र धर्म को न छोड़ता। वर्तमान अवस्था में तो यह जीवन कुछ ही समय का है। हाँ, यदि आप मुझे यह लिख दें कि अपना धर्म छोड़कर गैर मजहब स्वीकार करने से मैं अमर हो जाऊंगा कभी मरूंगा नहीं, तब दूसरी बात है। आपको क्या यह पता नहीं कि वीर हकीकतराय बालक था और मैं नवयुवक हूं। फिर मैं भी तो असली हकीकत (वास्तविकता) को समझता हूं।

जिस दिन तुलसीराम जी का यह पत्र सैयद को मिला, उससे अगले दिन मुसलमानोंने हमला कर दिया और तुलसी-राम जी को सभी परिवार वालों सहित धर्म की खातिर हुतात्मा बना दिया गया। संघ के अढ़ाई सौ स्वयंसेवकों तथा अधिकारियों ने भी स्वधर्म तथा स्वदेश

(शेष पृष्ठ १६६ पर]

सन सैंतालीस के वे सैंतालीस दिन

— कर्नल जाधव

इस कहानी का प्रारंभ भारत-विभाजन के पूर्व से ही होता है।

अफगानिस्तान से लगा हुआ पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त उस समय भारत के अधिकार में था। कोहाट छावनी से ६० मील पश्चिम की ओर 'ट्राइबल एरिया' (जनजाति क्षेत्र) में स्थित 'थल' नामक आउट पोस्ट पर पठान एवं लुक-छिप कर चोरी से व्यापार करने वालों की निगरानी के लिये एक पैदल ब्रिगेड नियुक्त थी। इस ब्रिगेड में ग्रिनेडियर्स, पंजाब और डोगरा रेजिमेंट की पलटनें थीं।

सरकारी स्तर पर अप्रैल' ४७ में ही सेना को यह सामान्य सूचना दे दी गई थी कि उस देश का विभाजन कर भारत और पाकिस्तान नाम के दो स्वतंत्र देश बनाये जानेवाले हैं। देश की संपत्ति के समान ही जनता, सेना एवं अन्य वस्तुओं का भी बंटवारा होना था। 'थल' चौकी पर स्थित तीन पलटनों में से ग्रिनेडियर्स तथ

डोंगरा पलटनें भारतीय फौज में और पंजाब रेजिमेंट पाकिस्तानी फौज के हिस्से में पड़ी थीं।

ग्रिनेडियर पलटन के नायक (कमांडिंग अफसर) लेफ्टिनेंट कर्नल शबियर नामक एक अंग्रेज थे। उनके अतिरिक्त पलटन में स्थित अन्य अंग्रेज अधिकारियों को ३० अप्रैल तक इंग्लैंड वापस जाने के आदेश दिये गये थे। अभी तक पलटन का एड्जुटेंट अंग्रेज अधिकारी होता था, परन्तु अब लेफ्टिनेंट कर्नल शबियर ने मुझे एड्जुटेंट नियुक्त किया। पलटन के नये द्वितीय अधिकारी (सेकेण्ड-इन-कमांड) मेजर सावल खां ने इस नियुक्ति के प्रति अपना विरोध प्रकट किया। मेजर सावल खां ने भारतीय फौज में सेवा करने का निश्चय किया था। उन्होंने कै० कुरैशी नामक एक मुसलमान अधिकारी का नाम इस पद के लिये सुझाया। कै० कुरैशी ने भी भारतीय सेना में सेवा करने का निश्चय किया था; परन्तु कर्नल शबियर ने असंदिग्ध शब्दों में मेजर सावल खां को बता दिया था कि जब तक वे इस सेना के अधिकारी हैं तब तक उनकी पसंद का व्यक्ति ही 'आफिसर एडजुटैंट' रहेगा। कर्नल शबियर के इस निर्णय से नाराज होकर सावल खां और कुरैशी ने अपने पूर्व निर्णय बदल कर पाकिस्तानी फौजों में सेवा करने का निश्चय किया।

उन दिनों ग्रिनेडियर पलटन में 'कैंसरवानी राजस्थानी मुसलमानों की एक कंपनी' थी। इस कंपनी के सभी अधिकारियों ('वाइसराय'स कमिशंड आफिसर्स' अब इन्हें ज्यूनियर कमिशंड आफिसर्स कहते हैं) तथा जवानों ने भारतीय सेना में सेवा करने का निर्णय किया था। उन सबने इस बात की लिखित स्वीकृति दी थी। कुरैशी ने इन सबसे भी अपना मत-परिवर्तन करने का आग्रह किया, परन्तु इसमें उसे सफलता न मिली। इस प्रकार की सारी झंझटें निपटते जुलाई मास आ धमका। इस समय तक भारत-विभाजन का निर्णय हो चुका था। भारत के हिस्से में आई पलटनें धीरे-धीरे भारत की ओर कूच कर रही थीं। डोंगरा पलटन भी 'थल' से हटकर भारत चली गई।

१५ अगस्त (१९४७) स्वतन्त्रता दिवस के रूप में निश्चित किया गया। ग्रिनेडियर पलटन भारत जाने के लिये ३१ अगस्त को फ्रण्टियर पोस्ट छोड़ेगी, यह 'प्राइवेट' सूचना दी गई थी। इस भाग में स्थित, भारतीय सेवा में जानेवाली पैदल पलटनें (इनफैंट्री बटालियन्स) सशस्त्र वाहिनियां तोपखाना आदि १५ अगस्त के पूर्व ही स्थानांतरित की जानेवाली थीं; केवल ग्रिनेडियर पलटन सबके बाद, अंत में स्थानांतरित होनी थी।

आपसी मनमुटाव तथा हिन्दू-मुसलमानों का वैमनस्य इस समय चरम सीमा तक पहुंच चुका था। आकाशवाणी, समाचार पत्र तथा छुट्टी से लौटनेवाले छोटे फौजी

अभ्यासक्रम समाप्त कर विभिन्न ग्रामों से लौटनेवाले सैनिकों द्वारा लाहौर, रावलपिंडी, दिल्ली, अमृतसर, जालंधर आदि स्थानों पर दिनदहाड़े होनेवाली लूट-पाट बलात्कार तथा हत्याओं के हृदयद्रावक समाचार मिल रहे थे। १५ अगस्त कब आता है, तथा उसके बाद के १६ दिन कैसे कटेंगे—यह चिंता सतत सवार रहती थी।

पाराचिनार

'थल' चौकी के उत्तर में लगभग ५० मील की दूरी पर, जनजाति क्षेत्र में पाराचिनार नाम का एक छोटा-सा, सुन्दर तथा ठंढा स्थान है। भारत का 'पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त' नामक भाग अफगानिस्तान से लगा हुआ है। दोनों देशों के बीच पहाड़ी इलाके (नो मैन्स लैंड) में पठान टोलियों की सरगर्मी के कारण सरकार को इस भाग में अत्यंत सावधानी पूर्वक तथा सतत जागरूक रहना होता था। कभी कठोरता से तो कभी नरमी से, प्रसंगानुरूप व्यवहार करना होता था। समसीमा वाले कोई भी राष्ट्र वस्तुतः मित्र नहीं होते हैं। उनके साथ सदैव सावधानी के साथ तथा नियंत्रित व्यवहार ही करना होता है। ब्रिटिश सरकार ने इस तत्त्व को भलीभांति समझकर तदनुरूप ही अपनी नीति निर्धारित की थी। इसी कारण इस भाग की सतत निगरानी के लिये पाराचिनार नामक उपयुक्त स्थान पर ब्रिटिश सरकार ने अपने 'पॉलिटिकल एजेंट' की नियुक्ति की थी। इस नियुक्ति के कारण इस भाग में, पाराचिनार को विशेष स्थान प्राप्त था। एजेन्ट के अतिरिक्त कुछ बड़े इने-गिने अधिकारियों के बंगले, दो-चार जी हुजूर अमीर-उमरावों की कोठियां, एक दो मस्जिदों एवं छोटे-मोटे बाजार आदि से सुसज्ज यह एक छोटा सुन्दर गांव था।

पाराचिनार में एक छोटा गिरजाघर भी था। इस गिरजाघर के पादरी कर्नल शबियर के स्नेही थे। यह इच्छा आग्रहपूर्वक उन्होंने व्यक्त की थी कि भारत छोड़ने के पूर्व कर्नल शेबियर उनसे मिलकर जायें।

७ अगस्त को कर्नल शबियर व मैं दो सशस्त्र जवानों के साथ जीप से पाराचिनार गये।

नैसर्गिक सौन्दर्य से सुसज्जित पहाड़ी के पश्चिमी सिरे पर स्थित वह छोटा सुन्दर गिरजाघर गर्वोन्नत मस्तक खड़ा था। वहां का वातावरण अत्यन्त शांत, गंभीर व उदास प्रतीत हुआ। हमारी जीप गिरजाघर के फाटक पर ज्यों ही पहुंची कि एक ऊँचा, विशालकाय शुभ्र वेशधारी व्यक्तित्व मंदस्मित करते हुए सामने आया। शुभ्र लंबी दाढ़ी, छोटी तेजस्वी आंखों पर चढ़ा सुनहरी कमानी का चश्मा और गले में जयमाला से उनका व्यक्तित्व अधिक उभर रहा था। उन्हें देखते ही मन में विचार

आया कि ऐसे शांत और पवित्र स्थान की शोभा बढ़ाने के लिये ऐसा ही व्यक्तित्व उपयुक्त है। वे ही इस गिरजाघर के प्रमुख थे। चर्च के आसपास एक छोटा-सा उद्यान था। बीचों-बीच में खड़े ऊँचे प्रचण्ड वृक्ष भी उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। आकाश स्वच्छ एवं निरभ्र था। कर्नल और पादरी अपने कमरे में बैठे चर्चा कर रहे थे। मैं उद्यान में टहल रहा था। इतने में एक प्रौढ़ व्यक्ति मेरे पास आया और बोला—"कप्तान साब, इधर पधारिये। आपको एक विचित्र चीज दिखाऊँ।"

यह कहता हुआ यह मुझे एक अत्यंत जीर्ण वृक्ष के पास ले गया। वह पेड़ किसी ने सन् १८८० में लगाया था। पेड़ के चारों ओर पत्थर और चूने से बना एक बड़ा चबूतरा था। उस चबूतरे पर खड़े होकर पाराचिनार और आसपास का प्रदेश अत्यंत मनोहारी दिखाई देता था। पास में ही सर्पाकार मोड़वाली तारकोल की सड़क थल की ओर जाती थी। पेड़ के तने पर चाकू से निम्न आशय का वाक्य अंग्रेजी में उत्कीर्ण था—

"यह वृक्ष जितने दिन धरती पर खड़ा रहेगा, उतने ही समय तक ब्रिटिश लोग इस भूभाग पर राज्य करेंगे।"

योगायोग हो, या अन्य कुछ--परन्तु वह पेड़, जड़ में कीड़ा लगने से खोखला हो गया था। किसी भी क्षण वह गिर सकता था। पाराचिनार की यात्रा के बाद अनेक बार मेरे मन में विचार आया कि वह पेड़ अभी खड़ा होगा या १५ अगस्त को धराशायी हो गया।

१४-१५ अगस्त की रात्रि थी। रात्रि में १२ बजे ब्रिटिश सरकार भारत को विभाजित कर नवनिर्मित भारत एवं पाकिस्तान सरकार को एक समारोह में सत्ता सौंपने वाली थी। 'थल' चौकी के किले में भी बड़ी हलचल थी। सारी बैरकें व छोटे-बड़े सभी बंगले बिजली से जगमगा रहे थे। आस-पास की गढ़ियों से पटाखों की आवाज आ रही थी। पटाखों के विस्फोट से होनेवाला प्रचण्ड नाद उस पहाड़ की घाटियों में गूंज रहा था। बीच-बीच में ढोलक, तुरही, नगाड़ों का नाद भी गूंज रहा था।

दिनांक १५ अगस्त को प्रायः सभी जवानों ने उत्सव के अनुरूप गणवेश पहना। किले के विशाल प्रांगण में, पौने सात बजे, ग्रिनेडियर पलटन 'हालो स्क्वेयर फार्मेशन' में खड़ी हो गई। सारे जवान अपने शस्त्रास्त्रों से सुसज्ज खड़े थे। छः बजकर उनसठ मिनट पर पांच बिगुल बजानेवालों ने 'रिवाली कॉल' बजाया। उस 'कॉल' के इशारे पर बटालियन हवलदार मेजर ने फ्लैग पोस्ट के सामने 'अटेंशन' पोजीशन लेकर सलाम किया तथा घोष निनाद के ताल पर रस्सी खींचकर पाकिस्तानी झंडा ऊपर फहराया। आकाश में फहरने वाले उस झंडे को सशस्त्र सलामी दी गई। १५ अगस्त

स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा—यह सूचना देकर परेड विसर्जित की गई। रात्रि ८ बजे किले में स्थित सभी जवानों को 'बाड़ा खाना' दिया गया।

१५ अगस्त को स्वतंत्रता प्राप्त होते ही आस-पास के क्षेत्र में रहनेवाले लोग आजादी के नशे में धुत्त होकर भारतीयों के साथ अत्यंत उद्दाम व्यवहार करने लगे। १६ अगस्त से ३१ अगस्त के बीच हमारी पलटन को अपना सारा सामान समेटना था। 'थल' स्थित मिलिटरी इन्जीनियरिंग सेवा के सब डिविजनल अफसर को हमें बैरकें तथा फर्नीचर सौंपना था। पलटन और जवानों का सामान भरकर स्थानांतरित करने के लिये वैगन प्राप्त करने थे। बिजली, पानी, टेलीफोन आदि के बिल चुकता कर वह सामान उनके मूल विभागों को सौंपना था। ऐसे अनेक कार्य करने थे परन्तु जहां-जहां पलटन के लोगों का हम लोगों से संबंध आता, वहां ये लोग अपनी हेकड़ी जताते। अनेक प्रसंगों पर असह्य चिढ़ उत्पन्न हो जाती थी, परन्तु परिस्थितिवश सब सहन करना पड़ता था। कुरैशी इसी क्षेत्र का रहने वाला था। उसने इन लोगों को भड़काकर हमें सताने के लिये उद्यत किया था। कुरैशी की पोस्टिंग पंजाब रेजिमेन्ट में हो चुकी थी परन्तु "मेरी पुरानी पलटन जबतक यहां है तब तक मैं उसकी सेवा करूंगा, उसे छोड़ूंगा नहीं" यह कहते हुये आवरण में हमारी पलटन की सभी छोटी-बड़ी बातों की निगरानी कर उन्हें पाकिस्तानी अधिकारियों तक पहुंचाने का काम वह करता रहा। हमारी बटालियन ३१ अगस्त को 'थल' से प्रस्थान करेगी यह समाचार, एक रेलवे अधिकारी द्वारा २८ अगस्त को ही खोल दिया गया। इसके परिणामस्वरूप हमें अपूरणीय क्षति के रूप में एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

पहला हमला

थल से कोहाट को जानेवाली मीटर गेज (छोटी) रेलवे लाइन है—इस कारण एक रेलगाड़ी से एक समय केवल आधी बटालियन ही यात्रा कर सकती है। यह सीमा ध्यान में रखकर ही कोहाट तक के प्रवास के लिये बटालियन के अफसर वी. सी. ओ व जवान दो भागों में बांट दिये गये थे। पहली गाड़ी ३१ तारीख को प्रातः साढ़े सात बजे तथा दूसरी गाड़ी दोपहर साढ़े बारह बजे चलाने का निश्चय किया गया। पहली गाड़ी में सैनिकों के परिवार व मिलिट्री इन्जीनियरिंग सेवा का भारत जानेवाला स्टाफ था। मेजर सावल खां कोहाट तक पलटन का साथ देनेवाले थे, अतः पहली ट्रेन-पार्टी उनके आधिपत्य में नियत समय पर प्रस्थान कर गई। पलटन जालंधर छावनी को जानेवाली थी, यह ज्ञात हो सका।

हमारी दूसरी गाड़ी थल से ठीक साढ़े बारह बजे छूटी। कै० कुरैशी विदाई
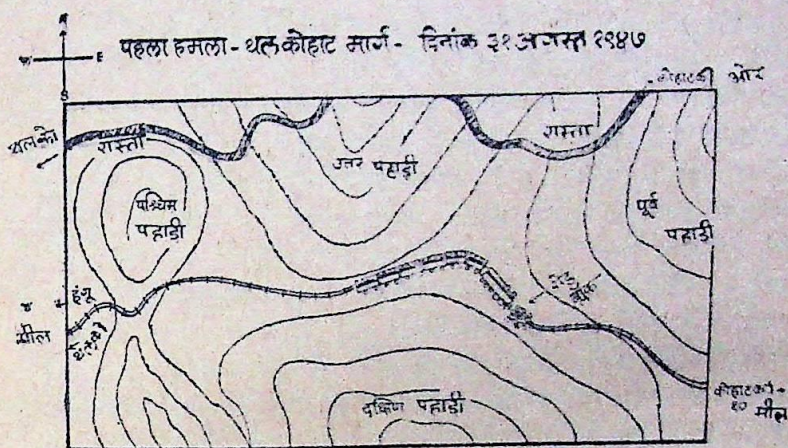
देने आया। थल के स्टेशन मास्टर गार्ड आदि रेलवे स्टाफ से उसका घनिष्ठ संबंध प्रतीत हुआ। रेलवे अधिकारियों ने 'ट्रेन एडजुटेंट' होने के कारण मुझे गाड़ी सौंप दी व मेरे हस्ताक्षर ले लिये। इतने में कुरैशी विदाई देने आया व हाथ हिलाते हुए बोला—

"जाधव साहब, रेलगाड़ी अच्छी तरह से देख लें, नहीं तो कोहाट में रेलवे को गाड़ी वापस करने में आपको परेशानी होगी। आपका सफर अराम से गुजरे, खुदा हाफिज।"

कुरैशी की बात में छिपा व्यंग्य उस समय मेरे ध्यान में नहीं आया; परन्तु जीवन भर याद रहने वाला अनुभव अवश्य प्राप्त हुआ।

थल से ३५ मील दूर स्थित हंगू स्टेशन पर हमारी गाड़ी शाम को ४ बजे पहुंची। वहां का हाल्ट समाप्त कर आगे के शेष २५ मील का प्रवास प्रारंभ हुआ हंगू से कोहाट का रास्ता उतार-चढ़ाव का होने के कारण इस भाग से रेलगाड़ी अत्यंत मंदगति से जाती है। २५ मील में ८ मील पहाड़ी प्रदेश है। पहाड़, नदी-नाले आदि होने के कारण इस भाग से जानेवाला मार्ग बल खाता हुआ टेढ़ा-मेढ़ा है।

पहाड़ी प्रदेश में लगभग ३ मील अन्दर घुसकर एक मोड़ पर गाड़ी अचानक रुक गई। रुकने का कारण समझने की उत्सुकता से जैसे ही सिर बाहर निकाला, रेलगाड़ी पर चारों ओर से गोलियों की बौछार प्रारम्भ हो गई। एक पहाड़ी के

नीचे बहनेवाले नाले के किनारे-किनारे जानेवाली लाइन पर हमारी गाड़ी खड़ी थी। चारों ओर पहाड़ियों और टेकरियों से घिरे भाग में हम फंसे पड़े थे। दो-चार क्षण में ही परिस्थिति की जटिलता हमारे ध्यान में आ गई। कमांडिंग अफसर लेफ्टिनेंट कर्नल शबियर ने सबको गाड़ी के बाहर छलांग लगाकर उपयुक्त स्थानों पर 'पोजीशन' लेने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही दरवाजे खिड़कियां जहां से भी संभव हो सका जवानों ने छलांग लगाई व उपयुक्त स्थान ले कर बैठ गये। जवानों पर गोली बौछार करने वाले हमलावर ऊँचे स्थानों पर बैठे थे तथा पहले से ही घात लगाये थे। नीचे के भाग में स्थित जवानों पर निशाना लगाना उनके लिये सरल था। प्रथम पांच मिनटों में ही हमारे पंद्रह जवान घायल हुए। पलटन के एक मेजर स्टैनले मेनेंजिस बारह जवानों की एक टोली लेकर इन्जन की दिशा में गये। ड्राइवर गायब था। इन्जन के आगे लगभग ३० कदम पर ही रेलवे लाइन पर बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए उन्होंने देखे। उन्होंने तुरंत अपनी टोली को दो भागों में विभाजित किया। एक भाग ने मार्ग साफ करना प्रारंभ कर दिया तथा दूसरे भाग के जवानों ने उनके चारों ओर उपयुक्त स्थान खोज कर दृष्टि में आनेवाले दुश्मनों की सफाई करनी प्रारंभ कर दी। गोलियों की बौछार की चिन्ता न करते हुए रोड ब्लॉक हटाने में मेनेंजिस स्वय निर्भयतापूर्वक जवानों की सहायता कर रहे थे। साथ ही वे संरक्षण देनेवाली टोली का मार्गदर्शन भी कर रहे थे। मेनेंजिस जवानों के अत्यंत प्रिय अफसर थे। वे अत्यंत प्रखर एवं कुशाग्रबुद्धि के थे तथा उन्होंने फौज के अत्यंत कठिन एवं महत्त्व के कार्य उत्कृष्टतापूर्वक सम्पन्न किये थे। उनकी स्मरण शक्ति गजब की थी। जवानों का संपूर्ण विश्वास संपादन कर उनका नेतृत्व करने की विलक्षण क्षमता उसमें थी। उसी प्रकार प्रशासन एवं निर्देश देने में भी वे बेजोड़ थे। इस समय वे मेजर जनरल के पदपर हैं तथा इनफैन्ट्री डिवीजन का संचालन कर रहे हैं; भारतीय सेना में सबसे कम आयु के डिवीजनल कमांडर हैं।

बचे हुए जवानों में से एक टुकड़ी कैप्टन कारवाला के नेतृत्व में पूर्व की ओर वाली पहाड़ी पर, दूसरी टुकड़ी कैप्टन कानन के नेतृत्व में पश्चिम की पहाड़ी पर, तीसरी टुकड़ी कैप्टन बूमला के साथ दक्षिणी पठार पर और चौथी मेरे नेतृत्व में उत्तर की पहाड़ी पर से जाने वाले थल-कोहाट मार्ग पर अधिकार करने के लिए भेजी गई। कर्नल शबियर ने अपनी कमांड पोस्ट उत्तर की ओर मेरी टुकड़ी के पीछे ही स्थापित की। वहां से उन्हें अपनी सभी टोलियों की हलचलें दिखाई देती थीं और वायरलेस से वे उनको आदेश दे रहे थे। अब पलटन ने उचित जगह पा लीथी तथा गोली का जवाब गोली से देना प्रारंभ हो गया था। कुछ समय पश्चात् कोहाट का पुलिस कमिश्नर कार द्वारा कोहाट से हंगू की ओर जाता हुआ दिखाई

दिया। उसकी कार निकट आते ही कर्नल शबियर ने रूमाल हिलाकर उसे रुकने का संकेत दिया। शायद कमिश्नर को देखकर हमारे ऊपर होनेवाली गोली की बौछार एकदम रुक गई। जगह-जगह सफेद झंडे दिखाई देने लगे। कर्नल शबियर गुस्से में थे। पुलिस कमिश्नर भी अंग्रेज ही था और उसकी कर्नल से अच्छी जान-पहचान थी। कर्नल ने उससे इस घटना का कारण पूछा। कमिश्नर भी आश्चर्य चकित हुआ। उसने फ्रण्टियर मिलिसिया के अफसर से रेलगाड़ी पर हो रही गोली-बौछार के बारे में पूछा तो उसने सैल्यूट का जवाब दिया—

"यहां पठान कबाइली छिपे बैठे थे। उन्हें भगाने के लिए हमने उनपर गोली चलाई तो उल्टे इन जवानों ने हमपर ही गोली की बौछार प्रारंभ की।"

परन्तु वास्तविक स्थिति तो भिन्न ही थी। उन्हीं लोगों ने हमारे ऊपर योजना-बद्ध रीति से आक्रमण किया था। परन्तु वह समय ही ऐसा था कि अधिक कुछ कहना-सुनना बेकार होता। उस झड़प में हमारे कैं० बूमला, कैं० कारवाल, तीन वी. सी ओ. व सोलह जवान घायल हुए। दिन ढल रहा था। अंधेरा बढ़ रहा था। कोहाट को यथासंभव शीघ्र पहुंचना जरूरी था। पुलिस कमिश्नर ने कर्नल साहब से जवानों को गाड़ी में वापस बैठा देने की प्रार्थना की तथा हमारी रेलगाड़ी इस पर्वतीय प्रदेश के पार जाने तक स्वयं वहीं उपस्थित रहने का आश्वासन दिया। कर्नल ने 'सीज फायर' का आदेश दिया। मैंने बुगुलर को 'सीज फायर' का संकेत नाद करने को कहा। उसके बाद तुरंत गाड़ी में वापस जाने का 'टू जीज' संकेत बजते ही जवान घायलों को लेकर डिब्बों में अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। इसी बीच इन्जन ड्राइवर व गार्ड भी वापस आ गये थे। मैंने उनसे इसका कारण पूछा तथा सत्य बात न बताने पर गोली मारने की धमकी दी। उन्होंने पूरी बात बतायी। रेलमार्ग पर कहां पत्थर रखे थे, गाड़ी कहां रोकनी थी और उन्हें कहां छिपना था—यह सब उन्हें पहले ही पता था, हमें इसकी पूर्व सूचना क्यों नहीं दी यह पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया—

'हमें पाकिस्तान में रहना है अगर हम ऊपरवाले अफसरों का हुक्म न मानें तो गोली का निशाना बन जायेंगे।'

मैंने उनसे पूछा, 'तुम लोगों को यह सब किसने दिखाया ?'

इस पर ड्राइवर ने उत्तर दिया, 'कल सुबह मिलिट्री का एक साहब हमें जीप में बिठाकर यहां ले आया था। उसने सब जगह दिखाई।'

यह सब सुनकर साकार कुरैशी मुझे दिखाई देने लगा। थल स्टेशन पर हाथ हिलाते समय उसने कहा था—

'जाधव साहब, रेलगाड़ी अच्छी तरह से देख लें, नहीं तो कोहाट में रेलवे को

ट्रेन वापस करते वक्त आपको तकलीफ होगी। आपकी यात्रा आराम से गुजरे खुदा हाफ़िज।'

मुझे उसके वे शब्द स्मरण आये और सारा शरीर क्रोध में भभक उठा।

रात्रि में १० बजे के लगभग हमारी गाड़ी कोहाट पहुंची। स्टेशन से टेलीफोन कर अस्पताल से एम्बुलेंस मँगाने का प्रयत्न किया, परन्तु वहां कोई सुनवाई ही न हुई। घायल जवानों की स्थिति असहनीय थी। अन्ततोगत्वा जो संभव हो सका, वह वाहन प्राप्त कर उन्हें मिलिट्री अस्पताल ले जाया गया। पलटन के जवानों के रहने की व्यवस्था के लिये मैं जगह देख रहा था। इतने में एक रेलवे अधिकारी हमारी गाड़ी की डैमेज रिपोर्ट लेकर आया। मार्ग में हुई गोली-बौछार के परिणाम-स्वरूप हमारी रेलगाड़ी के सभी डिब्बों में असंख्य छिद्र हो गये थे। कई खिड़कियों के कांच व शटर टूट गये थे। उसका आरोप था कि यह सब नुकसान हमारे कारण हुआ। मैं तो यह सुनकर एकदम भड़क उठा और उससे बोला,

"हमारे २०-२५ जवान घायल हुए उसके बारे में हमदर्दी दिखाना तो दूर चिकित्सा की कोई सुविधा भी नहीं मिलने दी। ऊपर से आप उस नुकसान के लिये हमारे हस्ताक्षर चाहते हैं जिसके हम जिम्मेदार नहीं। गजब है!"

इसपर वे महाशय बोले, 'थल स्टेशन से चलते वक्त बाकायदा निरीक्षण करके रेलगाड़ी अपने कब्जे में ली और दस्तखत किए। अब उसी हालत में गाड़ी वापस करनी होगी, वरना क्षति-दण्ड देना पड़ेगा।'

पलटन के स्थानापन्न सूबेदार मेजर खेमचन्द मेरे साथ ही थे। रेलवे अधिकारी का यह विचित्र तर्क सुनकर वे क्रोध से तमतमा उठे और तैश में उन्होंने उसके मुंह पर कसकर तमाचा जड़ दिया। उसके हाथ का रजिस्टर छीन कर फाड़ फेंकते हुए असली जाटी भाषा में उन्होंने उसको गाली देते हुए कहा,

'.........अब तुमने जबान खोली तो जान से मार दूंगा और इसी इंजन के नीचे रगड़ दूंगा।'

इसके बाद वह रेलवे अधिकारी ऐसा गायब हुआ कि फिर कभी लौटा ही नहीं।

रात बारह बजे तक मैंने जवानों के स्टेशन यार्ड में रहने एवं सामान रखने की व्यवस्था की। जमादार एडजुटेंट, जमादार उदेराम को संतरी व पहरेदार रखने के स्थान बताये। उसके लिये आवश्यक जवानों की ड्यूटी लगाई और फिर आगे के प्रवास की व्यवस्था ज्ञात करने के लिये स्टेशन मास्टर के आफिस में गया। कोहाट से रावलपिंडी जाने के लिये दो स्पेशल गाड़ियां तथा सात वैगन हमारे लिये नियत थे। पहली ट्रेन प्रातः ७॥ बजे व दूसरी ट्रेन उसके एक घंटे बाद छूटने वाली थी।

इतने में ही कर्नल शबियर व मेजर मेनेंजिस घायल जवानों की मिलिट्री अस्पताल में व्यवस्था कर लौट आये। मैंने उन्हें आगे के प्रवास की व्यवस्था ज्योंही बतायी कि वे तुरंत स्टेशन मास्टर से मिलने गये और उससे बोले—

'प्रात: साढ़े सात बजे यात्रा प्रारंभ करना हमारे लिये अशक्य है क्योंकि घायल जवानों की देखभाल और आगे की व्यवस्था अभी रात्रि में ही संभव नहीं है। वह कल ही हो सकती है अत: हमें एक दिन की अवधि प्राप्त होनी चाहिये।'

स्टेशन मास्टर ने बताया कि उन्हें ट्रेन को एक दिन भी अधिक रोकने का अधिकार नहीं है। उसने आगे कहा—

"आज ट्रैफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट रावलपिंडी से यहां आये हैं। इस बारे में आप उनसे बात कर सकते हैं।"

कर्नल शबियर ने कोहाट इंडीपेन्डेंट ब्रिगेड तथा पुलिस के जिला अधीक्षक से संपर्क स्थापित कर उनके माध्यम से रेलवे अधिकारियों से वार्ता की।

रेलवे अधिकारियों ने इस दुर्घटना के बारे में अपनी सहानुभूति जतायी। कर्नल शबियर ने मुख्य विषय पर आते हुए कहा—

'कल प्रात: यहां से प्रस्थान करना हमारे लिये संभव नहीं है क्योंकि अस्पताल में भर्ती घायलों को कल प्रात: नहीं उठाया जा सकता;"

रेलवे अधिकारी ने कहा,

'कर्नल साहब, माफ करो। ये दोनों स्पेशल गाड़ियां खास आपकी पल्टन को ह कल प्रात: यहां से ले जाने के लिए मंगाई गई हैं। मैं उन्हें रोके नहीं रख सकता। अगले १५ दिनों में बहुत ढुलाई करनी है। निश्चित योजना के अनुसार अगर आपकी पल्टन यहाँ से नहीं गई तो आगे का कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जायगा। अत: पूर्व योजनानुसार कल प्रात: आपकी पल्टन जानी ही चाहिए। घायल जवानों की देखभाल हम करेंगे। आप निश्चित होकर जायें।'

इस पर कर्नल शबियर ने कहा—

'यदि कल ही हमारा यहां से प्रस्थान करना आवश्यक हो तो आज के जैसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए कोहाट से १८ मील की दूरी पर स्थित ४ मील के पर्वतीय प्रदेश से हमारी रेलगाड़ी सुरक्षित निकल जायेगी इसका आप हमें वचन दें। इसके लिए कोहाट से ट्रेन छूटने के पूर्व एक पायलट इंजन हमारी गाड़ी के आगे चलना चाहिए।'

'यह सम्भव नहीं है'—रेलवे अधिकारी ने कहा।

'यदि यह सम्भव नहीं है तो गाड़ी के इंजन से आगे तीन खुले बैगन जोड़े जायें तथा पर्वतीय प्रदेश में से ट्रेन जाते समय सुरक्षा के लिए फौजी एवं पुलिस दल नियुक्त करने की मेरी प्रार्थना स्वीकार की जाय'—कर्नल ने कहा।

रेलवे अधिकरियों ने खुले बैगन भी देने से इन्कार कर दिया, परन्तु ब्रिगेडियर और डी० एस० पी० से विचार-विनिमय करने पर उन्होंने पंजाब रेजिमेंट व फ्रण्टियर मिलिशिया की एक कम्पनी द्वारा पर्वतीय भाग से होकर जानेवाली विशेष गाड़ियों को संरक्षण देने का वचन दिया।

संरक्षण देने वाली दोनों कम्पनियों की संयुक्त कमान फ्रण्टियर मिलीशिया के

कैप्टन थामसन को सौंपी गयी। निश्चय यह हुआ कि पर्वतीय भाग में प्रवेश के पूर्व १८ वें मील के पत्थर के समीप थामसन रेलवे लाइन साफ होने तथा सुरक्षा-व्यवस्था उचित होने का वृत्त कर्नल शवियर को देंगे; तदनन्तर स्वयं आश्वस्त होने पर कर्नल शवियर गाड़ी आगे बढ़ाने का आदेश देंगे।

यह व्यवस्था करने के लिए उपयुक्त अवकाश की आवश्यकता जानकर पहली स्पेशल गाड़ी प्रातः १० बजे तथा दूसरी १२ बजे दिन में कोहाट से छोड़ने का निश्चय हुआ।

तय किया गया कि ब्रिगेड हेडक्वार्टर्स की देखरेख में पल्टन के सभी धायलों को प्रातः ८ बजे तक अस्पताल से स्टेशन पहुंचा दिया जायेगा।

स्टेशन पहुंचने पर कर्नल ने सभी अफसरों एवं वी० सी० ओज को आदेश दिये; उन्होंने कहा—

"आप सब जानते ही हैं कि अपनी बटालियन को ले जाने के लिए दो स्पेशल गाड़ियाँ मिली हैं। पलटन का आर्डर आफ मार्च (प्रस्थान क्रम) थलसे चलते समय जैसा था वैसा ही रहेगा। परन्तु मैं स्वयं, एडजुटेंट कैप्टन माधव तथा थ्री इंच मार्टर प्लाटून प्रथम स्पेशल ट्रेन से यात्रा करेंगे। दूसरी स्पेशल गाड़ी की कमांड मेजर मेनेंजिस के अधिकार में रहेगी। पहली गाड़ी प्रातः १० बजे चलेगी। गाड़ी के इंजन में लेफ्टिनेन्ट डा० नागेन्द्र सिंह एक जवान को साथ लेकर यात्रा करेंगे। फर्स्ट लाइन अम्युनिशन (अग्रिम पंक्ति की युद्ध सामग्री) व्यक्तिगत शस्त्रास्त्रों के साथ ही सबके पास रहेगी। आवश्यकता पड़ने पर थ्री इंच मार्टर का प्रयोग किया जायेगा। परन्तु मेरे आदेश के बिना कोई गोली वर्षा प्रारम्भ नहीं करेगा। रेलगाड़ी के प्रत्येक डिब्बे को बेतार यंत्र तथा टेलीफोन द्वारा जोड़ा जायगा। उसी प्रकार पहली तथा दूसरी गाड़ीमें भी सशक्त बेतार यन्त्रों द्वारा सम्बन्ध बनाये रखा जायगा। अपने साथ के नागरिक और घायल जवान दूसरी गाड़ी से रवाना करेंगे। सैनिकों के परिवार पहली गाड़ी से चलेंगे। दोपहर एवं रात्रि दोनों समय का भोजन प्रातः ८ बजे से पूर्व पकाकर सैनिकों को वितरित कर दिया जावेगा। सब जवान फील्ड सर्विस मार्चिंग आर्डर में अपने-अपने डिब्बे के सामने इन्स्पेक्शन के लिए प्रातः ९॥ बजे संपत (फाल इन) करेंगे। अन्त में मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि ग्रिनेडियर्स के झंडे के सम्मान की रक्षा सब जवान आखिरी दम तक करेंगे। मेंजर मेनेंजिस—फाल आउट दि ऑफिसर्स एण्ड वी०सी० ओज—अधिकारियों और वी० सी० ओज को विसर्जित करो।

इस पर मेजर मेनेंजिस ने आदेश दिया—

'आफिसर्स ऐण्ड वी० सी० ओज अटेंशन आफिसर्स एण्ड वी० सी० ओज फाल

आउट (अधिकारी और वी० सी० ओज सावधान, विसर्जन)

इस आदेश के साथ सभी सावधान होकर एकदम आगे बढ़े, चुस्ती से सैल्यूट किया और दाहिने घूमकर अपने नियत काम के लिए चले गये। खेमचन्द और मैं वहीं रुक गये। खेमचन्द मुझसे कुछ बात करना चाहता है, यह उसके चेहरे से आभास हुआ अतः मैंने उससे पूछा—

"क्या सोच रहे हो ? कुछ कहना चाहते हो क्या ?"

इस पर खेमचन्द तुरन्त 'हां साहब' कहता हुआ मेरे पास आकर कान में धीरे से बोला—

गत दो तीन सप्ताहों में मुसलमानों ने इस भाग में नागरिकों की भरी हुई गाड़ियाँ रोककर उन पर हमले किये हैं। गाड़ियाँ लूटीं, हत्याएं की, परन्तु सैनिक स्पेशल गाड़ियों पर अब तक एक बार भी हमला नहीं हुआ है। प्रथम आक्रमण हमारी गाड़ी पर ही हुआ है। इसका कारण यह है कि हमारी पलटन इस भाग से भारत में जानेवाली अन्तिम पलटन है। मेरा विचार है कि इसका एक दूसरा भी कारण हो सकता है। छह महीने पूर्व इसी कोहाट शहर में गुंडों ने दंगा किया था। शान्ति स्थापना की दृष्टि से इस शहर में हमारी पलटन आठ दिन जमी रही। प्रत्येक नाके पर चौकियां लगाई गई थीं अपने जवानों की टोलियां शहर में रात दिन गश्त लगाती रहती थीं। गुंडों के स्वेच्छाचार पर अंकुश लग गया था। उनके ज्यादा बदमाशी करने पर एक दो मुहल्ले में गोली भी चला दी थी। कुछ धड़-पकड़ भी हुई थी। मुझे प्रतीत होता है कि मन में उसका बदला लेने का विचार है। आप कर्नल साहब के साथ जब बाहर गये थे, तब मैंने कुछ इस प्रकार की फुसफुसाहट सुनी है। मेरा अनुमान है कि अपने इस प्रवास में निश्चित ही कोई दुर्घटना होगी, सावधानी बरतनी होगी।

मुझे भी खेमचन्द का विचार ठीक मालूम हुआ। हमारी गाड़ियों को कोहाट रावलपिंडी मार्ग के पर्वतीय प्रदेश में खतरा उठाना पड़ेगा। ऐसा मुझे बार-बार अंदेशा हो रहा था। हमारी सुरक्षा के लिए रखी पाकिस्तानी फौजों पर मुझे विश्वास न था। खेमचन्द को मैंने रेलवे अधिकारियों के साथ हुई वार्ता का सारांश बताया। उस पर खेमचन्द तिलमिला कर बोला—

"सा'ब इस बार ये हरामी लाइन उखाड़ने में भी नहीं हिचकेंगे—ऐसा मैं समझता हूं।"

भारी सामान ढोने के लिए सात डिब्बे मिले थे। ये माल के सभी डिब्बे पहली स्पेशल गाड़ी के अन्त में जोड़े गये थे। ये डिब्बे सवारी डिब्बों के आगे जुड़े होने पर, यदि कोई दुर्घटना होगी, तो उसकी अधिकतम चोट माल के डिब्बों पर आयेगी—

यह हमारा विचार था। अतः ड्यूटी पर नियुक्त स्टेशन मास्टर से हमने माल के डिब्बे आगे जोड़ने की प्रार्थना की। उसने ऐसा करने के लिए साफ इंकार कर दिया और बोला।

'जनाब, शंटिंग इंजन की ड्यूटी समाप्त हो गई है, अब उसे पुनः नहीं लाया जा सकता पहले बताया होता। तो वैसा इंतजाम ही कर दिया होता।

मैंने कहा—"देखो, स्टेशन मास्टर साहब, न सही सात डिब्बे, लेकिन कम-से-कम चार माल के डिब्बे तो जोड़ ही दो। अगर इंजन मिलना सम्भव न हों तो जवानों की सहायता से हम उन्हें ढकेल कर आगे जोड़ देंगे। कैसे भी हो, केबिनमैन तथा लाइनमैन को तो बता ही दो।"

सौभाग्य से उसने हमारी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। खेमचन्द ने जवानों को इकट्ठा कर चार वैगन पहली गाड़ी के आगे तथा तीन वैगन दूसरी गाड़ी के आगे लगवा दिये।

पहली गाड़ी के बीच का डिब्बा महिलाओं एवं बच्चों के लिए रखा गया। सभी जवानों के किट बैग्स(थैले) और बिस्तरे इकट्ठा कर डिब्बे के भीतर चारों ओर तिहरे दबाकर भीत जैसी बना ली गई। इसके पीछे हमारा यह उद्देश्य था कि यदि हमारे ऊपर गोली बौछार की जाती है तो डिब्बे में घुसने वाली गोलियाँ इस प्रकार बनी भीत में ही धंस जायें तथा अन्दर बैठे मनुष्यों को किसी प्रकार की चोट न लगे।

अफसरों के लिए प्रथम श्रेणी का अलग डिब्बा था। परन्तु आज का प्रवास 'टैक्टिकल' पद्धति का होने से सभी अफसर और वी० सी० ओज अपनी-अपनी कम्पनी और पल्टन के जवानों के लिए नियत डिब्बों में ही प्रवास करने वाले थे। कर्नल शबियर, सूबेदार मेजर खेमचन्द, जमादार एडजुटेंट, बटालियन हेडक्वार्टर्स के जवान पल्टन के पंडितजी, मौलवी जी, और अपने बेतार विभाग के जवानों के साथ हम एक 'मिलिट्री ट्रूप कैरीइंग' डिब्बे में यात्रा करने वाले थे।

प्रातः ९ बजे तक बटालियन सिग्नल आफिसर कै० कानन ने सारे बेतार के सेट ठीक किये। उन्होंने सभी बाहरके स्टेशनों को कोडवर्ड्स(गुप्त शब्द संकेत दिये) अचानक हमला या गड़बड़ की स्थिति में गाड़ी से बाहर सब जवानों के निकलने के लिए कोडवर्ड (संकेत शब्द) 'चमन' निश्चित किया गया। सम्पूर्ण ट्यूनिंग होने पर सहज विनोद भाव से रेडियो का वाल्यूम कंट्रोलर समाचार लगाने के लिए घुमाया गया। उसमें पहला समाचार यह था—

कल दिनांक ३१ अगस्त को थल से कोहाट जाने वाली मिलिट्री स्पेशल गाड़ी पर गोली बौछार की गई, जिसमें हमारे कुछ सैनिक घायल हो गये। यह समाचार कानन ने तुरन्त सबको दिया। हमारे मन में विचार उठा कि यदि यह समाचार हमारे घर वालों ने सुना होगा तो उन्हें बड़ी चिंता हुई होगी। तार, टेलीफोन व पत्र द्वारा भी हम उन्हें अपने कुशल समाचार देने में असमर्थ थे क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच की सभी संचार व्यवस्था भंग हो गयी थी।**

अनुवाद : ओंकार भावे

ये भी दिन थे, जब भारत में यह इस्लामी क्रूर शासक मुहम्मद बख्तियार खिल्जी आए दिन कितने ही हिन्दुओं के सिर काटता था। चित्र में १३वीं शताब्दी में घटित एक ऐसे दर्दनाक हत्या-कांड को अङ्कित किया गया है जब खिल्जी ने हिंदू-विश्वविद्यालय के एक अध्यापक की हत्या स्वयं अपने हाथों की और उसके सैनिकों ने कत्ले-आम करते हुये हिंदू महिलाओं से बलात्कार किया। बख्तियार खिल्जी ने बीन-बीनकर हिंदू विश्वविद्यालयों को नेस्तनाबूद किया था। आज पाकिस्तान के एक नये खिल्जी (यहिया खां) ने इतिहास की वे रक्तरंजित यादें कुरेद दी हैं।

पूर्वी बंगाल में क्या हो रहा है? समस्त इस्लामी देशों की बर्बरता का इतिहास दुहराया जा रहा है। विगत १३०० वर्षों में विश्व के उस हिस्से में, जहाँ इस्लामी शासन रहा, कहीं भी प्रजातंत्र नहीं रहा। वहां सदैव सशस्त्र तानाशाही ही छायी रही।

इस्लामी बर्बरतायें भारत के लिए अचम्भे की बात नहीं। यहां यहिया खाँ द्वारा ढाये जा रहे अत्याचारों के संदर्भ में उसके कुछ आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं—

७१२ ई० में महमूद बिन कासिम, जिसने सिन्धु पर हमला किया था, देवल के पुनीत मन्दिर पर आक्रमण किया, उसके पवित्र ध्वज को अपमानित किया, ७०० सुन्दर स्त्रियों को पकड़ लिया और जिन्होंने सिर झुकाने से इन्कार किया, उन सब मर्दों को तलवार के घाट उतार

—बाबूराव पटेल

(सम्पादक, मदर इंडिया)

दिया गया। (पृष्ठ ३१, "दि क्रीसेन्ट इन इण्डिया)।

१००१ ई० में, जब महमूद गजनवी ने भारत पर हमला किया; हिन्दू राजा जयपाल को हराया और लूट में मिली विपुल सम्पत्ति अपने साथ ले गया। लूट की सम्पत्ति में और चीजें छोड़ दें तो भी अकेले ५ लाख गुलाम खूबसूरत नर-नारी थे। (पृष्ठ ४९, वही)

१०१९ ई० में महमूद गजनवी ने कन्नौज को अभिभूत कर लिया। दस हजार हिन्दू मन्दिरों को लूटा और उन्हें नष्ट किया। लूट में ३० लाख स्वर्णमुद्रायें ५५ हजार गुलाम और ३५० हाथी ले गया। (वही, पृष्ठ ५४)

१२०० ई० में गुलाम वंशी मुसलमान शासक बलबन के अत्याचारों के विरुद्ध कटेहर के हिन्दुओं ने विद्रोह किया तो उनका दमन इतनी नृशंसता के साथ किया गया कि हौजरानी के पास की हाय हाय और इसकी याद दिल्ली के द्वारों को बहुत दिन तक बनी रही। इससे भयानक सजा किसी ने नहीं सुनी। सरकारी हुक्म से बहुत से विप्लवी हाथी के पैरों के नीचे कुचल दिये गये, भयावने शरीर वाले तुर्कों ने हिन्दुओं के शरीर के दो-दो टुकड़े कर डाले। सैकड़ों की खाल खींच कर उनमें भूसा भर दिया गया और उनमें से सैकड़ों को दिल्ली शहर के हर गेट पर लटका दिया गया।

विप्लवियों के रक्त के नाले बह निकले; गाँवों और जंगलों के पास लाशों के बड़े-बड़े ढूह बन गये थे।

आठ साल से ऊपर वाले सारे मर्द मार दिये गये और औरतों को गुलाम बना लिया गया।

इस भयंकर नरमेध का परिणाम यह हुआ कि बदायूं, अमरोहा, सम्भल और गन्नौर जिलों में लगभग ३० सालों तक मौत की-सी खामोशी छायी रही। (वही, पृष्ठ ८९)।

१२७९ ई० में, बलबन ने बंगाल की राजधानी लखनौती पर हमला किया। लखनौती को 'विद्रोहियों का शहर' कहा जाता था क्योंकि वहाँ का गवर्नर तुगरिल

स्वयं विद्रोही बन गया था। बल्बन ने तुगरिल को मार डाला। वे सब उसकी प्रतिहिंसा के शिकार बन बैठे—जिन्होंने विद्रोह किया था।

लखनौती के बाजार की दो मील लम्बी सड़क लाशों से पट गयी थी, जिसके दोनों ओर अभागे विप्लवियों और उनके परिवारों की लाशें बिछी पड़ी थीं।" [वही, पृष्ठ ९०]

अलाउद्दीन खिल्जी ने १२९७ में सोमनाथ को लूटा। मूर्ति दिल्ली भेज दी गयी।

राजा करण की पत्नी कमल देवी, जो अपनी खूबसूरत पुत्री देवल देवी के साथ देवगिरि जा रही थी, आक्रामकों के अपवित्र हाथों में पड़ गयी, जिसे तुरन्त ही अलाउद्दीन की कुत्सित वासना की आग बुझाने के लिए दिल्ली भेज दिया गया। [वही, पृष्ठ ९८]

उलूग खां और नुसरत खां अलाउद्दीन के सिपहसालार थे। फारसी इतिहासकार बरनी ने लिखा है कि नुसरत खां का भाई कैम्बे में जब कत्ल कर दिया गया, "गुस्से में आकर उसने हत्यारों की पत्नियों को बुरी तरह अपमानित करने का हुक्म दिया; उसके बाद उसने उन्हें बदमाशों को सौंप दिया ताकि वे वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश हो जायें।

"माताओं के सामने ही उनके बच्चों के टुकड़े-टुकड़े कर देने का हुक्म उसने दिया था।" बरनी ने इस पर टिप्पणी की है कि ऐसे वीभत्स कृत्यों का आदेश किसी भी सम्प्रदाय या मजहब में नहीं है। [पृष्ठ ९८, वही] लेकिन वे इस्लामी देशों में अति सामान्य रहे हैं।

चित्तौड़ की सुन्दर रानी पद्मिनी को अलाउद्दीन पाना चाहता था, अतएव अलाउद्दीन के बेटे खिजर खाँ ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर २३ अगस्त १३०३ ई० को वहाँ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया और उसने ३०००० हिन्दुओं को कत्ल कर डाला। [वही पृष्ठ १००]

मुहम्मद तुगलक, जिसके नाम पर दिल्ली की एक सड़क का नामकरण किया गया है, १३१५ ई० में गद्दी पर बैठा। उसके अत्याचार इतने असह्य थे कि उनके विरोध में स्वयं उसका भतीजा बहाउद्दीन विद्रोही बन बैठा।

शीघ्र ही भतीजे को जेल में डाल दिया गया। "सुलतान का अभागा भतीजा अपने चाचा के सामने लाया गया, जिसे हरम में औरतों ने बहुत बेइज्जत किया, बड़ी बेरहमी से उसकी हत्या की गयी उसका मांस सारे परिवार को खाने के लिए परोसा गया।" [पृष्ठ १३१]

तैमूर ने अपनी आत्मकथा 'मलफसात-इ-तैमूरी' में कहा है कि उसके शिविर में एक लाख हिन्दू कैद थे। उसके हुक्म से "इस्लाम के सिपाहियों ने अपनी तलवारें खींच लीं और कैदियों को तुरन्त मौत के घाट उतार दिया।" [पृष्ठ १४९, वही]

तैमूर के दिल्ली पर हुए आक्रमण का वर्णन करते हुए फारसी इतिहासकार यजदी कहता है "हिन्दुओं के सिरों से घण्टाघर ऊंचे किये गये थे और उनके शव चीलों-गिद्धों के खाने के लिए डाल दिये गये थे।" [वही, पृष्ठ १४९]

तैमूर मेरट और हरिद्वार गया और उसके बाद मार्च १३९९ में, नगरकोट और जम्मू होता हुआ स्वदेश लौटा। रास्ते में उसने सैकड़ों गांवों-घरों में आग लगाई; उन्हें लूटा। इसके बारे में कहा जाता है कि यह मुस्लिमों के लिए उतना ही जायज है, जितना माँ का दूध। [वही, पृष्ठ १५०]

मुस्लिम शासकों ने व्यभिचार को हद तक पहुंचा दिया। मालवा के शासक गयासुद्दीन के हरम में १५००० औरतें थीं। उसके बेटों में से ही किसी ने उसे जहर भी दिया था। [पृष्ठ १५७, वही]

मीनाक्षी देवी के नगर मदुरा पर गयासुद्दीन देमघानी नामक एक मुस्लिम दैत्य शासन करता था। यह 'हिन्दुओं का बहुत बड़ा हत्यारा' नाम से कुख्यात था। इब्नबतूता (इतिहासकार) ने इसकी साक्षी संजोयी है कि कैसे इस सुल्तान ने बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का सफाया किया। और अस्सी वर्षीय वीर बल्लाल तृतीय को पराजित करने के बाद उसका गला घोंट दिया; खाल खींच ली, जिसे मदुरा की दीवालों पर १३४२ ई० में टाँग दिया गया। [पृष्ठ १७०, वही]

भारत में मुगल राज्य के स्थापक बाबर के 'न्याय' का एक आश्चर्यजनक नमूना। समन काजी ने शिकायत की कि मोहन मुन्दहिर नामक एक हिन्दू ने उसकी जागीर लूट ली है और उसके लड़के को मार डाला है। बाबर ने अली-कुली हमदानी को तीन हजार घोड़े देकर मुजरिम को पकड़ने का हुक्म दिया। इसके बाद, इतिहासकार लिखता है, "लगभग एक हजार मुन्दहिर कत्ल कर दिये गये और एक हजार आदमी, औरतें और बच्चे कैद कर लिए गये। नरमेध इतना बड़ा था कि छिन्न नरमुण्डों का एक टीला खड़ा हो गया। मोहन जिंदा पकड़ कर ले जाया गया। कैदी जब दिल्ली लाये गये तो सारी स्त्रियाँ मुगलों को सौंप दी गयीं। मोहन को छाती तक जमीन में गाड़ दिया गया। और फिर तीरों से छेद-छेदकर उसे मार डाला गया। [पृष्ठ २३२ वही]

इतिहासकार कहता है, बाबर अपने सारे गुणों के बावजूद एक मुसलमान बादशाह था। जब उसने 'पागानों' (इस नाम से वह हिन्दुओं को पुकारता था) को मार डाला, तो उनकी खोपड़ियों का टीला बनाया, ताकि उसके रूढ़िवादी अनुयायी आतंकित रहें। [पृष्ठ २३५, वही]

गुजरात पर हमले के दौरान सुहराब बेग के द्वारा काटे गये इख्तियारुल मुल्क का शिर लेने के बाद अकबर ने हुक्म दिया कि युद्ध में जो मारे गये हैं, उनके

सिरों से एक पिरामिड तैयार किया जाये। ये सिर संख्या में दो हजार थे। [दि हिस्ट्री ऑव इंडिया–इलियट और डाउसन, पृष्ठ ३६८, भाग–५]

बादशाह ने कत्ले-आम का हुक्म दे दिया। जिसका परिणाम था तीस हजार लोगों की मौत। [विन्सेण्ट स्मिथ, 'अकबर दि ग्रेट मोगल, पृष्ठ ८९-९०] अकबर के लम्बे शासन काल में ऐसे सैकड़ों क्रूर हत्याकाण्ड हुए और चूंकि भारत में हिन्दू प्रमुखता से रहते हैं, इस लिए उसके शिकार हिन्दू ही हुए।

विण्सेन्ट स्मिथ जैसे इतिहासकार ने जिसने अकबर की बहुत तारीफ की है–कहा है कि, "अकबर का हरम इतना बड़ा था कि उसमें एक पूरा कस्बा समा जाये। उसमें ५००० स्त्रियाँ थीं [वही, पृष्ठ ३५९]।

महमूद गजनवी ने सोने की राशि इकट्ठा करने के लिए भारत पर बार-बार हमले किए–१००८ ई० में उसने नगरकोट का प्राचीन मन्दिर भग्न किया। १०१४ ई० में उसने थानेश्वर को लूटा। १०१८ ई० में उसने मथुरा पर आक्रमण किया। १०१९ ई० में इस इस्लामी हमलावर ने कन्नौज पर हमला किया और अपने पीछे एक धूपदानी भी नहीं छोड़ी। किसी हिन्दू महिला के कानों में सोने का एक आभूषण मात्र बचा। १०२५ ई० में महमूद ने सोमनाथ को लूटा।

गजनी के इस महमूद ने अकेले कन्नौज में १०,००० मन्दिर लूटे और नष्ट किए। यह लुटेरा भारत से अकथनीय खजाना ले गया। उसके निजी दरबारी इतिहासकार उतबी के अनुसार केवल नगरकोट में, बहुत से ऊँटों की पीठों पर इतने खजाने लादे गए थे, जितने उन्हें मिले। उन्हें ले जाने में अफसरों की नींद और आराम हराम हो गया था। सरकारी मुहर लगे सिक्कों की संख्या ही अकेले सत्तर हजार दीनार थी। सोने और चांदी का वजन ७ लाख चार सौ पौण्ड था।

इसके ७३१ वर्ष बाद, जब महमूद गजनवी की याद भी धूल में मिल चुकी थी, नादिरशाह ने उसी बर्बरता का परिचय भारत को फिर से दिया। नादिर शाह ईरान के वर्तमान शाह, जो पाकिस्तान का दोस्त है और भारत का दुश्मन, का खूंखार पूर्वज था। महमूद के ७३१ वर्ष बाद नादिरशाह नें जब भारत पर हमला किया तो इस्लाम के ७ लाख अनुयायियों ने क्रूरतापूर्वक भारत की धन-सम्पत्ति और औरतों को लूटा—पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक। एक भी गांव ऐसा न बचा, जहां लूट-पाट और कत्ल न किए गए हों।

इतवार, ११ मार्च १७३९ को नादिरशाह ने दिल्ली को अपनी तेग के नीचे दबोच लिया। ९ बजे से २ बजे तक केवल ५ घंटों में इतिहासकार फ्रेसर के अनुसार नादिरशाह ने २ लाख भार-

तीर्थों को मौत के घाट उतार दिया; सत्तर करोड़ रुपया लूट लिया, अपने साथ एक करोड़ रुपये के मूल्य का मयूर सिंहासन (तख्ते-ताऊस), १०० हाथी, सात हजार घोड़े, दस हजार ऊँट, १०० हिजड़े, १३० लेखक, २०० सोनार, ३०० मिस्त्री और राजगीर, १०० पत्थर काटनेवाले, और २०० बढ़ई फारस ले गया। ३४८ वर्षों में संग्रहीत धन एक दिन में फारस को ले गया। ३४८ सालों में संग्रहीत धन जब एक दिन में ले जाया गया तो फिर कितना धन १००० सालों में मुस्लिम हमलावर ले गए होंगे यह कौन बता सकता है?

यही वह कारण है, जिससे भारत गरीब हुआ। १००० सालों में मुस्लिम हमलावर भारत का सारा धन लूट ले गए। और जो बचा, वह २०० सालों में अंग्रेज लूट ले गए।

"१६ अगस्त १९४६ को, जो मुस्लिम लीग का 'डायरेक्ट ऐक्शन डे' था, कलकत्ता में भारी मार-काट मच गई थी।

अक्तूबर १९४६ में बंगाल के दो मुस्लिम बहुल जिलों (नोआखाली और तिप्पेराह) के मुस्लिम अपने हिन्दू पड़ोसियों पर टूट पड़े—भयंकर हत्यायें कीं और दूसरे अकथनीय वीभत्स कृत्य किए। ('दि पार्टीशन आफ इण्डिया—१९४७"—जी० वी० सुब्बारावकृत, पृष्ठ ६)।

पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं पर फटा यह कहर इतना भयावह था कि अपने को धर्मनिरपेक्ष कहनेवाली गांधीवादी कांग्रेस की आंखों में भी आंसू आ गए। २३ अक्तूबर १९४६ को दिल्ली में कांग्रेस कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसका कुछ अंश इस प्रकार है—

"पूर्वी बंगाल में इस समय जो कुछ हो रहा है, उसके कारण जो दर्द और दुःख है—समिति के लिए उसे व्यक्त कर पाना आसान नहीं। पत्रों में जो सूचनायें छपी हैं, और जनसेवकों के जो वक्तव्य आये हैं उनसे मध्यकालीन पशुता के दृश्य ताजे हो जाते हैं और हर समझदार आदमी लज्जा और क्रोध से भर उठता है।

"हिंसात्मक वारदातें और स्त्रियों का अपमान, जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन, लूट-पाट, कत्ल, जिस भारी परिमाण में, पूर्व-निश्चित, सुनियोजित-सुसंगठित ढंग से ऐसे लोगों के द्वारा हुए हैं जिनके पास राइफलें और अन्य अग्निवर्षक हथियार प्रायः बरामद हुए हैं।

"समिति यह अनुभव करती है कि पशुता का यह विस्फोट मुस्लिम लीग के द्वारा विगत कई वर्षों से अमल में लाई जा रही घृणा और द्वेष की राजनीति का सीधा परिणाम है। हिंसा की धमकियाँ तो पिछले कुछ महीनों में रोजमर्रा की आम बात बन गयी थीं। ("महात्मा", भाग ७, डी० जी० तेण्डुलकर कृत पृष्ठ २८४)

कांग्रेस कार्यसमिति के इस प्रस्ताव का मसविदा बनाया था पण्डित जवाहर-

लाल नेहरू ने; उन इन्दिरा गांधी के पिता ने, जो आज कहती हैं कि मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक नहीं है।

पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं का यह हत्याकाण्ड इतना गंभीर हो गया कि ६ नवंबर १९४६ को महात्मा गांधी नोआखाली गये—मुस्लिमों की हिन्दू-रक्त की तृष्णा और हिन्दू औरतों के प्रति वासना को शान्त करने के लिए।

"१९४९ में, ढाका के कोरोनेशन पार्क में, राजनीतिक बन्दियों की रिहाई के लिए महिलाओं की एक सभा आमंत्रित थी......लेकिन ज्योंही एक प्रसिद्ध राजनीतिक कार्यकर्त्री श्रीमती निवेदिता नाग की अध्यक्षता में सभा प्रारंभ हुई, मुस्लिम गुण्डों के एक भारी झुण्ड ने पार्क को घेर लिया; बाहर का कोई व्यक्ति भीतर नहीं जा सकता था, गुण्डों ने स्त्रियों पर हमला कर दिया—यहां तक कि मुस्लिम औरतों को भी नहीं छोड़ा।

"पहले तो मुस्लिम गुण्डों ने महिलाओं को गालियां दीं और फिर वे उनपर टूट पड़े। साड़ियां और ब्लाउज फांड़ डाले। कामांध मुस्लिमों ने स्त्रियों को पूरी तरह नग्न कर दिया। स्त्रियों की चीख-पुकारें सारे वातावरण में भर गयीं। (ज्योतिसेन गुप्त, 'एविलप्स ऑफ ईस्ट पाकिस्तान, पृष्ट ८)।

एक प्रतिष्ठित हिन्दू महिला श्रीमती इड़ा मित्रा, जो एक स्कूल में प्रधानाध्यापिका थीं, के खिलाफ राजद्रोह करने का आरोप लगाया गया था। राजशाही न्यायालय के मैजिस्ट्रेट के सामने उन्होंने निम्नलिखित बयान दिया था--

"७ जनवरी १९५० को मुझे गिरफ्तार किया गया और अगले दिन नचोल ले जाया गया। रक्षा-पुलिस ने रास्ते में मुझ पर प्रहार किया।

सब इंस्पेक्टर ने मुझे नंगी कर देने की धमकी दी यदि मैंने एक सब इंस्पेक्टर की हत्या के सिलसिले में (बिना किए ही) अपराध न स्वीकारा।

जैसा कि, मुझे कहना है, मेरे सारे कपड़े उतार लिए गए और बिल्कुल नंगी हालत में, बगल की एक कोठरी में कैद कर दिया। न तो मुझे खाना दिया गया और न ही एक बूंद पानी।

"उसी दिन, शाम को सिपाहियों ने, सब इंस्पेक्टर की उपस्थिति में ही, बन्दूक के कुन्दों से मारना शुरू कर दिया, इसके बाद मेरे कपड़े मुझे लौटा दिये गए और लगभग १२ बजे रात को मुझे कोठरी के बाहर, सम्भवत: सब इंस्पेक्टर के निवास पर ले जाया गया।"

"उस कमरे में, जहां मुझे ले जाया गया था, मुझसे अपराध स्वीकार कराने के लिए उन्होंने अपने पाशविक तरीके इस्तेमाल किए। मेरे पैरों को मोटे बांसों के नीचे दबाया गया, मेरे चारों ओर जो लोग थे, वे कह रहे थे—कि मेरा नियंत्रण "पाकिस्तानी इन्जेक्शन से किया जा रहा था।"

"इसके बाद उन्होंने एक तौलिए से मेरा मुंह बांध दिया, उन्होंने मेरे बाल

नोचे, लेकिन इतने पर भी जब वे मुझसे कुछ नहीं कहलवा सके, मुझे वापस कोठरी में सिपाहियों द्वारा ले जाया गया, क्योंकि मैं स्वयं चल नहीं सकती थी।

कोठरी की बगल में, सब इंस्पेक्टर ने सिपाहियों को चार गर्म अंडे लाने का हुक्म दिया और कहा—"अब वह बतायेगी।" इसके बाद चार या पांच सिपाही मुझे जमीन पर गिरा कर मेरी पीठ पर चढ़ बैठे। उनमें से एक ने मेरे गुप्तांग में गर्म अंडा डाल दिया। मैं दाह और दर्द से चीख कर अचेत हो गयी।

९ जनवरी को सबेरे जब मुझे होश आया, सब इंस्पेक्टर और कुछ सिपाही मेरी कोठरी में आए और मुझे जूतों से ठोकर मारने लगे। इसके बाद मेरी दाहिनी एड़ी में एक बड़ा नाखून गड़ाया गया। उस समय मैं अर्धचेतन थी और उसी स्थिति में सब इंस्पेक्टर को यह बड़बड़ाते सुना—"अगली रात में हम फिर आ रहे हैं और यदि तुमने तब भी नहीं बताया तो एक-एक करके सारे सिपाही तुम्हारे साथ बलात्कार करेंगे।

रात में सब इंस्पेक्टर और उसके सिपाही वापस आये और धमकी पुन: दोहरायी गयी। लेकिन जैसे ही मैंने कहने से इन्कार किया कि तीन या चार लोगों ने मुझे दबोच लिया और उनमें से एक सिपाही वस्तुत: बलात्कार करने लगा। (वही, पृष्ठ ७२)।

विगत २४ सालों में पाकिस्तानी मुस्लिमों ने लगभग ५० लाख हिन्दू मार डाले, ३० हजार हिन्दू नागरिकों को बेइज्जत किया, एक लाख बीस हजार हिन्दू बच्चों की नृशंसतापूर्वक हत्या की गई और ७ लाख से अधिक हिन्दुओं का बलात् धर्म-परिवर्तन किया।

श्रीनगर की हजरतबाल मस्जिद से पैगम्बर साहब का बाल जब चोरी चला गया था तो संसद सदस्य ए० सी० गुह के अनुसार पाकिस्तान में मुस्लिमों ने बीस हजार हिन्दुओं का कत्ल कर दिया था। (टाइम्स आफ इण्डिया, १३-२-१९६४)।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में भुट्टो द्वारा प्रस्तुत पाकिस्तान के जंगली आरोप का जवाब देते हुए भारत के प्रतिनिधि श्री छागला ने कहा था—

"यह आश्चर्य की बात है, कि स्वयं कश्मीर में बहुसंख्यक मुस्लिमों ने यह नहीं सोचा था कि मोहम्मद साहब के बाल चुराने में किसी हिन्दू का हाथ हो सकता है, तब १५००मील दूर पाकिस्तान में मुस्लिम हिन्दुओं के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे थे और उन्हें कश्मीरमें मुस्लिम-विरोधी गतिविधियों का संचालक बता रहे थे।" (७-३-१९६४ टाइम्स आफ इंडिया) हिन्दुओंके मारे जाने के बाद पूर्वी बंगाल के ५ लाख, ५७ हजार नौ सौ बीस हिन्दू जनवरी १९५३ से मार्च १९५६ के बीच भारत आये ('एक्लिप्स आफ ईस्ट पाकिस्तान, ज्योति सेन गुप्त, पृष्ठ १४२)।

१९६४ में हुए दंगों के बाद १९६४ से ३१ मार्च १९६७ तक ४९७७९८ हिन्दू पूर्वी बंगाल से भारत आये। यह

संसद में एक प्रश्न के उत्तर में पुनर्वास मन्त्री श्री ललितनारायण मिश्र ने स्पष्ट किया था।

ईरान में मुस्लिम तानाशाह बार-बार सड़क के एक ओर सैकड़ों लोगों को गोली से उड़ा देते हैं।

ईरान में मुस्लिम शाह बहुत छोटे-छोटे अपराधों पर लोगों का कत्ल कर देता है। सऊदी अरेबिया में, मि० सी० डब्लू० ग्रीनिज (डायरेक्टर ऐण्टी--स्लेवरी सोसायटी) के अनुसार दास-प्रथा बढ़ती जा रही है। एक आकर्षक और जवान लड़की ५२०० रुपये में खरीद सकते हैं, जबकि जवान आदमी केवल १९५० रुपये में ही खरीद सकते हैं।"

सऊदी अरेबिया में गुलामों के साथ बहुत क्रूरता का व्यवहार किया जाता है। हाल ही में १२ गुलाम बचने के लिए निकले। सरकारी सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया। ९ का शिरच्छेद उसी जगह, घटना-स्थल पर ही कर दिया गया, तीन को वापस ले जाया गया और जनता के बीच उन्हें एक नीग्रो गुलाम द्वारा रियाध के राजमहल के अन्दर फांसी दे दी गयी।

एक अंग्रेज अधिकारी, जिसने सऊदी अरेबिया में अपनी आंखों से ये अत्याचार देखे, कहा—"गरीब औरतों के साथ बलात्कार एक प्रकार से उनकी जिन्दगी का अंग बन चुका है। उनके बच्चे उनसे छीन लिए जाते हैं। गांव के गांव नष्ट कर दिये जाते हैं।'

अरेबिया का राजा सऊद अपने विरोधियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करता। वह उनके पेट में जबर्दस्ती पानी भर देता था, मूत्रेन्द्रियां तार से बांध देता था और उसके बाद ही उन्हें उल्टा लटका देता था। वे तब तक लटके रहते थे जब तक कि मूत्र-थैली फट जाने से उनकी मृत्यु नहीं हो जाती थी।

मुस्लिम शासकों का सर्वत्र यही व्यवहार रहा है और जब उन्हें कत्ल करने के लिए अमुस्लिम नहीं मिलते, तो वे दूसरे मुसलमानों को ही मारने लगते हैं, जैसे कि पश्चिमी पाकिस्तानियों ने अप्रैल १९५३ में, सर जफरुल्ला खां के अनुयायी ५० हजार अहमदियों को मार डाला था।

१९५८ में तथाकथित 'बलूची विद्रोह' को दबाने के लिए जनरल अयूब खां के नेतृत्वमें चलने वाली पाकिस्तानी सरकार ने सेना को बलूचियों के घरों पर हमला करने का हुक्म दे दिया था, और छह मास तक पाकिस्तानी फौज के १५ हजार जवान गोली, कारतूस, बम और हथगोलों का प्रयोग बिना हिचक के करते रहे थे। सैकड़ों निर्दोष लोग फौज के मातहत कैद कर दिए गये थे। सेना के कैम्पों में अत्याचार-कक्ष बन गये थे, जहां कैदी उल्टे लटका दिए जाते थे, उनके सिर पानी से भरे डोलों में डुबा दिए जाते थे.. जब तक कि वे अचेत नहीं हो जाते थे। दूसरों को बालों से लटका दिया जाता था और उनके पैरों के नीचे आग सुलगा दी जाती थी। (ज्योति सेन गुप्त कृत 'एक्लिप्स आव ईस्ट पाकिस्तान', पृष्ठ ४३२)।

वही इतिहास पूर्वी बंगाल में आज फिर पाकिस्तानी तानाशाह दुहरा रहे हैं।

(पृष्ठ १४ का शेष)

में आ गये हैं। आज कोई असम में है, कोई त्रिपुरा में और कोई बंगाल में। बंगला देश की जनता नेतृत्वविहीन हो गयी। पाकिस्तानी सेना ने सब प्रकार की क्रूरता कर पूर्वी बंगाल के विद्रोह को कुचल डाला। २५ मार्च से १५ अप्रैल तक जो शरणार्थी भारत आये हैं उनमें हिन्दू, मुसलमान और ईसाई, सभी शामिल थे। परन्तु उसके पश्चात् बहुत बड़ी संख्या में हिन्दुओं को आना पड़ा है। समाचार पत्रों में यह संख्या लगभग ८० लाख बतायी गयी है, एक करोड़ से भी अधिक शरणार्थियों के आने की आशंका है। कहा जा चुका है कि ये सम्पूर्ण शरणार्थी हिन्दू हैं। पूर्वी बंगाल में एक करोड़ हिन्दू थे। इन्हीं के समर्थन से अवामी लीग विजयी हुई थी। पाकिस्तान सरकार ने इन एक करोड़ हिन्दुओं को बाहर निकालने की योजना बनायी। वहाँ युवकों की हत्यायें की गयीं। अनेक युवतियों को पश्चिमी पाकिस्तान भेज दिया गया। शेष वयोवृद्ध नर-नारी भारत भागकर आने को बाध्य किये गये।

इस शरणार्थी समस्या के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक पहलू भी हैं। भारत सरकार ने बजट में ६० करोड़ रुपये इसके लिए निर्धारित किये हैं, जबकि शरणार्थियों पर ३ करोड़ रु० प्रतिदिन खर्च हो रहा है। इस प्रकार सम्पूर्ण बजट २० दिन का हुआ। अब सरकार शरणार्थियों के लिए कुछ और धनराशि निर्धारित करने का विचार कर रही है।

आज बंगला देश से लाखों शरणार्थी भारत आ रहे हैं। उनका सब कुछ लुट गया है। हफ्तों पैदल चलकर, भूखे-प्यासे रहकर वे भारतीय सीमा में प्रविष्ट होते हैं। उनकी मानसिक स्थिति की कल्पना सहज ही नहीं की जा सकती, उन्हें अपने परिवार के लोगों का पता नहीं। कौन मारा गया ? कौन जीवित है ? कौन कहाँ है ? इसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं। जहाँ कहीं उन्हें छाया, पानी दिखाई देता है, वहीं वे बैठ जाते हैं। १०-१५ दिनों का भूखा और पैदल यात्रा से त्रस्त ऐसा ही एक दल सड़क के किनारे एक मकान के कम्पाउण्ड में घुस गया। उस मकान में रहने वाले हेड मास्टर ने गुस्से में आकर उन्हें निकल जाने को कहा। उन भूखे-नंगे लोगों को भी क्रोध आ गया। मानसिक सन्तुलन खराब था ही। उनमें से एक के पास छुरा था। उसने हेडमास्टर की वहीं हत्या कर दी। यद्यपि उसने हत्या करके अपराध किया होगा, परन्तु सब कुछ छोड़कर, असहाय की तरह जिसे भाग कर आना पड़ता है, उसकी मानसिक स्थिति की कल्पना की जा सकती है। उनके अपने लोगों को गोली से भूना गया। जो बचे हैं, वे कालरा आदि महामारी के शिकार हो रहे हैं। जिस प्रकार से वे रह रहे हैं, उसे देखा नहीं जा सकता।

इन शरणार्थियों से जहां आर्थिक संकट उत्पन्न होता है, वैसे ही सामाजिक

संकट भी। राजनीतिक संकट स्पष्ट है ही। आज पश्चिमी बंगाल में कम्युनिस्टों के जो उपद्रव चल रहे हैं उसका कारण पाकिस्तान का निर्माण भी है। पूर्वी पाकिस्तान बनने पर दो तिहाई बंगाल पाकिस्तान में चला गया। एक तिहाई भाग भारत में रह गया। पूर्वी बंगाल से लगभग जो एक करोड़ हिन्दू उस समय आया था, वह छोटे से बचे बंगाल में रह नहीं पाता। अब वह २३-२४ साल का नौजवान है उसके पास का सब कुछ पाकिस्तान में छिन चुका था। पूर्व बंगाल से आया २०-२२ वर्षों की आयुवाला यह वर्ग ही पश्चिमी बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यकर्त्ता (कैडर) है। राज्य में लूटपाट, हिंसा, अराजकता उत्पन्न करने में यही वर्ग अगुआ है। आज जो अभाव ग्रस्त वर्ग आया है; जो छोटे-छोटे बच्चे आये हैं वे कालान्तर में बहुत बड़ा संकट उत्पन्न करेंगे। कम्युनिस्टों के रूप में प्रकट होंगे और देश के अन्दर आर्थिक-सामाजिक संकट उत्पन्न करेंगे।

अब एक अन्य दृश्य का भी विचार करें। बंगला देश के शरणार्थियों के सम्बन्ध में, असम में विकट परिस्थितियों का निर्माण किया जा रहा है। वहाँ यह अपप्रचार किया जा रहा है कि बंगाल से बंगालियों को असम में न आने दिया जाये। असमिया और बंगला भाषा-भाषियों में बड़ा झगड़ा चल रहा है। इसीलिए वे कहते हैं कि अगर बंगाल के बंगाली हिन्दू असम में आ गये तो यहाँ उनकी जनसंख्या बढ़ जायेगी। इस कारण शरणार्थी वहाँ न आयें, इसका अभियान चल रहा है। रफातुल्ला असली मुसलमानों का अगुआ बनकर यह नारा खुले आम-लगा रहा है कि बंगाल का आदमी असम में न आने पाये। 'असम फार आसामीज' (असम असमियों के लिए) का नारा लगाया जा रहा है। भोला-भाला हिन्दू समाज इस नारे के पीछे निहित साजिश नहीं समझ पाता। असम की नयी जनगणना के अनुसार अब वहां मुसलमानों की जनसंख्या ४२ प्रतिशत हो गयी है। यदि यही क्रम चलता रहा, तो वे बहुसंख्यक बन जायेंगे।

एक समय बंगाल में संघ कार्यकर्त्ता जब कहते थे कि 'हिंदुओं का संगठन होना चाहिए तो वहां के लोग कहते थे——"A Bengali Hindu is nearer to an Bengali Muslim than a Bengali Hindu to a non-Bengali Hindu."

अर्थात् एक बंगाली हिन्दू के लिए गैर-बंगाली हिन्दू की अपेक्षा बँगाली मुसलमान अधिक निकट है। आज असम में भी ऐसे ही कुछ 'विद्वान और बुद्धिमान' हिन्दू मिलते हैं, वे कहते हैं—"An Assamee Hindu is much nearer to a Assamee Muslim than a non-Assamee Hindu."

(अर्थात् एक असमी हिन्दू के लिए गैर असमी हिन्दू की अपेक्षा एक असमी

मुसलमान अधिक निकट है।) पाकिस्तान भी चाहता है कि असम एक मुस्लिमबहुल राज्य बने। पूर्व बंगाल से मुसलमानों की इसी कारण असम में घुसपैठ करायी जाती रही है। पाकिस्तान स्वयं अपने को 'इस्लामिक स्टेट' बनाने के आधार पर अपने यहाँ से सम्पूर्ण हिन्दुओं को निष्कासित कर रहा है। पूर्वी बंगाल में सभी हिन्दुओं को खदेड़कर ४९ मील लम्बी सीमा पर पश्चिमी पाकिस्तान के लोगों को बसाने की उसकी योजना है क्योंकि मुस्लिम राज्य पाकिस्तान में हिन्दू नहीं रह सकता।

पुरानी घटनाओं और इतिहास का यदि अवलोकन किया जाये, तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि विश्व भर में हिन्दुओं के लिए एक मात्र स्थान हिन्दुस्तान ही है। जहाँ कहीं के भी हिन्दुओं पर संकट आया है वे भागकर हिन्दुस्तान ही आये हैं।

१९४७ में पाकिस्तान बनते ही पश्चिमी पाकिस्तान का सम्पूर्ण हिन्दू भारत चला आया था। पूर्वी बंगाल से भी एक करोड़ हिन्दू चला आया था और एक करोड़ वहीं रह गया था। अब उसे भी वहाँ से निष्कासित कर दिया गया, वह हिन्दू विश्व के और किसी देश की ओर न जाकर केवल भारत की ओर भागा आ रहा है। पाकिस्तान का नागरिक होने के बाद भी वह धर्म से हिन्दू है। उसका हिन्दू होना ही इस नृशंस अत्याचार का एकमेव कारण है। यह सिद्ध हो गया कि पाकिस्तानियों के इस्लामी राज्य में हिन्दू नहीं रह सकता। पाकिस्तान ने अपने दृष्टिकोण के अनुसार हिन्दू समस्या का समाधान कर लिया। जो वहाँ बचे हैं, उनका धर्मान्तरण अथवा इस्लामीकरण करके वह हिन्दुओं का समूल नाश कर रहा है। इसके अतिरिक्त एक दूसरा सत्य भी सामने आ गया है। भारत के मुसलमान समाज की भूमिका इस देश के अनुकूल नहीं है। सर्व साधारण मुसलमान समाज का अन्तरंग पुनः प्रकट हो गया है। पाकिस्तान बनाने का श्रेय अपने देश में रहने वाले मुस्लिम समाज को ही है, इस कारण वह पाकिस्तान का विघटन नहीं देख सकता। इसी कारण वह पाकिस्तानी अत्याचारों का समर्थन भी करता है। कितना ही Muslim Brother hood, (मुस्लिम भाईचारे) की बातें क्यों न करे, परन्तु उसने पूर्वी बंगाल की जनता पर किये जुल्मों पर खेद तक व्यक्त नहीं किया। वह जानता है कि वहाँ अत्याचारों का वास्तविक शिकार हिन्दू हुआ है। उनके लिए उसके पास आंसू के दो बूंद भी नहीं हैं। फिलिस्तीन की एक मस्जिद (अलक्सा) जलने पर हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने बड़े-बड़े विरोध प्रदर्शन किये थे। इजराइल अरब युद्ध में अरब शरणार्थियों के लिए हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने धन एकत्र किया था किन्तु बंगला देश में पुलिस तानाशाहों के बर्बर अत्याचारों की निन्दा तक इस समाज ने

नहीं की। यहाँ का मुस्लिम समाज इस देश के राष्ट्र-जीवन के साथ एकरस हो चुका है—यही इस घटना का अर्थ है। विनोबा भावे जी को भी कहना पड़ा कि 'सीमान्त गाँधी आज मौन क्यों हैं ?" शेख अब्दुल्ला तथा अन्य मुसलमान शेख मुजीबुर्रहमान को 'काफिर' कहते हैं।

इस घटना से एक तीसरा सत्य भी व्यक्त हो गया है। विश्व में मानवता, बंधुता लोकतंत्र समाजवाद आदि के बड़े-बड़े नारे लगाकर दुनिया के बड़े देश केवल धोखा-धड़ी कर रहे हैं। वास्तव में वे न मानवता का विचार करते हैं, न लोकतंत्र का और न समाजवाद का। अपने स्वार्थों के लिए वे अत्याचारी और क्रूर तानाशाह तक का समर्थन कर सकते हैं, रूस मौन है और अमेरिका शस्त्रास्त्र देकर मदद कर रहा है तथा अन्य बड़े देश चुप हैं। श्री जयप्रकाशनारायण तथा अनेक मन्त्रियों ने विदेशों के दौरे किये। उन्हें एक ही अनुभव आया है कि भारत की चिन्ता किसी को नहीं है। विश्व में हम स्वयं अपनी सामर्थ्य पर ही खड़े हो सकते हैं। इन सत्य बातों से आँखें बन्द नहीं की जा सकतीं। इसका विचार करते समय देश में प्रखर राष्ट्र-भक्ति का भाव जगाना होगा सम्पूर्ण समाज के अन्दर एक विजिगीषु वृत्ति का जाग-रण करना होगा। तभी समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकेगा। वर्तमान सम-स्याओं का समुचित हल न निकलने का प्रमुख कारण अपने देश में विशुद्ध राष्ट्र-भक्ति का अभाव होना है। इस प्रखर राष्ट्रभक्ति का विचार करते समय अन्ततोगत्वा हिन्दू पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है, क्योंकि संकटों के समय संघर्ष करनेवाले हिन्दू ही होंगे। विजगीषु वृत्ति लेकर संकटों का मुकाबला करने से हमारी विजय निश्चित है।

५० करोड़ हिन्दुओं का यह एक अति विशाल समाज है। हमारा पूर्व इतिहास पौरुष और पराक्रम का इतिहास है। दुर्भाग्यवश देश का नेतृत्व राष्ट्रभक्ति तथा विजिगीषु वृत्ति से शून्य है। इसी कारण वे किसी भी समस्या का हल निकाल नहीं पाते। यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में प्रखर देशभक्ति का जागरण करके ही समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।

अपने देश की वर्तमान समस्याओं का समाधान ढूंढ़ते समय हमें विभाजन एवं पाकिस्तान निर्माण की पार्श्वभूमि का भी विचार करना होगा। १९४७ के पूर्व दुनिया के अन्दर पाकिस्तान नाम की कोई चीज नहीं थी, किन्तु भारत की स्वाधीनता के समय अपने देश का एक भाग काट कर पाकिस्तान का जन्म हुआ। इसके पीछे कई कारण थे। प्रथम एवं प्रमुख कारण तो अंग्रेजों की कर नीति है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् उन्होंने समझ लिया था कि इतने बड़े देश पर राज्य करते रहना अब सम्भव नहीं है। उनको इस देश की भूमि से कोई प्यार तो था नहीं। वे तो

यहाँ लूटने के लिए आये थे राज्यकर्ता बनने के बाद चलते समय उन्होंने सोचा कि इस देश को दुर्बल करके ही चला जाये। अपनी इस योजना के अन्तर्गत इस देश के ऐसे हिस्से कर दिये जिससे कि यह शक्तिहीन एवं दुर्बल बना रहे। हमारे देश के लिए कुछ-न-कुछ समस्यायें निर्माण होती रहें यह अंग्रेजों के एक बहुत बड़े षड्यंत्र का अंग है।

पाकिस्तान निर्माण में दूसरा प्रमुख हाथ इस देश में रहनेवाले मुस्लिम समाज का है। ये लोग यहाँ के राष्ट्र-जीवन के साथ एकरूप नहीं हो सके हैं। उन्होंने मुस्लिम लीग का नेतृत्व स्वीकार कर लिया और इस राष्ट्र-जीवन से पृथक रहने की अपनी इच्छा और योजना की पूर्ति हेतु अंग्रेजों के साथ मिलकर पाकिस्तान निर्माण के सतत प्रयत्न किये।

परन्तु इसके बाद भी इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि अपने देश के उन नेताओं का भी पाकिस्तान के निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है, जिन्होंने विभाजन स्वीकार करके उसे मान्यता प्रदान की। इसके अनेक कारण हैं, परन्तु सर्वप्रमुख कारण यह है कि अपने देश के तत्कालीन नेता बूढ़े हो गये थे। वयाधिक्य के कारण उनमें थकान आ गई थी। ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष करने की क्षमता समाप्त हो गयी थी। इन बातों को अनेक वर्षों के जेल यात्री तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल (केन्द्रीय) के एक सदस्य ने स्वयं अपनी पुस्तक में स्वीकार किया है। इन नेताओं ने सोचा कि यदि हमने पाकिस्तान को स्वीकार नहीं किया, तो फिर अपने इस जीवन में सत्ता प्राप्त नहीं हो सकेगी। सत्ता की लालसा में पाकिस्तान को स्वीकृति प्राप्त हो गयी। भारत के थके-हारे वृद्ध नेताओं से पाकिस्तान को मान्यता दिलाकर ब्रिटिश शासक भारत को सदा सर्वत्र दुर्बल बनाये रखने के अपने षड्यंत्र में सफल हो गये। इन परिस्थितियों में निर्मित पाकिस्तान के बारे में पुनः विचार करने की आवश्यकता हो गयी है। भारत को दुनिया में दुर्बल बनाये रखने के लिए जिस पाकिस्तान की निर्मिति की गई, उसे क्या हम अब भी मान्यता देते रहें ? यह एक प्रमुख प्रश्न है।

तिब्बत का उदाहरण लें। एक स्वतंत्र देश था। चीन ने जब उसे हड़प लिया तो हमारे देश के नेताओं ने कहा कि तिब्बत तो चीन का ही प्रदेश है। ऐसे ही वे पाकिस्तान के सम्बन्ध में भी विचार करते हैं। परन्तु हमने यदि ऐसा विचार किया कि पाकिस्तान नाम का दुनिया में कोई देश नहीं है, विशेष परिस्थितियोंवश भारत का ही कुछ भाग आज दासताग्रस्त है—वह भाग मुस्लिम राजसत्ता के अधीन है और हमें उसे मुक्त कराना है—तो इसमें कोई भूल नहीं हो सकती। २४ वर्ष पूर्व इस मातृभूमि का उक्त अंग हमारी दुर्बलता के कारण अलग हो गया है—यही इसका एकमात्र अर्थ है।

१९४७ में जन्म होते ही पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया। फिर १९६४ में कच्छ पर तथा सन् १९६५ में कश्मीर पर दूसरा हमला किया। २३-२४ वर्षों के छोटे से कालखण्ड में तीन-तीन युद्ध हो गये। अब चौथे युद्ध की सिद्धता की जा रही है। छोटी-छोटी कितनी ही घटनायें होती रहती हैं। पिछले दिनों भारतीय विमान को लाहौर में जला दिया गया। पाकिस्तान ने भारत के समक्ष जो समस्यायें उत्पन्न की हैं, उनके कारण स्वाभाविक रूप से यह विचार उठता है कि क्या पाकिस्तान के साथ शांति से रहना संभव है? अपने देश के नेतागण कहते हैं कि हमें पाकिस्तान के साथ शांति से रहना ही पड़ेगा। इसका आधार केवल उनकी यह धारणा मात्र है कि "Pakistan is a settled fact" पाकिस्तान एक पूर्ण निश्चित तथ्य है। मस्तिष्क में ऐसा विचार होने के कारण ही पाकिस्तान जब कभी समस्यायें उत्पन्न करता है तो उससे समझौते की बातें करने के प्रयत्न होते हैं। १९६५ के युद्ध के बाद रूस के कारण भारत को ताशकन्द समझौता करना पड़ा। देश के नेताओं ने कहा था कि 'ताशकन्द स्प्रिट' से दोनों देशों की समस्यायें सदा-सर्वदा के लिए हल हो जायेंगी। परन्तु गत ५ वर्षों के अनुभव से यह भ्रम दूर हो जाना चाहिए कि पाकिस्तान के साथ शान्ति से रहा जा सकता है। बंगला देश इसका सबसे ताजा उदाहरण है।

पाकिस्तान ने भारत के साथ शत्रुता एवं विद्वेष ही उत्पन्न किया है। उसकी घोषणा है कि पाकिस्तान एक इस्लामी राज्य है (Pakistan is Islamic State) इसके अनेक अर्थ हैं। एक कल्पना यह है कि दुनिया दो वर्गों में विभक्त है। एक है 'दारुल हरब' दूसरा 'दारुल इस्लाम।' एक इस्लाम का जगत है, और दूसरा गैर इस्लाम का। जो दारुल हरब है उसे दारुल इस्लाम बनाना है। इसी प्रवृत्ति के कारण जहाँ-जहाँ इस्लामी राज्य हो जाते हैं वहाँ गैरइस्लामी समाज या तो समूल नष्ट कर दिये जाते हैं या उनका धर्मान्तिरण कराया जाता है।

पश्चिमी पाकिस्तान से हिन्दुओं को विभाजन के समय ही निकाल दिया गया था। पूर्वी बंगाल से भी उस समय एक करोड़ हिन्दू भागकर आये। १९५० में इससे कुछ ही कम आये थे। अब पूर्व बंगाल के विद्रोह की आड़ में वहां के शेष एक करोड़ हिन्दुओं को भी निकाला जा रहा है। इस समय जो शरणार्थी भारत आ गए हैं वे कभी भी वापस नहीं जा सकते। 'इस्लामिक स्टेट' का अर्थ ही यह होता है कि वहाँ मुसलमान को छोड़कर कोई और रह नहीं सकता। दुनिया के अन्य इस्लामी देशों में भी इसी प्रकार की स्थितियाँ निर्मित हुई हैं। जहाँ-जहाँ इस्लाम धर्मावलम्बी हैं वहाँ अन्य धर्मों के लोगों का जीवन दुष्कर है।

अनेक लोग यह सोचते हैं, कि मुसलमानों की राजनीति अल्पसंख्यकों की राज-

नीति है। अल्पसंख्यक होने के कारण वे भयभीत होकर रहेंगे परन्तु यह बात सत्य नहीं है। दुनिया में इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलेंगे। रोडेशिया में गोरे (अंग्रेज) अल्पसंख्यक हैं और अफ्रीका में बहुसंख्यक हैं परन्तु वहाँ अल्पसंख्यक (गोरे) बहुसंख्यकों पर हावी हैं। अफ्रीकियों पर राज्य करना वे अपना अधिकार समझते हैं। उसी प्रकार यहाँ के मुस्लिम समाज के दिमाग में आज भी यह विचार विद्यमान है कि इस देश के अन्दर कभी उन्होंने राज्य किया था। राज्य करने का उनका अब भी अधिकार है। वे अपने को कभी शासक के रूप में रहनेवाले मुगलों एवं पठानों के वंश कहते हैं। यहाँ के हिन्दुओं को वे राज्य चलाने के योग्य नहीं समझते। उनके सामने इस सम्पूर्ण देश को 'दारुल इस्लाम' बनाने का लक्ष्य है। यही उनकी आकांक्षा तथा आन्तरिक भावना है। इसी कारण उन्होंने नारा दिया है—"हँस के लिया है पाकिस्तान—लड़के लेंगे हिन्दुस्तान।"

दुनिया के अन्दर जो भी भारत के शत्रु हैं, पाकिस्तान ने उन्हें मित्र बना रखा है। चीन से उसके अत्यधिक निकट सम्बन्ध हैं। बागी नागा और मिजो जब पकड़े जाते हैं तो पता चलता है कि उनको पाकिस्तान ने ट्रेनिंग और शस्त्रास्त्र दोनों दिए हैं। अपने देश की एकता को छिन्न-भिन्न करने वाले जो भी तत्व हैं, पाकिस्तान उनकी सहायता करता है। पाकिस्तान-निर्माण के समय यहाँ के मुस्लिम समाज का नेतृत्व मुस्लिम लीग ने ग्रहण किया था। अब सीधे पाकिस्तान उसका नेतृत्व कर रहा है। चुनाव में किसे मत देना चाहिए—इसके आदेश पत्रों द्वारा पाकिस्तान से आते हैं। इस देश का मुस्लिम समाज पिछले २४ वर्षों में अपने से अधिक पृथक् हो गया है। जब तक पाकिस्तान रहेगा, तब तक ऐसे ही चलता रहेगा। इसी प्रकार से समस्यायें भी खड़ी होती रहेंगी। पाकिस्तान के कारण ही हमें अधिकाधिक सुरक्षा-व्यय का भार उठाना पड़ा है। उसके कारण हमारी स्वतंत्रता एवं अस्तित्व को भी खतरा है। शत्रु को अपने घर में घुसाकर रखने से ऐसे ही परिणाम होते हैं; अतः पाकिस्तान के बारे में विचार करते समय इस ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए कि Pakistan is not a settled fact। उस समय भले अंग्रेजों के कारण पाकिस्तान को मान्यता दी गयी होगी परन्तु सदा से ही Akhanda Bharat is a settled fact है। इस प्रकार की अत्यन्त स्पष्ट कल्पना लेकर २४ वर्ष पूर्व हुए इस कृत्रिम विभाजन को समाप्त करना होगा। यही समस्या का वास्तविक और यथार्थ समाधान है।

इस देश में जब मुस्लिम राज्य का निर्माण हुआ था, हिन्दू समाज ने उससे दीर्घ संघर्ष किया। इतिहास साक्षी है कि उस संघर्ष में हम विजयी हुए। अंग्रेजों ने अपनी चालाकी के कारण इतिहास में अनेक बातें केवल अपने अनुकूल ही रखी थीं। ६०००

मील दूर के इस देश पर राज्य स्थापित करने के पश्चात् यहां के लोगों को मानसिक व वैचारिक दृष्टि से गुलाम बनाने के प्रयास किए। आधुनिक शिक्षा पद्धति के निर्माता मैकाले ने कहा था कि 'हम इस देश में ऐसी शिक्षा-पद्धति निर्माण करने जा रहे हैं जिसके कारण यहाँ के लोग रक्त एवं वर्ण से तो अपने देश के रहेंगे परन्तु उनके प्रेरणा केन्द्र हम (अंग्रेज) बनेंगे।'

अंग्रेजों ने अनेक प्रकार के भ्रामक प्रचार के साथ-साथ हमारे इतिहास को भी भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने प्राचीन कालखण्ड को हिन्दूकाल, दूसरे खण्ड को मुस्लिम काल तथा तीसरे खण्ड को ब्रिटिश कालखण्ड का नाम दिया। इनके द्वारा निर्मित इतिहास का अध्ययन करने से ऐसा लगता है कि पिछले १५०० वर्षों में १२०० वर्षों तक इस देश में मुसलमानों और अंग्रेजों का राज्य रहा। हिन्दू मानो सदैव गुलाम रहा है, परन्तु यह बात सर्वथा असत्य है। उदाहरण के लिए उन्होंने जिस सिकन्दर को विश्वविजेता, अद्वितीय सेनापति कहा और जो सोचता था कि 'यह विश्व बहुत छोटा है; सम्पूर्ण विश्व पर विजय पाने के बाद वह क्या करेगा ?' उस सिकन्दर की भी भारत की सीमा पर क्या हालत हुई ? विश्वविजेता सिकन्दर भारत-विजेता भी नहीं बन पाया। इस देश के ही लोगों ने उसकी सेना पर इतना प्रबल प्रहार किया कि उसे वापस लौटना पड़ा। भारतीय वीरों की चोट से आहत 'विश्वविजेता' कहा जानेवाला सिकन्दर एक वर्ष के अन्दर ही चल बसा।

इस देश में मुस्लिम आक्रमण ८ वीं शताब्दी में हुआ था। मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया। अरब प्रान्त में इस्लाम का उदय हुआ था। उसके मतावलम्बी सारी दुनिया को ताकत के बल पर दारुल इस्लाम बनाने की इच्छा लेकर निकले। सारे मध्य एशिया को पदाक्रान्त किया। उत्तरी अफ्रीका को रौंदा; स्पेन को कुचलते हुए, वह फ्रांस के किनारे तक पहुंच गया। ७५ वर्षों में सम्पूर्ण मध्य एशिया उत्तरी अफ्रीका पदाक्रान्त हो गया। किन्तु मुहम्मद बिन कासिम सिंध को भी अपने अधीन नहीं कर सका और न ही आगे बढ़ सका। इस भूमि में इतना सफल प्रतिकार हुआ कि फिर ३०० वर्षों तक कोई मुस्लिम आक्रमण नहीं हुआ। उसके बाद मुहम्मद गजनवी का आक्रमण हुआ। वह आक्रमण कुछ आगे तक बढ़ा परन्तु फिर भी भारत में इस्लामी राज्य स्थापित नहीं हो सका। १५० वर्षों की लम्बी कालावधि के पश्चात् मुहम्मद गोरी का हमला हुआ। इस बीच के काल में किसी ने भी भारत पर हमला करने का साहस नहीं किया था। इसका एक ही कारण है कि इस देश ने विदेशी हमलों का प्रबल प्रतिकार किया था। मुहम्मदगोरी के पश्चात् हमारे ऊपर एक के बाद एक वंश, कभी गुलाम वंश, कभी खिलजी वंश, कभी कोई तुगलक वंश, कभी मुगल वंश आक्रमण करते रहे। इन हमलों का भी

जो वृत्त है, वह कोई उनकी श्रेष्ठता या वीरता का नहीं है। अपने ही कुछ दोषों और, दिग्भ्रमित मनोवृत्ति के कारण हमें उनका दुष्परिणाम भुगतना पड़ा। सद्गुणों की भी विकृति होती है—इसी 'सद्‌गुण विकृति' के कारण पृथ्वीराज मुहम्मद गोरी को पराजित करने के बाद भी शरणागत होने पर छोड़ते रहे। १५-१६ बार गोरी पराजित होकर शरणागत बना। पृथ्वीराज उसे हर बार छोड़ते रहे। किन्तु एक बार विजयी होते ही गोरी ने पृथ्वीराज को नहीं छोड़ा। उसके धर्म में तो शरणागत की रक्षा करना था ही नहीं। इस प्रकार सद्‌गुण विकृति के कारण इस देश में मुस्लिम राज्य आगे बढ़ा, यह एक ऐतिहासिक तथ्य है।

जिस समय उत्तर भारत में मुसलमान राज्य स्थापित हो रहे थे; मन्दिर नष्ट किए जा रहे थे; हिन्दुओं का धर्मान्तरण कराया जा रहा था; महिलाओं का अपहरण होता था उस समय दक्षिण में हिन्दू राजे मन्दिरों का निर्माण करा रहे थे। वे अपने को बहुत सुरक्षित समझते थे। उनके मस्तिष्क में कभी यह कल्पना तक नहीं आयी, कि यह उत्तर का आक्रमण कल दक्षिण पर भी हो सकता है। अतः इसका प्रतिकार उत्तर में जाकर ही करना चाहिए। इतिहास बताता है कि अलाउद्दीन खिल्जी उत्तर को नष्ट करते हुए दक्षिण की ओर बढ़ा था। दक्षिण के हिन्दू राजा एक के बाद एक परास्त होते गये; मन्दिर ध्वस्त हुए। अनेक प्रकार के अत्याचार किए गये।

परन्तु इन आक्रमणों के विरुद्ध देश में सदैव संघर्ष चलता रहा। उस समय भी दक्षिण में, विजयनगर में एक सुखी और समृद्ध हिन्दू राज्य का निर्माण हुआ था। उसने देश के बहुत बड़े भाग को मुस्लिम शासन से मुक्त रखा। ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि यह सम्पूर्ण देश मुस्लिम राज्य के अधीन आ गया हो।

बाद में मुगलों का शासन आया। अकबर एक अति चतुर कूटनीतिज्ञ था। उसने सोचा कि इस देश के राजाओं की शक्ति का ही उपयोग करते हुए राज्य करना चाहिए। अतः उसने बड़े-बड़े राजाओं से विवाह-सम्बन्ध जोड़े। मानसिंह को अपना प्रमुख बनाया। उस समय देश के हिन्दुओं में मानसिक दासता इतनी आ गयी थी, कि वे मुस्लिम राज्य की सेवा करने, उसके लिए ही लड़ना अपना कर्तव्य समझने लग गए। मानसिंह ने राणाप्रताप को नष्ट करना ही अपना सबसे बड़ा उद्देश्य बना लिया। अपने देश के कुछ लोग ही स्वतंत्रता सेनानियों से लड़ते थे। उस काल के जगन्नाथ पंडित सरीखे विद्‌वान बड़े-बड़े मुसलमान शासकों का गुण-गान करते थे। चारों ओर यह भावना फैलाई गई कि 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा।' मनुष्य जब दास बन जाता है, तो उसमें हीनता के भाव जगते ही हैं। विदेशी राजाओं का गुणगान करना इसी मानसिक गुलामी का द्योतक है।

अन्त में, यहाँ औरंगजेब का राज्य आया। उसको लगा कि अब इस पूरे हिन्दू समाज को मुसलमान बना ही लूंगा। एक विशाल और दीर्घकालीन साम्राज्य का स्वप्न लेकर उसने मुसलमान राज्य का विस्तार करने, और हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने के प्रयत्न शुरू कर दिये। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने क्रूरतम अत्याचार किए। इतिहास में इन अत्याचारों को अतिरञ्जित कहा गया है, परन्तु आज बंगला देश में मुसलमानों द्वारा जो अत्याचार किए जा रहे हैं, उन्हें तो कोई अतिरंजित नहीं कह सकता। देशी और विदेशी पत्रकारों ने पूर्वी बंगाल के इन अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखा है। आज की बीसवीं शताब्दी में, यदि मुसलमान राज्य में ऐसे बर्बर अत्याचार हो सकते हैं तो औरंगजेब के काल के अत्याचारों को अतिरंजित कैसे कहा जा सकता है? उसी के काल में काशी विश्वनाथ का मन्दिर तोड़ा गया, हिन्दुओं पर जजिया कर लगा। साधु-सन्तों के मुख से यह निकलने लगा था कि हिन्दुओं का कोई रक्षक नहीं। भगवान भी हिन्दू धर्म को नहीं बचा सकते। स्नान, संध्या करने के लिए पवित्र जल तक दुर्लभ हो गया था। उस घोर निराशा के काल में भी शिवाजी जैसे पुरुष पैदा हुए। प्रखर राष्ट्रभक्ति के आधार पर अपने अन्तःकरण में विजय की अदम्य आकांक्षा लेकर उन्होंने कुछ मुट्ठीभर लोगों को खड़ा किया। इन लोगों ने अपने पराक्रम से २५-५० वर्षों के अन्दर ही इतने वर्षों से चलने वाला मुस्लिम राज्य नष्ट कर दिया। दक्षिण में जाने के बाद औरंगजेब को उत्तर की ओर लौटने की फुर्सत ही नहीं मिल सकी। इतना ही नहीं, तो दक्षिण में ही उसकी मृत्यु भी हो गयी। इस प्रकार मुस्लिम राज्य के विरुद्ध दीर्घकाल से चल रहा संघर्ष सफल हुआ और मुस्लिम राज्य समाप्त हो गया। दक्षिण में महाराष्ट्र के मराठों का, राजस्थान में राजपूतों का, उत्तर में सिखों का राज्य स्थापित हो गया परन्तु इन सब हिन्दू शक्तियों को सुसंगठित नहीं किया जा सका।

बाद में कुछ चतुर लोगों का आक्रमण हुआ। यहां के लोग अपने भोलेपन और 'सद्गुण-विकृति' के कारण इस चातुर्य पूर्ण ब्रिटिश कूटनीति को समझ नहीं सके। परन्तु उन्हें भी अपना साम्राज्य स्थापित करने में १०० वर्ष लग गये और इस बीच उन्हें भीषण सघर्ष करने पड़े। उन्हें १७५६ से लेकर १८५६ तक प्रमुख लड़ाइयाँ हिन्दू राजाओं से ही लड़नी पड़ीं। महाराष्ट्र के अन्दर मराठी राज्यसत्ता से, उत्तर में राजपूतों से, सिखों से युद्ध करने के बाद उनकी सत्ता स्थापित हुई। किसी मुस्लिम राज्यसत्ता से अंग्रेजों का संघर्ष नहीं हुआ। १८५६ में नानासाहब व महारानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में संघर्ष हुआ। स्वतंत्रता का क्रान्तिकारी संग्राम शुरू हो गया। यद्यपि अंग्रेजों ने इसे दबा दिया था, किन्तु विद्रोह का श्रीगणेश हो गया। महाराष्ट्र में क्रन्तिकारी वासुदेव बलवन्त फड़के ने संघर्ष का झण्डा उठा लिया। पंजाब में

कूका-विद्रोह हुआ। इस प्रकार देश में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के समय से ही, उसके विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गया था। ब्रिटिश शासकों ने सोचा कि इन विद्रोहों के कारण इस देश में हमारी सत्ता टिकी नहीं रह सकती। अतः देश में कोई संगठन, कोई वर्ग ऐसा खड़ा करना पड़ेगा जिसके माध्यम से इस देश के ब्रिटिश सत्ता-विरोधी गुप्त समाचार प्राप्त होते रहें। इसके साथ ही यहाँ की राजनीति के मार्गदर्शन का कार्य अंग्रेजों के ही हाथों में रहे। ऐसा विचार कर उन्होंने एक राजनीतिक संस्था को जन्म दिया, जिसे कांग्रेस कहते हैं। देश के भीतर ही भीतर जो असंतोष रहता था, क्रांतिकारियों के जो गुप्त मुक्ति-प्रयास चल रहे थे—उन सबकी जानकारी पाने के लिए अंग्रेजों ने कांग्रेस को 'सेफ्टी वाल्व' कहा। कुछ ही दिन बाद अंग्रेजों द्वारा निर्मित इस कांग्रेस में ऐसे लोग प्रविष्ट हो गये जिन्होंने हिन्दुस्थान की आजादी के लिए आन्दोलन शुरू किया। ब्रिटिश राज्यसत्ता ने पुनः अपने को सुरक्षित बनाने के सम्बन्ध में विचार किया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यहाँ मुस्लिम समाज बहुत बड़ी संख्या में है इसलिए पहला काम यह किया जाये कि इन मुसलमानों को कांग्रेस के साथ मिलने न दिया जाये। मुसलमानों को अलग से नेतृत्व देने के लिए अंग्रेजों ने उत्तर प्रदेश के सर सैय्यद अहमदखाँ को पकड़ा और इस बात का प्रयास कराया कि यहाँ का मुस्लिम समाज कांग्रेस के साथ न रहे और न इस देश के राष्ट्र-जीवन के साथ एकरस होने पाये। मुस्लिम समाज का पृथक् अस्तित्व निर्माण करने के प्रयत्न किए गये। इतिहास में इसे 'अलीगढ़ स्कूल ऑफ थॉट' कहा जाता है। सर सैय्यदअहमदखाँ ही अलीगढ़ विश्वविद्यालय के निर्माता हैं। इस देश के अन्दर पाकिस्तान निर्माण करने में, मुसलमानों का नेतृत्व करने में इसी विश्व-विद्यालय का सबसे प्रमुख हाथ रहा है। आज भी अपने देश में वह उपद्रवों का केन्द्र है। अंग्रेजों ने ही मुस्लिम समाज के अन्दर नये-नये नेता उत्पन्न किए। १९०६ में मुस्लिम लीग नाम का एक पृथक् राजनीतिक दल भी बनाया गया। इसके पश्चात् अंग्रेजों ने कहा कि अब आन्दोलन करने की जरूरत नहीं है। बिना किसी आन्दोलन के ही वे यहां से उसी दिन जाने को तैयार हैं जिस दिन इस देश के अन्दर हिन्दू और मुसलमान एक होकर स्वराज्य की मांग करें।

हमारे देश के नेताओं को लगा कि यह तो बड़ा सरल रास्ता है। उन्होंने यह नहीं सोचा कि मुसलमान इस राष्ट्र-जीवन से समरस नहीं हुआ है। इस कारण वह के साथ नहीं आयेगा। ब्रिटिश चतुर राजनीतिज्ञों की चाल में फंसकर उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि देश के हिन्दू मुसलमानों को एक होकर स्वराज्य की मांग करनी चाहिए। देश में 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' के नारे लगने लगे।

उधर मुसलमानों ने स्वराज्य के लिए पृथक् राजनीतिक अधिकार मांगना शुरू

किया। जनसंख्या के अनुपात से भी अधिक, और अधिक अधिकारों की उन्होंने मांग की। इस देश के लोगों ने सोचा कि मुसलमान अल्पसंख्यक हैं—इन्हें संतुष्ट करने से एक दिन वे हमारे सहयोगी बनकर अंग्रेजों के सामने स्वराज्य की मांग करेंगे किन्तु मुसलमानों ने कहा कि यह एकता तभी संभव हो सकती है, जब हिन्दुओं के इतिहास से छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, आदि को हटा दिया जाये, क्योंकि इनका वर्णन पढ़ते समय ऐसा लगता है कि मानो यह शत्रुओं का इतिहास हो। अपने देश के नेताओं ने भी तुष्टीकरण तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के चक्कर में फंसकर इन देशभक्त महापुरुषों को 'दिशा भ्रष्ट देशभक्त' की संज्ञा दे डाली। इन महापुरुषों की प्रशंसा के गीतों को साहित्य से निकालना आरम्भ कर दिया गया। अंग्रेजों से संघर्ष करने के लिए इस देश के लोगों ने जिस 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रगीत को गाया था उस पर भी मुसलमानों ने यह कहकर आपत्ति की, कि यह उनके धर्म के विपरीत है। जो गीत देश में जागरण का महामंत्र था उसे भी अस्वीकार कर दिया गया।

मुहम्मद अली और शौकत अली नाम के दो अलीबन्धु महात्माजी के दाएं और बाएं हाथ माने जाते थे। जब मुहम्मद अली कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे, तो उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन में 'वन्दे मातरम्' गाने पर रोक लगाई थी। बाद में वे पाकिस्तान के कट्टर समर्थक बन गये और मुस्लिम लीग में चले गये, हिन्दुस्तान के बाहर इनकी मृत्यु हुई। इसी व्यक्ति ने कहा था कि "मुसलमान होने के कारण एक भ्रष्ट मुसलमान को भी मैं महात्मा गांधी से श्रेष्ठ मानता हूं।" जिस देश का उसने अन्न खाया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ, मरते समय उसका भी उसे ख्याल न आया। इन दोनों प्रमुख व्यक्तियों की मृत्यु बाहर ही हुई थी। मोहम्मद अली तथा विट्ठल भाई पटेल ने अपने जीवन के अन्तिम समय में जो इच्छायें व्यक्त की थीं वे हिन्दू और मुसलमान मनोवृत्तियों की स्पष्ट द्योतक हैं। विट्ठल भाई पटेल ने कहा था कि 'यद्यपि मैं अपनी मातृभूमि से दूर हूं तथापि मेरी मृत्यु के बाद मेरी चिता भस्म गंगाजी में प्रवाहित की जाय।' किन्तु इसके विपरीत मोहम्मद अली ने कहा था कि 'मेरी कब्र मक्का में बनाई जाय।' इन सब मनोवृत्तियों के बाद भी सबसे आश्चर्य की बात यह है, कि हिन्दू समाज ने मुसलमानों के उस 'खिलाफत आन्दोलन' का भी साथ दिया जो तुर्किस्तान के इस्लामी धर्म गुरु के पक्ष में था इसमें अंग्रेजों और तुर्किस्तान के मुस्लिमों का झगड़ा था—अपने देश का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। इस आन्दोलन का नेतृत्व करनेवाले मुसलमानों की भक्ति को देश के बाहर ले गये। आन्दोलन के अध्यक्ष महात्मा गांधी थे। इसके लिए हमारे नेताओं ने सब कुछ किया। पैसे दिए, जेल गये कष्ट उठाये।

इतिहासकारों का मत है कि इस आन्दोलन का पाकिस्तान के निर्माण में बहुत बड़ा महत्व है। मुसलमानों की देशभक्ति बाहर जाने के कारण पाकिस्तान के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी। मुसलमानों ने सोचा कि हम राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर लेते हैं, इस देश के महत्वपूर्ण महापुरुषों को इतिहास से निकाल देते हैं; राष्ट्र-गीत वन्देमातरम्' भी छोड़ने को बाध्य कर देते हैं; इतना ही नहीं हमारे खिलाफत आन्दोलनों में भी यहाँ के लोग सहयोग देते हैं, अतः क्यों न एक पृथक राज्य की मांग की जाये ? इन्हीं विचारों के कारण पाकिस्तान की मांग उत्पन्न हुई। लन्दन में चौधरी रहमत अली ने १९३३ को राउण्ड टेबुल कान्फ्रेन्स में सबसे पहले पाकिस्तान की मांग उठायी। उस गोलमेज सम्मेलन में अपने देश के सभी नेता पहुंचे थे। पाकिस्तान का साहित्य लन्दन में ही तैयार किया गया था जो स्वय में एक महत्व-पूर्ण बात है। १९३४ में जिन्ना फिर वापस हिन्दुस्तान आये और मुस्लिम लीग का नेतृत्व ग्रहण किया। धीरे-धीरे देश में पाकिस्तान की मांग उठने लगी। १९४० में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में पाकिस्तान की मांग का पहला प्रस्ताव पारित किया गया। पृथक मुस्लिम प्रान्त की मांग की गयी।

अपने देश के तत्कालीन नेतागण यही कहते थे कि पाकिस्तान बनना असम्भव है। आर्थिक दृष्टि से चल नहीं सकता। परन्तु ब्रिटेन ने युद्धकाल में ही कुप लैण्ड नामक व्यक्ति को भेजकर ऐसे पत्रक तथा साहित्य पहले ही तैयार करा रखा था कि यदि पाकिस्तान बना तो उसकी आर्थिक व्यवस्था क्या होगी। इन आधारों पर १९४५ से १९४६ तक मुसलमानों में अलग राज्य की भावनायें जगायी गयीं। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में जगह-जगह शस्त्रास्त्र एकत्र किये-कराये गये। सारे देश में उपद्रव कराने को योजनायें तैयार की गयीं। कलकत्ता के अन्दर दंगा हुआ। नोआखाली, पंजाब में भी यही हुआ। उत्तर प्रदेश के भिन्न-भिन्न स्थानों पर उपद्रव किये गये। देश भर में हिंसा और हत्याओं का दौर इस प्रकार आरम्भ हुआ कि अहिंसा का सतत गुणगान करनेवालों ने अपनी दुर्बलता के कारण इन उपद्रवों के आगे अपनी हार स्वीकार कर ली और पाकिस्तान को मान्यता दे दी गयी।

१५ अगस्त १९४७ को पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। उसके निर्माण के इतिहास और गत २३–२४ वर्षों की उसकी नीतियों को देखते हुए पाकिस्तान के सम्बन्ध में इस प्रकार से पुनः विचार करना होगा कि हमारा मु[illegible]र्ष तो समाप्त हो गया है पर अभी एक दूसरा संघर्ष बाकी है। हमारे देश का कुछ भाग स्वतंत्र हो गया है, कुछ अभी भी गुलाम हैं। १५९ वर्षों पूर्व जिस मुस्लिम राज्य को हमने अपने सतत संघर्षों के द्वारा समाप्त किया था, वह ब्रिटिश सहायता से पुनः स्थापित हो गया है। हमारे पूर्वजों ने अपने पौरुष और पराक्रम से जिस प्रकार

मुस्लिम आक्रमण समाप्त किये थे उसी प्रकार हमने ब्रिटिश राज्य सत्ता से मुक्ति पा ली है। अब हमें मानसिक दासता से मुक्त होना है। इसके साथ ही इस देश में एक नया संघर्ष मुस्लिम राज्यसत्ता के साथ शुरू हो गया है। यह संघर्ष चलेगा और हम अवश्यमेव विजयी होकर रहेंगे। यह एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण है। इस सम्पूर्ण समाज में यह भावना निर्माण करनी होगी कि Not Pakistan, but Akhanda Bharat is a settled fact.

इस भाव के जागरण के लिए इस बात को ध्यान में रखना होगा कि हिमालय से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कामरूप तक हमारा यह एक देश है---पुण्य मातृभूमि है। इसी मातृभूमि की हमारे पूर्वजों, मुखियों तथा पूर्व पुरुषों ने वन्दना की है। इसके लिए पूर्वजों ने बलिदान दिये हैं माताओं ने जौहर किये हैं। छोटे-छोटे बच्चों ने बलिदान किये हैं--इसलिए यह समग्र मातृभूमि एक है--अत्यन्त पुनीत है। जब तक यह सम्पूर्ण मातृभूमि स्वतंत्र नहीं होती, तब तक हमारी स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं है। देश सुखी और समृद्ध नहीं हो सकता। हिन्दू के नाते इस दुनियाँ में गौरव तथा मान--सम्मान के साथ जीवित रहना कठिन हो जायगा--इस कारण इस देश में अखण्ड भारत का निर्माण करना ही होगा। ***

[पृष्ठ १२९ का शेष]

की रक्षा हेतु अपने प्राणों की बलि दे दी। इन सब के सम्मुख अपना मस्तक झुका हम अपने आपको धन्य मानते हैं।

हुतात्मा परिवार

गतैहयाँ जिला गुजरात के गोस्वामी दीवान चन्द कर्मकांडी ब्राह्मण थे। उच्च विचार, सात्विक-वृत्ति तथा शुद्ध आचार व्यवहार। पूजा-पाठ तथा धर्म-कर्म में निमग्न रहते। पाकिस्तानी मुसलमान उनसे ताबीज बनवाकर अपनी आवश्यकतायें पूरी किया करते। वे गोस्वामीजी से सदा लाभ उठाया करते और इसी कारण आदर-मान भी करते।

परन्तु मुल्लाओं ने इस्लाम और कुरान की दुहाई देकर लोगों की आँखें फेर दीं। फिर भी खुल्लमखुल्ला उन पर आक्रमण न करते। डर था कि अपनी नजरों में आप ही गिर जायँगे।

एक ने फिर भी आगे बढ़कर उनसे कहा कि आप हिन्दुत्व छोड़कर मुसलमान बन जाइये गोस्वामी जी ने कोरा जवाब दे दिया।

अब गोस्वामी जी को एक सप्ताह की मोहलत दी गई वे तब भी न माने।

शुक्रवार प्रातः १० बजे उनको मुसलमान बनाने की धमकी देकर शैतान चले गये।

गोस्वामी जी ने शूकरों के आने से पूर्व ही अपने घर में चिता बनाई और उसमें समस्त परिवार को बिठला दिया। अब स्वयं अपने हाथ से उन्होंने चिता में आग लगाई और उसमें कूद पड़े। उनके अंतिम शब्द ये थे : "शरीर को मैं ही जला देता हूं ताकि तुम इसे छूकर अपवित्र न बना सको। आत्मा को तुम छू नहीं सकते।" ▌

दोस्ती या दुश्मनी ?

यह है आसाम का चांगसारी शिविर जिसमें बंगला देश के पीड़ित शरणार्थी रखे गए हैं। और यह है अमेरिकी राजदूत केनेथ जी० कीटिंग, जो अमेरिकी कूटनीति और पाकिस्तानपरस्त साजिशें दिल में छिपाये 'निरीक्षण' के नाम पर मजे से इस शिविर में विचर रहे हैं या कौन जाने क्या कर रहे हैं? निक्सन को यह क्या लिख-लिख कर भेजते हैं—इसे कौन जान सकता है? गौहाटी, अगरतला, कलकत्ता और त्रिपुरा में इनके विचरने का राज क्या प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को पता है? यह चित्र १६ जुलाई का है।

* रवीन्द्र सेठ

पाकिस्तान की १३ डिवीजन और कुछ स्वतन्त्र ब्रिगेडों की टुकड़ियों को देखते हुए उसकी सेना किसी भी सूरत में ५,००,००० से कम नहीं हो सकती, कहा गया है कि पाकिस्तान के पास ४०० टैंक हैं जबकि वस्तुस्थिति यह है कि केवल सोवियत संघ, चीन और ईरान से ही इस्लामाबाद ४०० से ज्यादा टैंक प्राप्त कर चुका है, इसलिए विश्वास किया जाता है कि पाकिस्तान के पास अब भी लगभग ९०० टैंक होंगे, हालांकि १९६५ के भारत-पाक युद्ध के दौरान उसके बहुत से टैंक नष्ट हो गये थे लेकिन उसके बावजूद पाकिस्तान ने कुछ देशोंसे जोड़ तोड़ करके लगभग ९०० टैंक प्राप्त कर लिए हैं।

पाकिस्तान की सेना में ११ डिवी जन पैदल सेना के हैं और दो बख्तरब डिवीजन और कुछ स्वतंत्र ब्रिगेड क टुकड़ियां हैं, जिनमें सम्भवतः हवा

पाकिस्तान की सेना–एक नजर में

जनसंख्या–१३ करोड़ (पूर्व बंगाल : सात करोड़ पचास लाख)

कुल सेना–३२४५००

अर्धसैनिक–२२५०००

स्थल सेना–३००००० (२ बख्तर बन्द और ११ पैदल डिवीजन, १स्वतंत्र बिगेड)

अस्त्र– ४० एम–४शर्मन टैंक

१०० एम–४६ पैटन टैंक

१०० एम–४८ पैटन टैंक

५० टी–५४–५५ टैंक

कम-से-कम १०० चीनी टी ५९ टैंक

९०० तोपें

२०एच–१३ हेलीकाप्टर

कोबरा प्रक्षेपास्त्र

नौसेना–कुलसंख्या ९५००

४ पनडुब्बियाँ

२ विध्वंसक

३ विध्वंसक संरक्षा पोत

२ फ्रिगेट

४ गश्ती नौकायें

४ सुरंगभेदी तथा कुछ नौसैनिक हेलीकाप्टर

वायुसेना–१५००० (लड़ाकू विमान २७०)

१ स्क्वाड्रन हलके बमबार;

२ स्क्वाड्रन बी–५७ कैनबारा बमबार; ७ स्क्वाड्रन एफ—८६ लड़ाकू विमान; ५ स्क्वाड्रन मिग१९; १ स्क्वाड्रन मिराज लड़ाकू विमान; ९ स्क्वाड्रन एफ–१०४ [१० विमान];

[नोट—१ स्क्वाड्रन—१६ विमान]

आर० टी० ३३–ए जासूसी

उड़ने वाले; ८ सी–४७–एस परिवहन विमान; ८० प्रशिक्षण विमान [मिएज सहित], २५ बैल ४७।

छापामारों की एक ब्रिगेड भी शामिल है, कहा जा सकता है कि १९६५ में पाकिस्तान के पास जितनी सैनिक शक्ति थी इस समय उसने उसको दुगना कर लिया है, कम से कम तीन और नई पैदल डिवीजन और दूसरी बख्तरबन्द डिवीजन और तैयार कर ली हैं जिन्हें चीनी सैनिक साज-सामान से लैस किया गया है, चीन ने पाकिस्तान को स्वचालित बंदूकें, मशीनगनें और टी-५९ टैंक दिये हैं, विश्वास किया जाता है कि सोवियत संघ से पाकिस्तान को २०० टी-५४, टी-५५ टैंक और २०० के लगभग १३० एम. एम. की बड़ी मशीनगनें प्राप्त हुईं जिससे पाकिस्तान की तोपों की संख्या और बढ़ गयी, कहा जाता है कि पहले ही पाकिस्तान के पास १०५ एम. एम और १५५ एम. एम. की ९०० मशीनगनें और २५ भारी तोपें थीं, रूसी और चीनी टैंकों के अलावा पाकिस्तान के पास एम. ४७

और एम ४८ पैटेन टैंक और बख्तरबन्द डिवीजन हैं। पैटेन टैंक पाकिस्तान को ईरान द्वारा प्राप्त हुए जिनमें एम० ४८ की भारी तोपें और १०५ एम० एम० की मशीनगनें लगी हुई हैं। पाकिस्तान ने पश्चिमी जर्मनी की देख-रेख में टैंक भेदक कोबरा प्रक्षेपास्त्र भी बनाने शुरू कर दिये हैं। एक समझौते के अनुसार पाकिस्तान को ३०० बख्तरबन्द गाड़ियाँ अमेरिका से मिली थीं। उसके बाद भी अमेरिका ने पाकिस्तान को सैनिक साज सामान की सहायता देना बन्द नहीं किया। इससे पाकिस्तान की सुरक्षा पंक्ति और भी मजबूत हो गयी क्योंकि १९६५ की लड़ाई में खेमकरण क्षेत्र में पाकिस्तान को इनके अभाव में काफी नुकसान सहना पड़ा था।

पूर्व बंगाल में स्वाधीनता संग्राम शुरू होने से पहले पाकिस्तान ने १३ डिवीजनों में केवल एक डिवीजन फौज को पूर्व बंगाल भेजा था और बाकी फौज को पाकिस्तान ने भारत की सीमाओं, कश्मीर और रण के कच्छ में तैनात कर रखा था।

जहाँ तक पाकिस्तान की वायु सेना का सवाल है मानना होगा कि इस समय पाकिस्तान की वायुसेना भी काफी मजबूत और आधुनिकतम हथियारों से लैस है। यह ठीक है कि १९६५ के युद्ध में पाकिस्तान की वायुसेना को काफी नुकसान पहुंचा था लेकिन उसके बाद से उसने न केवल अपनी उस कमी को पूरा किया बल्कि अपनी वायु सेना को और भी मजबूत बनाया। पाकिस्तान ने एक यूरोपीय देश से ईरान की मार्फत ९० सेबर विमान मँगाये हैं। इसके अलावा पाकिस्तान को चीन से २८ इलूशिन बमवर्षक विमान का एक दस्ता और मिग–१९ के पांच दस्ते प्राप्त हुए। पाकिस्तान को फ्रेंच मिरेज ३–ई का भी एक दस्ता प्राप्त हुआ और दो और दस्तों के लिए सुना है पाकिस्तान ने आर्डर भेज रखा है। जहां तक पाकिस्तान के लड़ाकू विमानों का सम्बन्ध है उसके बारे में भी बहुत कम जानकारी प्राप्त हुई है। सैनिक अध्ययन की पुस्तकों के अनुसार उसकी संख्या २७० बतायी जाती है जबकि वह किसी भी सूरत में ३५० से कम नहीं हो सकती।

जहाँ तक पाकिस्तान की नौ सेना का सवाल है पाकिस्तान ने तीन पनडुब्बियां अमेरिका से प्राप्त की हैं। इससे भारतीय नौ-सेना को भारतीय बन्दरगाह की सुरक्षा के लिए ज्यादा सजग और सावधान रहने की जरूरत है लेकिन यह प्रसन्नता की बात है कि भारत ने स्वयं पनडुब्बियों के औजार बनाने का काम शुरू कर दिया है।

पाकिस्तान ने जनसंघ की 'शिकायत' की

शेख मुजीब की रिहाई की मांग लेकर जनसंघ ने दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग के सामने जो प्रभावी प्रदर्शन किया, उससे कुढ़कर पाकिस्तान ने भारत को जनसंघ के खिलाफ एक विरोध पत्र भेजा है। यह पत्र पाकिस्तान ने ८ अगस्त को इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायुक्त को दिया।

जब संघ के स्वयंसेवक को ३५ गोलियां लगीं

✲ आत्माराम

शहर गुजरांवाला में कर्फ्यू लगा हुआ था। जो कोई भी घर से बाहर निकलता सैनिक की गोली से दाग दिया जाता। अँधेरी रात। गोली का डर। भयानक समय। उस समय भी भारत मां के सपूत दीवारों के साथ रेंगते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे थे।

जिला गुजरांवाला के गांव शामपुर पर मुसलमानों ने आक्रमण करने की योजना बनाई। भोली-भाली हिन्दू जनता भेड़ियों की दया पर थी। निकलने का कोई रास्ता न था क्योंकि गाँव चारों ओर से मुस्लिम आबादी से घिरा हुआ था। हिन्दू उस समय संघ के स्वयंसेवकों की ओर आशाभरी-दृष्टि से देख रहे थे क्योंकि अन्तिम आशा-किरण स्वयंसेवक ही थे। पाँच हजार के आक्रमण को पचास आदमी तो रोक नहीं सकते जब कि रक्षा की कोई सामग्री भी न हो। स्वयंसेवकों की परीक्षा का प्रश्न था। पर्याप्त विचार के पश्चात् कुछ स्वयंसेवकों ने गुजरांवाला शहर जाने का निश्चय किया ताकि वहाँ के संघ-कार्यालय में सूचना देकर कुछ सहायता मांगी जाय।

गुजरांवाला के कार्यालय में पहुंचते-पहुंचते रात हो गई। परिस्थिति भयंकर थी। सब बातों का जायजा लेने के लिए रात को बैठक हुआ करती थी। शामपुर के स्वयंसेवक इस चिन्ता में थे कि यदि कहीं हमारी अनुपस्थिति में गाँव पर आक्रमण हो गया तो ख्याल किया जायगा कि हमने विश्वासघात किया है।

उनके चेहरे पर भय स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जीवन-मरण का प्रश्न था। फिर घर पर आये को निराश करना हिन्दू - परम्परा के विरुद्ध है। जितने स्वयंसेवक वहां उपस्थित थे वे आवश्यक वस्तुएँ लेकर विजय के लिए प्रार्थना करके अत्याचार के विरुद्ध मृत्यु से लड़ने हेतु सिर पर कफन बांध चल पड़े।

पौ फटते ही वे गाँव पहुंच गये। मोर्चे की तैयारी शुरू कर दी गई। स्वयं-सेवकों को देखकर अब जनता के मुख पर उदासी के स्थान पर हर्ष था और आंखों में भय की जगह जोश—पर अभी शस्त्रों की कमी थी। बन्दूकें बहुत थोड़ी

थीं। कोई-न-कोई नई समस्या खड़ी होने लगी। आक्रमण का समय निकट आ रहा था। लोग घबरा रहे थे। परन्तु स्वयंसेवक उस समय भी निराश न हुए।

पास ही पुलिस चौकी थी। वहाँ सात सशस्त्र मुसलमान सिपाही तैनात थे। परन्तु उस समय तो रक्षक भक्षक बने हुए थे। बिल्ली दूध की रखवाली कर रही थी। चौकी सड़क के किनारे सुनसान जगह पर थी। उस समय सिवाय इन सात मुसलमान सिपाहियों के और कोई न था। गई रात अमावस्या की थी। हाथ को हाथ न सूझता था। सिपाहियों को लालच दिया गया कि कल के आक्रमण में आप हमारी सहायता करना। घूस के लिए उन्हें अन्दर ले जाया गया। वहां सब के पेट फाड़ बोरियों में बन्द करके छत से लटका दिया गया। बन्दूकें आदि छीन ली गईं। साहस से काम हो सकता है, विशेषकर जहाँ निष्काम बुद्धि भी काम करती हो।

गाँव के मुसलमानों को अगली सुबह आक्रमण करना ही था। परन्तु जब उन्होंने सिपाहियों की लाशों को बँधा हुआ पाया तब उनमें और भी जोश आया। बिना सोचे समझे उन्होंने हिन्दुओं पर आक्रमण कर दिया। जब मकानों की छतों पर से उबलता तेल और पानी ईंटें, पत्थर, जलते हुए कपड़े, दस्ती, बम और थ्री-नाट-थ्री की गोलियाँ पड़ीं तब सब को भागना पड़ा।

अब रात को आस-पास के मुस्लिम देहात और गुजरांवाला नगर से मुस्लिम बलोच मिलिटरी को बुलाकर हमला किया गया परन्तु सामने भी मिट्टी के माधव न बैठे थे जो दिल छोड़ जाते। गोलियों पर गोलियाँ, बमों पर बम चलने लगे। हर तरफ हाहाकार मच गया—मारो ! काटो ! बचने न पाये !

अधिकारी मोर्चे का निरीक्षण कर रहे थे। स्वयंसेवकों को प्रताप, शिवाजी हरिसिंह नलवा और बप्पारावल के नाम पर उत्साह प्राप्त हो रहा था। रामकृष्ण के पुजारियों की परीक्षा हो रही थी। "मर गये तो अमर हो जाओगे, जीत गये तो विजयश्री तुम्हारे चरण चूमेगी !" हिन्दू महिलाएं भी पूरा-पूरा सहयोग दे रही थीं। हल्दी घाटी का मैदान गरम हो रहा था। सत्य का मुकाबला पाप से था। मतांधता के कारण शत्रु अन्धे हो रहे थे। हिन्दू भी सच्चाई और धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाये हुए थे। रक्त से धरती को स्नान कराया जा रहा था। यज्ञ की वेदी में नवयुवकों की आहुतियाँ दी जा रही थीं।

एक स्थान पर दो स्वयंसेवक भाई इकट्ठे बैठे थे। एक गोलियाँ भरता, दूसरा चलाता। अचानक ही चलानेवाले को गोली लगी। दूसरे भाई ने उसे हटा कर ऊपर कपड़ा डाल दिया और स्वयं गोलियाँ चलाने लगा। एक स्वयंसेवक को पैंतीस गोलियाँ लगीं। परन्तु उसने अपने हाथ से बन्दूक न छोड़ी, जब तक कि प्राण न निकल गये।

तीन घंटे तक युद्ध होता रहा। इधर हिन्दुओं के पास गोलियाँ समाप्त हो रही थीं उधर शत्रु परेशान हो रहे थे कि ये कैसे आदमी हैं जो इतने बड़े हजूम का मुकाबला कर रहे हैं।

एकाएक शत्रु पर पीछे से बेतहाशा गोलियाँ चलने लगीं। मुसलमान मकई के दानों के समान भूने जाने लगे। "या अल्लाह बचाओ!" "हाय, मारा गया!" की आवाजें सुनाई देने लगीं।

मेजर रामसिंह इस प्रदेशका इंचार्ज था। उसे शामपुर की घटना की किसी प्रकार खबर मिल गई। वह डोगरा सैनिक लेकर शामपुर की ओर बढ़ा। चारों ओर से मुसलमानों के गिर्द घेरा डाल लिया। अब उन्हें आटे-दाल का भाव मालूम होने लगा। उनका पाप ही उन्हें मार रहा था। रह-रह कर अपने किये पर पछताने लगे। पर अब तो उन्हें अपने किये की सजा भुगतनी ही थी और भुगत रहे थे।

दो घण्टे के अन्दर-अन्दर मामला साफ हो गया। भूमि लाशों से पट गई। नीचे से पापियों की चीखें निकल रही थीं। परन्तु अब उनकी पुकार सुननेवाला कोई न था। उनका अल्लाह भी डोगरा-शक्ति को देख कर भाग गया था।

मोर्चे के अन्दर प्रवेश करने पर मेजर रामसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। एक प्रतिनिधि स्वयंसेवक को उसने गले लगाया। फिर कह दिया—"आप अपना सारा सामान निकाल लें। मैं सबसे पहले आपको ले चलूंगा।"

स्वयंसेवकों ने यह कह कर इनकार कर दिया कि जब तक एक भी हिन्दू यहाँ रहेगा, हम में से कोई नहीं जायेगा। यह सुनकर रामसिंह बहुत ही खुश हुआ। उसने पर्याप्त सामग्री इनाम के रूप में दी। इसमें गोलियाँ और हथ-गोले थे।

वहाँ से चलकर जब सभी कैम्प में पहुंचे तब पता चला कि एक गाँव में मुसलमानों ने एक हिन्दू लड़की का अपहरण कर लिया है। (अब मुसलमान आक्रमण न करते थे क्योंकि ये उन्हें बहुत महँगे पड़ते थे।) मेजर रामसिंह कुछ सिपाहियों और संघ के स्वयंसेवकों को साथ लेकर गया। परन्तु गाँव के नम्बर-दार ने हिन्दू लड़की देने से इनकार कर दिया। इस पर रामसिंह ने गाँव को आग लगा देनेका निश्चय किया। अब नम्बरदार साहब नाक रगड़ने लगे। उसने दो घण्टे की मोहलत माँगी। यह शर्त स्वीकार करते हुए रामसिंह ने आदेश दिया—"जब तक लड़की नहीं आती, तब तक नम्बर-दार को उलटा लटका कर बेंत लगाये जायँ।" जब मियाँ को बेंत लगने शुरू हुए तब आध घण्टे के अन्दर-अन्दर लड़की उपस्थित कर दी गयी।

लड़की को जीप में बिठलाकर जब कैम्प को आ रहे थे तब वृक्ष पर बैठे तीन मुस्लिम सिपाहियों ने एक के बाद दूसरा-तीन बम फेंके जिनसे वीर सपूत, हिन्दुत्वरक्षक, दुखियों का सहारा राम सिंह चल बसा। वृक्ष पर बैठे तीन सिपाही गोलियों से उड़ा दिये गये। **

ब्याह उल्लू की बेटी का

✽ ओंकार भावे

फील्ड मार्शल यहिया खाँ अपने सलाहकार मियां भुट्टो के साथ टहलने जा रहे थे। शाम का धुंधलका था। आज वे बड़े ईत्मीनान में थे। अभी-अभी बंगला देश का अभियान सफलता पूर्वक समाप्त कर लौटे जो थे! पिछले ३–४ महीने अत्यन्त व्यस्तता में बीते थे। एक जगह कुछ उल्लू बोल रहे थे। यहिया खां को मजाक सूझा। उन्होंने अपने सलाहकार से कहा—"मियां भुट्टो, क्या आप बता सकते हैं कि ये उल्लू आपस में क्या बात कर रहे हैं। आप तो इस मुल्क में होने वाली हर घटना की जानकारी रखने का दावा करते हैं।"

मियां भुट्टो कहां पीछे हटने वाले थे! उन्होंने तपाक से कहा, "हां, हां, क्यों नहीं! ये जो दो उल्लू बोल रहे हैं, उनमें एक नर है दूसरा मादा।"

मियां भुट्टो ने आगे फरमाया कि, "वे दोनों अपनी लड़की की शादी की चिन्ता में हैं। आज उल्लू एक लड़का देख आया है लड़का अच्छा है लेकिन उसका बाप दो सौ उजाड़ गाँव दहेज में मांगता है।"

"दो सौ!" आश्चर्य से यहिया ने कहा! "इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" मियां भुट्टो ने पूछा, "आखिर अलाउद्दीन के जमाने से तो भाव भी कई गुना बढ़ चुके हैं। दस-बीस गांवों से होता भी क्या है?"

"यही तो बात है," मियां भुट्टो ने आगे कहा, "मादा तो एकदम तैयार हो गई है। इतना ही नहीं, वह उसी लड़के से अपनी लड़की की शादी करने के लिए आग्रह कर रही है।"

"ऐसी क्या बात है म्यां?" यहिया ने पूछा—भुट्टो ने तपाक से उत्तर दिया, "हुजूर वह कह रही है कि, 'अपने बादशाह यहिया खां की उम्र खुदा हजार साल की करे। मैं तो दूर तक देख रही हूं। यहिया खां साहब अभी पूरा सोनार बांगला उजाड़ कर आये हैं। क्या ही अच्छा होता, हम लोग वहीं पैदा होते तो कोई कमी न रहती उजड़े गांवों की खैर, लड़केवालों से वादा कर दो। शादी के समय तो नहीं पर पहला लड़का होने तक हम दो सौ तो क्या हजार गांव तक देने को तैयार हैं। जब तक हमारे बादशाह यहिया खां साहब सही सलामत हैं तो क्या चिन्ता है! अभी बंगला देश से निपटे हैं—अब इधर की बारी है खुदा ने चाहा तो हम शादी के समय ही वादा पूरा कर देंगे।"

इस पर दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े। यहिया खां ने सीना ऊँचा करते

हुए कहा, "बहुत समझते थे ये बंगला देश वाले अपने को। ऐसा ठण्डा किया है कि सैकड़ों सालों तक सिर न उठा सकेंगे। अब जरा इन कश्मीर, जिये सिन्ध और पख्तूनिस्तान वालों को और देखना है फिर बस...

° ° °

कहते हैं थोड़े फेर-बदल के साथ इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। ऐसे ही एक उल्लू जोड़े की बात सुनकर अलाउद्दीन खिलजी का दिल बदल गया था। तब दिल के आपरेशन नहीं होते थे। पर दिल बदलते थे। अब तो उल्लू सर पर ही चढ़कर बोलता है। उसे कौन बदले ?

मान्यता और मदद देने

✲ श्री जयप्रकाश नारायण
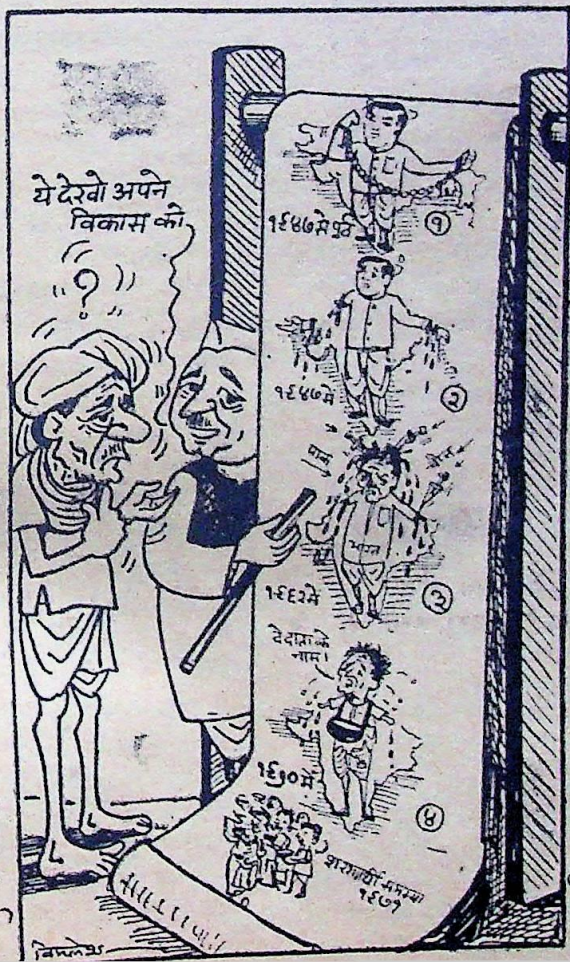
बंगला देश में पाकिस्तान के फौजी शासकों ने जो समस्या खड़ी कर दी है उसका सीधा प्रभाव भारत पर पड़ा है और मैं समझता हूं कि उसके बारे में ठोस कदम उठाने के लिए पहल भारत को ही करनी होगी। दुनिया का कोई देश इस बारे में पहल करने को तैयार नहीं जिससे यह समस्या सुलझने की बात बने। १७ देशों का दौरा करने के बाद और वहां के नेताओं से मेरी जो बात-चीत हुई, उसके आधार पर मैं इसी नतीजे पर पहुंचा हूं। मेरा ख्याल है कि भारत को चाहिये कि बंगला देश को फौरन मान्यता दे और वहाँ शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में बनी हुई सरकार को हर तरह की मदद दे। अगर भारत इस मामले में पहल करे तो सम्भव है कि कुछ और भी सरकारें भारत का अनुकरण करने के लिए तैयार हो जायें। बड़ी ताकतों ने जानबूझ कर ऐसी नीति बना रखी है कि पाकिस्तान को सहारा दे दे कर भारत को उभरने से रोका जाये।

मुझे लगा कि विदेश की कोई भी सरकार बंगला देश के बारे में भरपूर जानकारी होने के बावजूद इस बात के लिए तैयार नहीं कि वह कोई ऐसा कदम उठाये जिससे यह समस्या सुलझने की बात बने।

भारत पर जो बोझ पड़ा है- पड़ा ही है, साठ लाख से ऊपर तो विस्थापित आ चुके है, सभी पाकिस्तान द्वारा जानबूझ कर निकाले गए। बढ़ते-बढ़ते इनकी संख्या सत्तर, अस्सी लाख, नव्वे लाख, एक करोड़ तक जा पहुंची है। इस पर आर्थिक बोझ तो पड़ा ही और राजनीतिक भी किन्तु हमारी सामाजिक प्रणाली पर, हमारी सामाजिक रचना पर भी इसका बड़ा असर पड़ा रहा है। विदेशों में यह बात लोग अच्छी तरह समझते हैं किन्तु इसके लिए वे कोई ऐसी मदद करें जो कारगर हो इसकी उम्मीद नहीं।

जब हमारी सरकार ने ही बंगला देश की धारणा को अभी मान्यता नहीं दी तो मैं विदेशी लोगों को इसके लिए कह कैसे सकता था लेकिन उनके सामने यह बात जरूर रखता था कि आप पाकिस्तान को आर्थिक अथवा जो भी मदद दे रहे हैं वह बन्द कर सकते हैं जब तक कि पाकिस्तान की हुकूमत आपकी कुछ शर्तें न मन्जूर करे जैसे कि फौजी कार्यवाही खत्म की जाय, सेना वापस बैरकों में भेजी जाय, राजनैतिक कैदियों को रिहा किया जाय जिनमें शेख मुजीब भी है न जाने वह जीवित भी हैं

में भारत पहल करे

(शीर्षस्थ सर्वोदयी नेता)

या नहीं और शेख मुजीबुर्रहमान से बातचीत हो। जहाँ तक शेख मुजीब से समझौते की बात हैं, मैं कहे देता हूं कि यह मामला पाकिस्तान की हुकूमत और शेख मुजीब के बीच है। हां, मैंने उन्हें यह अवश्य बताया कि बंगला देश के प्रधान मन्त्री, विदेश मन्त्री और गृह मन्त्री के साथ मेरी जो बातचीत हुई और बोनगांव आदि के शिविरों में विस्थापितों से खासतौर पर मुस्लिम विस्थापितों से बात करने पर मुझे जो पता लगा वह यह था कि वे स्वायत्त शासन चाहते थे क्योंकि उन पर लगातार अन्याय हो रहा था, पाकिस्तानी सेना में मुश्किल से १० प्रतिशत बंगाली स्थान पा सके थे, प्रशासन में १५ प्रतिशत से अधिक नहीं ऐसा भेद बर्ता जा रहा था इसलिए वे स्वायत्त शासन माँग रहे थे किन्तु उन्होंने कहा कि २५ मार्च के बाद पाकिस्तान के अन्दर बने रहने की बात खत्म हो गई। बंगला देश के प्रधानमन्त्री के शब्दों में पाकिस्तान का मुर्दा आज लाशों के पहाड़ के नीचे दबा पड़ा है। मैंने यह भी उन्हें बताया कि सब देखते हुये हो सकता है कि शेख मुजीब यहिया खाँ के साथ हाथ मिलाना भी पसन्द न करें।

मेरे यह बताने पर वे कहते थे अगर शेख मुजीब बंगला देश को पाकिस्तान से अलग करना चाहेंगे तो पाकिस्तान टूटना कैसे स्वीकार करेगा ? मैंने जवाब दिया अंग्रेजों ने, हालैंड ने, फ्रांस ने और अन्य साम्राज्यशाही ताकतों ने अपने-अपने उपनिवेशों की आजादी कैसे स्वीकार कर ली ? यह सुनकर वे चुप रह जाते थे।

अमरीका में मेरी डाक्टर हैनरी किसिंगर से जो राष्ट्रीय सुरक्षा के विषय में राष्ट्रपति के मुख्य सलाहकार हैं और असिस्टैंट सेक्रेटरी आव स्टेट श्री सिस्को से भी जो बातचीत हुई उसमें उन्होंने मुझे यही बताया कि मदद बन्द कर दी गई है, और मदद नहीं दी जाएगी। और अब वे हथियारी सामान से लदे जहाज भी पाकिस्तान को भेज रहे हैं। पहले दो का पता लगा फिर तीन का, अब कहा जा रहा है कुछ और भी जाने वाले हैं।

२८ जून को यहिया खाँ ने रेडियो पर जो कुछ कहा उससे साफ जाहिर है कि यहिया खाँ ने किसी की बात नहीं मानी। श्री पोदगोर्नी ने उन्हें जो कुछ लिखा था, वह बिलकुल नहीं माना और श्री निक्सन ने तो न मालूम क्या लिखा था। अलबत्ता यहिया खाँ ने यह जरूर कहा था कि मुझे निक्सन का एक बहुत सद्भावना और मैत्रीपूर्ण पत्र मिला है। यहिया खाँ के इस रेडियो बयान के बाद कोई संदेह बाकी नहीं रह जाता कि उन्हें

कोई पश्चाताप नहीं है, उनके पास शेख मुजीब के लिए कोई गुंजायश नहीं है और वह अपने पिट्ठुओं की सरकार बंगला देश पर मढ़ना चाहते हैं।

विदेश के उच्च-स्थानीय लोगों का रुख देखकर एक बार तो मेरे मन में आया कि दौरा अधूरा ही छोड़कर वापस चला जाए किन्तु जब हमारे राजदूतों ने मुझसे यह आग्रह किया कि मैं दौरा पूरा करूं, मेरे जैसे व्यक्ति का जो गैर सरकारी है और जिसने समय-समय पर अपने मत के लिए अप्रिय होना भी स्वीकार किया है, कुछ असर जरूर होगा। मेरी पत्नी प्रभावती ने भी यही राय दी तो मैं चलता रहा। विदेश के जिन नेताओं से मैं मिला उन्होंने भी इतना जरूर कहा कि आप जैसा आदमी जो यह सब कुछ कह रहा है, तो उसका महत्व हम मानते हैं। मैं समझता हूं कि वे लोग मेरी पृष्ठभूमि से अवश्य परिचित होंगे।

अरब इलाके में तो मैं केवल काहिरा गया था। वहां संकट का समय चल रहा था। राष्ट्रपति सादत से मेरी अच्छी पहचान थी। मैंने चाहा था कि कम से कम उसी आधार पर उनसे मुलाकात हो जाय लेकिन वह सम्भव नहीं हुआ। यहां के अखबारों में भी बंगला देश के संघर्ष के बारे में कुछ खास नहीं छपा वहां के लोगों को इस विषय में जानकारी नहीं के बराबर है। बल्कि गलत है। अलजजहर विश्वविद्यालय के माननीय शेख से मैं मिला तो मुझे पता लगा कि वह तो जानते थे कि पाकिस्तान सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश है किन्तु यह नहीं जानते थे कि मुसलमानों की आबादी पूर्वी बंगाल में पश्चिम पाकिस्तान से कहीं अधिक है। शेख मुजीब के बारे में उनकी यह खबर थी कि वह एक सत्तालोलुप और शरारती व्यक्ति है। शायद यही सोचकर कि पाकिस्तान में मुसलमानों की सबसे बड़ी आबादी है, मुस्लिम देश यह नहीं चाहते कि पाकिस्तान टूटे।

अब हमें खुद सोचना है कि हम क्या करें। हमारे देश के लिए यह बड़ी नाजुक घड़ी है। आजादी के बाद आज तक शायद ऐसी परिस्थिति नहीं आई। मैंने तो जबकि बंगला देश की सरकार भी नहीं बनी थी, तभी कहा था कि बंगला देश की धारणा को मान्यता दी जाए। किन्तु अपना प्रशासन तो ऐसा लगता है अभी अंग्रेजी परम्पराओं से मुक्त नहीं हुआ हमारी आकाशवाणी को ही लीजिए। बहुत दिनों तक तो बंगला देश के लिए 'पूर्वी बंगाल' का ही प्रयोग होता रहा। फिर किसी तरह 'मुजीब के समर्थक' कहा जाने लगा। अब कहीं जाकर 'बंगला देश' तक पहुंचे हैं।

अपने देश का जनमत सोलह आने नहीं तो पौने सोलह आने जरूर इस हक में है कि बंगला देश को मान्यता दी जाय। जरूरत इस बात की है कि यह

जनमत अपनी सुनवाई कराये। जनमत संगठित ढंग से पेश हो। भारत में कम से कम एक लाख ग्राम पंचायतें तो होंगी। हर पंचायत से,हर नगरपालिका से, हर स्थानीय निकाय से 'मान्यता' के लिए प्रस्ताव पास हों। तारों की बौछार इन्दिरा जी पर की जाय। इकट्ठे होकर संसद जाया जाय। सरकार से पूछा जाय कि वह किस ढंग से सोच रही है? ऐसा क्या भेद है जो वह जनता को नहीं बताना चाहती? हमारे यहां भेद रह ही कहां पाते हैं। यह कहा जाता है कि हमारी सरकार जनता द्वारा चुने गये लोगों द्वारा बनाई गयी है। यहिया खां तो चुने हुए नहीं हैं। इसलिए बंगला देश की सरकार को मान्यता देनी चाहिए।

यह जरूरी है कि मुसीबत आ पड़ी है उसका मुकाबला करने के लिए हमें अपने पेट कुछ और कसने पड़ेगे। कुछ राजनीतिक अनुशासन भी लाना होगा। प्रधान मन्त्री को चाहिए कि ऐसा राजनीतिक वातावरण पैदा करें जिसमें सभी दल एक-जुज होकर इस मुसीबत का सामना कर सकें। देश को इस समय आवश्यकता है राजनैतिक विराम संधि की इन्दिरा जी बहुत सी राज्य सरकारें उलट चुकी हैं। अब कोई एक आध बची हो तो बची रहने दें।

अब अपनी जिम्मेदारी हमें खुद सोचनी है। जो कुछ करना है अपने भरोसे पर करना है। और हमारे देश के ५४ करोड़ से अधिक लोगों को अपने ऊपर भरोसा न हो, तो मैं कहूंगा कि कोई कदम नहीं उठाना चाहिए लेकिन मैं समझता हूं कि उन्हें पूरा भरोसा है।

बंगला देश की आजादी की लड़ाई ने दो राष्ट्र के सिद्धान्त को तो खत्म कर दिया है। लेकिन पाकिस्तान की हुकूमत इस सिद्धान्त को फिर से जिन्दा करने की कोशिश कर रही है। कुछ अर्से से वह सभी हिन्दुओं को उधर से खदेड़ने में लग गयी है,इससे हमारे यहां भी वह गड़बड़ फैलाना चाहती है। मैं समझता हूं कि हमारे लोग इस बारे में सूझ-बूझ से काम ले रहे हैं। यहां अभी इन दिनों कोई साम्प्रदायिक दंगा हुआ तो उससे यहिया खां को मदद मिलेगी।

बंगला देश के बारे में भारत ने अब तक दुनिया में जो कूटनीतिक प्रयत्न किये, वे सब तो निष्फल हो गये अब भारत सरकार को नये ढंग से सोचना चाहिए और इस दिशा में सबसे पहले बंगला देश को मान्यता प्रदान करनी चाहिए। मुझे पूरा भरोसा है कि जनता इस मामले में सरकार का पूरा साथ देगी। ✿

राजर्षि एक पुनीत स्मरण

हिन्दी पर तुमको गौरव है,
हिन्दी को तुम पर गौरव !
संस्कृति के सुरभित उपवन के,
तुम हो पावनतम सौरभ !
दृढ़ संकल्प हिमालय जैसे,
गंगा जैसा निर्मल मन !
'राजर्षि' तुमको करता है—
संसृति का कण-कण वंदन !

—शैवाल सत्यार्थी

* श्री जगजीवन राम

[रक्षामन्त्री]

'सेना को आदेश दिए जा चुके हैं'

पाकिस्तानी सैन्य शक्ति के निर्मम हस्तक्षेप के बाद बंगला देश के लिए जो भावना उठी है उसने पश्चिमी पाकिस्तानी राजसत्ता के उपनिवेशवादी इरादों का भंडाफोड़ कर दिया है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि लोकतन्त्र की जड़ें इतनी गहरी तथा मजबूत होती हैं कि २५ वर्ष का सैन्य शासन भी उसे उखाड़ नहीं सकता। बंगला देश में अत्याचारों की जो लहर फैली है उसने विश्व को दहला दिया है। इस स्वातंत्र्य-आंदोलन में जो वीर लड़ रहे हैं उनकी सभी ने प्रशंसा की है। सदन ने हमारे उन दुःखी मित्रों के प्रति सद्भावना और सहानुभूति व्यक्त की है।

बंगला देश के निवासियों की काफी बड़ी संख्या भारत में शरण लेने के लिए आने पर विवश हुई है। श्री विश्वनाथन ने इस मानव-बाढ़ को 'भारत के विरुद्ध जनांकिकीय अतिक्रमण' कहा है। श्री एच. एम. पटेल ने इसको 'भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध' कहा है। यह स्पष्ट है कि पाकिस्तानी सेना बंगला देश में नरसंहारर के कार्य में लगी है जिसका प्रभाव हमारी आर्थिक व्यवस्था, हमारे समाज तथा हमारे उन मूल सिद्धान्तों पर पड़ेगा जो हमारे संविधान में निहित हैं। जिन सिद्धान्तों और जिन उत्तरदायित्वों का भार हम वहन कर रहे हैं—आज उन पर भी आंच आती दीखती है।

पाकिस्तानी सैन्य शासक नई रेजिमेंटें गठित करने तथा कुछ मित्र राष्ट्रों से सैन्य सामग्री प्राप्त करने में व्यस्त हैं। वे सब तैयारियां इस उप-महाद्वीप से स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र की मशाल को बुझाने के लिए हैं।

मैं इस संदर्भ में सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि इन गतिविधियों पर लगा-

तार निगाह रखी जा रही है और हम अपनी पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं पर शत्रु के सभी सम्भव कुप्रयासों को विफल करने हेतु कटिबद्ध हैं। सुरक्षा सेना को आदेश दिये जा चुके हैं कि घुसपैठ आदि करने वालों के साथ कठोर व्यवहार करें।

विभिन्न दलों ने बंगला देश को शीघ्र मान्यता देने की मांग को बार-बार दोहराया है। बंगला देश को मान्यता देने के बारे में भारत में जो जन भावना है सरकार उससे अवगत है। हमारी प्रधान मंत्री ने इस संबंध में कई अवसरों पर सरकार की नीति स्पष्ट कर दी है। एक बात स्पष्ट है कि अन्त में मुक्ति फौज बंगला देश की स्थापना करने में सफल होगी क्योंकि मुक्ति फौज का एक छापामार सैनिक, एक कमांडो पाकिस्तानी सेना के कई अत्याचारी सैनिकों के बराबर हैं।

हमारी क्षमता का आधार हमारा वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक क्षमता ही होना चाहिए। परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में भारत की जो स्थिति है; इस क्षेत्र में भविष्य में जो प्रगति होनी चाहिए उसकी योजना तथा कार्यक्रमों के संदर्भ में अधिक नहीं कहना चाहूंगा और आशा करता हूं कि मुझे विवश भी नहीं किया जायेगा।

* *

शेख मुजीब को फांसी !

—बयान नये नादिरशाह का

मैं किसी को यह दिलासा नहीं दे सकता कि फौजी अदालत में मुकदमा चलने के बाद शेख मुजीबुर्रहमान को फांसी नहीं दी जायेगी। शेख मुजीबुर्रहमान पर सैनिक अदालत में मुकदमा जरूर चलेगा और मैं नहीं कह सकता कि वे राष्ट्रीय असेम्बली का अधिवेशन होने तक जिंदा रहेंगे या नहीं। इस मामले में फौजी अदालत ही फैसला करेगी। शेख मुजीब का कोर्ट मार्शल किया जायेगा।

पूर्वी बंगाल में ज्यादातर वोट हिंदुओं के मिलने की वजह से अवामी लीग की जीत हुई। वहां उसको २० प्रतिशत से ज्यादा मुस्लिम वोट नहीं मिले।

हिंदुस्तान विस्थापितों को न लौटने देने पर मजबूर कर रहा है और उनके सवाल को राजनीतिक हथियारों की शक्ल में इस्तेमाल कर रहा है। हिंदुस्तान यह खुलेआम कह रहा है कि विस्थापित तथाकथित बंगला देश में ही वापस जा सकते हैं।

मैंने यह तजुरबा कर लिया है कि शेख मुजीबुर्रहमान बंटवारे के हामी थे।

आधुनिक अर्थशास्त्र के जन्मदाता आदम स्मिथ का कहना है कि समृद्धि से पहले सुरक्षा की ओर ध्यान देना चाहिये। इस बात की सच्चाई भारत ने अपने २४ साल के जीवन में १९४७-६८, १९५६, १९६२ और १९६५ में अनुभव की है।

कुछ उद्योगों का तो सीधा सम्बन्ध सुरक्षा से है। कुछ कों आवश्यकता पड़ने पर युद्ध उद्योग में बदला जा सकता है। वस्तुत: शान्ति और युद्ध के मध्य की दीवार आधी ईंट की भी नहीं है। ऐसी स्थिति में शान्तिकालिक उद्योग भी आवश्यकता पड़ने पर शीघ्रातिशीघ्र युद्ध-उद्योग में परिणत होने योग्य बनाकर रखना आवश्यक है। अमेरिका के गृह-युद्ध में सिलाई की मशीन बनाने वाले कारखाने भी राइफल बनाने के कारखानों में परिणत हो गये थे। नियोजित आर्थिक व्यवस्था में तो यह कार्य और भी सरलता पूर्वक होना चाहिये।

ऐसी धारणा दृढ़ होती जा रही है कि भारत अपने उन भूभागों को मुक्त करने के लिए, जिन पर शत्रु देशों ने अधिकार कर लिया है, कभी प्रयत्न न करेगा। भारत की नीति आक्रमण (अथवा प्रत्याक्रमण) की नहीं है अत: उसे अणुबम बनाने की भी आवश्यकता नहीं है। सुरक्षा के इन तत्वों की उपेक्षा के ही कारण सुरक्षा-उद्योगों को प्राथमिकता और सर्वोपरि स्थान न देने की भूल हमारे नेता करते जा रहे हैं।

पहले

—अवनीन्द्र

शासक-वर्ग वस्तुत: देश की सुरक्षा की तैयारी अनमने भाव से कर रहा है। वस्तुत: औद्योगिक विकास और सुरक्षा-नीति के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिये। आधुनिक ढंग के हथियारों को तैयार करना देश की औद्योगिक क्षमता पर निर्भर है। जर्ननी और इजराइल भारत के लिए उदाहरण हो सकते हैं।

पहले

'पेरिस के पतन का अर्थ फ्रांस का पतन'—इसका अब युग नहीं रहा है। इस दृष्टि से अपने सुरक्षा उद्योगों की स्थापना कुछ इस तरह से करनी होगी कि हम शत्रु का भली प्रकार मुकाबला कर सकें। सीमा से दूर वस्तुत: देश की गहराई में सुरक्षा-उद्योगों की स्थापना करनी चाहिये। नई दिल्ली और

पहले

विजय

विद्यालंकार

कलकत्ता के बजाय उद्योगों के केन्द्र नागपुर और हैदराबाद में स्थापित करने चाहिये। साथ ही अपनी संचार व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि शीघ्रातिशीघ्र आवश्यक सामग्री को आवश्यकता के स्थान पर पहुंचाया जा सके। संचार व्यवस्था की सुगमता पर ही आजकल सुरक्षा की कार्यवाहियाँ

विजय

बहुत कुछ निर्भर हैं। इजराइल और जर्मनी ने अपनी संचार व्यवस्था के बल पर ही आशु-विजय पाने में सफलता प्राप्त की है।। इजराइल ने ५ दिनों में ही अरब सेना को आत्म समर्पण के लिए विवश कर दिया, १५ दिन में ही फ्रान्स जर्मनी के आगे घुटने टेक गया; परन्तु भारत २१ दिन पाकिस्तान से

विजय

लड़कर भी कराची और पेशावर तक नहीं पहुंच सका, इसके कारणों का विश्लेषण करके अपनी सुरक्षा नीति निर्धारित करनी होगी। उसके अनुकूल साधन जुटाने के लिए हमें अपने उद्योग खड़े करने होंगे।

आज हमें दो समवेत शत्रुओं से लड़ना है। अभी तक हम उनसे पृथक-प्रथक लड़े हैं। ऐसी स्थिति में हमें अपनी वर्तमान सुरक्षा-तैयारियों को पर्याप्त समझना भूल होगी। विदेशों से प्राप्त साधन पर्याप्त नहीं हो सकते, न वे युद्धकाल में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकेंगे। हम शत्रु से लड़ने को तैयार हैं, इसका अर्थ है कि हमने अपने देश में सुरक्षा-उद्योगों का ठीक से विकास कर लिया है। अभी हमारे पास पनडुब्बियां नहीं, अणुबम नहीं। विदेशों से प्राप्त कल-पुर्जों को जोड़कर 'विजयन्त' टैंक बनाया, यह पर्याप्त नहीं। हमें सभी कुछ छोटी कील-स्क्रू से लेकर बड़े कल-पुर्जों तक स्वयं तैयार करना होगा। उनके बनाने के लिए बाहर से मशीनों के आयात करने से भी काम न चलेगा। हमें स्वयं मशीनें बनानी होंगी। यथावश्यक अनुसंधान के लिए अपनी ही वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं को विकसित करना होगा। राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति को इन कार्यों में योजना-पूर्वक लगाना होगा।

हम अपनी स्थिति का ठीक से विचार करें। सेला और बोमडीला के

लज्जाजनक आत्मसमर्पण के बाद भी असम के साथ शेष भारत को जोड़ने वाला एकमात्र जंक्शन सिलीगुड़ी है। नाथूला से पाकिस्तान की सीमा ५० मील दूर है। फिर भी असम की इस दृष्टि से उपेक्षा ही हो रही है। राजस्थान की भी यही स्थिति है। कश्मीर के भी कुछ क्षेत्र संचार व्यवस्था की दृष्टि से उपेक्षित हैं। सरकार कहती है हम तैयार हैं। आखिर हमने शत्रु के आक्रमणों की वर्षों से स्थिति बने रहने के बाद अपनी संचार व्यवस्था इन क्षेत्रों में क्या की है?

वस्तुत: यदि संचार व्यवस्था ठीक न हुई तो उद्योगों का उपयोग ही क्या होगा? आवश्यक है कि सुरक्षा-उद्योगों के विकास और उपयोग की दृष्टि से समुचित संचार व्यवस्था हो। राजस्थान की सीमा रेतीली है। वहाँ के लिए अलग प्रकार की संचार-व्यवस्था और उद्योग स्थापित करने होंगे। हिमाचल के अंचल में अलग ढंग की व्यवस्था करनी होगी। कच्छ के रन का पृथक विचार करना होगा। जल-सेना का भी पूर्ण विकास करना होगा।

जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों ने भारी बम-वर्षा की, यह सर्वविदित है। पर यह कम लोगों को ज्ञात है कि बम-वर्षा के बीच भी जर्मनी का शस्त्रास्त्र कारखाना बराबर काम करता रहा—पहले से अधिक तीव्रगति से काम करता रहा। उसका बमवर्षक विमानों का कारखाना २००० विमान प्रति मास तैयार कर रहा था। ऐसी ही दृढ़ सुरक्षा उद्योग की स्थिति में शत्रुओं से घिर कर भी युद्ध करते हुए विजय पाई जा सकती है।

प्रत्येक विश्वविद्यालय में युद्ध-प्रयोगशाला स्थापित की जानी चाहिये। अमेरिका में भी १९५५-५६ से प्रत्येक विश्वविद्यालय में ऐसी प्रयोगशालायें काम कर रही हैं। वे 'पेंटागन' के नेतृत्व में युद्धोपयोगी वस्तुओं के निर्माण के उपाय ढूंढते हैं, वस्तुओं का निर्माण करते हैं। वहाँ देश में अनुपलब्ध प्राकृतिक साधनों की कमी को पूरा करने के लिये अन्य नये साधनों की खोज की जाती है।

जर्मन टेक्नालाजी का सिद्धांत वही है जो शुक्राचार्य का था। दुनिया में कोई वस्तु निरुपयोगी नहीं है। 'योजकस्तत्र दुर्लभ:'। औद्योगिक विकास का लक्ष्य देश को सुदृढ़ बनाने से पहले देश को विजयी बनाना होना चाहिये। देश विजयी होगा तो समृद्ध भी होगा।

इस मार्ग पर अग्रसर होकर ही भारत समृद्ध होगा। विजिगीषा ने ही राष्ट्रों को बल और उत्कर्ष प्रदान किया है। आज रूस या चीन को देखें, जापान या जर्मनी का विचार करें, फ्रांस या इजराइल का उदाहरण लें, सभी ने अपनी सुरक्षा की भावना को राष्ट्र का मेरुदण्ड माना और उसके बीच से ही वे वैभवशाली और श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में खड़े हो सके हैं। इस विजिगीषा के अभाव ने ही हमारी २४ वर्ष की स्वातन्त्र्य अवधि में भी हमें परमुखापेक्षी और भिखारी बना कर रखा है। *

सरकार की कायरता और अदूरदर्शिता का परिचय

—जार्ज फर्नाण्डीज

भारत सरकार ने बंगला देश के मुक्ति योद्धाओं की मदद न कर घोर कायरता और अदूरदर्शिता का परिचय दिया है। यह कायरता और अदूरदर्शिता इतिहास की गति न पहचानने और अपनी सत्ता बनाये रखने की घिनौनी लालसा की उपज हैं।

अव्वल तो भारत सरकार नहीं चाहती कि बंगबंधु मुजीबुर्रहमान विजयी हों, दूसरे वह चीन से डरती है। नवम्बर १९६९ में लन्दन में मेरी शेख मुजीबुर्रहमान से मुलाकात हुई थी, उनसे मेरी जो बातचीत हुई थी उसमें उन्होंने भारत पाक महासंघ का समर्थन किया था।

भारत सरकार चीन से डरती है। हर अन्तर्राष्ट्रीय मामले में उसे यही चिन्ता सताती है कि चीन का क्या रुख होगा। अपनी जनता को सत्ता से दूर रखनेवाली हर सरकार में आत्मविश्वास नहीं होता। चीन के बारे में हमारे लिए कुछ तथ्यों पर ध्यान देना जरूरी है। अब तक अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में चीन की भूमिका रही है कि उसने विदेश में कभी अपनी सेनाएँ नहीं भेजी, वियतनाम में भी नहीं। इंडोनेशिया में चीनवादी कम्युनिस्ट पार्टी का खातमा किया गया। ५ लाख कम्युनिस्ट मारे गये तब भी चीन ने कुछ नहीं किया। आज चीन ने पाकिस्तान के एका का समर्थन किया है, लेकिन जब ऐसी स्थिति आये कि बंगला देश में संघर्ष का नेतृत्व उसके समर्थकों के हाथों में आ जाये (मौलाना भासानी और मोहम्मद तोहार) तो चीन चाहेगा कि वह बंगला देश को अपना मित्र बनाये और उसके मार्फत इस भूखण्ड पर अपनी राजनीति चलाये। चीन इस बात को भी महसूस करेगा कि पाकिस्तान एक नहीं रह सकता और तब उसका रुख बदलेगा ही। हमें चीन से डरने के बजाय इस मामले में सोच-विचार कर पूरा जोखिम उठाने को तैयार रहना चाहिए।

भारत की राजनीतिक पार्टियों का बंगला देश के बारे में रुख बड़ा ही अस्पष्ट और नाना तरह की भ्रांतियों का शिकार

है। कुछ पार्टियाँ हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून और संवैधानिक पहलुओं की मृग मरीचिका में ही अपने को खोये रखना चाहती है और कुछ अपने अन्तर्राष्ट्रीय समर्थकों के कारण कोई भी कदम उठाने से हिचकिचाती हैं। कलकत्ता में वियतनाम को लेकर जितने प्रदर्शन हुए और सरगर्मी दिखायी गयी उतनी बंगला देश के मामले पर नहीं। भारत सरकार बंगला देश के मामले में कुछ करने वाली नहीं। मैं दो बार बंगला देश गया। बंगला देश के संसद सदस्यों और वहाँ के एक मन्त्री से मिला। मुझसे उन्होंने बार-बार शस्त्र सहायता करने की बात कही। जैसोर से प्रान्तीय असेम्बली के सदस्य श्री मुशर्रफ हुसेन ने मुझ से कहा, हमें आपकी सहानुभूति और प्यार बहुत मात्रा में मिला है। पर हमें लड़ने के लिए शस्त्र चाहिए। हमें शस्त्र दीजिए, नहीं तो हमें हमारे भाग्य के सहारे छोड़ दीजिए।"

बंगला देश में जिससे भी मिला, चाहे वह संसद सदस्य हो या पूर्व पाक राइफल का सदस्य, या छात्र, सबकी यही अपेक्षा थी कि भारत बंगला देश की मदद करे, यह दृश्य देखकर मुझे रोमांच हो आया। आज बंगला देश में पाकिस्तान के अत्याचार के आगे नादिरशाह भी सभ्य लगने लगा है। लाखों लोगों को भून दिया गया है और बंगला देश की प्रतिभा चुन चुन कर नष्ट कर दी गयी है। बंगला देश के बुद्धिजीवियों को चुन-चुनकर मारा गया है। मुझे मुसर्रफ हुसैन की बात याद आती है। मैंने बंगला देश के नेताओं से भरे दिल से कहा कि आप भारत सरकार की मदद की आशा न करें।

भारत सरकार सत्ता की घिनौनी लालसा की शिकार है। वह यह नहीं समझती कि पाकिस्तान बंगला देश को हरा नहीं सकता और संघर्ष यदि देर तक चलेगा, तो मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व को नुकसान पहुंच सकता है और हिन्दुस्तान को भी। संघर्ष में ऐसी प्रवृत्तियाँ बढ़ सकती हैं, जो चीन के अनुकूल हों।

भारत सरकार के रुख को देखते हुए हम क्या कर सकते हैं। बिहार की सरकार ने जो सहायता की है उसके लिए बंगला देश के मुक्ति योद्धाओं ने बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित की है। हम अन्य राज्य सरकारों से इस तरह की मदद की आशा नहीं कर सकते क्योंकि उनमें अधिकांश सत्तारूढ़ कांग्रेस की सरकारें हैं या फिर वे केन्द्र अभिमुख हैं। जो कुछ करना है वह तो हिन्दुस्तान की जनता को ही करना है। भारत सरकार चाहती तो चीन ने जिस तरह कोरिया में स्वयंसेवक भेजे थे, भेज सकती थी पर वह तो स्थिति पर अभी भी विचार कर रही है।

भारत और पाकिस्तान का विभाजन अप्राकृतिक है। बंगला देश के इस संघर्ष ने यह साबित कर दिया है कि धर्म राष्ट्रीयता का आधार नहीं है। हम इस लड़ाई को भारत पाक महासंघ की कल्पना को पूरा करने के एक चरण के रूप में भी देखते हैं। हमें दोनों बंगाल के एक हो जाने पर भी एतराज नहीं है क्योंकि हमारा सपना तो भारत और पाकिस्तान के महासंघ का जिससे देश अधूरी आजादी के बजाय पूरी आजादी प्राप्त करे। बंगला देश की स्थापना भारत-पाक महासंघ की स्थापना में पहला कदम हो। *

आप खुद ही देखिए आपके घरको
हिण्डालियम®
ने कितना आकर्षक
बना दिया है।
हिण्डालियम के बरतन खरीदने पर आपको
मिलती है—
चाँदी की झिलमिलाती हुई चमक
और एक निखरी हुई सादगी
हिण्डालियम के बरतनों में
पकाना भी मज़ेदार
खाना भी मज़ेदार
हिन्दुस्तान अल्युमिनियम
कॉरपोरेशन लि.
HINDALCO
देखने में
चांदी की
तरह सुंदर
स्टील की
तरह
टिकाऊ
कीमत
स्टेनलेस स्टील
की तिहाई
बेन्को इंजिनियर्स
मीराबाई मार्ग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
फोन: २५९९१

* पन्द्रह अगस्त के इस पावन पर्व पर *

नगर के सर्वती विकास कार्यों में सतत् संलग्न

मीरजापुर नगरपालिका अपने नगर निवासियों सहित सम्पूर्ण देशवासियों की सुख समृद्धि, सुशिक्षा, सुरक्षा आदि की समुपलब्धि के लिए अपनी आन्तरिक शुभ कामनायें समर्पित करती है।

हमने अब तक

१. पालिका की आर्थिक दशा में पर्याप्त सुधार किया और आय में लगभग ६ लाख वार्षिक की वृद्धि की।

२. प्रकाश व्यवस्था में पर्याप्त वृद्धि किया—४६५ ट्यूबलाईट्स, १५ मरकरी १३ फीकस और ९ ग्लोब लाईट्स लगाई गई। तदोपरि ग्राम बरौंवा, डगहर सखौरा, हरिजन बस्ती इमामबाड़ा एवं नटवा में विद्युत प्रकाश लाइनें परिवर्धित कर लगभग ५० बल्ब लगाये गये।

३. ४३ जन-मार्गों के नाम भारत के महान पुरुषों के नाम पर परिवर्तित किया।

४. अमर शहीद डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मूर्ति की स्थापना किया।

५. नगर सिवरेज प्रणाली कायम करने हेतु ४०००० रु० विभागीय शुल्क जमा किया। ६. नगर के दो मोहल्लों का नाम भारत के महानुभावों के नाम पर परिवर्तित किया। ७. पालिका के सभी बालक एवं बालिका विद्यालयों के नाम महान् विभूतियों के नाम पर परिवर्तित किया।

८. भूमि-भवन कर जो ४८ रु० वार्षिक मूल्य पर निर्धारित था उसे ९० रु० वार्षिक पर निर्धारण हेतु शासन से स्वीकृति प्राप्ति कर ली गई है जिसके कार्यान्वियन हेतु १ अक्टूबर १९७१ की तिथि निश्चित की गई है।

हमारे भावी संकल्प

१. सम्पूर्ण नगर में सिवरेज योजना का क्रियान्वयन। २. नगर की जल-वितरण समस्या का पूर्ण समाधान। ३. प्रकाश व्यवस्था में और सौंदर्य की अभिवृद्धि। ४. सफाई और स्वच्छता के साधनों में विकास। ५. नवीन क्षेत्रों में मार्ग निर्माण। ६. शासन से प्राप्त १५६७०० रु० साधारण और १००००० रु० विशेष सड़क अनुदान से पालिका के अंशदान सहित वर्तमान जन मार्गों का जीर्णोद्धार एवं निर्माण करना। ७. चुंगी आय में वृद्धि हेतु पालिका सीमा का विस्तार। ८. पालिका क्षेत्र के अन्तर्गत ग्रामों में प्रकाश और जल व्यवस्था का क्रियान्वयन। ९. स्व०पं०दीनदयाल उपाध्याय एवं पूज्य महात्मा गांधी की संगमरमर मूर्ति की स्थापना।

(त्रिलोकीनाथ पुरवार)

अध्यक्ष : नगरपालिका, मीरजापुर

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड, लखनऊ के लिए डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल द्वारा प्रकाशित तथा स्वदेश प्रेस, डॉ० रघुवीरनगर, लखनऊ से मुद्रित
सम्पादक : वचनेश त्रिपाठी